।। ओ३म् ।।

COMPUTERISED

विजयेश्वर जन्त्री

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय (रजि.)
संस्थापक
स्व. काशीनाथ ज्योतिषी, बिजबिहाड़ा, कश्मीर.

प्रवर्तक
स्व. ज्यो. आप्ताभ शर्मा

संस्थापक
स्व. काशीनाथ ज्योतिषी

Additional Insertions
Some Important Muhurts for
KP's Living Overseas (USA)

Kheer-Bhavani
Tulmul Kashmir

॥ ॐ ॥

सप्तर्षि सं०5098

विक्रमी सं०2079

विजयेश्वर जन्त्री

विजयेश्वर गणित
सं०240

ईस्वी सं०
2022-23

काश्मीरी पण्ड़ित निर्वासन सं. 33

सम्पादक
पुनीत ज्योतिषी

प्रकाशक
सुनीत ज्योतिषी

नोट: इस जन्त्री के तिथि, योग, नक्षत्रादि के समाप्ति काल पुनीत ज्योतिषी द्वारा कम्प्यूटर प्रोग्राम से लिए गए हैं।

मूल्य: Rs. 150

सनातन धर्म में आस्था और उच्छृंखल जीवन को तिरस्कृत
करने वाले काश्मीरी पण्डित समुदाय को

विजयेश्वर
जन्त्री

सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079

सादर समर्पित

नाम:-______________________________

गोत्र:-______________________________

निवास:-______________________________

फोन / ई-मेल:-

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्,
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम् शस्यशामलां मातरम् । वन्दे मातरम्
शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीं-फुल्लकुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीं,
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीं सुखदां वरदां मातरम् ।। १ ।।
कोटि-कोटि-कण्ठ-कल-कल-निनाद-कराले कोटि-कोटि-भुजैर्धृत-खरकरवाले, अबला केन मा एत बले ।
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीं रिपुदल-वारिणीं मातरम् ।। २ ।। वन्दे मातरम् ।
तुमि विद्या, तुमि धर्म तुमि हृदि, तुमि मर्म त्वं हि प्राणाः शरीरे बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि मा भक्ति, तोमारई प्रतिमा गडि मन्दिरे-मन्दिरे मातरम् ।। ३ ।। वन्दे मातरम् ।
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरण-धारिणी कमला कमल-दल-विहारिणी वाणी विद्या-दायिनी,
नमामि त्वाम् नमामि कमलां अमलां अतुलां सुजलां सुफलां मातरम् ।। ४ ।। वन्दे मातरम् ।
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषितां धरणीं भरणीं मातरम् ।। ५ ।।
वन्दे मातरम् ।। वन्दे मातरम् ।। वन्दे मातरम् ।।

विजयेश्वर जन्त्री विक्रमी सम्वत् 2079 की विषय सूची

काश्मीरी पण्डितों के गोत्र	6	सप्तर्षि 5098 की जन्त्री	60	नया वाहन खरीदना	140
काश्मीर क्षेत्र की यात्राऐं	12	साथ रटुॅन	108	गृह देवता को प्रसन्न करने	141
महापुरुषों के दिवस	13	यज्ञोपवीत मुहूर्त	110	का मुहूर्त, पन्न व शिशुॅर	142
व्रतों की सूची	22	विवाह मुहूर्त	112	दीपदान मुहूर्त	143
काश्मीरी पर्व और त्यौहार	24	राशि अनुसार मेखला मुहूर्त	119	लडकी दूध देने का मुहूर्त	144
पंचक आरम्भ काल	26	राशि अनुसार विवाह मुहूर्त	121	यात्रा मुहूर्त	145
गण्डांत आरम्भ काल	27	वाग्दान मुहूर्त	125	सर्वार्थ सिद्धि योग	150
गण्डमूल आरम्भ काल	28	कन् साथ	127	बारह राशियों का राशिफल	153
ग्रह संचार	30	गृह प्रवेश मुहूर्त	128	प्रमुख व्रतपर्वों के विषय में	173
निषेध समय	32	लेन्टर साथ	129	नित्य प्रार्थना	176
वर्ष के दस अधिकारी	33	काहनेथर मुहूर्त	130	गुरुस्तुति	178
भविष्यवाणी	34	नव वस्त्र धारण मुहूर्त	132	गणेश प्रार्थना	181
ग्रहण विवरण	37	विद्यारम्भ मुहूर्त	133	आसय शरण करतम दया	182
साढ़सती	41	अन्न-प्राशन मुहूर्त	134	शारदा वंदना	184
ढैय्या	43	ज़रकासय मुहूर्त	136	लीलारब्द आरती	186
आमदनी खर्च चक्र	46	दिवचक्षीर मुहूर्त	138	इन्द्राक्षी	189
राहु काल विक्रमी 2079	47	कर्ण छेदन मुहूर्त	139	अपराधक्षमास्तोत्र	191

राज्ञीस्तोत्रम्	193
शारिकास्तोत्रम्	194
त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रम्	195
ज्वालास्त्रोतम्	196
ॐ नमः पराशक्ते	198
विष्णु स्तुति	200
विष्णु प्रार्थना	201
शंकर प्रार्थना	203
लिंगाष्टकम्	204
शिवोऽहं शिवोऽहं	206
शिव चामर स्तुति	207
भैरव स्तुति	209
रुद्राष्टकम्	211
शिवपंचाक्षर स्तोत्रम्	213
शिवषडक्षर स्तोत्रम्	213
अभिनवगुप्त कृत शिवस्तुति	214
जय शिव ॐकारा	217
आधार ज़गतुक मन्त्र	218
गायत्री महामन्त्र	220
गायत्री चालीसा	222
देवी प्रार्थना	226
हनुमान चालीसा	229
हनुमान आरती	233
श्री गणेश आरती	234
श्री राम जी की आरती	235
ज्येष्ठा माता आरती	236
श्री लक्ष्मी जी की आरती	238
श्री गंगा जी की आरती	240
नवग्रहस्तोत्रम्	241
आरती (ॐ जय जगदीश)	242
बोड दरबार	244
जन्मदिन पूजा विधि	246
प्रेप्युन	254
श्राद्ध संकल्प विधि	257
पन्न कथा	260
वटुक पूज़ा (शिवरात्रि पूजा)	263
शिव महिम्नस्तोत्रम्	290
विष्णु पूजन विधि	304
यक्षामावसी पूज़ा विधि	307
शंकुप्रतिष्ठा पूज़ा विधि	310
गृहप्रवेश पूज़ा विधि	317
दीपमाला पूज़ा विधि	323
बहुरुपगर्भ (हिन्दी व उर्दू में)	327
हुमा असले (अली मरदान)	339
नाम अक्षर व बच्चों के नाम	342
धर्म शास्त्र के विषय	351
कुम्भ तर्पण विधि	354
श्री भीष्म पिता तर्पण विधि	356
ज़ातक मिलाप विधि	358
ज़ातक मिलाप सारिणी	369
Some important Muhurts for KP's Living Overseas (USA)	373

E-matching of Kundlies :- You can avail the facility of Kundli Matching via e-mail. Drop a message at ... details:- Date of Birth, Time of Birth & Birth Pl...

काश्मीरी पण्डितों के गोत्र (जाति व उपजाति सहित)

हमारे वंशों को चलाने वाले जो ऋषि या मुनि हुये हैं वही ऋषि हमारे गोत्र प्रवर्तक हैं। गोत्र परम्परा हमें अपने मूल से जोडे रखती है। इसी के आधार पर हमारे संस्कार, यज्ञकर्म, विवाह, पितृक्रिया आदि कर्मकाण्डीय क्रियायें निष्पन्न होती हैं अतः हमें अपने गोत्र के विषय में जानकारी अवश्य रखनी चाहिये तथा इसको कभी भी भूलना नहीं चाहिये। ब्रह्मा जी जब सृष्टि के कार्य में प्रवृत्त हुए तो उनके मानसी संकल्प से नौ ऋषियों का प्रादुर्भाव हुआ -- मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, विश्वामित्र, भारद्वाज, गौतम और जमदग्नि। सृष्टि को आगे बढ़ाने में महर्षि मरीचि का विशेष योगदान रहा। मरीचि के पुत्र कश्यप हुए । कश्यप से ही जगत् की चराचर सृष्टि हुई।

कश्यपात् तु इमाः प्रजाः ।

ऋषि कश्यप काश्मीर के जनक और वहाँ की हिन्दू जाति के संस्थापक भी हैं। तभी तो कश्मीरियों को मुख्य रूप से कश्यप गोत्रीय माना जाता है। जिन्हें अपने गोत्र के विषय में संशय हो वे पुरुष काश्यप गोत्री तथा स्त्री काश्यपी गोत्री उच्चरित करके धार्मिक कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। वैसे काश्मीरी हिन्दुओं के एक सौ निन्यानवे (199) गोत्र प्रवर हैं जिन में से कुछ जातियों के गोत्र यहाँ दिये गए हैं। हो सकता है इस में कुछ जातियों का समावेश न हो पाया हो, उन से विनम्र अनुरोध है कि हम से सम्पर्क करके अपने गोत्र व जाति का विस्तृत परिचय देकर अनुग्रहीत करें।

Our Gotras with their Castes & Sub Castes

Note :- Please intimate us if you do not find your Gotra or Caste in the below list through e-mail : vijayeshwer@yahoo.com

Atri Bhargaya : Hapa

Artha Varshaganya Shandalya : Choudhri

Bhava Kapishthala Kaushika : Patar

Bhava Aupamanyava : Variku

Bhuta Was : Peshen, Thakur, Zalpuri

Bhuta Aupamanyava Shalan Kayana : Giru, Ganjoo, Kanzu

Bhuta Aupamanyava Vatsya Laugakshi : Pishen

Bhava Kapishthala : Khoru, Zadu, Sibbu, Vantu, Chandra, Kalla, Khaibri, Lattu, Kaw, Hakim.

Bhava Kapishthal Aupamanyava : Wani, Khan, Kantroo, Bhat

Bhuta Vatsya Aupamanyava : Peshin, Revoo.

Chand Shandalya : Dass

Dar Bharadwaja: Bangi, Dar, Jawansher, Misri, Parikala, Qandahari Thalatsur, Tritsha, Tshut, Turki, Uthu, Vichari, Waguzari, Jatoo, Datt, Mawa.

Dar Varshaganya : Bakhshi, Kachru, Safaya, Shali

Dar Bhar Shigan : Kuchroo (Kakroo).

Deva Bharadwaja : Jatu, Khurdi, Sabani, Yachh, Zaru, Kallu, Gadroo.

Deva Kashyap : Chatta

Datthtreya (Koul) : Aima, Babu, Bamtsunt, Bamzai, Buju, Chowdhri, Dandar, Dangar, Drabi, Dout, Hak, Jalali, Jinsi, Jota, Kak, Keni, Kissu, Kothdar, Ladakhi, Mekhzin, Mandal, Moza, Muhtasib, Nagari, Padar, Pahalwan, Ratiz, Sahib Shargha, Shoga, Singhari, Salman, Sultan, Tota, Ugra, Zamindar Sharabi, Dembi, Achkan. Tukra, Chaman.

Dat Was : Khari

Dar Dev Shalan Kapi : Mota

Deva Bharadwaja Kaushika Deva : Dar

Dev Shalana Kaushika : Muttu

Deva Gargya : Bhan

Dar Kapisthala Upamanuva : Mich,

Dar Kapisthala Manuva : Bootnath (Bijbehara)

Deva Gautama : Bhatt, Purbi, Pandit (Tangmarg)

Dar Shandalya : Jogi

Deva Gautama Laugakshi : Hakim

Dipat Saman Aupamanyava : Sapru

Deva Kaushika : Bhatt

Dhaumyayana : Razdan

Deva Kantha Kashyapa : Kar

Deva Varshaganya Shandilya : Safaya

Deva Kucha Atreya : Badgami

Dat Sharman Kantha Kashyapa : Raina, Pandit, Bradoo

Deva Laugakshi : Mantapuri, Pandit

Deva Kashyap Maudgalya Kashyap : Bradi, Pandit

Deva Parashara : Thogan, Tulsi, Yachh, Kak

Deva Patsvamina Koshk : Kalpush

Dat Varshaganya : Sazawul

Deva Swamina Gotam Kaushika Mudgalaya : Pandit, Kukiloo

Deva Shandalya : Bataphalu, Karawani

Dev Wasishta : Shopuri, Hukku, Ukhlu

Dev Svamina Maudgalya : Bradi

Dev Vishamitra Varshaganya : Kem, Vangar, Wangoo

Dev Wasishta : Ukhlu

Dar Kapisthala : Lidi, Bhatt

Dar Wasak Shandilya : Safaya

Deva Vardhatta Shalan Kautsa : Tsrungu (Chrangoo)

Deva Dat Gautma Kaushik Bhardwaja: Gushai & Bumai, (Sopori) Pandit.

Dat Dat Shalan Kautsa : Bhatt, Kasab, Khaumush, Malik, Sathu

Dev Aupamanyava : Kalu, Khashu, Meva, Pandit, Teli (Koul).

Deva Patsvamina Aupamanyava Kaushika: Badgami, Kandhari, Kalpush, Bhan, Misri

Kash Aupamanyava : Bhatt

Karchanda Shandale : Chandru, Kar

Kara Shandalya : Mantu, Pandit, Shishoo

Kantha Dhaumyana Laugakshi Gautama : Bandar, Breth, Hastiwal, Muhtasib, Kav, Razdan, Shah, Shair, Wangani, Wat, Zari.

Kanth Kasahap : Bhatt, Dassu, Razdan, Tangan, Shakdher, Anand.

Kashyapa Kautsa : Bhat (Wachi)

Kapil : Mattas

Kashyapa : Khah (Khanna)

Mitra Atreya : Shah, Kaboo (Baramulla)

Mitra Kashyapa : Handu, Bhat

Mitra Shandalya : Bhatt

Mitra Svamina Kaushika Atreya : Said

Nanda Kaushika Bharadwaja : Pandit

Nanda Koshk : Bhatt

Nanda Gotam : Pandit

Paldeva Vasagargya : Pat, Kukru, Khoshu. Kav, Pir, Malla. Bangru, Bakaya, Kadalabuju, Khashu, Kichlu, Kokru, Mala, Mam, Mirakhur, Misri, Munga, Pir, Put, Sopuri-Pandit, Khar, Dullo, Thathoo, Saraf.

Pat Svamina Kaushika : Amhardar, Bira, Braru, Chacha, Chaghat, Durani, Fotedar, Ganju, Jala, Kuchru, Kalu, Khurdi, Kyani, Mam, Mahaldhar, Mattu, Misri, Pandit, Panzu, Salman, Shanglu Sulu, Teng, Tritshal, Unt, Vashnavi, Wufa, Wanchu, Waza, Zithu, Saproo, Gurkhu, Kitroo, Zalpuri, Dhar, Ganhar, Wattal, Mujoo.

Pat Svamina Deva Ratra Parwara : Pandit, Watal

Ratna Kucha : Raina.

Ratra Vishwamitra Ahastya : .Mattu, Bhat.

Rajdat Atreya Shalan Kautsa : Bhat.

Rajbhut Logaskhi Deval : Bhan

Ratra Bhargava: Zitshoo, Chacha

Raja Dathattatreya : Partazi.

Raj Kaushika : Hakachar, Khod

Rashi Kaushika : Kashgari.

Raj Shandalya : Duru.

Rashi Kavigargya : Zaru, Goja.

Ratra Varshanganya: Kotar.

Ratra Vishwamitra Vashishta: Trakari, Matoo.

Raj Vashisht : Shunglu.

Svamina Gotam Raeshgonie : Koul.

Svamina Warshaganya : Chothai; Duda, Hangal, Kathju, Lange, Kasid.

Svamina Atreya : Chaka, Handu, Gadwali, Kala, Shal, Sikh, Bhat.

Shandalya Bharadwaja : Bhatt.

Sharman Bharadwaja : Bhatt

Sharman Atreya : Gaddu, Tatoo.

Soma Wasisht : Vuitho

Sharman Kautsa : Bhatt, Mogal, Sav, Thela

Sharman Kautsa Atreya : Ragoo, Nand. Datt, Koul

Shalan Kautsa Sharman Gusha Watsya Aupamanyava : Tilwan Koul, Mukka.

Svamina Gotam Laugakshi : Choku, Chhotu, Turi

Svamina Shandalya : Bhatt, Dass, Bakhshi, Nari, Vass, Pandit, Fata

Svamina Vasishta Bharadwaja: Bhatt, , Handu, Hukhu

Svamina Vasa Gargya : Langer, Sum, Gadwa, Datt, Nand, Halmat

Svamina Gargya : Machama

Svamina Gotam Shandalya : Labru, Razdan

Svamina Gautama Koshk: Bakaya

Svamina Koshk Bharadwaja : Bhatt, Kukru

Svamina Gotam Shalan Kucha Atreya: Razdan, Raina, Bhatt Challu

Svamina Gotam Gosh Vas Aupamanyava: Chakan

Svamina Vatsya Aupamanyava : Bhatt, Wall, Malla

Svamina Gotam Atreya : Tsul

Svamina Hasya Dvaseya : Khanakatu

Svamina Kaushika : Thakur, Watal

Svamina Kautsa Atreya: Koul

Svamina Kantha Kashyapa : Labru

Svamina Rishi Kanya Gargya : Koul (Kulin)

Shandale : Shayer

Svamina Aupamanyava : Gigu

Svamina Rishi Kanya Vatsya : Tufchi

Svamina Vas Atreya : Ghasi, Bhan, Thusu, Waza

Svamina Bharadvaja : Bazari, Garyali, Jan, Khar, Miskin, Miyan, Munshi, Tikku, Kutsru.

Svamina Bharagava: Bali, Battiv.

Svamina Gautama : Gagar, Tava, Padora, Parimu, Keni, Kak, Razdan, Fehrist, Tarivala,Halli, Khaber, Bazaz, Badam, Charangu, Chillum, Gurut, Kak, Khosa, Kakapuri, Labru Langer, Manwotu, Naqib, Padora, Piala, Qazi, Razdan, Thalatsur, Thapal, Zari, Bhatt

Svamina Gautama Bharadvaja: Kemdal, Karihalu.

Svamina Maudgalya : Bhuni, Chana, Dewani, Galikrapa, Kanth, Khazanchi, Mazari, Muj, Madan, Mushran, Put, Shora Taku, Zahi, Razdan, Zitu, Zotan, Raina, Monga, Lala, Kandar, Reshi.

Vatsya Gusha Aupamanyava : Pandit

Vasishta Svamina Maudgalya : Bhandari

Vasishta Katyani : Makru

Varshayani : Barbuz, Karnel

Wardhatta Shalana Kucha : Muki, Sopori, Pandit.

Wasadeva Palagargya : Bindri

Wasishta : Bhatt, Rangateng

Note :- Please intimate us on phone No. 0191-2555064 if you do not find your Gotra in the above list or e-mail us at : vijayeshwer @yahoo.com.

काश्मीर क्षेत्र में प्राचीन काल से प्रचलित यात्राऐं

उमा भगवती यात्रा, श्वारि आगन	चैत्र शुक्लपक्ष नवमी	शुपयन (कपालमोचन) यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष द्वादशी
शिवा भगवती, अक्यॅनीगाम	चैत्र शुक्लपक्ष नवमी	श्री अमरनाथ व थजीवारा यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा
श्री भद्दकाली यात्रा वडीपोरा हण्दवारा	चैत्र शुक्लपक्ष नवमी	ध्यानेश्वर व हरनाग हरवन यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा
कमला यात्रा, त्राल	वैशाख कृष्णपक्ष पंचमी	नबदल यात्रा, त्राल	भाद्र कृष्ण पक्ष चतुर्थी
डुमटबल यात्रा, कुकरनाग	वैशाख शुक्लपक्ष एकादशी	मार्तण्ड तीर्थ यात्रा,(मट्टन)	भाद्र शुक्ल पक्ष षष्ठी
कूटी हेर (कुटहार) यात्रा, सागम	वैशाख शुक्लपक्ष तृतीया	हरमुकुट गंगा (गंगबल) यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी
गणपतयार यात्रा, श्रीनगर	वैशाख शुक्लपक्ष चतुर्दशी	गोतमनाग यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष एकादशी
ज़ीठयार यात्रा, श्रीनगर	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष पंचमी	नारायण नाग व डुमटबल यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष एकादशी
नन्दकेश्वर यात्रा,सीर तथा सुम्बल	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष अमावसी	विथवुत्र यात्रा, वेरीनाग	भाद्र शुक्ल पक्ष त्रयोदशी
क्षीर भवानी यात्रा,तुलमुल	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष अष्ठमी	अन्ततनाग (नागबल) यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्दशी
खनबिरिनय यात्रा, देवसर (कुलगाम)	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष अष्ठमी	पापहरणनाग, कारकूटनाग सेली	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्दशी
मज़ी गाम यात्रा	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष अष्ठमी	विजयेश्वर यात्रा, बिजबिहारा	आश्विन कृष्ण पक्ष अमा०
लकुट पूर यात्रा	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष अष्ठमी	सोमयार यात्रा, श्रीनगर	आश्विन कृष्ण पक्ष अमा०
हरिश्वर यात्रा, खुनमुह	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष अष्ठमी	भद्दकाली वडीपोरा हन्दवारा यात्रा	आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी
ज़या देवी यात्रा, बिजबिहारा	आषाढ शुक्ल पक्ष नवमी	मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, मार्तण्ड	माघ शुक्ल पक्ष सप्तमी
लुक भवन यात्रा, लुकभवन	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	चक्रेश्वर यात्रा	फाल्गुन कृष्ण पक्ष अष्टमी
कौसर नाग व पांजथ नाग यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष पंचमी	विचार नाग यात्रा, विचार नाग	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी

काश्मीर के महात्माओं की जयन्तियाँ

नोट:- निम्न् लिखे गए महात्माओं की जयन्तियों में यदि दिन तिथि आगे पीछे हो तो हमें अवश्य सूचित करें।

महात्मा मोहन लाल ठुस्सू (कोफूर) जयन्ती	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	2 अप्रेल
महात्मा श्री काशीनाथ जी कौल जयन्ती, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	चैत्र शुक्ल पक्ष पंचमी	6 अप्रेल
उमा भगवती जयन्ती	चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी	10 अप्रेल
शिवा भगवती, जयन्ती, अकिनगाम	चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी	10 अप्रेल
स्वामी कुमार जी जयन्ती, उदमपुर गडी	चैत्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	13 अप्रेल
स्वामी रूपजी मस्ताना जयन्ती, चिनौर	चैत्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	13 अप्रेल
स्वामी बादशाह कलन्दर जयन्ती	चैत्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	16 अप्रेल
श्री महादेव काक भान जयन्ती	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	23 अप्रेल
श्री जानकीनाथ साहिब दर जयन्ती	वैशाख कृष्ण पक्ष अष्टमी	23 अप्रेल
स्वामी लक्ष्मण जी जयन्ती, ईश्बर निशात, महेन्द्र नगर	वैशाख कृष्ण पक्ष द्वादशी	27 अप्रेल
महात्मा दीनानाथ भान (डांगरपुर) जयन्ती	वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी	26 अप्रेल
स्वा. किन्न टोठ यच्छकोट निवासी जयन्ती	वैशाख शुक्ल पक्ष द्वादशी	27 अप्रेल
स्वामी गोविंद कौल जलाली जयन्ती, त्रलोकपुरा, गोलगुजराल	ज्येष्ट कृष्ण पक्ष पंचमी	20 मई
श्री ज़्येष्ठा देवी जयन्ती, ज्योठयॅार, राज भवन मार्ग, श्रीनगर	ज्येष्ट कृष्ण पक्ष पंचमी	20 मई
श्री मान बट मान जयन्ती, फतेपुर	ज्येष्ट शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	31 मई
कर्मकाण्ड शिरोमणि श्री काशीनाथ हण्डू, जयन्ती	ज्येष्ट शुक्ल पक्ष चतुर्थी	3 जून
श्री रघुनाथ जी कुक्लू जयन्ती	ज्येष्ट शुक्ल पक्ष पंचम्यां	4 जून

श्री रघुनाथ जी ब्रह्मचारी जयन्ती	ज्येष्ट शुक्ल पक्ष पंचम्यां	4 जून
श्री हेमराज जी जयन्ती खव काश्मीर / सुदमहादेव	ज्येष्ट शुक्ल पक्ष अष्टमी	8 जून
श्री सिद्ध बब जयन्ती	ज्येष्ट शुक्ल पक्ष नवमी	9 जून
महामहेश्वराचार्य अभिनवगुप्त जयन्ती	ज्येष्ट शुक्ल पक्ष एकादशी	11 जून
माता रूपभवानी जयन्ती	ज्येष्ट शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	14 जून
श्री महादेव काक जयन्ती, रत्नी पोरा, पुलवामा	ज्येष्ट शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	14 जून
श्री मोहन लाल जयन्ती उदमपुर	आषाढ कृष्ण पक्ष तृतीया	17 जून
स्वामी श्यामलाल कौल (ओगरा) जयन्ती	आषाढ कृष्ण पक्ष एकादशी	24 जून
शिवा भगवती जयन्ती	आषाढ़ शुक्लपक्ष द्वितीया	1 जुलाई
स्वामी स्वयमानन्द जयन्ती	आषाढ शुक्ल पक्ष षष्ठी	5 जुलाई
जगत्गुरू श्री गोपीनाथ जी जयन्ती, खरयार श्रीनगर व उदयवाला	आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वादशी	11 जुलाई
स्वामी विद्याधर जी जयन्ती, श्रीनगर	आषाढ़ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	12 जुलाई
स्वामी आफ्ताब भास्कर जी जयन्ती	श्रावण शुक्ल पक्ष द्वादशी	9 अगस्त
श्री कृष्ण जू राज़दान जयन्ती	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	31 अगस्त
स्वा. मोतीलाल ब्रह्मचारी जी जयन्ती	भाद्र शुक्ल पक्ष पंचमी	1 सितम्बर
माता लल्लेश्वरी जयन्ती	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	4 सितम्बर
स्वमी गाश कौल जी जलाली जयन्ती, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	भाद्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	7 सितम्बर
स्वामी हर काक जयन्ती, बमहामा कुपवारा	आश्विन कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	23 सितम्बर
आनन्द स्वामी श्री प्राण नाथ जी बट्ठ गरीब जयन्ती	आश्विन कृष्णा पक्ष चतुर्दशी	24 सितम्बर
कर्मयोगी स्व. निरंजन नाथ कौल जयन्ती, बनतलाव	आश्विन शुक्ल पक्ष दशमी	5 अक्टूबर

स्वामी पृथ्वीनाथ पण्डित जयन्ती	कार्तिक कृष्ण पक्ष अष्टमी	18 अक्टूबर
श्री महादेव काक भान (तोफ) जयन्ती	कार्तिक कृष्ण पक्ष नवमी	19 अक्टूबर
महात्मा चूनीलाल राज़दान, जयन्ती (हंदवारा), पटोली ब्रह्मना जम्मू	कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	24 अक्टूबर
महातमा श्री तारा चंद जी, जयन्ती, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावसी	25 अक्टूबर
महामहेश्वराचार्य महताबकाक जी जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्थी	29 अक्टूबर
स्वामी गोकुलनाथ जी जयन्ती, अम्बिका विहार मुंशी चक, जम्मू	कार्तिक शुक्ल पक्ष सप्तमी	31 अक्टूबर
स्वामी पुष्करनाथ जी जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	5 नवम्बर
श्रीमती कमला काचरू जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	5 नवम्बर
चण्डीगाम महात्मा जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	8 नवम्बर
स्वामी पोष बब महाराज जयन्ती (रैथन बडगाम) गंगयाल	मार्ग कृष्ण पक्ष द्वितीया	10 नवम्बर
माता शारिका जी जयन्ती, महेन्द्र नगर, जम्मू	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	10 नवम्बर
स्वामी श्याम लाल जी हाजीन जयन्ती	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	10 नवम्बर
स्वामी मस्तबब जयन्ती	मार्ग शुक्ल पक्ष अष्टमी	1 दिसम्बर
नन्दलाल मस्ताना जयन्ती, (नुनर वाले) लालेदा बाग	पौष कृष्ण पक्ष दशमी	18 दिसम्बर
महामहेश्वराचार्य श्री राम जयन्ती, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	पौष कृष्ण पक्ष द्वादशी	20 दिसम्बर
श्री मिरज़काक जयन्ती, हांगलगुण्ड	पौष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	24 दिसम्बर
स्वा॰ आफताभ जू वाँगनू जयन्ती	माघ शुक्ल पक्ष दशमी	31 जनवरी
स्वामी वामन जी महाराज जयन्ती (वाछलुन शुपीयन)	माघ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	5 फरवरी
कर्मकाण्ड शिरोमणि श्री प्रेमनाथ सोपोरी जयन्ती	माघ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	5 फरवरी
कर्मयोगी प्रोफेसर त्रिलोकी नाथ गंजू, जयन्ती	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	6 फरवरी

श्री व्यदलाल जयन्ती, गुशी	फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	10 फरवरी
महाशान्ति प्रभू स्वा. जगदानन्द ब्रह्मचारी जयन्ती	फाल्गुन शुक्ल पक्ष तृतीया	22 फरवरी
स्वामी राम जुँव सफाया (तबरदार) जयन्ती	फाल्गुन शुक्ल पक्ष षष्ठी	25 फरवरी
स्वामी शक्ति महाराज जयन्ती, उदयवाला बोहडी	फाल्गुन शुक्ल पक्ष अष्टमी	27 फरवरी
श्री नन्दलाल जी जयन्ती	फाल्गुन शुक्ल पक्ष अष्टमी	27 फरवरी
स्वामी गोविन्द कौल जयन्ती (वनपू)	फाल्गुन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	5 मार्च
स्वामी क्राल बब महाराज जयन्ती	फाल्गुन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	7 मार्च
स्वामी घर सर्वानन्द जी सहीपोरा लंगेट जयन्ती	चैत्र कृष्ण पक्ष चतुर्थी	11 मार्च
स्वामी ईश्वर दास बक्शी जयन्ती	चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी	14 मार्च
श्री भट्ट जयन्ती	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी	21 मार्च

तर्पण करने की विधि

तर्पण करते समय बायां यज्ञोपवीत रखें (अपस्वेन)। यदि माता जी या पिता जी जीवित हैं तो उनका नाम तर्पण में न लें। तर्पण तांबे या कांस के पात्र से देना चाहिए।

- पित्रों के नाम के साथ गोत्र का नाम लैना ज़रूरी है। यदि गोत्र के विषय में किसी पकार का संशय हो तो पुरूष काश्यपगोत्री तथा स्त्री काश्यपी गोत्री उचचरित करके, तर्पण या धार्मिक, कर्मकाण्डीय क्रियायें सम्पन्न कर सकते हैं।
- तर्पण करते समय पहले महीना जैसे चैत्र, वैशाख, ज़्येष्ठ, आषाढ़ आदि मासस्य, पक्ष-कृष्ण / शुक्लपक्षस्य, निश्चित तिथि जैसे प्रतिपदायां, द्वितीयस्यां, तृतीयस्यां आदि तिथियाँ, वार का नाम सोमवासरनितायां या शुक्रवारसरनितायां आदि उसके बाद पित्रों का नाम लें। जैसे तत्सत ब्रह्म, अध्य तावत् तिथौ अद्य ज़्येष्ठ मासस्य, शुक्ल अथवा कृष्णपक्षस्य तिथौ अष्टम्यां या नवम्यां, सोमवासरनितायां या शुक्रवासरनितायां पित्रे (पिता का नाम) रामदराय भारद्वाज़ये, (दादा का नाम) पितामहाये दामूदर भारद्वाज़ये, (पडदादा का नाम) प्रपितामहाये गणेशदराय भारद्वाज़ये, (माता का नाम) मात्रे कुशल्या देव्यै भारद्वाज़यै, (नानी का नाम)पितामह्यौ अमरावती देव्यै भारद्वाज़यै, (पड़दादी का नाम) प्रपितामह्यौ तुलसी देव्यै भारद्वाज़यै।
- मातृ पक्षास्तु ये केचित चान्ये पितृपक्षजा:, गुरु शुश्वर बन्धूनां ये कुलेषु समुदभवा: ये प्रेतभावमापन्ना ये चान्ये श्राद्ध वर्जिता: अन्नं जलदानेन ते सर्वे लभन्तां तृप्तिमुत्तमाम समस्त माता पितृभ्यो द्वादशदेवतेभ्य: पितृभ्य: दीप: स्वधा धूप: अन्नं स्वधा:।।
- तर्पण समाप्त करने के बाद यज्ञोपवेत दाईं ओर रखें।

काश्मीर के महात्माओं के श्राद्ध/यज्ञ

नोटः- निम्न् लिखे गए श्राद्ध में 'दि, प्र' के आधार से एक दिन की तिथि आगे पीछे भी हो सकती है, हमें अवश्य सूचित करें।

चण्डीगाम महात्मा यज्ञ	चैत्र शुक्ल पक्ष सप्तमी	8 अप्रेल
स्वामी भोई टोठ जी निर्वाण दिवस	चैत्र शुक्ल पक्ष दशमी	11 अप्रेल
स्वामी पृथ्वीनाथ पण्डित यज्ञ	वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्थी	20 अप्रेल
श्री ऋषि पीर श्राद्ध	वैशाख कृष्ण पक्ष षष्ठी	22 अप्रेल
श्री महादेव काक भान यज्ञ	वैशाख कृष्ण पक्ष अष्टमी	23 अप्रेल
श्री नारायण जुव यज्ञ, बुलॅबुललेंकर	वैशाख कृष्ण पक्ष दशम्यां	25 अप्रेल
स्वामी सूरदास जी निर्वाण दिवस, गणेश स्थल आश्रम सारी जम्मू	वैशाख कृष्ण पक्ष दशम्यां	25 अप्रेल
श्री शकर साहिब यज्ञ,	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	1 मई
स्वामी शम्भू नाथ जी दर (गुशी) निर्वाण दिवस	वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया	3 मई
श्री योगिराज धर्मदत्त जी यज्ञ	वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया	3 मई
स्वा. मोतीलाल ब्रह्मचारी जी यज्ञ	वैशाख शुक्ल पक्ष अष्टमी	9 मई
स्वा. सर्वानन्द जी गुसाईगुंड यज्ञ	वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी	12 मई
श्री काक जी यज्ञ (हॉगलगुण्ड) कुक्करनाग व नगरोटा जम्मू	ज्येष्ट कृष्ण पक्ष द्वितीया	17 मई
विजयेश्वर निवासी ज्योतिषी काशीनाथ शर्मा निर्वाण दिवस	ज्येष्ट कृष्ण पक्ष सप्तमी	22 मई
स्वामी नन्दकेश्वर यज्ञ (सीर) गोलगुजराल / अकलपुर जम्मू	ज्येष्ट कृष्ण पक्ष अमावसी	30 मई
जगत्गुरू श्री गोपीनाथ जी यज्ञ, खरयार श्रीनगर व उदयवाला	ज्येष्ट शुक्ल पक्ष द्वितीया	1 जून
स्वामी वामन जी महाराज, वाछुलुन शुपियन यज्ञ	आषाढ कृष्ण पक्ष तृतीया	17 जून

स्वा. गोविंद कौल जी जलाली यज्ञ, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	आषाढ़ कृष्ण पक्ष सप्तमी	20 जून
स्वा. किन्न टोठ यच्छकोट निवासी यज्ञ	आषाढ़ कृष्ण पक्ष सप्तमी	20 जून
स्वामी आन्द जी, यज्ञ विलगाम	आषाढ़ शुक्ल पक्ष सप्तमी	20 जून
स्वामी कण्ठ राम जी यज्ञ, कुलगाम	आषाढ़ शुक्ल पक्ष दशमी	9 जुलाई
स्वामी पुष्कर नाथ यज्ञ	आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वादशी	11 जुलाई
श्री अमरनाथ वैष्णवी निर्वाण दिवस	आषाढ़ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	12 जुलाई
सन्त राधा देवी यज्ञ, सागम कुकरनाग	आषाढ़ शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	12 जुलाई
स्वामी लाल जी यज्ञ	श्रावण कृष्ण पक्ष तृतीया	16 जुलाई
श्री ग्रट बब दिवस (यज्ञ)	श्रावण कृष्ण पक्ष द्वादशी	25 जुलाई
स्वामी रघु नाथ जी ब्रह्मचार्य यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष षष्ठी	3 अगस्त
कर्मकाण्ड शिरोमणि श्री प्रेमनाथ सोपोरी, श्राद्ध	श्रावण शुक्ल सप्तमी	4 अगस्त
श्री जानकीनाथ साहिब दर यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष नवमी	6 अगस्त
स्वामी गोविन्द कौल यज्ञ (वनपू)	श्रावण शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	11 अगस्त
स्वामी गण काक यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	12 अगस्त
स्वा. धर सर्वानन्द जी सहीपोरा लंगेट निवासी यज्ञ	भाद्र कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	26 अगस्त
स्वामी परमान्द जी यज्ञ (मार्तण्ड)	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	31 अगस्त
माता उमादेवी यज्ञ (उमानगरी) मुट्ठी, जम्मू	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	4 सितम्बर
कर्मयोगी प्रोफेसर त्रिलोकी नाथ गंजू, अन्तर्धान दिवस	भाद्र शुक्ल पक्ष एकादशी	6 सितम्बर
स्वामी काशीनाथ बब यज्ञ (हुगाम)	भाद्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	7 सितम्बर
श्री शकर साहिब यज्ञ, मुंशी चक, जम्मू	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	11 सितम्बर

श्री केशवभट्ट ज्योतिषी (सिख) रैणावारी अन्तर्धान दिवस	आश्विन कृष्ण पक्ष द्वितीया	12 सितम्बर
स्वामी लक्ष्मण जी यज्ञ, निशात (श्रीनगर) व महेन्द नगर (जम्मू)	आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	14 सितम्बर
स्वामी क्राल बब यज्ञ	आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	24 सितम्बर
स्वामी हरि कृष्ण यज्ञ	आश्विन शुक्ल पक्ष द्वितीया	27 सितम्बर
कर्मकाण्ड शिरोमणि श्री काशीनाथ हण्डू, निर्वाण दिवस	आश्विन शुक्ल पक्ष चतुर्थी	29 सितम्बर
श्री नन्द लाल साहिब यज्ञ, लाले दा बाग जम्मू	आश्विन शुक्ल त्रयोदशी	7 अक्टूबर
श्री सिद्ध बब यज्ञ	कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वितीया	11 अक्टूबर
ज्योतिषी आप्ताभ शर्मा अन्तर्ध्यान दिवस, विजयेश्वर निवासी	कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी	13 अक्टूबर
स्वामी गाश कौल जी निर्वाण जग, त्रलोकपुरा, गोलगुजराल	कार्तिक कृष्ण पक्ष षष्ठी	15 अक्टूबर
स्वामी व्यदलाल यज्ञ, गुशी	कार्तिक कृष्ण पक्ष षष्ठी	15 अक्टूबर
महात्मा मधुसूदन राज़दान, यज्ञ, तीर्थ नगर, तालाबतिलौ जम्मू	कातिर्क शुक्ल पक्ष षष्ठी	30 अक्टूबर
श्री महादेव काक यज्ञ (रली पोरा)	कार्तिक शुक्ल पक्ष अष्टमी	1 नवम्बर
स्वामी आत्माराम जी यज्ञ, गुसानी गुण्ड	कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी	4 नवम्बर
स्वामी पोष बब महाराज यज्ञ (रैथन बडगाम) गंगयाल	मार्ग कृष्ण पक्ष द्वितीया	10 नवम्बर
स्वामी आनन्द जी यज्ञ जमनगरी	मार्ग कृष्ण पक्ष तृतीया	11 नवम्बर
स्वामी काशीनाथ जी यज्ञ, हुगाम	मार्ग कृष्ण पक्ष पंचमी	13 नवम्बर
स्वामी सर्वानन्द जी यज्ञ, गोतमनाग	मार्ग कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	22 नवम्बर
स्वामी विद्याधर जी यज्ञ, श्रीनगर	मार्ग शुक्ल पक्ष तृतीया	26 नवम्बर
स्वा॰ आफताभ जू वाँगनू श्राद्ध	मार्ग शुक्ल पक्ष पंचमी	28 नवम्बर
कर्मयोगी स्व. निरंजन नाथ कौल निर्वाण दिवस, बनतलाब	मार्ग शुक्ल पक्ष सप्तमी	30 नवम्बर

विजयेश्वर निवासी डॉ. मनमोहन ज्योतिषी निर्वाण दिवस	पौष कृष्ण पक्ष तृतीया	11 दिसम्बर
महात्मा श्री तारा चंद जी निर्वाण जग, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	पौष कृष्ण पक्ष तृतीया	11 दिसम्बर
महात्मा स्वर्गी चूनीलाल राज़दान(हंदवारा), यज्ञ पटोली ब्रह्मना जम्मू	पौष कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	22 दिसम्बर
श्री अशोकानन्द यज्ञ, नागढ़ण्डी	पौष कृष्ण पक्ष अमावसी	23 दिसम्बर
श्री लक्ष्मण जी पण्डित यज्ञ	पौष कृष्ण पक्ष अमावसी	23 दिसम्बर
स्वामी शिवराम जी उमानगरी निवासी यज्ञ	पौष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	24 दिसम्बर
स्वामी दमकाक जी यज्ञ शरिका पीठ, सुभाष नगर	पौष शुक्ल पक्ष अष्टमी	30 दिसम्बर
श्रीमती कमला काचरू यज्ञ	पौष शुक्ल पक्ष नवमी	31 दिसम्बर
माता मेथुरा देवी यज्ञ, वेरीनाग	पौष शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	5 जनवरी
स्वामी आप्ताभ जी भास्कर यज्ञ	माघ कृष्ण पक्ष पंचमी	12 जनवरी
स्वामी काशीनाथ कौल यज्ञ, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	माघ कृष्ण पक्ष पंचमी	12 जनवरी
श्री जगन्नाथ वल्ली, निरवाण दिवस, वेरीनाग काश्मीर	माघ कृष्ण पक्ष सप्तमी	14 जनवरी
स्वामी श्री सत्यानन्द जी उमानगरी निवासी यज्ञ	माघ कृष्ण पक्ष अष्टमी	15 जनवरी
स्वामी राम जी यज्ञ, त्रिक आश्रम, त्रलोकपुरा गोलगुजराल	माघ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	20 जनवरी
श्री नन्द लाल जी यज्ञ (बडगाम)	माघ शुक्ल पक्ष तृतीया	24 जनवरी
महात्मा दीनानाथ भान यज्ञ	माघ शुक्ल पक्ष द्वादशी	2 फरवरी
माता शारिका जी यज्ञ	फाल्गुन कृष्ण पक्ष तृतीया	8 फरवरी
स्वामी श्यामलाल कौल (ओगरा) यज्ञ	फाल्गुन कृष्ण पक्ष अष्टमी	14 फरवरी
श्री शंकर पंण्डित उमानगरी निवासी यज्ञ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	21 फरवरी
स्वामी राम जुँव सफाया (तबरदार) यज्ञ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया	21 फरवरी

स्वामी महताब काक जी यज्ञ श्री मानकाक जी यज्ञ (गोतमनाग)	फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया फाल्गुन शुक्ल पक्ष दशमी	21 फरवरी 1 मार्च
श्री क्राल बब यज्ञ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	7 मार्च
स्वामी हरकाक यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी	14 मार्च
श्री किशकाक यज्ञ, वडीपोरा	चैत्र कृष्ण पक्ष नवमी	16 मार्च
ब्रह्मचार्य श्री अर्जुनदेव यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष दशमी	17 मार्च
स्वामी श्यामलाल जी हाजीन यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	20 मार्च
स्वामी गाश काक जी यज्ञ, गोतमनाग	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी	21 मार्च

सूर्य देव को जल देने की विधि !

अगर आप सूर्य देव की आराधना द्वारा सूर्य देव को प्रसन्न कर लेते है तो आपके जीवन से हर बाधा दूर होने लगती है व जीवन में खुशियों का संचार होने लगता है। आइये जानते है किन-किन जातकों को सूर्य देव को जल देना चाहिए या उनकी उपासना करनी चाहिए : –

- जिन लोगों की कुंडली में सूर्य देव कमजोर हो, जिन लोगों में आत्मविश्वास की कमी हो उन्हें सूर्य को जल अवश्य देना चाहिए।
- जो व्यक्ति एक निराशावादी जीवन जी रहा है उसे सूर्य देव की उपासना अवश्य करनी चाहिए।
- जो जातक घर-परिवार में और समाज में मान-सम्मान चाहते है उन्हें भी सूर्य पूजा करनी चाहिए।

सूर्य उदय के एक घटे तक ही सूर्य को जल देना चाहिए। सुबह-सुबह स्नान आदि से निवृत होकर किसी खुले स्थान में जाए जहाँ से सूर्य आपको स्पष्ट दिखाई देता हो। एक ताम्बे के पात्र में जल भरकर इसमें थोड़े चावल, थोड़ी चीनी, पुष्प डाले व कुमकुम द्वारा जल में छीटे लगाये। अब आप सूर्य देव के सामने खड़े होकर ताम्बे के पात्र द्वारा दोनों हाथों से जल नीचे जमीन पर छोड़ते जाये। ध्यान दे, ताम्बे के पात्र को अपने सीने के सामने रखे और सूर्य देव को जल अर्पित करते हुए पात्र को कंधो से ऊपर तक ले जाने का प्रयास करें। पात्र द्वारा नीचे गिरने वाली जलधारा में सूर्य के प्रतिबिम्ब को देखने का प्रयास करें। सूर्य को जल देते समय निरंतर इस मंत्र के जप करते जाए : "ॐ सूर्याय नमः"। सूर्य को जल देने के उपरान्त नीचे झुककर जल को स्पर्श करे और अंत में खड़े होकर हाथ जोड़ते हुए सूर्य देव को प्रणाम करें।

विक्रमी सम्वत् 2079 के व्रतों की सूची

कुमार षष्ठी व्रत

चैत्र	7 अप्रेल	गुरु
वैशाख	6 मई	शुक्र
ज्येष्ठ	5 जून	रवि
आषाढ़	4 जुलाई	सोम
श्रावण	3 अगस्त	बुध
भाद्र	1 सितम्बर	गुरु
आश्विन	1 अक्टूबर	शनि
कार्तिक	30 अक्टूबर	रवि
मार्ग	28 नवम्बर	सोम
पौष	28 दिसम्बर	बुध
माघ	26 जनवरी	गुरु
फालगुन	25 फरवरी	शनि

अष्टमी व्रत

चैत्र	9 अप्रेल	शनि
वैशाख	9 मई	सोम
ज्येष्ठ	8 जून	बुध
आषाढ़	7 जुलाई	गुरु
श्रावण	5 अगस्त	शुक्र
भाद्र	4 सितम्बर	रवि
आश्विन	3 अक्टूबर	सोम
कार्तिक	1 नवम्बर	भौम
मार्ग	1 दिसम्बर	गुरु
पौष	30 दिसम्बर	शुक्र
माघ	29 जनवरी	रवि
फालगुन	27 फरवरी	सोम

पूर्णिमा व्रत

चैत्र	16 अप्रेल	शनि
वैशाख	16 मई	सोम
ज्येष्ठ	14 जून	भौम
आषाढ़	13 जुलाई	बुध
श्रावण	12 अगस्त	शुक्र
भाद्र	10 सितम्बर	शनि
आश्विन	9 अक्टूबर	रवि
कार्तिक	8 नवम्बर	भौम
मार्ग	8 दिसम्बर	गुरु
पौष	6 जनवरी	शुक्र
माघ	5 फरवरी	रवि
फालगुन	7 मार्च	भौम

संकट निवारण चतुर्थी

		चन्द्रोदय
वैशाख	19 अप्रेल	10-11 रात
ज्येष्ठ	19 मई	11-19 रात
आषाढ़	17 जून	10-52 रात
श्रावण	16 जुलाई	10-05 रात
भाद्र	15 अगस्त	9-36 रात
आश्विन	13 सितम्बर	8-32 रात
कार्तिक	13 अक्टूबर	8-10 रात
मार्ग	12 नवम्बर	8-18 रात
पौष	11 दिसम्बर	8-00 रात
माघ	10 जनवरी	8-45 रात
फालगुन	9 फरवरी	9-28 रात
चैत्र	11 मार्च	10-20 रात

अमावसी व्रत

वैशाख	30 अप्रेल	शनि
ज्येष्ठ	30 मई	सोम
आषाढ़	29 जून	बुध
श्रावण	28 जुलाई	गुरु
भाद्र	27 अगस्त	शनि
आश्विन	25 सितम्बर	रवि
कार्तिक	25 अक्टूबर	भौम
मार्ग	23 नवम्बर	बुध
पौष	23 दिसम्बर	शुक्र
माघ	21 जनवरी	शनि
फालगुन	20 फरवरी	सोम
चैत्र	21 मार्च	भौम

संक्रान्ति व्रत

वैशाख	14 अप्रेल	गुरु
ज्येष्ठ	15 मई	रवि
आषाढ़	15 जून	बुध
श्रावण	16 जुलाई	शनि
भाद्र	17 अगस्त	बुध
आश्विन	17 सितम्बर	शनि
कार्तिक	17 अक्टूबर	सोम
मार्ग	16 नवम्बर	बुध
पौष	16 दिसम्बर	शुक्र
माघ	14 जनवरी	शनि
फालगुन	13 फरवरी	सोम
चैत्र	15 मार्च	बुध

एकादशी व्रत

चैत्र	12 अप्रेल	भौम
वैशाख	12 मई	गुरु
ज्येष्ठ	11 जून	शनि
आषाढ़	10 जुलाई	रवि
श्रावण	8 अगस्त	सोम
भाद्र	6 सितम्बर	भौम
आश्विन	6 अक्टूबर	गुरु
कार्तिक	4 नवम्बर	शुक्र
मार्ग	3 दिसम्बर	शनि
पौष	2 जनवरी	सोम
माघ	1 फरवरी	बुध
फालगुन	3 मार्च	शुक्र

हमारी संस्कृति के प्रतीकः-

श्राद्ध तथा जयन्ती देखने की विधिः-

जिस दिन तिथि के साथ 'प्र' लिखा हो उस दिन का श्राद्ध अपने दिन आता है, किन्तु दूसरे दिन की तिथि के साथ 'दि' लिखा हो तो उसदिन का श्राद्ध भी अपने ही दिन आता है, शेष तिथियों पर यदि 'दि' लिखा हो तो उस दिन का श्राद्ध पहले दिन आता है। परन्तु जयन्ती हमेशा अपनी ही तिथि पर मनानी चाहिये। केवल तिथि क्षय होने पर जयन्ती पहले दिन और अधिक तिथि होने पर जयन्ती दूसरी तिथि पर मनानी चाहिये।

सम्पादक

आवश्यक जानकारीः- देवगोण के लिये मुहूर्त, नक्षत्र, तिथि आदि देखने की कोई आवश्यकता नहीं होती। परन्तु देवगोण के दिन यदि भौमवार या शनिवार हो तो देवगोन का आरम्भ सूर्य उदय से पहले ही करें।

काश्मीरी पर्व और त्यौहार विक्रमी सम्वत् 2079 के लिये

नवरेह	2 अप्रेल	गुरु पूर्णिमा	13 जुलाई	पितृ पक्ष शरू	10 सितम्बर	मोक्षदा काह	3 दिसम्बर
ज़ंगत्रय	4 अप्रेल	कमला काह	24 जुलाई	बलिदान दिवस	14 सितम्बर	मुंजहर तहर	9 दिसम्बर
दुर्गाष्टमी	9 अप्रेल	नाग पंचमी	2 अगस्त	साहिब सतम	16 सितम्बर	आ.भैरव जयन्ती	18 दिसम्बर
रामनवमी	10 अप्रेल	पवित्र काह	8 अगस्त	दुर्गाष्टमी	3 अक्टूबर	सफलता काह	19 दिसम्बर
वेताल षष्ठी	22 अप्रेल	श्रावण बाह	9 अगस्त	महानवमी	4 अक्टूबर	क्षयचृरि मावस	22 दिसम्बर
अक्षय तृतीया	3 मई	रक्षा बन्धन	12 अगस्त	विजया दशमी	5 अक्टूबर	चेतना दिवस	27 दिसम्बर
नारद काह	12 मई	चन्दन षष्ठी	16 अगस्त	पापंकुशा काह	6 अक्टूबर	शिशर संक्रांति	14 जनवरी
गणेश च़ोदाह	15 मई	जन्म अष्टमी	18 अगस्त	लवंग पुनिम	9 अक्टूबर	साहिब सतम	14 जनवरी
ज़्येष्ठा देवी यज्ञ	20 मई	कुशा मावसी	27 अगस्त	करवा चौथ	13 अक्टूबर	षटतिला काह	18 जनवरी
ज़्येष्ट अष्टमी	8 जून	विनायक च़ोरम	31 अगस्त	दीपमाला	24 अक्टूबर	निर्वासन दिवस	19 जनवरी
निर्ज़ला काह	11 जून	वराह पच़म	1 सितम्बर	विश्व कर्मा पूजा	27 अक्टूबर	माघ शिव १४	20 जनवरी
हार सतम	6 जुलाई	शारदा अष्टमी	4 सितम्बर	हरिबोधिनी काह	4 नवम्बर	माघ मावस	21 जनवरी
हार अठम	7 जुलाई	वामन बाह	7 सितम्बर	गुरु नानक जयन्ती	8 नवम्बर	गौरी तृतीया	24 जनवरी
हार नवम	8 जुलाई	वितस्ता जयन्ती	8 सितम्बर	भैरव अष्टमी	17 नवम्बर	त्रिपुरा च़ोरम	25 जनवरी
ज़्वाला च़ोदाह	12 जुलाई	अन्नत च़ोदाह	9 सितम्बर	उतपन्ना काह	20 नवम्बर	भीष्म अठॅम	28 जनवरी

भीम सेन काह	1 फरवरी
यक्षणी चोदाह	4 फरवरी
काव पुनिम	5 फरवरी
हुॅर उकदोह	6 फरवरी
होराष्टमी	14 फरवरी
हेरॅथ (शिवरात्रि)	17 फरवरी
शिव चतुर्दशी	18 फरवरी
महाशिवरात्रि	18 फरवरी
वटुक परिमोज़ॅन	20 फरवरी
तील अठॅम	27 फरवरी
होली	7 मार्च
थाल भरॅुण	13 मार्च
सोन्थ	14 मार्च
चैत्र चोदाह	20 मार्च
थाल भरॅुण	21 मार्च
नवरात्रा आरम्भ	22 मार्च

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय (रजि.)

बोहडी, जम्मू के नियम।

1. जन्मपत्री के लिए शुद्ध गणित का होना आवश्यक है, यदि आप शुद्ध और सही जन्मपत्री बनवाना चाहते हैं तो सम्वत्, तिथि, समय, जन्मस्थान और गोत्र लिखकर हमें भेजें या e-mail vijayeshwer@yahoo.com द्वारा हमसे सम्पर्क करें। हमारे यहां कम्प्यूटर द्वारा गणित की गई हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने की दक्षिणा 400रु है।
2. यदि जातक मिलाप करवाना हो तो हमारे यहां जन्म पत्रिकाओं (टिकनियों) का मिलान काश्मीरी रीति के अनुसार आधुनिकतम कम्प्यूटर प्रणाली से किया जाता है। अधिक जानकारी के लिए दूरभाष 2555064, 2552625 से सम्पर्क करें ।
3. यदि आपने अपनी जन्मपत्री दिखानी हो तो आप विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय, बोहडी पट्टा जम्मू के संचालक ज्योतिषी सुनीत से सम्पर्क करें। आने वाले सज्जन फोन द्वारा पूर्व ही समय निर्धारित कर लें। Mob: 9419136991

रविवार को कार्यालय बन्द रहता है।

प्रबन्धक

पंचक

के आरम्भ तथा समाप्ति काल (सन् 2022-23 ई.)

दिनांक	आरम्भ		दिनांक	समाप्ति
25 अप्रेल	5:29 AM	से	29 अप्रेल	6:42 PM
22 मई	11:12 AM	से	26 मई	12:38 AM
18 जून	6:43 PM	से	23 जून	6:14 AM
15/16 जुलाई	4:17 AM	से	20 जुलाई	12:50 PM
12 अगस्त	2:49 PM	से	16 अगस्त	9:06 PM
8/9 सितम्बर	12:39 AM	से	13 सितम्बर	6:36 AM
06 अक्टूबर	8:28 AM	से	10 अक्टूबर	4:02 PM
02 नवम्बर	2:16 PM	से	6/7 नवम्बर	12:04 AM
29 नवम्बर	7:51 PM	से	04 दिसम्बर	6:16 AM
26/27 दिस॰	3:31 AM	से	31 दिसम्बर	11:47 AM
सन 2023 ईस्वी				
23 जनवरी	1:51 PM	से	27 जनवरी	6:36 PM
19/20 फर॰	1:14 AM	से	23/24 फर॰	3:44 AM
19 मार्च	11:17 AM	से	23 मार्च	2:08 PM

पंचक के विषय में

आवश्यक जानकारी:

धनिष्ट नक्षत्र के उत्तरार्ध से रेवती नक्षत्र के अन्त पांच नक्षत्रों (धनिष्ट शतभिशक, पू.भा., उ.भा., रेवती) वाली तिथियाँ पंचक कहलाती हैं। पंचक में दक्षिण दिशा की ओर यात्रा पर जाना, तेल, मिट्टी के बरतन, लकडी काटनी या घर लानी, दाहसंस्कार, छलुन तथा मस मुचॅरुन, मेंहन्दी लगाना इत्यादि निषेध है। शेष सभी कार्यों के लिए पंचक शुभ माना जाता है। विवाह, यज्ञोपवीत जैसे शुभ कार्य पंचक में किये जा सकते हैं, एसी धर्मशास्त्र की आज्ञा है। पंचक में यदि यात्रा पर जाना हो तो मुहूर्त का विचार अवश्य करें।

<u>यदि किसी की मृत्यु पंचक में हो तो उस स्थिति में किसी विद्वान ब्रह्मण से पंचक शान्ति करवाने का विधान है।</u>

गण्डांत आरम्भ काल		गण्डांत समाप्ति काल		गण्डांत आरम्भ काल		गण्डांत समाप्ति काल	
1/2 अप्रेल	5-11 रात से	02 अप्रेल	5-40 सायं तक	1 अक्टूबर	9-28 रात से	2 अक्टूबर	8-51 प्रातः तक
11/12 अप्रेल	2-09 रात से	12 अप्रेल	2-50 दिन तक	10 अक्टूबर	10-07 दिन से	10 अक्टूबर	10-06 रात तक
20 अप्रेल	6-11 सायं से	20/21 अप्रेल	5-14 रात तक	19/20 अक्टूबर	3-53 रात से	20 अक्टूबर	4-59 सायं तक
29 अप्रेल	12-27 दिन से	29/30 अप्रेल	1-05 रात तक	28/29 अक्टूबर	3-30 रात से	29 अक्टूबर	2-41 दिन तक
9 मई	10-35 दिन से	9 मई	11-31 रात तक	6 नवम्बर	6-02 सायं से	7 नवम्बर	6-12 प्रातः तक
17/18 मई	2-49 रात से	18 मई	1-32 दिन तक	16 नवम्बर	12-018 दिन से	16/17 नवम्बर	1-34 रात तक
26 मई	6-19 सायं से	27 मई	7-06 प्रातः तक	25 नवम्बर	11-55 दिन से	25 नवम्बर	10-45 रात तक
5 जून	5-47 सायं से	6 जून	6-58 प्रातः तक	3/4 दिसम्बर	12-08 रात से	4 दिसम्बर	12-31 रात तक
14 जून	1-15 दिन से	14/15 जून	11-47 रात तक	13 दिसम्बर	7-48 सायं से	14 दिसम्बर	9-13 प्रातः तक
22 जून	11-56 रात से	23 जून	12-41 दिन तक	22 दिसम्बर	10-40 रात से	23 दिसम्बर	9-20 प्रातः तक
2 जुलाई	11-51 रात से	3 जुलाई	1-03 दिन तक	31 दिसम्बर	5-41 प्रातः से	31 दिसम्बर	6-02 सायं तक
11 जुलाई	11-54 रात से	12 जुलाई	10-32 दिन तक	9/10 जनवरी	2-17 रात से	10 जनवरी	3-43 दिन तक
20 जुलाई	6-41 प्रातः से	20 जुलाई	7-12 सायं तक	19 जनवरी	9-49 दिन से	19 जनवरी	8-38 रात तक
30 जुलाई	5-36 प्रातः से	30 जुलाई	6-45 सायं तक	27 जनवरी	12-42 दिन से	27/28 जन॰	12-44 रात तक
8 अगस्त	9-05 प्रातः से	8 अगस्त	8-02 रात तक	6 फरवरी	8-20 प्रातः से	6 फरवरी	9-43 रात तक
16 अगस्त	3-07 दिन से	16/17 अगस्त	3-20 रात तक	15 फरवरी	7-05 सायं से	16 फरवरी	6-18 प्रातः तक
25 अगस्त	11-59 दिन से	25/26 अगस्त	1-01 रात तक	23 फरवरी	10-01 रात से	24 फरवरी	9-40 दिन तक
4 सितम्बर	4-01 दिन से	4/5 सितम्बर	3-19 रात तक	5 मार्च	2-48 दिन से	5/6 मार्च	4-09 रात तक
12/13 सितम्बर	12-42 रात से	13 सितम्बर	12-41 दिन तक	14/15 मार्च	1-44 रात से	15 मार्च	1-16 दिन तक
22 सितम्बर	7-29 सायं से	23 सितम्बर	8-30 प्रातः तक	—	—	—	—

गण्डमूल नक्षत्र के विषय में जानकारी :

रेव, अश्वि, अश्ले, मघा, ज्येष्ठ, मूल–ये गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं–इन नक्षत्रों में उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता-पिता के स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्र में विद्वान् ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के समय शान्ति न करवाई गई हो तो, जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है।

गण्डमूल आरम्भ व समाप्त काल विक्रमी 2079 के लिये

दिनांक	आरम्भ काल	दिनांक	समाप्त काल
01 अप्रेल	10:40 AM	03 अप्रेल	12:37 PM
11 अप्रेल	6:51 AM	13 अप्रेल	9:36 AM
19 अप्रेल	1:39 AM	21 अप्रेल	9:51 PM
28 अप्रेल	5:40 PM	30 अप्रेल	8:13 PM
08 मई	2:57 PM	10 मई	6:40 PM
17 मई	10:46 AM	19 मई	5:37 AM
25 मई	11:19 PM	27 मई	2:26 AM
04 जून	9:55 PM	06 जून	2:25 AM
13 जून	9:24 PM	15 जून	3:33 PM
21 जून	5:03 AM	24 जून	8:04 AM
01 जुलाई	3:56 AM	04 जुलाई	8:43 AM
11 जुलाई	7:50 AM	12 जुलाई	2:21 AM
19 जुलाई	12:12 PM	21 जुलाई	2:17 PM
29 जुलाई	9:47 AM	31 जुलाई	2:20 PM

दिनांक	आरम्भ काल	दिनांक	समाप्त काल
07 अगस्त	4:30 PM	09 अगस्त	12:18 PM
15 अगस्त	9:07 PM	17 अगस्त	9:57 PM
25 अगस्त	4:16 PM	27 अगस्त	8:26 PM
03 सितम्बर	10:57 PM	05 सितम्बर	8:05 PM
12 सितम्बर	6:59 AM	14 सितम्बर	6:57 AM
21 सितम्बर	11:47 PM	23 सितम्बर	3:50 AM
30 सितम्बर	4:18 AM	02 अक्टूबर	1:52 AM
09 अक्टूबर	4:20 PM	11 अक्टूबर	4:17 PM
19 अक्टूबर	8:02 AM	21 अक्टूबर	12:28 PM
28 अक्टूबर	10:42 AM	30 अक्टूबर	7:25 AM
05 नवम्बर	11:56 PM	07 नवम्बर	12:37 AM
15 नवम्बर	4:12 PM	17 नवम्बर	9:20 PM
24 नवम्बर	7:37 PM	26 नवम्बर	2:58 PM
02 दिसम्बर	5:45 AM	04 दिसम्बर	7:15 AM
12 दिसम्बर	11:36 PM	14 दिसम्बर	5:16 AM
21 दिसम्बर	6:33 AM	23 दिसम्बर	1:13 AM
30 दिसम्बर	11:24 AM	01 जनवरी	12:48 PM

दिनांक	आरम्भ काल	दिनांक	समाप्त काल
08 जनवरी	6:05 AM	11 जनवरी	11:50 AM
18 जनवरी	5:22 PM	20 जनवरी	12:40 PM
26 जनवरी	6:56 PM	28 जनवरी	7:06 PM
05 फरवरी	12:13 PM	07 फरवरी	5:45 PM
14 फरवरी	2:01 AM	16 फरवरी	10:53 PM
22 फरवरी	4:50 AM	24 फरवरी	3:26 AM
04 मार्च	6:41 PM	06 मार्च	12:05 AM
14 मार्च	8:13 AM	15 मार्च	6:24 AM
22 मार्च	3:32 PM	24 मार्च	1:22 PM

कर-पंचक के विषय में जानकारी :- हस्त, चित्र, स्वात, विशाख, अनुराधा यह पांच नक्षत्र वाली तिथियाँ करपंचक कहलाती है। यह पांच नक्षत्र प्राय: हर काम के लिए उत्तम माने जाते है।

सूचना :- यदि जातक मिलाप करवाना हो तो हमारे यहां जन्म पत्रिकाओं (टिकनियो) का मिलान काश्मीरी रीति के अनुसार आधुनिकतम कम्प्यूटर प्रणाली से किया जाता है। अधिक जानकारी के लिए हमारे कार्यालय संचालक ज्योतिषी सुनीत से दूरभाष **2555064, 2552625** से सम्पर्क करें ।

ईस्वी 2022-23 के लिए

ग्रह संचार

सूर्य का राशि संचार

दिनांक	राशि	प्रवेश समय
14 अप्रेल	मेष	8:41 AM
15 मई	वृष	5:29 AM
15 जून	मिथुन	12:03 PM
16 जुलाई	कर्कट	10:56 PM
17 अगस्त	सिंह	7:23 AM
17 सितम्बर	कन्या	7:21 AM
17 अक्टूबर	तुला	7:22 PM
16 नवम्बर	वृश्चिक	7:14 PM
16 दिसम्बर	धनु	9:58 AM
14 जनवरी 2023	मकर	8:45 PM
13 फरवरी	कुम्भ	9:44 AM
15 मार्च	मीन	6:34 AM

भौम का राशि संचार

(विक्रमी 2079 के आरम्भ मकर में भौम)

दिनांक	राशि	प्रवेश समय
7 अप्रेल	कुम्भ	3:15 PM
17 मई	मीन	9:32 AM
27 जून	मेष	5:39 AM
10 अगस्त	वृष	9:10 PM
16 अक्टूबर	मिथुन	6:34 AM
30 अक्टूबर	वक्री भौम	6:54 PM
13 नवम्बर	वृष (वक्री)	8:52 PM
12 जनवरी	मार्गी भौम	2:25 AM
12/13 मार्च	मिथुन	5:02 AM

बुध का राशि संचार

(विक्रमी 2079के आरम्भ मीन में बुध)

दिनांक	राशि	प्रवेश समय
8 अप्रेल	मेष	11:58 AM
24 अप्रेल	वृष	12:20 AM
10 मई	वक्री बुध	5:16 PM
3 जून	मार्गी बुध	1:29 PM
2 जुलाई	मिथुन	9:42 AM
16 जुलाई	कर्कट	12:10 AM
31 जुलाई	सिंह	3:44 AM
20 अगस्त	कन्या	2:05 AM
10 सितम्बर	वक्री बुध	9:07 AM
2 अक्टूबर	मार्गी बुध	2:35 PM
26 अक्टूबर	तुला	1:47 PM
13 नवम्बर	वृश्चिक	9:19 PM
3 दिसम्बर	धनु	6:47 AM
27 दिसम्बर	मकर	5:10 AM
29 दिसम्बर	वक्री बुध	3:01 PM
30 दिसम्बर	धनु	10:07 PM
18 जनवरी	मार्गी बुध	6:42 PM
7 फरवरी	मकर	7:28 AM
27 फरवरी	कुम्भ	4:46 PM
16 मार्च	मीन	10:47AM

गुरु का राशि संचार

(विक्रमी 2079 के आरम्भ कुम्भ में गुरु)

दिनांक	राशि	प्रवेश समय
13 अप्रेल	मीन	3:48 PM
28 जुलाई	वक्री गुरु	2:09 AM
23 नवम्बर	मार्गी गुरु	4:27 AM

शुक्र का राशि संचार

(विक्रमी 2079 के आरम्भ कुम्भ में शुक्र)

दिनांक	राशि	प्रवेश समय
27 अप्रेल	मीन	6:16 PM
23 मई	मेष	8:26 PM
18 जून	वृष	8:15 AM
13 जुलाई	मिथुन	10:50 AM
6 अगस्त	कर्कट	5:20 AM
31 अगस्त	सिंह	4:18 PM
24 सितम्बर	कन्या	9:03 PM
18 अक्टूबर	तुला	9:38 PM
11 नवम्बर	वृश्चिक	8:08 PM
5 दिसम्बर	धनु	5:56 PM
29 दिसम्बर	मकर	4:03 PM
22 जनवरी	कुम्भ	3:53 PM
15 फरवरी	मीन	8:01 PM
12 मार्च	मेष	8:27 AM

शनि का राशि संचार

दिनांक	राशि	प्रवेश समय
29 अप्रेल	कुम्भ	7:52 AM
4 जून	वक्री शनि	3:12 AM
12 जुलाई	मकर	2:52 PM
23 अक्टूबर	मार्गी शनि	9:38 AM
17 जनवरी	कुम्भ	6:02 PM

राहु व केतु का राशि संचार

(विक्रमी 2079 के आरम्भ में वृष में राहु व वृश्चिक में केतु)

दिनांक	राशि	प्रवेश समय
12 अप्रेल	मेष में राहु	3:29 PM
12 अप्रेल	वृष में केतु	3:29 PM

हमारी संस्कृति के प्रतीक :-

'शुचि' का क्या अर्थ है?

धार्मिक दृष्टि से शुचि का अर्थ पवित्रता से है। अपवित्र वस्तु को अशुचि कहते है। अन्तः करण की पवित्रता का अर्थ शुचिता से है जब कि बाह्य जगत की वस्तु को स्वच्छता से तुलना करते है। यहाँ कहने का तातर्प्य यह हैं कि हमें स्वच्छता के अतिरिक्त अपने घर में शुचि व अशुचि का भी ध्यान रखना चाहिए।

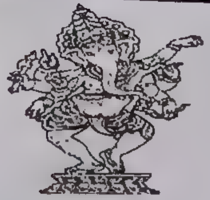

ईस्वी 2022–23

विक्रमी 2079 में हर शुभ कार्य के लिए

निषेध समय

सिंह में सूर्य (स्यंघ)	17 अगस्त 2022	से	17 सितम्बर 2022
श्राद्ध पक्ष (पितृ पक्ष)	10 सितम्बर 2022	से	25 सितम्बर 2022
शुक्र अस्त	30 सितम्बर 2022	से	22 नवम्बर 2022
पौष मास (धनु में सूर्य)	16 दिसम्बर 2022	से	14 जनवरी 2023
चैत्र कृष्ण पक्ष	8 मार्च 2023	से	21 मार्च 2023

इस वर्ष भारत के अलग अलग प्रान्तों में दिखाई देने वाले ग्रहणों की तिथियाँ :-

कार्तिक कृष्णपक्ष अमावसी 25 अक्टूबर 2022 भौमवार, ग्रस्तास्त खण्डग्रास सूर्य ग्रहण (Partial Solar Eclipse 2022, October 25, Tuesday)

कार्तिक शुक्लपक्ष पूर्णिमा 8 नवम्बर 2022 भौमवार, खग्रास चन्द्र ग्रहण (Total Lunar Eclipse 2022 Nov 08, Tuesday)

विक्रमी 2079 के दस अधिकारी

धातुओ के स्वामी
शनि

वर्ष का राजा
शनि

फलों का स्वामी
भौम

रक्षा मन्त्री
बुध

रस का स्वामी
चन्द्रमा

वर्ष का नाम
नल

राहिणी का वास
समुद्र

वर्ष का मन्त्री
गुरु

वर्षा का स्वामी
बुध

धन का स्वामी
शनि

वर्ष का वाहन
घोडा

धान्य का स्वामी
शुक्र

आषाढ़ नवमी
8 जुलाई शुक्रवार

विक्रमी 2079 की भविष्यवाणी

''नल'' नामक नववर्ष के आगमन का फल शुभफलदायक नहीं माना गया है। नवसंवत्सर 2079 में सूर्य की तबाही धरती के क्षतिग्रस्त होने का कारण बनेगी। जलवायु परिवर्तन से युद्ध और टकराव की स्थिति पैदा होगी। रिसोर्स के लिए दुनिया में झगड़े शुरू होंगे और लोग पलायन करेंगे। 2021 का यह साल भी कोरोना महामारी के नाम रहा लेकिन नए साल (2022-23) में पूरा विश्व इस महामारी से मुक्ति की उम्मीद कर रहा है। वहीं, कुछ लोगों के मन में यह डर भी है कि आने वाले साल में कहीं दूसरी आपदाओं का सामना न करना पड़े।

जगत् लग्न कुण्डली

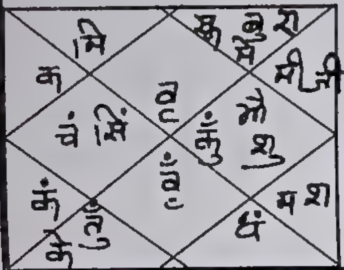

नव वर्ष प्रवेश कुण्डली

पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा 365 दशमलव 25 दिन यानि 365 दिन से कुछ घंटे अधिक के समय में पूरा करती है, जिसे ज्योतिष में एक नक्षत्र वर्ष कहा जाता है। जिस प्रकार व्यक्ति विशेष की वर्ष कुंडली से उसके आने वाले एक वर्ष का फलित करते हैं, ठीक उसी तरह विश्व या किसी राष्ट्र की वर्ष कुंडली बनाकर नियमों के अनुसार उस राष्ट्र के एक वर्ष का भविष्य कथन किया जाता है। नवसंवत्सर 2079 वर्ष कुंडली में राहु कुंडली के बारहवें भाव में विराजमान होने और केतु के छठे भाव में होने से आंशिक रूप से शेषनाग कालसर्प योग की छाया का प्रभाव रहेगा। वहीं चंद्रमा का इनके अक्ष से बाहर रहने के परिणामस्वरूप कालसर्प योग भंग होगा किन्तु चन्द्र के प्रभाव में कुछ कमी रहेगी, जिससे जनता को कहीं न कहीं मानसिक उलझनों का शिकार हो सकती है आपसी तनाव भी बढ़ सकता है। इसके अलावा राहु कुंडली के बारहवें भाव में विराजमान होने से हानि और व्यय का भाव का संकेत है, वहीं केतु के छठे ऋण, रोग और शत्रु के भाव में विराजमान होने से इसके अशुभ प्रभावस्वरुप देश की जनता को अपने देश में छुपे हुए गुप्त शत्रुओं से भी लड़ना पड़ेगा। परिणामस्वरूप खाद्यान्न, पेट्रोल, डीजल, रसोई गैस, दवाएं जैसी रोजमर्रा की वस्तुओं में महंगाई बढ़ सकती है।

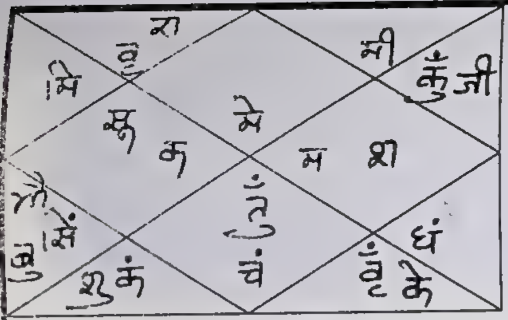

75वें स्वतंत्र दिवस की कुण्डली

विक्रमी 2079 का

भारत

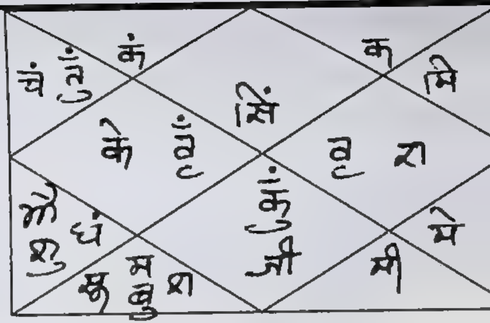

73वें गणतन्त्र दिवस की कुण्डली

स्वतन्त्र भारत 75वें स्वतंत्र भारत की कुण्डली में मेष लग्न में प्रवेश करेगा, लग्न का स्वामी भौम पंचम भाव में बुध के साथ है। 7वे भाव में चन्द्रमा तथा आठवे भाव में केतु है, नववर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार वर्ष के दस पदा अधिकारों में से केवल दो (3) अधिकार शुभग्रहों को और आठ (7) अधिकार क्रूर ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। राजा शनि तथा मन्त्री का पद गुरु को प्राप्त हुए हैं। जिसके परिणाम स्वरूप चोर बाज़ारी, लूटमार, भ्रष्टाचार एवं हिसंक घटनायें घटित होंगी, मूल्यों में अत्याधिक वृद्धि व बुनयादी समस्याओं के अभाव के कारण जनता में आक्रोश एवं असंतोष की भावना उत्पन्न होगी। राजनैतिक पार्टियों में आपसी टकराव एवं परस्पर अरोप एवं प्रत्यारोपों के कारण भारतदेश की स्थिति विशेष संघर्ष पूर्ण एवं चुनौतियों से भरी होगी। आतंकी हमलों एवं प्राकृतिक आपदाओं से जन, धन, सम्पदा आदि की हानि होने के योग हैं। आसामयिक वर्षा एवं प्राकृति प्रकोपों के कारण खाद्यपदार्थों एवं कृषि के उत्पादनों में भारी क्षति होने की सम्भावना है। सीमावर्ती क्षेत्रों में पाकिस्तान, चीन आदि देश भारत की सीमाओं की अतिक्रमण करने में पीछे नहीं हटेंगे। नव वर्ष व जगत् की कुण्डली में कालसर्प दोष के होने से भी 2022 राज्यों के विधानसभा चुनावों में भी सत्ता दल को स्पष्ट वहुमत प्राप्त करने में बहुत संर्घष करना पडेगा।

भारत इंजीनियरिंग, दूरसंचार, कम्प्यूटर, परमाणु, परिवहन, अन्तराष्ट्रीय व्यापार आदि क्षेत्रों उल्लेखनीय प्रगति करेगा। परन्तु खाद्यपदार्थों में आकाश को छूती महंगाई, लूटमार की वारदातें, नेता तथा प्रशासक वर्ग का लूटपाट के कारण जनता में ज़बरदस्त आक्रोश व असंतोष का लावा फूट पडेगा। भारत के उत्तरपूर्वीय क्षेत्रों में भूकम्प, भूस्खलन, बाढ आदि प्राकृतिक प्रकोपों के कारण काफी जन, धन व सम्पदा की हानि होगी। भारत को पडौसी देशों के सैन्य गतिविधियों से चौकस रहने की आवश्यकता है। आतंकवादी ग्रुप (पाकसमर्थित) भारतीय सीमाओं का अतिक्रमण करके विध्वंसक घटनाओं को अंजाम देते रहेंगे।

जम्मू काशमीर

जम्मू काशमीर राज्य की प्रभावराशि तुला है। यह वर्ष जम्मू व काश्मीर राज्य के लिए विशेष रूप से संघर्ष पूर्ण एवं चुनौतियों से भरा वर्ष रहेगा। जम्मू काशमीर का वातावरण आतंकवादी व भारत विरोधी दल राज्य का वातावरण अस्तव्यस्त करते रहेंगे व विकास के कार्यों में रुकावटें पैदा करेंगे। सन् 2022 ईस्वी के उत्तरार्द्ध में अनेक चुनौतियों के बावजूद सफल चुनावों को देखते हुए जम्मू व काश्मीर विश्व राजनीति में ध्यानाकर्षण का केन्द्र बनेगा।

फलानि ग्रहसंचारेण सूचयन्ति मनीषिणः।
को वक्ता तारतम्यस्य वेधसं विना ।।

Those who know Astrology can only indicate in a way what will take place in future. Who else except the Creator BRAHMA, can say with certainty what will definitely happen?

कार्तिक शुक्लपक्ष अष्टमी, गुरुवार, दिनांक 11 नवम्बर 2021

सम्पादक

ग्रहण विवरण सम्वत् विक्रमी 2079

विक्रमी. सं. 2079 (सन् इस्वी 2022-23) में भूमण्डल पर चार ग्रहण घटित होंगे। इन चार ग्रहणों में से केवल दो ही ग्रहण भारत में दिखाई देंगे।

1. खण्डग्रास सूर्य ग्रहण	1 मई 2022
2. खग्रास चन्द्रग्रहण	16 मई 2022
3. खण्डग्रास सूर्य ग्रहण	25 अक्टूबर 2022✓
4. खग्रास चन्द्र ग्रहण	8 नवम्बर 2022✓

केवल 25 अक्टूबर 2022 खण्डग्रास सूर्य ग्रहण व 8 नवम्बर 2022 खग्रास चन्द्र ग्रहण भारत में दिखाई देंगे। अत: भारत में 1 मई 2022 का सूर्य ग्रहण व 16 मई 2022 चन्द्र ग्रहण के लिये धार्मिक कृत्य, सूतक, स्नान, दान आदि का विचार नहीं होगा।

खण्डग्रास सूर्य ग्रहण 25 अक्टूबर 2022:

(Partial Solar Eclipse 2022 October 25)

यह ग्रहण कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावसी भौमवार को दिन में घटित होगा। भारत के अतिरिक्त यह चन्द्र ग्रहण दक्षिण अफरीका के मध्य व पूर्वी क्षेत्रों में, यूरोप, पश्चिमी एशिया, चैना के उत्तरी प्रान्तों व उत्तरी हिन्द महासागर में भी यह ग्रहण दिखाई देगा। अपितु अमरीका, केनडा, अलास्का, आस्ट्रेलिया, सिंगापोर, न्यूज़िलेण्ड आदि देशों में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। इस ग्रहण का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल निम्न प्रकार से भारतीय समयानुसार होगा।

ग्रहण स्पर्श	:	2:29:17 दिन	25 अक्टूबर भौमवार
ग्रहण मध्य	:	4:30:21 दिन	25 अक्टूबर भौमवार
ग्रहण समाप्त	:	6:31:21 दिन	25 अक्टूबर भौमवार

नोट:- यह ग्रहण सूर्य अस्त के पश्चात् नही दिखाई देगा, अतः सूर्य अस्त के साथ ही यह ग्रहण भारत के कुछ प्रमुख नगरों में समाप्त होगा। इस सूर्य ग्रहण के प्रमुख भारत के नगरों के प्रारम्भ, समाप्ति काल भारतीय समयानुसार निम्न है।

नगर	ग्रहण आरम्भ	ग्रहण समाप्त
जम्मू	4:17 PM	5:45 PM
दिल्ली	4:29 PM	5:39 PM
आगरा	4:33 PM	5:37 PM
चन्ढ़ीगढ	4:24 PM	5:38 PM
पूना	4:51 PM	6:03 PM
मुम्बई	4:49 PM	6:06 PM
बैगलरू	5:12 PM	5:53 PM
हैदराबाद	5:59 PM	5:45 PM
कोलकत्ता	4:52 PM	5:01 PM

यह ग्रहण तुला राशि में घटित होगा। अतः तुला राशि के अतिरिक्त यह ग्रहण मेष, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि वाले जातकों पर अपना कुप्रभाव डालेगा। परन्तु कर्कट, सिंह व धनु राशि वाले जातकों के लिए यह ग्रहण कार्य सिद्धि व धन लाभ का सूचक सिद्ध होगा।

(Partial Solar Eclipse 2022 October 25)

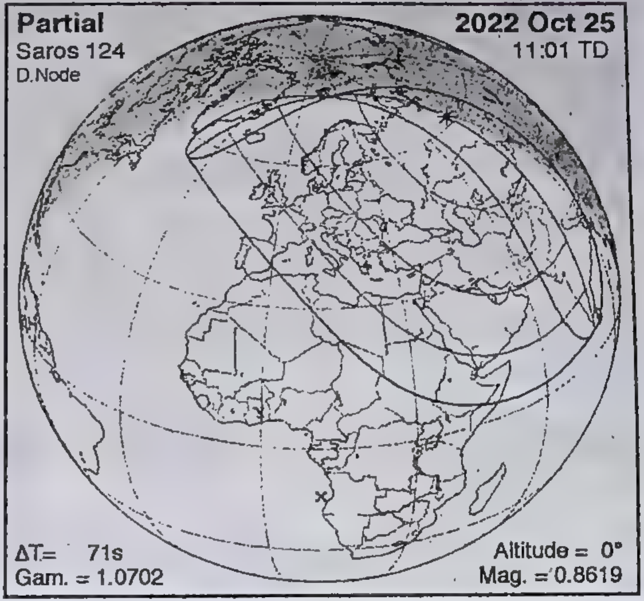

इस ग्रहण का सूतक: 24 व 25 अक्टूबर की रात्रि को रात के 2:29 AM (!.S.T) से आरम्भ होगा।

खग्रास चन्द्रग्रहण 8 नवम्बर 2022 भौमवार:

(Total Lunar Eclipse 2022 Nov 08, Tuesday)

यह ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्र ग्रहण कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा भौमवार को 2:40 दिन से आरम्भ होकर 6:19 सायं तक ग्रस्तोदय रूप में दिखाई देगा अर्थात् भारतवर्ष के सभी शहरों में यह ग्रहण केवल चन्द्रोदय के पश्चात् ही सायं काल में दिखाई देगा। अतः इन सभी शहरों में धार्मिक कृत्य, सूतक आदि का विचार अवश्य होगा।

यह ग्रहण भरण नक्षत्र व मेष राशि में घटित होगा। अतः मेष राशि के अतिरिक्त यह ग्रहण वृष, कर्कट, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक व मीन राशि वाले जातकों पर अपना कुप्रभाव डालेगा।

इस ग्रहण का सूतक काल 8 नवम्बर 2022 भौमवार को प्रातःकाल सूर्योदय 6:55AM पर आरम्भ हागा। ग्रहण आरम्भ होते ही दूध, दही, आचार, घी, तेल जैसे खाद्य पदार्थों में कुशा तृण (दर्भ तुज) रखनी चाहिए। एसा शास्त्र सम्मत भी है और विज्ञान सम्मत भी कि ग्रहण के समय इस दर्भ के तिनके से खाद्य पदार्थ ग्रहण से दूषित नहीं होते। बाल, वृद्ध, रोगियों को छोडकर अन्य धर्म परायण मनुष्यों को इस काल में भाजन, छलकपट, झूठ आदि निषिद्ध कार्यों को त्याग कर स्नान, पूजा, हवन, दानादि शुभ कार्य करने चाहिए जिस से उस ग्रहण का कुप्रभाव उनके लिए कुछ सीमा तक कम हो सकता है।

इस ग्रहण का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल निम्न प्रकार से भारतीय समयानुसार होगा।

ग्रहण प्रारम्भ	:	02:39:57 दिन	8 नवम्बर भौमवार
कंकण प्रारम्भ	:	03:46:15 दिन	8 नवम्बर भौमवार
ग्रहण मध्य	:	04:29:12 दिन	8 नवम्बर भौमवार
कंकण समाप्त	:	05:12:16 सायं	8 नवम्बर भौमवार
ग्रहण समाप्त	:	06:19:01 सायं	8 नवम्बर भौमवार

इस काल में भगवान की मूर्ति को ना छुएं और किसी मंदिर के दर्शन करने ना जाएं। हो सके तो अपने घर के मंदिर के कपाट को बंद कर दें।

(Total Lunar Eclipse 2022 Nov 08, Tuesday)

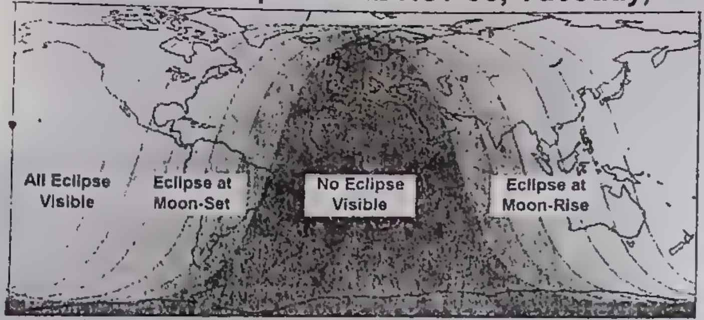

नगर	ग्रहण आरम्भ (चन्द्रोदय)	ग्रहण अवधि Duration
जम्मू	5:31 PM	0:48 Hrs
दिल्ली	5:29 PM	0:50 Hrs
आगरा	5:27 PM	0:52 Hrs
अमृतसर	5:33 PM	0:46 Hrs
चन्ढ़ीगढ	5:26 PM	0:53 Hrs
पूना	5:58 PM	0:21 Hrs
मुम्बई	6:01 PM	0:18 Hrs
बैंगलरू	5:50 PM	0·29 Hrs
हैदराबाद	5:40 PM	0:39 Hrs
कोलकत्ता	4:52 PM	1:27 Hrs

आवश्यक जानकारी:-

ग्रहण के दौरान सूतक काल को महत्वपूर्ण माना गया है। लेकिन शास्त्रों के अनुसार सूतक काल तभी प्रभावी माना जाता है जब पूर्ण ग्रहण की स्थिति हो। चंद्र ग्रहण जब पूर्ण होता है तो सूतक काल 9 घंटे पूर्व से आरंभ होता है वहीं जब सूर्य ग्रहण होता है तो सूतक काल 12 घंटे पूर्व आरंभ होता है। सूतक काल में शुभ कार्य नहीं किए जाते हैं। इस दौरान भगवान का स्मरण करना चाहिए। ग्रहण से पहले स्नान आदि अवश्य कर लें व अपने इष्ट देव या किसी भी भगवान की पूजा अर्चना आप कर सकते हैं। सूर्य य चंद्र ग्रहण के बाद घर को साफ करके गंगाजल का छिड़काव करना शुभ होता है। किसी भी ग्रहण के दौरान खानेपीने की चीज पर तुलसी का पत्ता अवश्य रख दें।

चंद्र ग्रहण काल में गर्भवती महिलाएं अपने पास नारियल का गोला अवश्य रखें। चंद्र ग्रहण के दौरान शुभ कार्य करना वर्जित माना गया है। गर्भवती महिलाओं को घर से बाहर निकलने से बचना चाहिए।

साढ़-सत्ती

धनु **मकर** **कुम्भ** **मीन**

ज्योतिष तत्व प्रकाश के अनुसार- **द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः।**

सार्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुःखैर्युतो भवेत्।।

जन्म राशि (चन्द्रराशि) से गोचर में जब शनि द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थानों में भ्रमण करता है, तो साढ़े-सात वर्ष के समय को शनि की साढ़-सती कहते हैं। भारतीय ज्योतिष के अनुसार साढसत्ती शुभ, अशुभ दोनों फल देने वाली होती है। जब शनि जन्मपत्री (ज़ातुक) में अच्छी स्थिति में हो यानी तीसरे, छटे, ग्यारहवें भाव में हो तो शनि साढेसात सालों में मालामाल कर देता है। अथवा किसी बडी पदवी पर पहुँचाता है परन्तु जब शनि अच्छी स्थिति में न हो यानी 1, 2, 4, 7, 8, 12 वें भाव में हो तो शनि शान्ति का दम नहीं लेने देता तथा विभिन्न प्रकार की अप्रिय घटनायें घटित होती हैं।

साढ़सती

✓ ✓ ✓ ✓

धनु मकर कुम्भ मीन

धनु राशि धनु राशि वांले जातकों को साढ़सती पांव पर उत्तरती हुई अर्थात् अन्तिम चरण में चहोगी। घरेलू परेशानियां, मानसिक तनाव, राजदरबार सम्बन्धी परेशानियां व संघर्ष अधिक रहेगा। परन्तु वर्ष के अन्त में धन प्राप्ति व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। किसी मंगल कार्य पर धन का खर्च होगा, मान सम्मान में वृद्धि का योग है। धनु राशि की साढ़सती 29-04-2022 को समप्त होगी।

मकर राशि मकर राशि वालों की साढ़सती 26 जनवरी 2017 को आरम्भ हुई थी तथा 29 मार्च 2025 को समाप्त होगी। मानसिक तनाव व क्रोध अधिक रहेगा। काफी दौडधूप के पश्चात आय के स्रोत खुलेंगे किन्तु आय की अपेक्षा व्यय अधिक रहेगा। शारीरिक कष्ट व चोट आदि का भय रहेगा। प्रापर्टी सम्बन्धित कार्यो में संघर्ष या रूकावट, बनते कार्यो में रूकावटों के पश्चात् ही सफलता प्राप्त होगी।

कुम्भ राशि कुम्भ राशि वालों की शनि साढ़सती मध्य अवस्था में होने के कारण उन्हे अत्यन्त संघर्षमय स्थितियों का सामना करना पडेगा। बनते कार्यो में अडचनें एवं विलम्ब होना, स्वास्थ्य सम्बन्धी विकार, मानसिक तनाव, क्रोध व तनाव अधिक रहेगा। कुम्भ राशि की साढसती 24-01-2020 को आरम्भ हुई थी तथा 03 जून 2027 को समाप्त होगी।

मीन राशि मीन राशि वाले जातकों की साढ़सत्ती 29 अप्रेल 2022 से आरम्भ होगी। व्यवसयिक क्षेत्रों में संघर्ष दौडधूप एवं अडचनों के कारण गुज़ारे लायक धन प्राप्ति का योग है। घरेलू समस्यायें व उलझनें, आर्थिक संकट व्यापार में उत्तार चढ़ाव, शरीरिक कष्ट आपकी अशान्ति का कारण बन सकता

है। वाहन व सुखसाधनों पर धन बहुत खर्च होगा। वर्ष के उत्तरार्ध में आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होने के संकेत हैं किन्तु लेनदेन के मामले में सावधानी बरतें। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी क्रोध एवं उत्तेजना से कुछ बनते कार्य बिगड सकते हैं। सघेसम्बन्धियों से मतभेद रहेंगे, वर्ष के उत्तरार्ध में धार्मिक कार्यो की ओर रूचि रहेगी।

ह्रीं नीलां जनसमाभासं, रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छाया मार्त्तण्ड सं भूतं, तं नमामि शनैश्चरम् ।।

ढैय्या मिथुन✓ कर्कट✓ तुला✓ वृश्चिक✓

मिथुन व तुला :- मिथुन व तुला राशि वाले जातकों की ढैय्या यूँ तो 29 अप्रेल 2022 को समाप्त होगी परन्तु शनि के वक्री में होने से ढैय्या का असर 17 जनवरी 2023 तक रहेगा। घरेलू परेशानियों के साथ साथ, मानसिक तनाव अधिक रहेगा। वाहन व सुखसाधनों पर धन बहुत खर्च होगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी क्रोध एवं उत्तेजना से कुछ बनते कार्य बिगड सकते हैं। सघेसम्बन्धियों से मतभेद रहेंगे, वर्ष के उत्तरार्ध में धार्मिक कार्यो की ओर रूचि रहेगी।

कर्कट व वृश्चिक:- कर्कट व वृश्चिक राशि वाले जातकों की ढैय्या 29 अप्रेल 2022 से आरम्भ होगी परन्तु ढैय्या का कुप्रभाव 17 जनवरी 2023 के बाद से आरम्भ होगा। इस अवधि में गृहक्लेश, सगेसम्बन्धियों से विरोध शारीरिक कष्ट, आय की अपेक्षा व्यय अधिक, सन्तान पक्ष से चिन्ता, मानसिक परेशानियों में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य के विषय में सावधानी बरतने की आवश्यकता।

''कल्याणीं प्रददाति वै रविसुतो राशश्चतुर्थाष्टमें।
व्याधिं बन्धुविरोधं विदेशगमनंच, कलेशं च चिन्ताधिकम्।।

साढ-सत्ती तथा ढैया के उपाय

शनि की साढेसत्ती या ढैया के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए निम्नलिखित उपाय करें-

1. मन्त्र (क) महामृत्युंजय मंत्र का सवा लाख जप (नित्य 10 माला, 125 दिन) करें-

ॐ त्रयम्बकम् यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्द्धनं, उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योमुक्षीय मामृतात्।

(ख) शनि के निम्नदत्त मंत्र का 21 दिन में 23 हजार जप करें-

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्त्रवन्तु नः। ॐ शं शनैश्चराय नमः।।

(ग) पौराणिक शनि मंत्र

ॐ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम। छाया मार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

2. स्तोत्र-शनि के नित्म्नलिख्सात स्तोत्र का 11 बार पाठ करें या दशरथ कृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः। सौरि शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।

तानि शनि-नामानि जपेदश्वत्थसन्निधौ। शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद् भविष्यति।।

साढ-सत्ती पीडानाशक स्तोत्र, पिप्लाद उवाच-

नमसते कोणसेस्थय पिंड्ःगलाय नमोस्तते। नमस्ते बभुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते।।

नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमंसज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।

नमस्ते यमदसंज्ञाय शनैश्वर नमोस्तुते। प्रसाद कुरू देवेश दीनस्य ग्रणस्य च।।

3. रत्न / धातु

शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल या नाव की सतह की कील का बना छल्ला मध्यमा में धारण करें।

4. व्रत

शनिवार का व्रत रखें। व्रत के दिन में दूध, लस्सी तथा फलों के रस ग्रहण करें। हर शनिवार प्रातः काल में पक्षियों को *(तहर)* पीले चावल डाला करें। धर के किसी भी सदस्य को वह तहर न खिलाए। सायंकाल हनुमान जी का दर्शन करें या किसी मन्दिर जाकर हनुमान जी की आरती करें।

विक्रमी 2079 के लिए आय-व्यय चक्र (आमदनी खर्च चक्र)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्कट	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	8	2	8	2	5	8	2	8	5	14	14	5
व्यय	5	14	11	8	5	11	14	5	11	11	11	11

लाभ और व्यय के अंकों के जोड से एक कम करके 8 से भाग दें, भाग देने के पश्चात यदि....

1 बाकी बचे तो यह वर्ष हर प्रकार से लाभदायक मनोवांछित योजनाए सफल होंगी, धनलाभ में वृद्धिहोगी, विद्यार्थी वर्ग को सफलता प्राप्त होगी मनोरंजक कार्यो की ओर प्रवृति बढेगी।

2 बचे तो धनलाभ मध्यम, किसी मंगलकार्य पर धन खर्च होगा, मान आदर में वृद्धि, परिश्रम से सफलता, व्यापार से लाभ प्राप्त होगा।

3 बचे तो लाभ बहुत कम, व्यय अधिक रहेगा, संघर्ष एवं भागदौड अधिक, पारिवारिक चिन्ता एवं समस्यायें स्वसस्थ्य के विषय में सावधानी बरतें, चोट आदि की सम्भावना।

4 बनते कार्यमें विघ्न एवं समस्याएं उत्पन्न होंगी, रोग आदि पर धन का खर्च, आर्थिक एवं घरेलू उलझनों से मानसिक तनाव रहेगा।

5 बाकी बचे तो आय कम व व्यय अधिक बनते कार्यो में विघ्न उत्पन्न होंगे, परिवार के सदस्ययों के साथ मतभेद, स्वभाव में तेज़ी रहेगी।

6 बाकी बचे तो वर्ष आपके स्वप्नों एवं भाग्योन्नति में सहायक सिद्ध होगा, मानप्रतिष्ठा एवं आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी, विद्यार्थियों के लिये सफलता प्रदान करने वाला वर्ष होगा, शुभ कार्यो पर धनका खर्च होगा।

7 बाकी बचे तो व्यापार व राजदरबार से आर्थिक लाभ, आर्थिक साधनों में वृद्धि, ज़मीन जायदाद आदि कार्यो पर धन का खर्च, मनोवांछित योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी। विद्यार्थी वर्ग को सफलता प्राप्त होगीं।

यदि 8 अर्थात् 0 बचे तो मानसिक परेशानियाँ, पारिवारिक परेशानी, राज्यदरबार से अशान्ति एवं स्थान परिवर्तन का योग।

राहु काल के विषय में जानकारी

सूर्य उदय से सूर्य अस्त के मध्य प्रतिदिन लगभग 01 घण्टा 30 मिनट की अवधि राहु काल मानी गयी है। हमारे ऋषि-मुनियों ने राहुकाल में कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ करने से मना किया है। राहुकाल में किसी भी शुभ कार्य का प्रारम्भ अशुभ सिद्ध होता है। जैसे सूर्य ग्रहण के दिन राहु सूर्य को ग्रस कर ग्रहण में बदल देता है वैसे ही राहुकाल में प्रारम्भ किये गये शुभ कार्य को ग्रहण लग जाता है, अर्थात् शुभता का परिणाम अशुभ होता है। इन सभी बातों को सार्वजनिक तौर पर सिद्ध कर इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि राहुकाल में किसी भी शुभ कार्य का प्रारम्भ नहीं करना चाहिए, जो कार्य पहले से चल रहा है, वह चलता रहे उसमें कोई कमी नहीं आती। बस शुरुवात नहीं करनी चाहिए। हमारे दक्षिण व पश्चिम भारत के लोग इस राहुकाल का विशेष ध्यान रखकर अपने शुभ कार्यों को प्रारम्भ करते हैं। राहुकाल का समय और अवधि निकालने के लिये हम सबसे पहले सूर्योदय और सूर्यास्त निकालकर दिनमान निकाल लेते हैं और दिनमान को आठ बराबर भागों में बांट लेते हैं। एक हिस्सा लगभग 1 घण्टा 30 मिनट का होगा। अब रविवार से शनिवार तक (सातों दिन) क्रमशः 8वां, 2रा, 7वां, 5वां, 6ठा, 4था और 3रा भाग राहुकाल होगा। इस प्रकार प्रतिदिन का राहुकाल निकाल कर आप अपने शुभ कार्यों के प्रारम्भ को सुनिश्चित कर सकते हैं। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी हमने विक्रमी 2079 सम्वत् (ईस्वी 2022-23) का राहु काल जम्मू के रेखंश व अक्षांश पर गणित कर प्रकाशित किया है अतः अपने सुजाव हमें vijayeshwer@yahoo.com पर अवश्य बेजें।

सम्पादक

RAHU KAAL

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
1-अप्रेल-22	शुक्र	11:02 AM	से	12:35 PM
2-अप्रेल-22	शनि	9:28 AM	से	11:01 AM
3-अप्रेल-22	रवि	5:16 PM	से	6:50 PM
4-अप्रेल-22	सोम	7:52 AM	से	9:26 AM
5-अप्रेल-22	भौम	3:42 PM	से	5:17 PM
6-अप्रेल-22	बुध	12:34 PM	से	2:08 PM
7-अप्रेल-22	गुरु	2:08 PM	से	3:43 PM
8-अप्रेल-22	शुक्र	10:58 AM	से	12:33 PM
9-अप्रेल-22	शनि	9:22 AM	से	10:57 AM
10-अप्रेल-22	रवि	5:19 PM	से	6:55 PM
11-अप्रेल-22	सोम	7:45 AM	से	9:21 AM
12-अप्रेल-22	भौम	3:44 PM	से	5:20 PM
13-अप्रेल-22	बुध	12:32 PM	से	2:08 PM
14-अप्रेल-22	गुरु	2:08 PM	से	3:44 PM
15-अप्रेल-22	शुक्र	10:54 AM	से	12:31 PM
16-अप्रेल-22	शनि	9:17 AM	से	10:54 AM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
17-अप्रेल-22	रवि	5:22 PM	से	7:00 PM
18-अप्रेल-22	सोम	7:38 AM	से	9:15 AM
19-अप्रेल-22	भौम	3:46 PM	से	5:23 PM
20-अप्रेल-22	बुध	12:30 PM	से	2:08 PM
21-अप्रेल-22	गुरु	2:08 PM	से	3:46 PM
22-अप्रेल-22	शुक्र	10:51 AM	से	12:30 PM
23-अप्रेल-22	शनि	9:12 AM	से	10:51 AM
24-अप्रेल-22	रवि	5:26 PM	से	7:05 PM
25-अप्रेल-22	सोम	7:32 AM	से	9:11 AM
26-अप्रेल-22	भौम	3:47 PM	से	5:27 PM
27-अप्रेल-22	बुध	12:29 PM	से	2:08 PM
28-अप्रेल-22	गुरु	2:08 PM	से	3:48 PM
29-अप्रेल-22	शुक्र	10:48 AM	से	12:28 PM
30-अप्रेल-22	शनि	9:08 AM	से	10:48 AM
1-मई-22	रवि	5:29 PM	से	7:10 PM
2-मई-22	सोम	7:26 AM	से	9:07 AM

RAHU KAAL

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
3-मई-22	भौम	3:50 PM	से	5:30 PM
4-मई-22	बुध	12:28 PM	से	2:09 PM
5-मई-22	गुरु	2:09 PM	से	3:50 PM
6-मई-22	शुक्र	10:46 AM	से	12:28 PM
7-मई-22	शनि	9:04 AM	से	10:46 AM
8-मई-22	रवि	5:33 PM	से	7:15 PM
9-मई-22	सोम	7:21 AM	से	9:03 AM
10-मई-22	भौम	3:52 PM	से	5:34 PM
11-मई-22	बुध	12:27 PM	से	2:10 PM
12-मई-22	गुरु	2:10 PM	से	3:52 PM
13-मई-22	शुक्र	10:44 AM	से	12:27 PM
14-मई-22	शनि	9:01 AM	से	10:44 AM
15-मई-22	रवि	5:37 PM	से	7:20 PM
16-मई-22	सोम	7:17 AM	से	9:00 AM
17-मई-22	भौम	3:54 PM	से	5:38 PM
18-मई-22	बुध	12:27 PM	से	2:11 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
19-मई-22	गुरु	2:11 PM	से	3:55 PM
20-मई-22	शुक्र	10:43 AM	से	12:27 PM
21-मई-22	शनि	8:59 AM	से	10:43 AM
22-मई-22	रवि	5:40 PM	से	7:25 PM
23-मई-22	सोम	7:14 AM	से	8:58 AM
24-मई-22	भौम	3:57 PM	से	5:41 PM
25-मई-22	बुध	12:28 PM	से	2:12 PM
26-मई-22	गुरु	2:13 PM	से	3:58 PM
27-मई-22	शुक्र	10:43 AM	से	12:28 PM
28-मई-22	शनि	8:57 AM	से	10:43 AM
29-मई-22	रवि	5:44 PM	से	7:29 PM
30-मई-22	सोम	7:12 AM	से	8:57 AM
31-मई-22	भौम	3:59 PM	से	5:45 PM
1-जून-22	बुध	12:28 PM	से	2:14 PM
2-जून-22	गुरु	2:14 PM	से	4:00 PM
3-जून-22	शुक्र	10:43 AM	से	12:29 PM

RAHU KAAL

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
4-जून-22	शनि	8:57 AM	से	10:43 AM
5-जून-22	रवि	5:47 PM	से	7:33 PM
6-जून-22	सोम	7:11 AM	से	8:57 AM
7-जून-22	भौम	4:02 PM	से	5:48 PM
8-जून-22	बुध	12:29 PM	से	2:16 PM
9-जून-22	गुरु	2:16 PM	से	4:02 PM
10-जून-22	शुक्र	10:43 AM	से	12:30 PM
11-जून-22	शनि.	8:57 AM	से	10:43 AM
12-जून-22	रवि	5:50 PM	से	7:37 PM
13-जून-22	सोम	7:10 AM	से	8:57 AM
14-जून-22	भौम	4:04 PM	से	5:51 PM
15-जून-22	बुध	12:31 PM	से	2:18 PM
16-जून-22	गुरु	2:18 PM	से	4:05 PM
17-जून-22	शुक्र	10:44 AM	से	12:31 PM
18-जून-22	शनि	8:58 AM	से	10:45 AM
19-जून-22	रवि	5:52 PM	से	7:39 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
20-जून-22	सोम	7:11 AM	से	8:58 AM
21-जून-22	भौम	4:06 PM	से	5:53 PM
22-जून-22	बुध	12:32 PM	से	2:19 PM
23-जून-22	गुरु	2:19 PM	से	4:06 PM
24-जून-22	शुक्र	10:46 AM	से	12:33 PM
25-जून-22	शनि	8:59 AM	से	10:46 AM
26-जून-22	रवि	5:54 PM	से	7:41 PM
27-जून-22	सोम	7:13 AM	से	9:00 AM
28-जून-22	भौम	4:07 PM	से	5:54 PM
29-जून-22	बुध	12:34 PM	से	2:20 PM
30-जून-22	गुरु	2:21 PM	से	4:07 PM
1-जुलाई-22	शुक्र	10:47 AM	से	12:34 PM
2-जुलाई-22	शनि	9:01 AM	से	10:48 AM
3-जुलाई-22	रवि	5:54 PM	से	7:41 PM
4-जुलाई-22	सोम	7:15 AM	से	9:02 AM
5-जुलाई-22	भौम	4:08 PM	से	5:54 PM

RAHU KAAL

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
6-जुलाई-22	बुध	12:35 PM	से	2:21 PM
7-जुलाई-22	गुरु	2:21 PM	से	4:08 PM
8-जुलाई-22	शुक्र	10:49 AM	से	12:35 PM
9-जुलाई-22	शनि	9:03 AM	से	10:49 AM
10-जुलाई-22	रवि	5:54 PM	से	7:40 PM
11-जुलाई-22	सोम	7:18 AM	से	9:04 AM
12-जुलाई-22	भौम	4:07 PM	से	5:53 PM
13-जुलाई-22	बुध	12:36 PM	से	2:22 PM
14-जुलाई-22	गुरु	2:22 PM	से	4:07 PM
15-जुलाई-22	शुक्र	10:51 AM	से	12:36 PM
16-जुलाई-22	शनि	9:06 AM	से	10:51 AM
17-जुलाई-22	रवि	5:52 PM	से	7:37 PM
18-जुलाई-22	सोम	7:21 AM	से	9:06 AM
19-जुलाई-22	भौम	4:07 PM	से	5:51 PM
20-जुलाई-22	बुध	12:37 PM	से	2:21 PM
21-जुलाई-22	गुरु	2:21 PM	से	4:06 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
22-जुलाई-22	शुक्र	10:52 AM	से	12:37 PM
23-जुलाई-22	शनि	9:08 AM	से	10:52 AM
24-जुलाई-22	रवि	5:50 PM	से	7:34 PM
25-जुलाई-22	सोम	7:24 AM	से	9:09 AM
26-जुलाई-22	भौम	4:05 PM	से	5:49 PM
27-जुलाई-22	बुध	12:37 PM	से	2:21 PM
28-जुलाई-22	गुरु	2:20 PM	से	4:04 PM
29-जुलाई-22	शुक्र	10:53 AM	से	12:37 PM
30-जुलाई-22	शनि	9:10 AM	से	10:53 AM
31-जुलाई-22	रवि	5:46 PM	से	7:29 PM
1-अगस्त-22	सोम	7:28 AM	से	9:11 AM
2-अगस्त-22	भौम	4:02 PM	से	5:45 PM
3-अगस्त-22	बुध	12:37 PM	से	2:19 PM
4-अगस्त-22	गुरु	2:19 PM	से	4:01 PM
5-अगस्त-22	शुक्र	10:54 AM	से	12:36 PM
6-अगस्त-22	शनि	9:12 AM	से	10:54 AM

RAHU KAAL

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
7-अगस्त-22	रवि	5:41 PM	से	7:23 PM
8-अगस्त-22	सोम	7:31 AM	से	9:13 AM
9-अगस्त-22	भौम	3:59 PM	से	5:40 PM
10-अगस्त-22	बुध	12:36 PM	से	2:17 PM
11-अगस्त-22	गुरु	2:17 PM	से	3:58 PM
12-अगस्त-22	शुक्र	10:55 AM	से	12:35 PM
13-अगस्त-22	शनि	9:14 AM	से	10:55 AM
14-अगस्त-22	रवि	5:36 PM	से	7:16 PM
15-अगस्त-22	सोम	7:35 AM	से	9:15 AM
16-अगस्त-22	भौम	3:55 PM	से	5:34 PM
17-अगस्त-22	बुध	12:35 PM	से	2:14 PM
18-अगस्त-22	गुरु	2:14 PM	से	3:53 PM
19-अगस्त-22	शुक्र	10:55 AM	से	12:34 PM
20-अगस्त-22	शनि	9:16 AM	से	10:55 AM
21-अगस्त-22	रवि	5:30 PM	से	7:09 PM
22-अगस्त-22	सोम	7:38 AM	से	9:16 AM

दिनांव	वार	आरम्भ		समाप्ति
23-अगस्त-22	भौम	3:50 PM	से	5:28 PM
24-अगस्त-22	बुध	12:33 PM	से	2:11 PM
25-अगस्त-22	गुरु	2:10 PM	से	3:48 PM
26-अगस्त-22	शुक्र	10:55 AM	से	12:32 PM
27-अगस्त-22	शनि	9:17 AM	से	10:55 AM
28-अगस्त-22	रवि	5:23 PM	से	7:00 PM
29-अगस्त-22	सोम	7:41 AM	से	9:18 AM
30-अगस्त-22	भौम	3:45 PM	से	5:21 PM
31-अगस्त-22	बुध	12:31 PM	से	2:07 PM
1-सितम्बर-22	गुरु	2:07 PM	से	3:43 PM
2-सितम्बर-22	शुक्र	10:54 AM	से	12:30 PM
3-सितम्बर-22	शनि	9:18 AM	से	10:54 AM
4-सितम्बर-22	रवि	5:16 PM	से	6:52 PM
5-सितम्बर-22	सोम	7:44 AM	से	9:19 AM
6-सितम्बर-22	भौम	3:39 PM	से	5:14 PM
7-सितम्बर-22	बुध	12:29 PM	से	2:03 PM

RAHU KAAL

दिनांव	वार	आरम्भ		समाप्ति
8-सित-22	गुरु	2:03 PM	से	3:37 PM
9-सित-22	शुक्र	10:54 AM	से	12:28 PM
10-सित-22	शनि	9:20 AM	से	10:54 AM
11-सित-22	रवि	5:09 PM	से	6:42 PM
12-सित-22	सोम	7:46 AM	से	9:20 AM
13-सित-22	भौम	3:33 PM	से	5:06 PM
14-सित-22	बुध	12:26 PM	से	1:59 PM
15-सित-22	गुरु	1:59 PM	से	3:31 PM
16-सित-22	शुक्र	10:53 AM	से	12:26 PM
17-सित-22	शनि	9:21 AM	से	10:53 AM
18-सित-22	रवि	5:01 PM	से	6:33 PM
19-सित-22	सोम	7:49 AM	से	9:21 AM
20-सित-22	भौम	3:27 PM	से	4:59 PM
21-सित-22	बुध	12:24 PM	से	1:55 PM
22-सित-22	गुरु	1:54 PM	से	3:26 PM
23-सित-22	शुक्र	10:52 AM	से	12:23 PM

दिनांव	वार	आरम्भ		समाप्ति
24-सितम्बर-22	शनि	9:22 AM	से	10:52 AM
25-सितम्बर-22	रवि	4:53 PM	से	6:24 PM
26-सितम्बर-22	सोम	7:52 AM	से	9:22 AM
27-सितम्बर-22	भौम	3:21 PM	से	4:51 PM
28-सितम्बर-22	बुध	12:21 PM	से	1:51 PM
29-सितम्बर-22	गुरु	1:50 PM	से	3:20 PM
30-सितम्बर-22	शुक्र	10:52 AM	से	12:21 PM
1-अक्टूबर-22	शनि	9:23 AM	से	10:52 AM
2-अक्टूबर-22	रवि	4:46 PM	से	6:14 PM
3-अक्टूबर-22	सोम	7:55 AM	से	9:23 AM
4-अक्टूबर-22	भौम	3:15 PM	से	4:44 PM
5-अक्टूबर-22	बुध	12:19 PM	से	1:47 PM
6-अक्टूबर-22	गुरु	1:46 PM	से	3:14 PM
7-अक्टूबर-22	शुक्र	10:51 AM	से	12:18 PM
8-अक्टूबर-22	शनि	9:24 AM	से	10:51 AM
9-अक्टूबर-22	रवि	4:38 PM	से	6:05 PM

RAHU KAAL

दिनांव	वार	आरम्भ		समाप्ति
10-अक्टूबर-22	सोम	7:58 AM	से	9:25 AM
11-अक्टूबर-22	भौम	3:10 PM	से	4:36 PM
12-अक्टूबर-22	बुध	12:17 PM	से	1:43 PM
13-अक्टूबर-22	गुरु	1:43 PM	से	3:09 PM
14-अक्टूबर-22	शुक्र	10:51 AM	से	12:17 PM
15-अक्टूबर-22	शनि	9:26 AM	से	10:51 AM
16-अक्टूबर-22	रवि	4:31 PM	से	5:57 PM
17-अक्टूबर-22	सोम	8:01 AM	से	9:26 AM
18-अक्टूबर-22	भौम	3:05 PM	से	4:30 PM
19-अक्टूबर-22	बुध	12:16 PM	से	1:40 PM
20-अक्टूबर-22	गुरु	1:40 PM	से	3:04 PM
21-अक्टूबर-22	शुक्र	10:51 AM	से	12:15 PM
22-अक्टूबर-22	शनि	9:28 AM	से	10:51 AM
23-अक्टूबर-22	रवि	4:25 PM	से	5:49 PM
24-अक्टूबर-22	सोम	8:05 AM	से	9:28 AM
25-अक्टूबर-22	भौम	3:01 PM	से	4:23 PM

दिनांव	वार	आरम्भ		समाप्ति
26-अक्टूबर-22	बुध	12:14 PM	से	1:37 PM
27-अक्टूबर-22	गुरु	1:37 PM	से	2:59 PM
28-अक्टूबर-22	शुक्र	10:52 AM	से	12:14 PM
29-अक्टूबर-22	शनि	9:30 AM	से	10:52 AM
30-अक्टूबर-22	रवि	4:20 PM	से	5:41 PM
31-अक्टूबर-22	सोम	8:09 AM	से	9:31 AM
1-नवम्बर-22	भौम	2:57 PM	से	4:18 PM
2-नवम्बर-22	बुध	12:14 PM	से	1:35 PM
3-नवम्बर-22	गुरु	1:35 PM	से	2:56 PM
4-नवम्बर-22	शुक्र	10:53 AM	से	12:14 PM
5-नवम्बर-22	शनि	9:33 AM	से	10:54 AM
6-नवम्बर-22	रवि	4:15 PM	से	5:35 PM
7-नवम्बर-22	सोम	8:14 AM	से	9:34 AM
8-नवम्बर-22	भौम	2:54 PM	से	4:14 PM
9-नवम्बर-22	बुध	12:14 PM	से	1:34 PM
10-नवम्बर-22	गुरु	1:34 PM	से	2:53 PM

RAHU KAAL

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
11-नवम्बर-22	शुक्र	10:55 AM	से	12:14 PM
12-नवम्बर-22	शनि	9:36 AM	से	10:55 AM
13-नवम्बर-22	रवि	4:11 PM	से	5:30 PM
14-नवम्बर-22	सोम	8:19 AM	से	9:37 AM
15-नवम्बर-22	भौम	2:52 PM	से	4:10 PM
16-नवम्बर-22	बुध	12:15 PM	से	1:33 PM
17-नवम्बर-22	गुरु	1:33 PM	से	2:51 PM
18-नवम्बर-22	शुक्र	10:58 AM	से	12:15 PM
19-नवम्बर-22	शनि	9:40 AM	से	10:58 AM
20-नवम्बर-22	रवि	4:09 PM	से	5:26 PM
21-नवम्बर-22	सोम	8:24 AM	से	9:41 AM
22-नवम्बर-22	भौम	2:51 PM	से	4:08 PM
23-नवम्बर-22	बुध	12:17 PM	से	1:34 PM
24-नवम्बर-22	गुरु	1:34 PM	से	2:51 PM
25-नवम्बर-22	शुक्र	11:00 AM	से	12:17 PM
26-नवम्बर-22	शनि	9:44 AM	से	11:01 AM

दिनांव	वार	आरम्भ		समाप्ति
27-नवम्बर-22	रवि	4:07 PM	से	5:24 PM
28-नवम्बर-22	सोम	8:29 AM	से	9:45 AM
29-नवम्बर-22	भौम	2:51 PM	से	4:07 PM
30-नवम्बर-22	बुध	12:19 PM	से	1:35 PM
1-दिसम्बर-22	गुरु	1:35 PM	से	2:51 PM
2-दिसम्बर-22	शुक्र	11:04 AM	से	12:20 PM
3-दिसम्बर-22	शनि	9:48 AM	से	11:04 AM
4-दिसम्बर-22	रवि	4:07 PM	से	5:23 PM
5-दिसम्बर-22	सोम	8:34 AM	से	9:50 AM
6-दिसम्बर-22	भौम	2:52 PM	से	4:07 PM
7-दिसम्बर-22	बुध	12:22 PM	से	1:37 PM
8-दिसम्बर-22	गुरु	1:37 PM	से	2:52 PM
9-दिसम्बर-22	शुक्र	11:07 AM	से	12:22 PM
10-दिसम्बर-22	शनि	9:53 AM	से	11:08 AM
11-दिसम्बर-22	रवि	4:08 PM	से	5:23 PM
12-दिसम्बर-22	सोम	8:39 AM	से	9:54 AM

RAHU KAAL

दिनांव	वार	आरम्भ		समाप्ति
13-दिसम्बर-22	भौम	2:54 PM	से	4:09 PM
14-दिसम्बर-22	बुध	12:25 PM	से	1:40 PM
15-दिसम्बर-22	गुरु	1:40 PM	से	2:55 PM
16-दिसम्बर-22	शुक्र	11:11 AM	से	12:26 PM
17-दिसम्बर-22	शनि	9:57 AM	से	11:11 AM
18-दिसम्बर-22	रवि	4:11 PM	से	5:25 PM
19-दिसम्बर-22	सोम	8:43 AM	से	9:58 AM
20-दिसम्बर-22	भौम	2:57 PM	से	4:11 PM
21-दिसम्बर-22	बुध	12:28 PM	से	1:43 PM
22-दिसम्बर-22	गुरु	1:43 PM	से	2:58 PM
23-दिसम्बर-22	शुक्र	11:15 AM	से	12:29 PM
24-दिसम्बर-22	शनि	10:00 AM	से	11:15 AM
25-दिसम्बर-22	रवि	4:14 PM	से	5:29 PM
26-दिसम्बर-22	सोम	8:47 AM	से	10:01 AM
27-दिसम्बर-22	भौम	3:00 PM	से	4:15 PM
28-दिसम्बर-22	बुध	12:32 PM	से	1:46 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
29-दिसम्बर-22	गुरु	1:47 PM	से	3:02 PM
30-दिसम्बर-22	शुक्र	11:18 AM	से	12:33 PM
31-दिसम्बर-22	शनि	10:03 AM	से	11:18 AM
1-जनवरी-23	रवि	4:18 PM	से	5:33 PM
2-जनवरी-23	सोम	8:49 AM	से	10:04 AM
3-जनवरी-23	भौम	3:05 PM	से	4:20 PM
4-जनवरी-23	बुध	12:35 PM	से	1:50 PM
5-जनवरी-23	गुरु	1:51 PM	से	3:06 PM
6-जनवरी-23	शुक्र	11:21 AM	से	12:36 PM
7-जनवरी-23	शनि	10:06 AM	से	11:21 AM
8-जनवरी-23	रवि	4:23 PM	से	5:38 PM
9-जनवरी-23	सोम	8:51 AM	से	10:06 AM
10-जनवरी-23	भौम	3:09 PM	से	4:25 PM
11-जनवरी-23	बुध	12:38 PM	से	1:54 PM
12-जनवरी-23	गुरु	1:54 PM	से	3:10 PM
13-जनवरी-23	शुक्र	11:23 AM	से	12:39 PM

RAHU KAAL

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
14-जनवरी-23	शनि	10:07 AM	से	11:23 AM
15-जनवरी-23	रवि	4:28 PM	से	5:44 PM
16-जनवरी-23	सोम	8:51 AM	से	10:07 AM
17-जनवरी-23	भौम	3:13 PM	से	4:30 PM
18-जनवरी-23	बुध	12:41 PM	से	1:57 PM
19-जनवरी-23	गुरु	1:58 PM	से	3:15 PM
20-जनवरी-23	शुक्र	11:24 AM	से	12:41 PM
21-जनवरी-23	शनि	10:07 AM	से	11:25 AM
22-जनवरी-23	रवि	4:34 PM	से	5:51 PM
23-जनवरी-23	सोम	8:50 AM	से	10:07 AM
24-जनवरी-23	भौम	3:18 PM	से	4:35 PM
25-जनवरी-23	बुध	12:43 PM	से	2:00 PM
26-जनवरी-23	गुरु	2:01 PM	से	3:19 PM
27-जनवरी-23	शुक्र	11:25 AM	से	12:43 PM
28-जनवरी-23	शनि	10:07 AM	से	11:25 AM
29-जनवरी-23	रवि	4:39 PM	से	5:58 PM

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
30-जनवरी-23	सोम	8:48 AM	से	10:06 AM
31-जनवरी-23	भौम	3:22 PM	से	4:41 PM
1-फरवरी-23	बुध	12:44 PM	से	2:03 PM
2-फरवरी-23	गुरु	2:04 PM	से	3:23 PM
3-फरवरी-23	शुक्र	11:25 AM	से	12:44 PM
4-फरवरी-23	शनि	10:05 AM	से	11:25 AM
5-फरवरी-23	रवि	4:44 PM	से	6:04 PM
6-फरवरी-23	सोम	8:44 AM	से	10:05 AM
7-फरवरी-23	भौम	3:25 PM	से	4:46 PM
8-फरवरी-23	बुध	12:45 PM	से	2:05 PM
9-फरवरी-23	गुरु	2:06 PM	से	3:26 PM
10-फरवरी-23	शुक्र	11:24 AM	से	12:45 PM
11-फरवरी-23	शनि	10:03 AM	से	11:24 AM
12-फरवरी-23	रवि	4:49 PM	से	6:11 PM
13-फरवरी-23	सोम	8:40 AM	से	10:02 AM
14-फरवरी-23	भौम	3:29 PM	से	4:51 PM

दिनांव	वार	आरम्भ		समाप्ति
15-फरवरी-23	बुध	12:45 PM	से	2:07 PM
16-फरवरी-23	गुरु	2:07 PM	से	3:30 PM
17-फरवरी-23	शुक्र	11:22 AM	से	12:45 PM
18-फरवरी-23	शनि	9:59 AM	से	11:22 AM
19-फरवरी-23	रवि	4:54 PM	से	6:17 PM
20-फरवरी-23	सोम	8:35 AM	से	9:58 AM
21-फरवरी-23	भौम	3:32 PM	से	4:55 PM
22-फरवरी-23	बुध	12:44 PM	से	2:08 PM
23-फरवरी-23	गुरु	2:08 PM	से	3:32 PM
24-फरवरी-23	शुक्र	11:20 AM	से	12:44 PM
25-फरवरी-23	शनि	9:55 AM	से	11:20 AM
26-फरवरी-23	रवि	4:58 PM	से	6:23 PM
27-फरवरी-23	सोम	8:29 AM	से	9:54 AM
28-फरवरी-23	भौम	3:34 PM	से	4:59 PM
1-मार्च-23	बुध	12:43 PM	से	2:09 PM
2-मार्च-23	गुरु	2:09 PM	से	3:35 PM

RAHU KAAL

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
3-मार्च-23	शुक्र	11:17 AM	से	12:43 PM
4-मार्च-23	शनि	9:50 AM	से	11:17 AM
5-मार्च-23	रवि	5:02 PM	से	6:28 PM
6-मार्च-23	सोम	8:22 AM	से	9:49 AM
7-मार्च-23	भौम	3:36 PM	से	5:03 PM
8-मार्च-23	बुध	12:42 PM	से	2:09 PM
9-मार्च-23	गुरु	2:09 PM	से	3:37 PM
10-मार्च-23	शुक्र	11:14 AM	से	12:41 PM
11-मार्च-23	शनि	9:45 AM	से	11:13 AM
12-मार्च-23	रवि	5:05 PM	से	6:34 PM
13-मार्च-23	सोम	8:15 AM	से	9:44 AM
14-मार्च-23	भौम	3:38 PM	से	5:06 PM
15-मार्च-23	बुध	12:40 PM	से	2:09 PM
16-मार्च-23	गुरु	2:09 PM	से	3:38 PM
17-मार्च-23	शुक्र	11:10 AM	से	12:40 PM
18-मार्च-23	शनि	9:40 AM	से	11:10 AM

RAHU KAAL

दिनांक	वार	आरम्भ		समाप्ति
19-मार्च-23	रवि	5:09 PM	से	6:39 PM
20-मार्च-23	सोम	8:08 AM	से	9:38 AM
21-मार्च-23	भौम	3:39 PM	से	5:10 PM
22-मार्च-23	बुध	12:38 PM	से	2:09 PM
23-मार्च-23	गुरु	2:09 PM	से	3:40 PM
24-मार्च-23	शुक्र	11:06 AM	से	12:38 PM
25-मार्च-23	शनि	9:34 AM	से	11:06 AM
26-मार्च-23	रवि	5:12 PM	से	6:44 PM
27-मार्च-23	सोम	8:01 AM	से	9:33 AM
28-मार्च-23	भौम	3:41 PM	से	5:13 PM
29-मार्च-23	बुध	12:36 PM	से	2:09 PM
30-मार्च-23	गुरु	2:08 PM	से	3:41 PM
31-मार्च-23	शुक्र	11:02 AM	से	12:35 PM
1-अप्रेल-23	शनि	9:29 AM	से	11:02 AM
2-अप्रेल-23	रवि	5:15 PM	से	6:49 PM
3-अप्रेल-23	सोम	7:53 AM	से	9:27 AM

दिनांव	वार	आरम्भ		समाप्ति
4-अप्रेल-23	भौम	3:42 PM	से	5:16 PM
5-अप्रेल-23	बुध	12:34 PM	से	2:08 PM
6-अप्रेल-23	गुरु	2:08 PM	से	3:43 PM
7-अप्रेल-23	शुक्र	10:59 AM	से	12:33 PM
8-अप्रेल-23	शनि	9:23 AM	से	10:58 AM
9-अप्रेल-23	रवि	5:19 PM	से	6:54 PM
10-अप्रेल-23	सोम	7:46 AM	से	9:22 AM
11-अप्रेल-23	भौम	3:44 PM	से	5:19 PM
12-अप्रेल-23	बुध	12:32 PM	से	2:08 PM
13-अप्रेल-23	गुरु	2:08 PM	से	3:44 PM
14-अप्रेल-23	शुक्र	10:55 AM	से	12:31 PM
15-अप्रेल-23	शनि	9:18 AM	से	10:55 AM
16-अप्रेल-23	रवि	5:22 PM	से	6:59 PM
17-अप्रेल-23	सोम	7:39 AM	से	9:16 AM
18-अप्रेल-23	भौम	3:45 PM	से	5:23 PM

चैत्र शुक्ल पक्ष

2 अप्रेल 2022 की ग्रह स्थिति :- मीन में सूर्य, बुध; वृष में राहु; वृश्चिक में केतु; मकर में भौम, शनि; कुम्भ में गुरु, शुक्र।

सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाक: 1944, ईस्वी 2022

दिन मान	चैत्र	अप्रे	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वसंत ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
31 05	20	2	शनि	प्रति दि	11:59AM	रेव दि	11:21 AM	प्रजापत्य:, विक्रमी 2079 नवरात्रारम्भ, नवरेह, 11:21 दिन मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त, चन्द्रदर्शन।	06:19	18:49
09	21	3	रवि	द्विती दि	12:39PM	अश्वि दि	12:37 PM	आनन्द:।	06:17	18:50
10	22	4	सोम	तृती दि	01:55PM	भरण दि	02:28 PM	चर:, ज़ंगत्रय, यज्ञ गंगा अस्थापन वन्यखुरा बारामुल्ला, शिव मन्दिर पुरुखू, हारीपर्वत देवी आगंन पलौडा, 9:01 रात वृष में चन्द्र।	06:16	18:51
13	23	5	भौम	चतु दि	03:45PM	कृति दि	04:51 PM	मुसुलं।	06:15	18:51
18	24	6	बुध	पंच दि	06:02PM	रोहि प्र	07:39 PM	शूलम्।	06:14	18:52
23	25	7	गुरु	षष्ठी प्र	08:33PM	मृग प्र	10:41 PM	मृत्यु:, कुमार षष्ठी, 9:09 प्रात: मिथुन में चन्द्र, 3:15 दिन कुम्भ में भौम।	06:12	18:53
27	26	8	शुक्र	सप्त प्र	11:05PM	आर्द्रा प्र	01:43 AM	काम्य:, 11:58 दिन मेष में बुध।	06:11	18:53
30	27	9	शनि	अष्ट प्र	01:24AM	पुन प्र	04:30 AM	छत्रम्, दुर्गाष्टमी, महा यज्ञ दुर्गानाग, मेला बाहूफोर्ट, 9:51 रात कर्कट में चन्द्र।	06:10	18:54

ज़ंगत्रय
4 अप्रेल

दुर्गाष्टमी
9 अप्रेल

37	28	**10**	रवि	नव प्र	03:16AM	तिष्या	Day N ight	श्रीवत्सः, रामनवमी उमा देवी, शैलपुत्री व शिवा भगवती जयन्ती, अकिनगाम, चक्रीश्वर, मंगला भगवती वची यात्रा, नवरात्र **A**	06:09	18:5
43	29	**11**	सोम	दश प्र	04:31AM	तिष्या दि	06:51AM	प्रजापत्यः।	06:07	18:5
55	30	**12**	भौम	एका प्र	05:02AM	अश्ले दि	08:35AM	आनन्दः, कामदा एकादशी व्रत, 8:35 प्रातः सिंह में चन्द, 3.29 दिन मेष में राहु व 3.29 दिन तुला में केतु।	06:06	18:5
32 00	31	**13**	बुध	द्वाद प्र	04:50AM	मघा दि	09:36AM	चरः, मासान्त, कुमार जी जयंती (गडी उधमपोर), स्वामी रूपजी मस्ताना जयन्ती चिनौर, 3.48 दिन मीन में गुरु।	06:05	18:5
06	वैश	**14**	गुरु	त्रयो प्र	03:56AM	पू.फा.दि	09:56AM	मुसुलं, मदन त्रयोदशी, 8:41प्रातः मेष में सूर्य, संक्रान्ति व्रत, 3:54दिन कन्या में चन्द। मदन त्रुवाह 14 अप्रेल	06:04	18:5
08	2	**15**	शुक्र	चर्तु प्र	02:25AM	उ.फा.दि	09:35AM	शूलम्।	06:02	18:5
13	3	**16**	शनि	पूर्णि प्र	12:25AM	हस्त दि	08:39AM	मृत्युः, यज्ञ पोखरीबल हारी पर्वत काश्मीर व बन्तलाब, बादशह कलन्दर जयन्ती, पूर्णिमा व्रत, 8:01 रात तुला में चन्द।	06:01	18:5

A समाप्त महा यज्ञ नागडंढी, माता भद्रकाली यात्रा वडीपोरा हण्दवारा काश्मीर, फलाई मण्डाल जम्मू।

श्राद्धः प्रति से पंचम पहले दिन, षष्ठी से पूर्णिमा अपने दिन। **मध्याहनः** प्रतिपदा का पहले दिन, द्विती से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- मदन त्रयोदशी प्रेम के देवता काम और भगवान शिव को समर्पित एक शुभ दिन है। यह चैत्र माह (मार्च-अप्रैल) के शुक्ल पक्ष के 13 वें दिन मनाया जाता है। नीलमत पुराण व कश्मीरी हिंदू संस्कृति में, यह दिन पति-पत्नी के रिश्ते को समर्पित है। इस दिन पति अपनी पत्नी को जड़ी-बूटियों और इत्र से पवित्र स्नान कराते हैं। कुछ क्षेत्रों में यह दिन भगवान शिव को भी समर्पित कराते हैं। गरुड़ पुराण बताता है कि चैत्र शुक्ल पक्ष के दौरान तेरहवें दिन भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए आदर्श है। कुछ समुदायों के लिए, यह दिन होली के त्योहार का हिस्सा है और शिव के काम को राख में जलाने की कथा से संबंधित है।

वैशाख कृष्ण पक्ष

17 अप्रेल 2022 की ग्रहस्थिति :- मेष में सूर्य, बुध, राहु; तुला में केतु; मकर में शनि; कुम्भ में भौम, शुक्र; मीन में गुरु।

सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाकः 1944, ईस्वी 2022

दिन मान	वैश	अप्रे	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वसन्त ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
32 18	4	**17**	रवि	प्रति प्र	10:02PM	चित्र दि	07:16 AM	काम्यः।	06:00	07:00
23	5	**18**	सोम	द्विती प्र	07:24PM	विशा प्र	03:38 AM	मैत्रम्, 10.07 रात वृश्चिक में चन्द्र।	05:59	07:01
27	6	**19**	भौम	तृती दि	04:39PM	अनु प्र	01:39 AM	वज्रम्, संकट निवारण चतुर्थी व्रत, (चन्द्रोदय 10:11 रात),	05:58	07:01
33	7	**20**	बुध	चतु दि	01:53PM	ज्येष्ठ प्र	11:41 PM	ध्वांक्षः, 11.41 रात धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	05:57	07:02
38	8	**21**	गुरु	पंच दि	11:13AM	मूल प्र	09:51 PM	धौम्यः, श्री पंचमी, ऋषिपीर श्राद्ध, श्री मंगलेश्वर भैरव यज्ञ, भैरव बाग मन्दिर व कमला यात्रा।	05:55	07:03
41	9	**22**	शुक्र	षष्ठी दि	08:43AM	पू.षा. प्र	08:14 PM	प्रजापत्यः, वैताल षष्ठी, 1.52 रात मकर में चन्द्र।	05:54	07:03
43	10	**23**	शनि	सप्त दि	06:27AM	उ.षा. दि	06:53 PM	क्षयः, त्र्यहः(अष्ट प्र 4.30AM) स्वा. महादेव काक भान जयन्ती, व यज्ञ। • अष्टमी का जन्मदिन 23 अप्रेल	05:53	07:04
51	11	**24**	रवि	नव प्र	02:53AM	श्रवण दि	05:52 PM	मुसुलं, 12.20 रात वृष में बुध।	05:52	07:05

56	12	**25**	सोम	दश प्र	01:38AM	धनि दि	05:12 PM	शूलम्, श्री लक्ष्मी नारायण यज्ञ, बुलबुलंकर श्रीनगर, 5.29 प्रातः कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	05:51	07:06
58	13	**26**	भौम	एका प्र	12:48AM	शत दि	04:56 PM	मृत्यु:, वरूथिनी एकादशी।	05:50	07:06
33 00	14	**27**	बुध	द्वाद प्र	12:24AM	पू.भा. दि	05:05 PM	काम्य:, शैवाचार्य स्वामी लक्ष्मण जी जयन्ती, 11.01 दिन मीन में चन्द, 6.16 सायं मीन में शुक्र।	05:49	07:07
33 08	15	**28**	गुरु	त्रयो प्र	12:27AM	उ.भा. दि	05:40 PM	छत्रम्।	05:48	07:08
13	16	**29**	शुक्र	चर्तु प्र	12:58AM	रेव दि	06:42 PM	श्रीवत्स:, 6.42 सायं मेष में चन्द व पंचक समाप्त, 7.52 प्रातः कुम्भ में शनि।	05:47	07:09
16	17	**30**	शनि	अमा प्र	01:58AM	अश्वि प्र	08:13 PM	सौम्य:, अमावसी व्रत।	05:46	07:09

श्राद्ध: प्रतिपदा से तृती तक अपने दिन, चतुर्थी से अष्टमी तक पहले दिन, नवम से अमावस तक अपने दिन।
मध्याह्न: प्रतिपदा से चतुर्थी तक अपने दिन, पंचम से अष्टम तक पहले दिन, नवम से अमावस तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- **रुद्राक्ष धारण करने का महत्व : – धार्मिक महत्व : –** रुद्राक्ष भगवान शिव को बहुत प्रिय होते है अतः इन्हें धारण करने वाले मनुष्य पर हमेशा भगवान शिव की विशेष कृपा बनी रहती है | रुद्राक्ष धारण करने से सभी प्रकार की नकारात्मक उर्जा दूर रहती है | भय आदि से मुक्ति मिलती है | रुद्राक्ष के मुख के आधार पर इसके धार्मिक महत्व को और स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है |

वैशाख शुक्ल पक्ष

1 मई 2022 की ग्रह स्थिति :- मेष में सूर्य, राहु; वृष में बुध; तुला में केतु; कुम्भ में भौम, शनि; मीन में गुरु, शुक्र।
सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाक: 1944, ईस्वी 2022

दिन मान	वैश	मई	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वसन्त / ग्रीष्म ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
33 21	18	1	रवि	प्रति प्र	03:26AM	भरण प्र	10:10 PM	कालदण्ड:, 4.44 रात वृष में चन्द्र।	05:45	07:10
26	19	2	सोम	द्विती प्र	05:19AM	कृति प्र	12:33 AM	स्थिर:, चन्द्रदर्शन।	05:44	07:11
28	20	3	भौम	तृती	Day N ight	रोहि प्र	03:18 AM	मातंग:, अक्षय तृतीया, श्री परशुराम जयन्ती, स्वामी कुमार जी जयन्ती गीतासत्संग आश्रम मुट्ठी।	05:43	07:11
33	21	4	बुध	तृती दि	07:33AM	मृग	Day N ight	अमृतम्, 4.45 दिन मिथुन में चन्द्र।	05:42	07:12
38	22	5	गुरु	चतु दि	10:01AM	मृग दि	06:16 AM	मृत्यु:।	05:41	07:13
43	23	6	शुक्र	पंच दि	12:33PM	आर्द्रा दि	09:20 AM	काम्य:, कुमारषष्ठी व्रत, आद्य गुरु श्री शंकराचारर्य जयन्ती।	05:40	07:14
45	24	7	शनि	षष्ठी दि	02:57PM	पुन दि	12:18 PM	छत्रम्, 5.34 प्रात: कर्कट में चन्द्र।	05:39	07:14
46	25	8	रवि	सप्त दि	05:01PM	तिष्या दि	02:57 PM	श्रीवत्स:, विज़या सप्तमी, श्री गंगा जयन्ती, मार्तण्ड तीर्थ यात्रा।	05:38	07:15

• तृतीया का जन्मदिन 4 मई

विज़या सतम्
8 मई

54	26	**9**	सोम	अष्ट दि	06:33PM	अश्ले दि	05:08 PM	सौम्यः, अष्टमी व्रत, 5.08 सायं सिंह में चन्द्र। (गणेश चतुर्दशी 15 मई)	05:38	07:16
56	27	**10**	भौम	नव प्र	07:25PM	मघा दि	06:40 PM	कालदण्डः, 5.16 सायं बुध वक्री।	05:37	07:17
34 01	28	**11**	बुध	दश प्र	07:32PM	पू.फा.प्र	07:28 PM	स्थिरः, 1.32 रात कन्या में चन्द्र। (बुध पूर्णिमा 16 मई)	05:36	07:17
05	29	**12**	गुरु	एका दि	06:52PM	उ.फा.प्र	07:30 PM	मातंगः, नारद एकादशी, डुमटबल यात्रा, महात्मा दीनानाथ जयन्ती डांगरपुर तुलमुल।	05:35	07:18
08	30	**13**	शुक्र	द्वाद दि	05:27PM	हस्त दि	06:48 PM	अमृतम्, मासान्त।	05:35	07:19
11	ज्येठ	**14**	शनि	त्रयो दि	03:23PM	चित्र दि	05:27 PM	काण्डः, 5.29 रात वृष में सूर्य, 6.12 प्रातः तुला में चन्द्र।	05:34	07:19
16	2	**15**	रवि	चर्तु दि	12:46PM	स्वात दि	03:34 PM	अलापकम् श्री नरसिंह चुदाह, गणेश चतुर्दशी, संक्रान्ति व्रत, गणपतयार गणेशपुरा - गणेशबल यात्रा पहलगाम, महायज्ञ <u>B</u>	05:33	07:20
20	3	**16**	सोम	पूर्णि दि	09:44AM	विशा दि	01:18 PM	मैत्रम्, श्री बुद्ध जयन्ती (बुद्ध पूर्णिमा), 7.54 प्रातः वृश्चिक में चन्द्र।	05:32	07:21

<u>B</u> हन्दवारा व देवस्थान सुधार सभा हानन्द चौवलगाम, यज्ञ गणेश विहार लोवर मुट्ठी, जम्मू व हन्दवारा, महायज्ञ गणेश अस्थापन फिड़ार पुरा रफियाबाद सोपोर,

श्राद्धः प्रतिपदा से तृती अपने दिन, चतुर्थी से अष्टमी पहले दिन, नवम से एकादशी अपने दिन, द्वादशी से पूर्णिमा तक पहले दिन।
मध्याह्नः प्रतिपदा से तृती तक अपने दिन, चतुर्थी का पहले दिन, पंचम से चतुर्दशी अपने दिन, पूर्णिमा का पहले दिन।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

17 मई 2022 की ग्रह स्थिति :- वृष में सूर्य,बुध(वक्री); तुला में केतु; कुम्भ में भौम, शनि; मीन में गुरु, शुक्र; मेष में राहु।
सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाक: 1944, ईस्वी 2022

दिन मान	ज्ये	मई	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, ग्रीष्म ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
34 23	4	17	भौम	प्रति दि	06:26AM	अनु दि	10:46 AM	वज्रम्, त्र्यहः (द्विती प्र 3:01AM), श्री काकजी यज्ञ हांगलगुण्ड काश्मीर व नगरोटा, जम्मू, नारद जी जयन्ती, 9.32 प्रात: A	05:32	07:22
26	5	18	बुध	तृती प्र	11:37PM	ज्येष्ठ दि	08:09 AM	ध्वांक्षः, 8.09 प्रात: धनु में चन्द व मूल आरम्भ।	05:31	07:22
30	6	19	गुरु	चतु प्र	08:24PM	मूल दि	05:37 AM	धौम्यः, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 11:19 रात)। A मीन में भौम।	05:31	07:23
33	7	20	शुक्र	पंच दि	05:29PM	उ.षा. प्र	01:18 AM	आनन्दः, ज्येष्ठा देवी महायज्ञ जयीठयार यात्रा, स्वा.गोविन्दकौल जलाली जयन्ती त्रिलोकपुरा जम्मू, 8.45 प्रात: मकर में चन्द।	05:30	07:24
35	8	21	शनि	षष्ठी दि	02:59PM	श्रवण प्र	11:46 PM	स्थिरः, विजयेश्वर निवासी ज्योतिषी काशीनाथ शर्मा निर्वाण दिवस।	05:29	07:24
38	9	22	रवि	सप्त दि	01:00PM	धनि प्र	10:46 PM	मातंगः,11.12 दिन कुम्भ में चन्द व पंचक आरम्भ।	05:29	07:25
42	10	23	सोम	अष्ट दि	11:35AM	शत प्र	10:22 PM	अमृतम्, 8.26 रात मेष में शुक्र।	05:28	07:26
43	11	24	भौम	नव दि	10:46AM	पू.भा. प्र	10:33 PM	काण्डः, 4.27 दिन मीन में चन्द।	05:28	07:26

ज्येष्ठा देवी यज्ञ
20 मई

47	12	**25**	बुध	दश	दि	10:33 [illegible]	उ.भा. प्र	11:19 PM	अलापकम्,	05:27	07:27
51	13	**26**	गुरु	एका	दि	10:55AM	रेव प्र	12:38 AM	मैत्रम्, रथ एकादशी व्रत, भद्रकाली जयन्ती, अपरा एकादशी, 12.38 रात मेष में चन्द व पंचक समाप्त।	05·27	07:28
52	14	**27**	शुक्र	द्वाद	दि	11:48AM	अश्विप्र	02:26 AM	वज्रम्।	05:26	07:28
56	15	**28**	शनि	त्रयो	दि	01:10PM	भरण प्र	04:39 AM	ध्वांक्षः।	05:26	07:29
35 00	16	**29**	रवि	चर्तु	दि	02:55PM	कृति	Day N ight	धौम्यः, 11.15 दिन वृष में चन्द्र।	05:26	07:29
02	17	**30**	सोम	अमा	दि	05:00PM	कृति दि		07:12 AM	स्थिरः, हरिश्वर यात्रा खुनमुह, श्री नन्दकेश्वर यज्ञ / सुम्बल व सीर जगीर यात्रा, सोमयार यात्रा, सोमा मावसी।	05:25	07:30

श्री नन्दकेश्वर यज्ञ
30 मई

श्राद्धः प्रतिपदा व द्विती का पहले दिन, तृती से पंचम तक अपने दिन, षष्ठी से अमावस तक पहले दिन। • द्वितीया का जन्मदिन 17 मई

मध्याह्नः प्रतिपदा व द्विती पहले दिन, तृती से सप्तमी अपने दिन, अष्टमी से द्वादशी पहले दिन, त्रयोदश से अमावस तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- संक्रान्ति सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना संक्रान्ति कहलाता है। सूर्य जिस राशि में प्रवेश करता है उसी राशि के नाम पर संक्रान्ति का नाम होता है। जैसे- जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है तो इसको मकर संक्रान्ति कहते हैं। संक्रान्ति को कार्यों का करना वर्जित माना जाता है, मगर इसी दिन को स्नान, दान, पुण्य कर्म, पिण्ड दान, तर्पण, तीर्थ स्नान आदि कार्यों के लिए बहुत शुभ माना जाता है।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

31 मई 2022 की ग्रह स्थितिः- वृष में सूर्य, बुध(वक्री); तुला में केतु; कुम्भ में शनि; मीन में भौम, गुरु; मेष में शुक्र, राहु।
सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाकः 1944, ईस्वी 2022

दिन मान	ज्ये	मई	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, ग्रीष्म ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
35 00	18	31	भौम	प्रति दि	07:19PM	रोहि दि	10:01 AM	मातंगः, 11.30 रात मिथुन में चन्द्र।	05:25	07:31
03	19	जून	बुध	द्विती प्र	09:47PM	मृग दि	01:00 PM	अमृतम्, चन्द्रदर्शन, भगवान् श्री गोपीनाथ जी यज्ञ।	05:25	07:31
07	20	2	गुरु	तृती प्र	12:17AM	आर्द्रा दि	04:04 PM	काण्डः, 12.20 दिन कर्कट में चन्द्र।	05:25	07:32
09	21	3	शुक्र	चतु प्र	02:42AM	पुन दि	07:05 PM	अलापकम्, कर्मकाण्ड शिरोमणि काशीनाथ हण्डू जयन्ती, 1.29 दिन बुध मार्गी।	05:24	07:32
09	22	4	शनि	पंच प्र	04:53AM	तिष्या प्र	09:55 PM	मैत्रम्, ब्रह्मचारी श्री गोपीनाथ जी (गोरीपुरा) जयन्ती, स्वा. रघुनाथजी कुक्लू जयन्ती, 3.12 रात शनि वक्री।	05:24	07:33
10	23	5	रवि	षष्ठी	Day Night	अश्ले प्र	12:25 AM	वज्रम्, कुमार षष्ठी व्रत, 12.25 रात सिंह में चन्द्र।	05:24	07:33
10	24	6	सोम	षष्ठी दि	06:40AM	मघा प्र	02:25 AM	ध्वांक्षः।	05:24	07:34
13	25	7	भौम	सप्त दि	07:55AM	पू.फा.प्र	03:49 AM	धौम्यः।	05:24	07:34
15	26	8	बुध	अष्ट दि	08:31AM	उ.फा.प्र	04:30 AM	प्रवर्धः, ज्येष्ठ अष्टमी, क्षीर भवानी, लकटीपुरा, मंजगाम, खनबरन व टिक्कर यात्रा, 10.04 दिन कन्या में चन्द्र।	05:23	07:35

17	27	**9**	गुरु	नव दि	08:22AM	हस्त प्र	04:26 AM	क्षय:।	05:23	07:35
20	28	**10**	शुक्र	दश दि	07:26AM	चित्र प्र	03:36 AM	गज:, 4.07 दिन तुला में चन्द्र।	05:23	07:36
20	29	**11**	शनि	एका दि	05:46AM	स्वात प्र	02:05 AM	सिद्ध:, त्र्यह: (द्वाद प्र 3:24AM), निर्जला एकादशी, महामहेश्वराचार्य श्री अभिनवगुप्त जयन्ती, श्री नीलकण्ठ **A**	05:23	07:36
22	30	**12**	रवि	त्रयो प्र	12:27AM	विशा प्र	11:58 PM	उन्मूलं, स्वामी गोपालनन्द गिरि यज्ञ लाले दा बाग, 6.33 सायं वृश्चिक में चन्द्र।	05:23	07:37
22	31	**13**	सोम	चर्तु प्र	09:03PM	अनु प्र	09:24 PM	मानसम्।	05:23	07:37
22	32	**14**	भौम	पूर्णि दि	05:22PM	ज्येष्ठ दि	06:32 PM	मुद्गरम्, माता रूपभवानी जयन्ती, पूर्णिमा व्रत, कबीर जयन्ती, स्वा. महादेव काक जी (रतनीपोरा) जयन्ती, मासान्त, 6.32 सायं **B**	05:23	07:37

A शर्मा जयन्ती (श्रीनगर), हवन स्वा॰ सूरदास जी। **B** धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।

● षष्ठी का जन्मदिन 6 जून, द्वादशी का जन्मदिन 11 जून।

श्राद्ध:- प्रति पहले दिन, द्वितीया से षष्ठी तक अपने दिन, सप्तम से द्वादशी तक पहले दिन, त्रयोदशी से पूर्णिमा तक अपने दिन।
मध्याह्न:- प्रतिपदा से षष्ठी तक अपने दिन, सप्तमी से द्वादशी तक पहले दिन, त्रयोदशी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- (वास्तु विज्ञान) प्रत्येक घर में तुलसी का पौधा, सीता अशोक, आंवला, हरश्रृंगार, अमलतास, निर्गुण्डी इत्यादि में से कम से कम 2 पौधे अवश्य होने चाहिए। ये अमन एवं समृद्धिवर्द्धक हैं। कैक्टस (Cactus) का घर में होना अशांति देता है।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

15 जून 2022 की ग्रह स्थितिः- वृष में सूर्य, बुध; तुला में केतु; कुम्भ में शनि (वक्री); मीन में गुरु, भौम; मेष में शुक्र, राहु।
सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाकः 1944, ईस्वी 2022.

दिन मान	आष	जून	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, ग्रीष्म ऋतु, उत्तरायण/दक्षिणयन।	सू उ	सू अ
35 25	1	**15**	बुध	प्रति दि	01:32PM	मूल दि	03:33 PM	ध्वजः, श्री गुरु हर गोविंद सिंह जयन्ती,संक्रान्ति व्रत, 12.03 दिन मिथुन में सूर्य।	05:23	07:38
25	2	**16**	गुरु	द्विती दि	09:45AM	पू.षा. दि	12:37 PM	प्रजापत्यः, 5.55 सायं मकर में चन्द्र।	05:23	07:38
25	3	**17**	शुक्र	तृती दि	06:11AM	उ.षा. दि	09:56 AM	आनन्दः,त्र्यहः(चतु प्र 3:00AM) संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 10:52 रात), स्वामी सत्यानन्द जी महाराज जयन्ती।	05:24	07:38
26	4	**18**	शनि	पंच प्र	12:20AM	श्रवण दि	07:39 AM	स्थिरः, 6.43 सायं कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ, 8.15 प्रातः वृष में शुक्र।	05:24	07:39
26	5	**19**	रवि	षष्ठी प्र	10:19PM	धनि दि	05:56 AM	मातंगः। चतुर्थी का जन्म दिन 17 जून	05:24	07:39
26	6	**20**	सोम	सप्त प्र	09:02PM	पू.भा. प्र	04:35 AM	गजः, स्वा. गोविन्द कौल जलाली यज्ञ, 10.35 रात मीन में चन्द्र।	05:24	07:39
25	7	**21**	भौम	अष्ट प्र	08:31PM	उ.भा. प्र	05:03 AM	सिद्धः, सूर्य दिक्षणायन में ।	05:24	07:39
25	8	**22**	बुध	नव प्र	08:46PM	रेव	Day N ight	उन्मूलं।	05:24	07:40
27	9	**23**	गुरु	दश प्र	09:42PM	रेव दि	06:14 AM	मैत्रम्, 6.14 प्रातः मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	05:25	07:40

27	10	**24**	शुक्र	एका प्र	11:13PM	अश्वि दि	08:04 AM	वज्रम्, योगिनी एकादशी, श्री श्यामलाल ओगरा जयन्ती।	05:25	07:40
25	11	**25**	शनि	द्वाद प्र	01:10AM	भरण दि	10:23 AM	ध्वांक्ष:, 5.02 सायं वृष में चन्द्र।	05:25	07:40
23	12	**26**	रवि	त्रयो प्र	03:26AM	कृति दि	01:06 PM	धौम्य:।	05:25	07:40
23	13	**27**	सोम	चर्तु	Day Night	रोहि दि	04:02 PM	प्रवर्ध:, 5.39 प्रात: मेष में भौम।	05:26	07:40
22	14	**28**	भौम	चर्तु दि	05:52AM	मृग दि	07:05 PM	क्षय:, 5.33 प्रात: मिथुन में चन्द्र। चतुर्दशी का जन्मदिन 28 जून	05:26	07:40
22	15	**29**	बुध	अमा दि	08:22AM	आर्द्रा प्र	10:08 PM	गज:, अमावसी व्रत।	05:26	07:40

श्राद्ध:- प्रतिपदा से चतुर्थी तक पहले दिन, पंचमी से चतुर्दश तक अपने दिन, अमावस का पहले दिन।

मध्याह्न:- प्रतिपदा का अपने दिन, द्विती से चतुर्थी तक पहले दिन, पंचम से चतुर्दश तक अपने दिन, अमावस का पहले दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- **<u>श्राद्ध:-</u> हमारे <u>हिन्दूधर्म</u> के अनुसार, प्रत्येक शुभ कार्य के प्रारम्भ में माता-पिता, पूर्वजों को नमस्कार प्रणाम करना हमारा कर्तव्य है, हमारे पूर्वजों की वंश परम्परा के कारण ही हम आज यह जीवन देख रहे हैं, इस जीवन का आनंद प्राप्त कर रहे हैं।श्राद्ध हमारे पूर्वजों के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता प्रकट करने का एक सनातन वैदिक संस्कार हैं। वे हमारे पूर्वज पूजनीय हैं , उन्हें हम श्राद्ध पक्ष में स्मरण कर उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं। वास्तव में, वे प्रतिदिन स्मरणीय हैं। श्राद्ध पक्ष विशेषतः उनके स्मरण हेतु निर्धारित किया गया हैं। हमारे धर्म में, ऋषियों ने वर्ष में एक पक्ष को पितृपक्ष (श्राद्ध पक्ष) का नाम दिया, जिस पक्ष में हम अपने पितरेश्वरों का श्राद्ध, तर्पण, मुक्ति हेतु विशेष क्रिया संपन्न कर उन्हें अर्घ्य समर्पित करना हमारा कर्तव्य है।**

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

30 जून 2022 की ग्रह स्थिति :- मिथुन में सूर्य; तुला में केतु; कुम्भ में शनि(वक्री) मीन में गुरु; मेष में भौम, राहु; वृष में बुध, शुक्र।
सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाक: 1944, ईस्वी 2022

दिन मान	आष	जून	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, ग्रीष्म / वर्षा ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
35 22	16	30	गुरु	प्रति दि	10:50AM	पुन प्र	01:07 AM	सिद्धः, चन्द्रदर्शन, 6.23 सायं कर्कट में चन्द्र।	05:27	07:40
21	17	जुल	शुक्र	द्विती दि	01:10PM	तिष्या प्र	03:56 AM	उन्मूलं, शिवा भगवती जयन्ती।	05:27	07:40
20	18	2	शनि	तृती दि	03:17PM	अश्ले	Day N ight	मानसम्, 9.42 दिन मिथुन में बुध।	05:28	07:40
18	19	3	रवि	चतु दि	05:07PM	अश्ले दि	06:30 AM	वज्रम्, श्री भगवान् गोपीनाथ जी महोत्सव (3 जुलाई), 6.30 प्रातः सिंह में चन्द्र।	05:28	07:40
17	20	4	सोम	पंच दि	06:33PM	मघा दि	08:43 AM	ध्वांक्षः, गुफबल बारामुला पांजला यात्रा, कुमार षष्ठी व्रत, स्वामी स्वयंानन्द जी जयन्ती, मुट्ठी।	05:29	07:40
16	21	5	भौम	षष्ठी दि	07:29PM	पू.फा. दि	10:30 AM	धौम्यः, 4.52 दिन कन्या में चन्द्र।	05:29	07:40
15	22	6	बुध	सप्त प्र	07:49PM	उ.फा. दि	11:44 AM	प्रवर्धः, हार सतम।	05:29	07:40

ज़या देवी
जयन्ती
(बिजबिहारा)
8 जुलाई

13	23	**7**	गुरु	अष्ट दि	07:29PM	हस्त दि	12:19 PM	क्षय:, हार अष्टमी,12.22 दिन तुला में चन्द।	05:30	07:40
12	24	**8**	शुक्र	नव दि	06:26PM	चित्र दि	12:13 PM	गजः, हार नवमी, शारिका जयन्ती, ज्वाला देवी जयन्ती बिजबिहारा, हारी पर्वत यात्रा।	05:30	07:39
11	25	**9**	शनि	दश दि	04:40PM	स्वात दि	11:25 AM	सिद्ध:, 4.21 दिन वृश्चिक में चन्द।	05:31	07:39
07	26	**10**	रवि	एका दि	02:14PM	विशा दि	09:55 AM	उन्मूलं, देवशयनी एकादशी व्रत, हरिस्वाप।	05:31	07:39
06	27	**11**	सोम	द्वाद दि	11:14AM	अनु दि	07:50 AM	मानसम्, हारबाह, श्री भगवान् गोपीनाथ जी जयन्ती, लुकभवन यात्रा, 5.15 प्रात: धनु में चन्द व मूल आरम्भ।	05:32	07:3
05	28	**12**	भौम	त्रयो दि	07:47AM	मूल प्र	02:21 AM	छत्रम्, त्र्यहः(चतु प्र 4:01AM), श्री ज्वाला चतुर्दशी, खव यात्रा, 2.52 दिन मकर में वक्री शनि। चतुर्दशी का जन्मदिन 12 जुलाई	05:33	07:38
02	29	**13**	बुध	पूर्णि प्र	12:07AM	पू.षा. प्र	11:18 PM	श्रीवत्स:, मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, गुरु पूर्णिमा, छडी का पहला स्नान, व्यास पूजा, 4.33 रात मकर में चन्द, 10.50 दिन मिथुन में शुक्र।	05:33	07:3

श्राद्ध:- प्रति से षष्ठी पहले दिन, सप्त व अष्ठ अपने दिन, नवम से चतुर्दशी पहले दिन, पूर्णिमा अपने दिन।

मध्याह्न:- प्रतिपदा का पहले दिन, द्विती से एकादशी तक अपने दिन, द्वादश से चतुर्दशी तक पहले दिन, पूर्णिमा का अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- (वास्तु विज्ञान):- वास्तुशास्त्र के अनुसार घर में कैसा भी वास्तु दोष हो अगर आप घर के मुख्य द्वार पर नरीवन बांध कर वहाँ स्वास्थिक 卐 का चिन्ह बनाले, तो ऐसा करने से वास्तु दोष दूर हो जाते हैं। मान्यता है कि स्वास्थिक 卐 घर में सौभाग्य लेकर आता है। साथ ही वास्तु दोषों को दूर करने के लिए मुख्य (भर) द्वार की दहलीज़ हमेशा लकड़ की ही बनवाएं।

श्रावण कृष्ण पक्ष

14 जुलाई 2022 की ग्रह स्थिति :- मिथुन में सूर्य, बुध,शुक्र; मकर में शनि(वक्री); मीन में गुरु; मेष में भौम, राहु; वृष में बुध,शुक्र।
सप्तर्षि **5098**, विक्रमी **2079**, शाक: **1944**, ईस्वी **2022**

दिन मान	आष	जुल	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, ग्रीष्म / वर्षा ऋतु, दिक्षणायन।	सू उ	सू अ
35 02	30	**14**	गुरु	प्रति प्र	08:17PM	उ.षा. प्र	08:18 PM	सौम्य:, महामहेश्वराचार्य वासुगुप्त जयन्ती।	05:34	07:38
34 59	31	**15**	शुक्र	द्विती दि	04:40PM	श्रवण दि	05:31 PM	धौम्य:, परम् गुरु लालाजी यज्ञ (टिक्कर), मासान्त, 4.17 रात कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	05:34	07:37
57	श्रा	**16**	शनि	तृती दि	01:27PM	धनि दि	03:10 PM	प्रवर्ध:, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 10:05 रात), 10.56 रात कर्कट में सूर्य, संक्रान्ति व्रत, वर्षा ऋतु आरम्भ, वहरात, **A**	05:35	07:37
52	2	**17**	रवि	चतु दि	10:50AM	शत दि	01:25 PM	क्षय:। **A**12.10 रात कर्कट में बुध।	05:35	07:36
46	3	**18**	सोम	पंच दि	08:55AM	पू.भा. दि	12:24 PM	गज:, श्रावण सोमवार १ व्रत, 6.34 प्रात: मीन में चन्द्र।	05:36	07:36
43	4	**19**	भौम	षष्ठी दि	07:50AM	उ.भा. दि	12:12 PM	सिद्ध:।	05:37	07:35
41	5	**20**	बुध	सप्त दि	07:36AM	रेव दि	12:50 PM	उन्मूलं, शीतला सप्तमी, 12.50 दिन मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	05:37	07:35
38	6	**21**	गुरु	अष्ट दि	08:12AM	अश्वि दि	02:17 PM	मानसम्।	05:38	07:34

35	7	**22**	शुक्र	नव	दि	09:33AM	भरण	दि	04:25 PM	मुद्गरम्, 11.02 रात वृष में चन्द्र।	05:39	07:34
30	8	**23**	शनि	दश	दि	11:28AM	कृति	दि	07:03 PM	ध्वजः।	05:39	07:33
26	9	**24**	रवि	एका	दि	01:46PM	रोहि	प्र	10:00 PM	प्रजापत्यः, कमला एकादशी, कमलानाग यात्रा त्राल।	05:40	07:33
23	10	**25**	सोम	द्वाद	दि	04:16PM	मृग	प्र	01:05 AM	आनन्दः, श्रावण सोमवार २ व्रत, 11.32 दिन मिथुन में चन्द्र।	05:41	07:32
20	11	**26**	भौम	त्रयो	दि	06:47PM	आर्द्रा	प्र	04:09 AM	चरः।	05:41	07:31
16	12	**27**	बुध	चर्तु	प्र	09:12PM	पुन		Day N ight	मुसुलं, मास्टर ज़िन्दा कौल जयन्ती, 12.22 रात कर्क में चन्द्र।	05:42	07:31
15	13	**28**	गुरु	अमा	प्र	11:25PM	पुन	दि	07:05 AM	सिद्धः, अमावसी व्रत, 2.09 रात गुरु वक्री।	05:43	07:30

श्राद्धः प्रतिपदा व द्विती अपने दिन, तृती से त्रयोदशी पहले दिन, चतुर्दशी व अमावस अपने दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से तृती तक अपने दिन, चतुर्थी से दशम तक पहले दिन, एकादशी से अमावस तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- राहु, केतु व शनि से मुक्ति हेतु कुछ उपायः-

कुंडली में शनि के दोष हों या शनि की साढ़ेसाती या ढय्या चल रहा हो तो प्रत्येक शनिवार को बहते जल की नदी में काले तिल प्रवाहित करना चाहिए। इस उपाय से शनि के दोषों की शांति होती है। आप काले तिल का भी दान कर सकते हैं। इससे राहु केतु और शनि के बुरे प्रभाव समाप्त हो जाते हैं। इसके अलावा कालसर्प योग, साढ़ेसाती, ढय्या, पितृदोष आदि में भी यह उपाय कारगर है।

श्रावण शुक्ल पक्ष

29 जुलाई 2022 की ग्रह स्थिति :- कर्कट में सूर्य, बुध; तुला में केतु; मकर में शनि(वक्री); मीन में गुरु(वक्री); मेष में भौम, राहु; मिथुन में शुक्र।
सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाक: 1944, ईस्वी 2022

दिन मान	श्राव	जुल	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वर्षा ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
34 14	14	29	शुक्र	प्रति प्र	01:22AM	तिष्या दि	09:47 AM	उन्मूलं।	05:43	07:29
11	15	30	शनि	द्विती प्र	03:00AM	अश्ले दि	12:13 PM	मानसम्, चन्द्रदर्शन, 12.13 दिन सिंह में चन्द्र।	05:44	07:29
07	16	31	रवि	तृती प्र	04:19AM	मघा दि	02:20 PM	मुद्गरम्, स्वामी मधुसूदन जी पण्ड़ित (सोपोर) जयन्ती, 3.44 रात सिंह में बुध।	05:45	07:28
04	17	अग	सोम	चतु प्र	05:13AM	पू.फा. दि	04:06 PM	ध्वज:, श्रावण सोमवार ३ व्रत, 10.29 रात कन्या में चन्द्र।	05:45	07:27
01	18	2	भौम	पंच प्र	05:42AM	उ.फा. दि	05:29 PM	प्रजापत्य:, नागपंचमी, कौसरनाग यात्रा (क्रमसरनाग), नागडंढी महायज्ञ (अछबल)।	05:46	07:26
33 57	19	3	बुध	षष्ठी प्र	05:41AM	हस्त दि	06:24 PM	आनन्द:, विजयेश्चर जन्त्री के आद्य सम्पादक ज्यो आप्ताभ शर्मा जयन्ती, कुमार षष्ठी व्रत।	05:47	07:25
52	20	4	गुरु	सप्त प्र	05:07AM	चित्र दि	06:47 PM	चर:, 6.40 प्रात: तुला में चन्द्र।	05:47	07:24
51	21	5	शुक्र	अष्ट प्र	03:57AM	स्वात दि	06:37 PM	मुसुलं, अष्टमी व्रत।	05:48	07:24

कौसरनाग यात्रा
(क्रमसरनाग)
2 अगस्त

47	22	6	शनि	नव	प्र	02:11AM	विशा	दि	05:51 PM	शूलम्, 12.06 दिन वृश्चिक में चन्द।	05:49	07:23
43	23	7	रवि	दश	प्र	11:51PM	अनु	दि	04:30 PM	मृत्यु:, 5.19 प्रातः कर्कट में शुक्र।	05:49	07:22
39	24	8	सोम	एका	प्र	09:01PM	ज्येष्ठ	दि	02:37 PM	काम्य:, पवित्र काह, श्रावण सोमवार ४ व्रत, 2.37 दिन धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	05:50	07:21
34	25	9	भौम	द्वाद	दि	05:46PM	मूल	दि	12:18 PM	छत्रम्, कपालमोचन शुपियन यात्रा, श्रावण द्वादशी, ज्यो. कण्ठ शर्मा निर्वाण दिवस, श्री कृष्ण पण्ड़ित यज्ञ।	05:51	07:20
30	26	10	बुध	त्रयो	दि	02:16PM	पू.षा.	दि	09:39 AM	श्रीवत्स:, 2.58 दिन मकर में चन्द, 9.10 रात वृष में भौम।	05:51	07:19
24	27	11	गुरु	चर्तु	दि	10:39AM	उ.षा.	दि	06:53 AM	सौम्य:।	05:52	07:18
17	28	12	शुक्र	पूर्णि	दि	07:06AM	धनि	प्र	01:35 AM	प्रजापत्य:,त्र्यह:(प्रति प्र 3:47AM) रक्षा बन्धन, 2.49 दिन कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ, श्री अमरनाथ, श्री थजवारा, श्री ध्यानेश्वर A	05:53	07:17

श्री अमरेश्वर यात्रा
12 अगस्त

श्राद्धः प्रति से द्वाद अपने दिन, त्रयो से पूर्णि पहले दिन।
मध्याह्नः प्रतिपदा से त्रयोदश अपने दिन, चतुर्दशी व पूर्णिमा का पहले दिन।

A (बाड़ीपुरा), वमू (वेरीनाग), हरनाग (हरवन)व खयार यात्रा, पूर्णिमा व्रत।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- शंख को घर के पूजा स्थल में रखने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। वेद पुराणों की मानें तो शंख समुद्रमंथन के दौरान उत्पन्न हुआ है। इसलिए ऐसा कहा जाता है कि जहां शंख होता है वहां महालक्ष्मी का वास होता है। शंख की आवाज से वातावरण में शुद्धता आती है। पूजा की शुरूआत और पूजा में आरती के बाद शंख को बजाया करें।

भाद्र कृष्ण पक्ष

13 अगस्त 2021 की ग्रहस्थिति :- कर्कट में सूर्य, शुक्र; सिंह में बुध; तुला में केतु; मकर में शनि(वक्री); मीन में गुरु(वक्री); मेष में राहु; वृष में भौम।

सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाक: 1944, ईस्वी 2022

दिन मान	श्राव	अग	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वर्षा ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
33 12	29	**13**	शनि	द्विती प्र	12:54 AM	शत प्र	11:28 PM	आनन्दः, ज्यो. प्रेमनाथ शास्त्री (विजयेश्वर निवासी) अन्तर्ध्यान दिवस। • प्रतिपदा का जन्मदिन 12 अगस्त	05:53	07:16
08	30	**14**	रवि	तृती प्र	10:36 PM	पू.भा. प्र	09:56 PM	चरः, कुमार तृतीया, 4.15 दिन मीन में चन्द्र।	05:54	07:15
04	31	**15**	सोम	चतु प्र	09:02 PM	उ.भा. प्र	09:07 PM	मुसुलं, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 9:36रात), नबदल यात्रा त्राल।	05:55	07:14
33 00	32	**16**	भौम	पंच प्र	08:18 PM	रेव प्र	09:06 PM	शूलम्, चन्दन षष्ठी व्रत (चन्द्रोदय 10:04रात), 9.06 रात मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त, मासान्त।	05:55	07:13
32 56	भाद्र	**17**	बुध	षष्ठी प्र.	08:25 PM	अश्वि प्र	09:57 PM	मृत्युः, 7.23 प्रातः सिंह में सूर्य, संक्रान्ति व्रत, स्यंघ आरम्भ।	05:56	07:12
53	2	**18**	गुरु	सप्त प्र	09:21 PM	भरण प्र	11:35 PM	काम्यः, ज़न्म सतम (चन्द्रोदय 11:06 रात)।	05:57	07:11
46	3	**19**	शुक्र	अष्ट प्र	11:00 PM	कृति प्र	01:53 AM	छत्रम्, 6.06 प्रातः वृष में चन्द्र।	05:57	07:09
42	4	**20**	शनि	नव प्र	01:09 AM	रोहि प्र	04:39 AM	श्रीवत्सः, 2.05 रात कन्या में बुध।	05:58	07:08

चन्दन षष्ठी
16 अगस्त

ज़न्म सतम्
18 अगस्त

37	5	**21**	रवि	दश प्र	03:36 AM	मृग	Day N ight	सौम्यः, 6.09 सायं मिथुन में चन्द्र।	05:59	07:07
33	6	**22**	सोम	एका	Day N ight	मृग दि	07:41 AM	आनन्दः।	05:59	07:06
27	7	**23**	भौम	एका दि	06:07 AM	आर्द्रा दि	10:44 AM	चरः, अज़ा एकादशी। ● एकादशी का जन्मदिन 23 अगस्त	06:00	07:05
25	8	**24**	बुध	द्वाद दि	08:31 AM	पुन दि	01:38 PM	मुसुलं, गोवत्स पूजा, श्री अपर्णा जी जयन्ती (श्री स्वयांन्द आश्रम), स्वामी श्रीधर-जू पण्ड़ित जयन्ती (द्रगमुल कुपवारा), 6.56 **A**	06:01	07:04
19	9	**25**	गुरु	त्रयो दि	10:38 AM	तिष्या दि	04:16 PM	शूलम्। **A** प्रातः कर्कट में चन्द्र।	06:01	07:02
14	10	**26**	शुक्र	चर्तु दि	12:24 PM	अश्ले दि	06:32 PM	मृत्युः, 6.32 सायं सिंह में चन्द्र।	06:02	07:01
11	11	**27**	शनि	अमा दि	01:47 PM	मघा प्र	08:26 PM	काम्यः, दर्भ मावस, मघा मावसी, ज्योतिषी प्रकाशजुव निर्वाण दिवस, पवन् सन्धया यात्रा।	06:03	07:00

श्राद्धः प्रतिपदा का पहले दिन, द्विती से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी से अमावस तक पहले दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा पहले दिन, द्विती से एका अपने दिन, द्वादशी व त्रयोदश पहले दिन, चतुर्दश व अमावस का अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- **रुद्राक्ष धारण करने वाले व्यक्ति को क्या सावधानियां रखनी चाहिए :-** रुद्राक्ष को साक्षात् भगवान शिव का ही रूद्र रूप माना जाता है अतः इसे धारण करने वाले व्यक्ति को सैदव पवित्र रहना चाहिए | मांस -मदिरा से बिलकुल दूर रहें | रुद्राक्ष *Rudraksha* पहनकर किसी भी शवयात्रा या शमशान में न जाये | घर पर कभी सूतक (होन्छ/अशौच) के दिनों, शवयात्रा या शमशान में जाये तो इसे निकालकर पूजा स्थल पर रख दे और बाद में गंगाजल से पवित्र करने के पश्चात् ही धारण करें |

भाद्र शुक्ल पक्ष

28 अगस्त 2022 की ग्रह स्थिति :- सिंह में सूर्य; कन्या में बुध; तुला में केतु; मकर में शनि(वक्री); मीन में गुरु(वक्री); मेष में राहु; वृष में भौम; कर्कट में शुक्र।
सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाक: 1944, ईस्वी 2022

दिन मान	भाद्र	अग	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वर्षा ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
32 04	12	28	रवि	प्रति दि	02:46PM	पू.फा. प्र	09:56 PM	छत्रम्, चन्द्रदर्शन, 4.15 रात कन्या में चन्द्र।	06:03	06:59
32 01	13	29	सोम	द्विती दि	03:21PM	उ.फा. प्र	11:04 PM	श्रीवत्स:, पन्न मुहूर्त।	06:04	06:57
31 56	14	30	भौम	तृती दि	03:33PM	हस्त प्र	11:49 PM	सौम्य:, हरितालिका तृतीया, चन्द्रमा दर्शन आज अवश्य करें, (चन्द्रोदय 9:28 प्रात:)।	06:05	06:56
50	15	31	बुध	चतु दि	03:23PM	चित्र प्र	12:12 AM	कालदण्ड:, विनायक चतुर्थी, चन्द्रमा का दर्शन आज नहीं करें, स्वा. कृष्णजुव राज़दान जयन्ती, पन्न मुहूर्त, 12.03 दिन तुला में A	06:05	06:55
46	16	सित	गुरु	पंच दि	02:49PM	स्वात प्र	12:12 AM	स्थिर:, वराह पंचमी, कुमार षष्ठी, पन्न मुहूर्त, स्वा. मोतीलाल ब्रह्मचारी जी जयन्ती।	06:06	06:54
40	17	2	शुक्र	षष्ठी दि	01:52PM	विशा प्र	**11:47 PM**	मातंग:, सूर्य षष्ठी, मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, पन्न मुहूर्त, 5.56 सायं वृश्चिक में चन्द्र।	06:06	06:52
35	18	3	शनि	सप्त दि	12:29PM	अनु प्र	10:57 PM	अमृतम्। A चन्द्र, 4.18 दिन सिंह में शुक्र।	06:07	06:51

30	19	**4**	रवि	अष्ट दि	10:40AM	ज्येष्ठ प्र	09:43 PM	काण्डः, गंगाष्टमी, शारदाष्टमी, यज्ञ उमादेवी व गंगा अस्थापन वन्यखुरा, गुशी कुपवारा, साधुमाल्युन व गंगबल यात्रा, ललेश्वरी **A**	06:08	06:50
26	20	**5**	सोम	नव दि	08:28AM	मूल प्र	08:05 PM	अलापकम्, त्र्यहः (दश प्र 5:55AM)। • दशमी का जन्मदिन 5 सितम्बर	06:08	06:49
21	21	**6**	भौम	एका प्र	03:05AM	पू.षा. दि	06:09 PM	मैत्रम्, नारायणी एकादशी, गोतमनाग, नारायण नाग व डुमटबल यात्रा, 11.38 रात मकर में चन्द्र।	06:09	06:47
16	22	**7**	बुध	द्वाद प्र	12:05AM	उ.षा. दि	04:00 PM	वज्रम्, वामन १२। **A**जयन्ती,9.43 रात धनु में चन्द्र व मूल शरू।	06:10	06:46
13	23	**8**	गुरु	त्रयो प्र	09:03PM	श्रवण दि	01:46 PM	ध्वजः, विथवोतुर यात्रा, वितस्ता त्रयोदशी, 12.39 रात कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ, पन्न मुहूर्त।	06:10	06:45
06	24	**9**	शुक्र	चर्तु दि	06:08PM	धनि दि	11:35 AM	प्रजापत्यः, अनन्त चतुर्दशी, अनन्तनाग यात्रा, पापहरण नाग (सैली कारकूटनाग) यात्रा, स्वा. श्री कण्ठ यज्ञ मलिकआगन।	06:11	06:43
01	25	**10**	शनि	पूर्णि दि	03:29PM	शत दि	09:37 AM	आनन्दः, पूर्णिमा व्रत, पितृ पक्ष आरम्भ, 2.23 रात मीन में चन्द्र। 9.07 प्रातः बुध वक्री। • प्रतिपदा का श्राद्ध	06:12	06:42

श्राद्धः प्रतिपदा से दशम तक पहले दिन, एकादश से चतुर्दश अपन दिन, पूर्णिमा का पहले दिन।

मध्याह्नःप्रतिपदा से सप्तम तक अपने दिन, अष्टम व दशम का पहले दिन, एकादश से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- विनायक चतुर्थी व्रतः- इस दिन घर की साफ-सफाई करें। इसके बाद गंगाजल युक्त जल से स्नान ध्यान से निवृत होकर सर्वप्रथम व्रत संकल्प लें। इसके लिए जल से आमचन करें। इसके बाद पूजा गृह को गंगा जल से शुद्ध करें और फिर गणेश जी की पूजा फल, फूल, धूप-दीप, कपूर, अक्षत और दूर्वा से करें। धार्मिक ग्रंथों के मुताबिक, भाद्रपद में शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को भगवान श्री गणेश जी का जन्म हुआ है. अतः इस दिन गणेश जयंती मनाई जाती है। हम काश्मीरी पण्ड़ित इस पक्ष में पन्न दान कर श्री गणेश जी आराधना करते हैं।

आश्विन कृष्णपक्ष

11 सितम्बर 2022 की ग्रह स्थिति :- सिंह में सूर्य, शुक्र; कन्या में बुध(वक्री); मकर में शनि(वक्री); मीन में गुरु(वक्री); वृष में भौम।
सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाक: 1944, ईस्वी 2022

काश्मीरी पण्डित बलिदान दिवस 14 सितम्बर

दिन मान	भाद्र	सित	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वर्षा / शरद ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
30 58	26	**11**	रवि	प्रति दि	01:15PM	पू.भा. दि	08:02 AM	चर:। • द्वितीया का श्राद्ध।	06:12	06:41
57	27	**12**	सोम	द्विती दि	11:36AM	उ.भा. दि	06:59 AM	मुसुलं। • तृतीया का श्राद्ध।	06:13	06:39
47	28	**13**	भौम	तृती दि	10:38AM	रेव दि	06:36 AM	शूलम्, 6.36 प्रात: मेष में चन्द व पंचक समाप्त, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 8:32रात)। • चतुर्थी का श्राद्ध।	06:14	06:38
43	29	**14**	बुध	चतु दि	10:26AM	अश्वि दि	06:57 AM	मृत्यु:, बलिदान दिवस (श्री टिकलाल टपलू)। • पंचमी का श्राद्ध।	06:14	06:37
37	30	**15**	गुरु	पंच दि	11:01AM	भरण दि	08:05 AM	काम्य:, 2.28 दिन वृष में चन्द। • षष्ठी का श्राद्ध।	06:15	06:35
31	31	**16**	शुक्र	षष्ठी दि	12:20PM	कृति दि	09:55 AM	छत्रम्, साहिब सप्तमी, मासान्त। • सप्तमी का श्राद्ध।	06:15	06:34
28	असू	**17**	शनि	सप्त दि	02:15PM	रोहि दि	12:21 PM	श्रीवत्स:, संक्रान्ति व्रत, हरुद शरु, 7.21 प्रात: कन्या में सूर्य, 1.44 रात मिथुन में चन्द। • अष्टमी का श्राद्ध।	06:16	06:33

23	2	**18**	रवि	अष्ट दि	04:33PM	मृग दि	03:11 PM	सौम्यः, महालक्ष्मी अष्टमी।		06:17	06:31
17	3	**19**	सोम	नव प्र	07:02PM	आर्द्रा दि	06:10 PM	कालदण्डः।	● नवमी का श्राद्ध।	06:17	06:30
14	4	**20**	भौम	दश प्र	09:27PM	पुन प्र	09:06 PM	स्थिरः, 2.23 दिन कर्कट में चन्द्र।	● दशमी का श्राद्ध।	06:18	06:28
08	5	**21**	बुध	एका प्र	11:35PM	तिष्या प्र	11:47 PM	मातंगः, इन्द एकादशी, सन्यासियों का श्राद्ध।	● एकादशी का श्राद्ध।	06:19	06:27
04	6	**22**	गुरु	द्वाद प्र	01:18AM	अश्ले प्र	02:03 AM	अमृतम्, 2.03 रात सिंह में चन्द्र।	● द्वादशी का श्राद्ध।	06:19	06:26
29 57	7	**23**	शुक्र	त्रयो प्र	02:31AM	मघा प्र	03:50 AM	काण्डः।	● त्रयोदशी का श्राद्ध।	06:20	06:24
53	8	**24**	शनि	चर्तु प्र	03:13AM	पू.फा. प्र	05:07 AM	अलापकम्, स्वामी प्राणनाथ भठ्ठ गरीब (भाईजी) जयन्ती 9.03 रात कन्या में शुक्र।	● चतुर्दशी का श्राद्ध।	06:21	06:23
48	9	**25**	रवि	अमा प्र	03:24AM	उ.फा. प्र	05:55 AM	मैत्रम्, सोमयार व विजयेश्वर यात्रा, पित्रमावसी, सर्वपितृ श्राद्ध, अज्ञात मृत्यु वाले तिथि श्राद्ध, 11.22 दिन कन्या में चन्द्र।		06:21	06:22

श्राद्धः प्रतिपदा से अष्टम तक पहले दिन, नवम से अमावस तक अपने दिन। ● पूर्णिमा व अमावसी का श्राद्ध 25 सितम्बर

मध्याहनः प्रतिपदा अपने दिन, द्विती से पंचम तक पहले दिन, षष्ठी से अमावस तक अपने दिन।

आवश्यक जानकारीः- जिनकी मृत्यु तिथि पूर्णिमा हो, उनका पितृपक्ष श्राद्ध पूर्णिमा को करना चाहिए, यह शास्त्रीय मत्त है, परन्तु जम्मू काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाण आदि प्रदेशों में पूर्णिमा मृत्यु तिथि वालों का पितृपक्ष श्राद्ध सर्वपितृ अमावसी को करने की लोकपरम्परा है। यही कारण है कि हमारे पूर्वज भी सदियों से इसी परंपरा को निभाते आऐ हैं ।

आश्विन शुक्ल पक्ष

26 सितम्बर 2022 की ग्रह स्थिति :- कन्या में सूर्य, बुध(व), शुक्र; तुला में केतु; मकर में शनि(व); मीन में गुरु(व); मेष में राहु; वृष में भौम;
सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाकः 1944, ईस्वी 2022

दिन मान	असू	सित	वार	तिथि		समाप्ति काल	नक्षत्र		समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शरद् ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
29 43	10	26	सोम	प्रति	प्र	03:09AM	हस्त	प्र	06:16 AM	वज्रम्, नवरात्र (शरद) आरम्भ, घटस्थापन।	06:22	06:20
38	11	27	भौम	द्विती	प्र	02:29AM	चित्र	प्र	06:14 AM	ध्वांक्षः, चन्द्रदर्शन, 6.18 सायं तुला में चन्द्र।	06:23	06:19
33	12	28	बुध	तृती	प्र	01:28AM	स्वात	प्र	05:52 AM	धौम्यः, कर्मकाण्ड शिरोमणि काशीनाथ हण्डू निर्वाण दिवस।	06:23	06:18
26	13	29	गुरु	चतु	प्र	12:09AM	विशा	प्र	05:13 AM	प्रवर्धः, 11.24 रात वृश्चिक में चन्द्र।	06:24	06:16
22	14	30	शुक्र	पंच	प्र	10:35PM	अनु	प्र	04:18 AM	क्षयः, शुक्र अस्त 3.09 रात से, यज्ञ दर्गा मन्दिर नगरोटा जम्मू।	06:25	06:15
18	15	अक	शनि	षष्ठी	प्र	08:47PM	ज्येष्ठ	प्र	03:11 AM	गजः, कुमार षष्ठी व्रत, 3.11 रात धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	06:25	06:14
11	16	2	रवि	सप्त	प्र	06:47PM	मूल	प्र	01:52 AM	सिद्धः, विज़या सप्तमी, मार्तण्ड यात्रा।	06:26	06:12
07	17	3	सोम	अष्ट	दि	04:38PM	पू.षा.	प्र	12:25 AM	उन्मूलं, अष्टमी व्रत, श्री दुर्गाष्टमी, 6.02 प्रातः मकर में चन्द्र।	06:27	06:11

शुक्र अस्त
30 सितम्बर

03	18	4	भौम	नव दि	02:21PM	उ.षा. प्र	10:51 PM	मानसम्, महानवमी, नवरात्र समाप्त, माता भद्रकाली अस्थापन वडीपोरा हंदवारा कश्मीर यात्रा / फलवाल मंडाल जम्मू ।	06:27	06:10
29 59	19	5	बुध	दश दि	12:01PM	श्रवण प्र	09:15 PM	छत्रम्, विजया दशमी, दशहरा, मंगला भगवती यज्ञ वची पुलवामा।	06:28	06:09
53	20	6	गुरु	एका दि	09:41AM	धनि प्र	07:42 PM	श्रीवत्सः, पापंकुशा एकादशी, 8.28 प्रातः कुम्भ में चन्द व पंचक आरम्भ।	06:29	06:07
48	21	7	शुक्र	द्वाद दि	07:27AM	शत प्र	06:17 PM	सौम्यः, त्र्यहः(त्रयो प्र 5:25AM)। ● त्रयोदशी का जन्मदिन 7 अक्टूबर	06:29	06:06
43	22	8	शनि	चर्तु प्र	03:42AM	पू.भा. दि	05:08 PM	कालदण्डः, 11.23 दिन मीन में चन्द्र।	06:30	06:05
36	23	9	रवि	पूर्णि प्र	02:25AM	उ.भा. दि	04:20 PM	स्थिरः, पूर्णिमा व्रत, लवंग पुनिम।	06:31	06:03

श्राद्धः प्रतिपदा से अष्टम तक अपने दिन, नवम से त्रयोदश तक पहले दिन, चतुर्दश व पूर्णिमा अपने दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से दशम तक अपने दिन, एकादशी से त्रयोदशी तक पहले दिन, चतुर्दशा व पूर्णिमा का अपने दिन।

प्रस्तुत है मां दुर्गा को प्रिय 3 सरल मंत्र

1. 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै' का जाप अवश्य करें।
2. सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यंबके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते।।
3. ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।।

कार्तिक कृष्ण पक्ष

10 अक्टूबर 2022 की ग्रह स्थिति :- कन्या में सूर्य, बुध, शुक्र; तुला में केतु, मकर में शनि(व); मीन में गुरु(व); मेष में राहु; वृष में भौम।
सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाक: 1944, ईस्वी 2022

दिन मान	असू	अक	वार	तिथि		समाप्ति काल	नक्षत्र		समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शरद ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
28 33	24	**10**	सोम	प्रति	प्र	01:39AM	रेव	दि	04:02 PM	मातंग:, 4.02 दिन मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	06:32	06:02
28	25	**11**	भौम	द्विती	प्र	01:30AM	अश्वि	दि	04:17 PM	अमृतम्।	06:32	06:01
23	26	**12**	बुध	तृती	प्र	02:00AM	भरण	दि	05:10 PM	काण्ड:, 11.29 रात वृष में चन्द्र।	06:33	06:00
17	27	**13**	गुरु	चतु	प्र	03:09AM	कृति	प्र	06:41 PM	अलापकम्, करवा चौथ, संकट चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 8:10 रात)।	06:34	05:58
11	28	**14**	शुक्र	पंच	प्र	04:53AM	रोहि	प्र	08:47 PM	मैत्रम्।	06:35	05:57
09	29	**15**	शनि	षष्ठी		Day N ight	मृग	प्र	11:22 PM	वज्रम्, 10.01 दिन मिथुन में चन्द्र।	06:35	05:56
03	30	**16**	रवि	षष्ठी	दि	07:04AM	आर्द्रा	प्र	02:14 AM	ध्वांक्ष:, 6.35 प्रात: मिथुन में भौम। षष्ठी का जन्मदिन 16 अक्टूबर।	06:36	05:55
27 59	कत	**17**	सोम	सप्त	दि	09:30AM	पुन	प्र	05:12 AM	धौम्य:, संक्रान्ति व्रत, 7.22 सायं तुला में सूर्य, 10.28 रात कर्कट में चन्द्र।	06:37	05:54

विजयेश्वर जन्त्री
के प्रवर्तक
ज्यो.आफ़ताब शर्मा
अन्तर्ध्यान दिवस
13 अक्टूबर

55	2	**18**	भौम	अष्ट	दि	11:58AM	तिष्या	Day N ight	प्रवर्धः, 9.37 रात तुला में चन्द्र, 9.38 रात तुला में शुक्र।	06:38	05:53
49	3	**19**	बुध	नव	दि	02:14PM	तिष्या दि	08:02 AM	मातंगः।	06:38	05:51
44	4	**20**	गुरु	दश	दि	04:05PM	अश्ले दि	10:30 AM	अमृतम्,10.30 दिन सिंह में चन्द्र।	06:39	05:50
39	5	**21**	शुक्र	एका	दि	05:23PM	मघा दि	12:28 PM	काण्डः, रमा एकादशी।	06:40	05:49
35	6	**22**	शनि	द्वाद	प्र	06:03PM	पू.फा. दि	01:50 PM	अलापकम्, गोवत्सा पूजा, 8.05 रात कन्या में चन्द्र।	06:41	05:48
31	7	**23**	रवि	त्रयो	प्र	06:04PM	उ.फा. दि	02:34 PM	मैत्रम्, धन्वन्तरी जयन्ती, श्री हनुमान जयन्ती।	06:41	05:47
26	8	**24**	सोम	चर्तु	दि	05:27PM	हस्त दि	02:42 PM	वज्रम्, दीपमाला, महा लक्ष्मी पूजन, स्वामी चूनीलाल जी राज़दान जयन्ती, 2.33 दिन तुला में चन्द्र।	06:42	05:46
21	9	**25**	भौम	अमा	दि	04:18PM	चित्र दि	02:16 PM	ध्वांक्षः, सूर्य ग्रहण, स्वा. ताराचन्द जी जयन्ती, त्रिक आश्रम, त्रिलोकपुरा, यज्ञ गंगा अस्थापन वन्यखुरा, बारामुल्ला, अमावसी व्रत।	06:43	05:45

दीपावली

24 अक्टूबर

श्राद्धः प्रतिपदा से षष्ठी अपने दिन, सप्तमी से एकादशी पहले दिन, द्वादशी व चतुर्दशी अपने दिन, अमावस पहले दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से षष्ठी तक अपने दिन, सप्तमी व अष्टमी का पहले दिन, नवम से अमावस तक अपने दिन।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्। सदा बसन्तं हृदयारबिन्दे भबं भवानीसहितं नमामि।।

मंत्र का अर्थः- जो कर्पूर जैसे गौर वर्ण वाले हैं, करुणा के अवतार हैं, संसार के सार हैं और भुजंगों का हार धारण करते हैं, वे भगवान शिव माता भवानी सहित मेरे हृदय में सदैव निवास करें और उन्हें मेरा नमन है।

कार्तिक शुक्लपक्ष

26 अक्टूबर 2022 की ग्रह स्थिति :- तुला में सूर्य, शुक्र; मकर में शनि; मीन में गुरु(व); मेष में राहु; मिथुन में भौम; कन्या में बुध।
सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाक: 1944, ईस्वी 2022

दिन मान	कत	अक	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शरद ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
27 15	10	**26**	बुध	प्रति दि	02:42PM	स्वात दि	01:24 PM	धौम्य:, अन्नकूट, भातृ दूज/भाई दूज, गोवर्द्धन पूजा,1.48 दिन तुला में बुध।	06:44	05:44
11	11	**27**	गुरु	द्विती दि	12:45PM	विशा दि	12:10 PM	प्रवर्ध:, चन्द्रदर्शन, विश्वकर्मा पूजा, 6.31 प्रात: वृश्चिक में चन्द्र।	06:45	05:43
08	12	**28**	शुक्र	तृती दि	10:34AM	अनु दि	10:42 AM	क्षय:।	06:46	05:42
03	13	**29**	शनि	चतु दि	08:14AM	ज्येष्ठ दि	09:05 AM	गज:, त्र्यह:(पंच प्र 5:50AM), 9.05 प्रात: धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ। • पंचमी का जन्मदिन 29 अक्टूबर	06:46	05:41
26 57	14	**30**	रवि	षष्ठी प्र	03:28AM	मूल दि	07:25 AM	सिद्ध:, कुमार षष्ठी व्रत, 6.54 सायं भौम वक्री।	06:47	05:40
50	15	**31**	सोम	सप्त प्र	01:12AM	उ.षा. प्र	04:15 AM	मृत्यु:, स्वामी श्री गोकुल नाथ जी जयन्ती, अम्बिका विहार, गोल गुजराल जम्मू, 11.24 दिन मकर में चन्द्र।	06:48	05:39
48	16	नव	भौम	अष्ट प्र	11:05PM	श्रवण प्र	02:53 AM	अलापकम्, गोपाल अष्टमी, अष्टमी व्रत।	06:49	05:38

पण्डित कृपाराम दत
आनन्दपुर साहिब
प्रयाण दिवस
26 अक्टूबर

43	17	2	बुध	नव प्र	09:10PM	धनि प्र	01:43 AM	मैत्रम्, 2.16 दिन कुम्भ में चन्द व पंचक आरम्भ।	06:50	05:37
36	18	3	गुरु	दश प्र	07:30PM	शत प्र	12:48 AM	वज्रम्।	06:51	05:36
33	19	4	शुक्र	एका प्र	06:09PM	पू.भा. प्र	12:12 AM	ध्वांक्षः, हरिबोधिनी ११, तुलसी विवाह, शिव स्वाप, 6.19 सायं मीन में चन्द।	06:52	05:35
28	20	5	शनि	द्वाद दि	05:07PM	उ.भा. प्र	11:56 PM	धौम्यः।	06:52	05:35
23	21	6	रवि	त्रयो दि	04:29PM	रेव प्र	12:04 AM	प्रवर्धः, 12.04 रात मेष में चन्द व पंचक समाप्त।	06:53	05:34
18	22	7	सोम	चर्तु दि	04:16PM	अश्वि प्र	12:37 AM	क्षयः।	06:54	05:33
14	23	8	भौम	पूर्णि दि	04:32PM	भरण प्र	01:38 AM	गजः, चन्द ग्रहण, **श्री गुरु नानक देव जयन्ती**, कार्तिक पूर्णिमा व्रत, दीपदान मुहूर्त, हवन स्वामी सूरदास आश्रम सारी जम्मू।	06:55	05:32

दीपदान मुहूर्त
8 नवम्बर

श्राद्धः प्रतिपदा से पंचमी तक पहले दिन, षष्ठी से द्वादशी तक अपने दिन, त्रयोदश से पूर्णिमा तक पहले दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा व द्विती अपने दिन, तृती व पंचमी का पहले दिन, षष्ठी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- दीपदान (तीलद्युन) षडमोस या मासवार पर देने का प्रचल्लन जो कुछ समय से आरम्भ हुआ है, गलत है। काश्मीर के किसी भी पौराणिक ग्रन्थ में इस का कही भी वर्णन नहीं है जो इस की आज्ञा देता हो कि षडमोस या मासवार पर दीपदान देना चाहिये, केवल कार्तिक पूर्णिमा व तील अष्टमी दीपदान के स्वयं सिद्ध मुहूर्त हैं। इन दिनों के विना आप कृपया दीपदान देने के लिए दीपदान मुहूर्त से ही शुद्ध तिथि का ही चयन करें।

मार्ग कृष्ण पक्ष

20 नवम्बर 2022 की ग्रह स्थिति :- तुला में सूर्य, बुध, शुक्र, केतु; मकर में शनि; मीन में गुरु; मेष में राहु; मिथुन में भौम(व)।
सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाकः 1944, ईस्वी 2022

दिन मान	कत	नव	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में,शरद / हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
26 11	24	**9**	बुध	प्रति दि	05:17PM	कृति प्र	03:09 AM	सिद्धः, 7.58 प्रातः वृष में चन्द्र।	06:56	05:32
07	25	**10**	गुरु	द्विती प्र	06:33PM	रोहि प्र	05:08 AM	उन्मूलं।	06:57	05:31
03	26	**11**	शुक्र	तृती प्र	08:18PM	मृग	Day N ight	मानसम्, 6.17 सायं मिथुन में चन्द्र, 8.08 रात वृश्चिक में शुक्र।	06:58	05:30
26 00	27	**12**	शनि	चतु प्र	10:26PM	मृग दि	07:33 AM	वज्रम्, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 8:18 रात)।	06:59	05:30
25 55	28	**13**	रवि	पंच प्र	12:52AM	आर्द्रा दि	10:18 AM	ध्वांक्षः, श्री काशीबव हुगाम यज्ञ, 9.18 रात वृश्चिक में बुध, 8.38 रात वृष में वक्री भौम।	07:00	05:29
54	29	**14**	सोम	षष्ठी प्र	03:24AM	पुन दि	01:15 PM	धौम्यः, 6.30 प्रातः कर्कट में चन्द्र।	07:00	05:28
52	30	**15**	भौम	सप्त प्र	05:50AM	तिष्या दि	04:12 PM	प्रवर्धः, मासान्त।	07:01	05:28
48	मार्ग	**16**	बुध	अष्ट	Day N ight	अश्ले प्र	06:58 PM	क्षयः, हेमन्त ऋतु आरम्भ, 6.58 सायं सिंह में चन्द्र, 7.14 सायं वृश्चिक में सूर्य, संक्रान्ति व्रत।	07:02	05:27

46	2	**17**	गुरु	अष्ट	दि	07:57AM	मघा	प्र	09:20 PM	गजः, महाकाल भैरव अष्टमी।	07:03	05:27
41	3	**18**	शुक्र	नव	दि	09:34AM	पू.फा.	प्र	11:08 PM	सिद्धः, 5.29 रात कन्या में चन्द्र।	07:04	05:26
38	4	**19**	शनि	दश	दि	10:30AM	उ.फा.	प्र	12:14 AM	उन्मूलं।	07:05	05:26
34	5	**20**	रवि	एका	दि	10:42AM	हस्त	प्र	12:36 AM	मानसम्, उत्पन्ना एकादशी।	07:06	05:25
30	6	**21**	सोम	द्वाद	दि	10:07AM	चित्र	प्र	12:14 AM	मुद्गरम्, स्व.सर्वानन्द जी यज्ञ गोतमनाग, 12.30दिन तुला में चन्द्र।	07:07	05:25
27	7	**22**	भौम	त्रयो	दि	08:50AM	स्वात	प्र	11:12 PM	ध्वजः, त्र्यहः(चतुर्दशी प्र 6.54AM), शुक्रोदय 5.35 प्रातः से।	07·08	05:24
26	8	**23**	बुध	अमा	प्र	04:27AM	विशा	प्र	09:37 PM	प्रजापत्यः, अमावसी व्रत, 4.03 दिन वृश्चिक में चन्द्र, 4.27 रात गुरु मार्गी।	07·09	05:24

शुक्र उदय
22 नवम्बर

श्राद्धः प्रतिपदा का पहले दिन, द्विती से अष्टमी तक अपने दिन, नवम से चतुर्दश तक पहले दिन, अमावस का अपने दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से अष्टमी तक अपने दिन, नवम से चतुर्दशी तक पहले दिन, अमावस का अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- **रुद्राक्ष धारण करने का महत्व : – धार्मिक महत्व : –** रुद्राक्ष भगवान शिव को बहुत प्रिय होते है अतः इन्हें धारण करने वाले मनुष्य पर हमेशा भगवान शिव की विशेष कृपा बनी रहती है। रुद्राक्ष धारण करने से सभी प्रकार की नकारात्मक उर्जा दूर रहती है। भय आदि से मुक्ति मिलती है। रुद्राक्ष के मुख के आधार पर इसके धार्मिक महत्व को और स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।
वैज्ञानिक महत्व : – रुद्राक्ष को शरीर पर धारण करने के धार्मिक महत्व के साथ -साथ इसके वैज्ञानिक कारण भी है। रुद्राक्ष के रोम छिद्रों से एक अलग प्रकार का स्पदंन होता है जो मानव हृदय पर सकारात्मक प्रभाव दिखाता है। रुद्राक्ष के धारण करने से हृदय रक्त चाप सामान्य रहता है। इसके अतिरिक्त मानव मस्तिस्क पर भी रुद्राक्ष से निकलने वाली विशेष तरंगे सकारात्मक प्रभाव दिखाती है। रुद्राक्ष धारण करने वाला व्यक्ति तनाव ,चिंता और अवसाद आदि से मुक्त रहता है।

मार्ग शुक्ल पक्ष

24 नवम्बर 2022 की ग्रह स्थितिः- वृश्चिक में सूर्य, शुक्र, बुध; मकर में शनि; मीन में गुरु; मेष में राहु; वृष में भौम(व); तुला में केतु।

सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाकः 1944, ईस्वी 2022

दिन मान	मार्ग	नव	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
25 22	9	**24**	गुरु	प्रति प्र	01:38AM	अनु प्र	07:37 PM	आनन्दः।	07:10	05:24
18	10	**25**	शुक्र	द्विती प्र	10:35PM	ज्येष्ठ दि	05:21 PM	चरः, चन्द्रदर्शन, 5.21 सायं धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	07:10	05:24
16	11	**26**	शनि	तृती प्र	07:28PM	मूल दि	02:58 PM	मुसुलं।	07:11	05:23
12	12	**27**	रवि	चतु दि	04:26PM	पू.षा. दि	12:38 PM	शूलम्, 6.04 सायं मकर में चन्द्र।	07:12	05:23
10	13	**28**	सोम	पंच दि	01:35PM	उ.षा. दि	10:29 AM	मृत्युः, गुरु तेगबहादुर जी शहीदी दिवस, कुमार षष्ठी।	07:13	05:23
07	14	**29**	भौम	षष्ठी दि	11:05AM	श्रवण दि	08:38 AM	अलापकम्, 7.51 सायं कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	07:14	05:23
05	15	**30**	बुध	सप्त दि	08:59AM	शत प्र	06:12 AM	मानसम्, कर्मयोगी स्व. निरंजन नाथ कौल निर्वाण दिवस।	07:15	05:23
03	16	दिस	गुरु	अष्ट दि	07:21AM	पू.भा. प्र	05:43 AM	मुद्गरम्, त्र्यहः(नव प्र 6.15 AM), 11.48 रात मीन में चन्द्र। ● नवमी का जन्मदिन 1 दिसम्बर	07:16	05:22

01	17	**2**	शुक्र	दश प्र	05:40AM	उ.भा. प्र	05:45 AM	ध्वज:।	07:16	05:22
24 57	18	**3**	शनि	एका प्र	05:35AM	रेव प्र	06:16 AM	प्रजापत्य:, मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयन्ती (कुमार जी आश्रम मुठ्ठी), 6.45 प्रात: धनु में बुध।	07:17	05:22
56	19	**4**	रवि	द्वाद प्र	05:58AM	अश्वि प्र	07:15 AM	आनन्द:, 6.16 प्रात: मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	07:18	05:22
53	20	**5**	सोम	त्रयो प्र	06:48AM	भरण	Day N ight	चर:, 5.56 सायं धनु में शुक्र।	07:19	05:22
52	21	**6**	भौम	चर्तु	Day N ight	भरण दि	08:38 AM	गज:, 3.03 दिन वृष में चन्द, स्व. मधुसूदन पण्डित (सोपोर) यज्ञ।	07:20	05:22
51	22	**7**	बुध	चर्तु दि	08:02AM	कृति दि	10:25 AM	सिद्ध:, श्री दत्तोत्रय जयन्ती। ● चतुर्दशी का जन्मदिन 7 दिसम्बर	07:21	05:22
47	23	**8**	गुरु	पूर्णि दि	09:38AM	रोहि दि	12:33 PM	उन्मूलं, पूर्णिमा व्रत, श्री अन्नपूर्ण जी जयन्ती।	07:21	05:23

श्राद्ध: प्रतिपदा से चतुर्थी तक अपने दिन, पंचम से नवमी तक पहले दिन, दशम से चतुर्दश तक अपने दिन, पूर्णिमा का पहले दिन।
मध्याह्न: प्रतिपदा से पंचम तक अपने दिन, षष्ठी से नवम तक पहले दिन, दशम से चतुर्दशी अपने दिन, पूर्णिमा का पहले दिन।

आवश्यक संदेश : मार्ग शुक्लपक्ष पंचमी (28 नवम्बर 2022) काश्मीरी पण्डितों के धर्मरक्षक अमर बलिदानी श्री गुरूतेगबहादुर महराज का शहीदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन गुरुद्वारा शीशगंज, चान्दनी चौक दिल्ली में दीवान आयोजित होता है। दिल्ली वासी काश्मीरी पण्डित इस दिन इस महान तीर्थस्थल पर उनके उस महान बिलिदान को याद व अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। हम शेष कश्मीरी पण्डित समाज को भी इस दिन अपने निकटतम गुरुद्वारों में आयोजित दीवानों में सम्मिलित होने की प्रार्थना करते हैं।

तिलक जन्जू (जनेउ) राखा प्रभु ताका, कीनौ बड़ो कलू में साका। धर्म हेत साका जिन किया, सीस दिया पर सिरर न दिया।।
तेग बहादुर के चलत, भयो जगत को सोक, है है है सब जग भयो, जै जै सुर लोक।।

पौष कृष्ण पक्ष

09 दिसम्बर 2022 की ग्रह स्थिति :- वृश्चिक में सूर्य; धनु में बुध, शुक्र; मकर में शनि; मीन में गुरु; मेष में राहु; वृष में भौम(व); तुला में केतु।
सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाक: 1944, ईस्वी 2022

दिन मान	मार्ग	दिस	वार	तिथि		समाप्ति काल	नक्षत्र		समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन /उत्तरायण।	सू उ	सू अ
24 44	24	**9**	शुक्र	प्रति	दि	11:34AM	मृग	दि	02:59 PM	मानसम्, मुंजहर तहर, मातृका पूजा।	07:22	05:23
44	25	**10**	शनि	द्विती	दि	01:48PM	आर्द्रा	प्र	05:42 PM	मुद्गरम्, डॉ. मनमोहन ज्योतिषी अन्तर्ध्यान दिवस।	07:23	05:23
42	26	**11**	रवि	तृती	दि	04:15PM	पुन	प्र	08:36 PM	ध्वज:, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 8:00रात), 1.52 दिन कर्कट में चन्द्र।	07:24	05:23
40	27	**12**	सोम	चतु	प्र	06:49PM	तिष्या	प्र	11:36 PM	प्रजापत्य:।	07:24	05:23
40	28	**13**	भौम	पंच	प्र	09:22PM	अश्ले	प्र	02:32 AM	आनन्द:, 2.32 रात सिंह में चन्द्र।	07:25	05:23
41	29	**14**	बुध	षष्ठी	प्र	11:42PM	मघा	प्र	05:16 AM	चर:।	07·26	05:24
41	30	**15**	गुरु	सप्त	प्र	01:40AM	पू.फा.		Day N ight	मुसुलं, श्री शारदा देवी जयन्ती, मासान्त।	07:26	05:24
38	पौष	**16**	शुक्र	अष्ट	प्र	03:02AM	पू.फा.	दि	07:34 AM	सिद्ध:, भद्रकाली / महाकाली जयन्ती, भंडारा माता भद्रकाली अस्थापन फलवाल मंडाल जम्मू, संक्रान्ति व्रत, 2.04 **A**	07:27	05:24

38	2	**17**	शनि	नव प्र	03:42AM	उ.फा. दि	09:18 AM	उन्मूलं, स्वा. रघुनाथ जी कुकिलू यज्ञ।	07:28	05:25
38	3	**18**	रवि	दश प्र	03:32AM	हस्त दि	10:18 AM	मानसम्, श्री आनन्देश्वर भैरव जयन्ती, स्वामी नन्द बब साहिब जयन्ती, लालेदाबाग, 10.30 रात तुला में चन्द्र।	07:28	05:25
37	4	**19**	सोम	एका प्र	02:33AM	चित्र दि	10:31 AM	मुद्गरम्, सफलता एकादशी।	07:29	05:26
37	5	**20**	भौम	द्वाद प्र	12:46AM	स्वात दि	09:54 AM	ध्वजः, महामहेश्वराचार्य श्री राम जी जयन्ती, त्रक आश्रम, गोलगुजराल, 2.57 रात वृश्चिक में चन्द्र।	07:29	05:26
37	6	**21**	बुध	त्रयो प्र	10:16PM	विशा दि	08:33 AM	प्रजापत्यः, सूर्य उत्तरायण में।	07:30	05:27
37	7	**22**	गुरु	चर्तु प्र	07:14PM	ज्येष्ठ प्र	04:02 AM	कालदण्डः, क्ष्यचरिमावस, 4.02 रात धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	07:30	05:27
36	8	**23**	शुक्र	अमा दि	03:47PM	मूल प्र	01:13 AM	स्थिरः, अमावसी व्रत।	07:31	05:28

पण्डित कृपाराम दत्त
बलिदान दिवस
21 दिसम्बर

A दिन कन्या में चन्द्र, 9.58 प्रातः धनु में सूर्य, पौष मास आरम्भ।

श्राद्धः प्रतिपदा से तृती तक पहले दिन, चतुर्थी से अमावस तक अपने दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा का पहले दिन, द्विती से अमावस तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- मकान बनवाने के बाद हम हवन, गृह प्रवेश पूजा पाठ आदि क्यों करवाते है?
गृह प्रवेश के समय यज्ञ, रामायण पाठ या गृह प्रवेश पूजा कराने से अनावश्यक गृह दोष का निवारण हो जाता है और घर में लक्ष्मी का आगमन होता है। समस्त कुप्रभावों को नष्ट करने के लिए ही हम गृह प्रवेश पूजा कराते हैं

पौष शुक्ल पक्ष

24 दिसम्बर 2022 की ग्रह स्थिति :- धनु में सूर्य, बुध, शुक्र; मकर में शनि; मीन में गुरु; मेष में राहु; वृष में भौम(व); तुला में केतु।
सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाकः 1944, ईस्वी 2022-23

चेतना दिवस
27 दिसम्बर

दिन मान	पौष	दिस	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, हेमन्त ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
24 38	9	**24**	शनि	प्रति दि	12:07PM	पू.षा. प्र	10:15 PM	मातंगः, श्री मिरजाकाक जयन्ती, चन्द्रदर्शन, 3.31 रात मकर में चन्द्र।	07:31	05:28
36	10	**25**	रवि	द्विती दि	08:25AM	उ.षा. प्र	07:21 PM	अमृतम्, त्र्यहः(तृती प्र 4.52 AM)।	07:32	05:29
40	11	**26**	सोम	चतु प्र	01:38AM	श्रवण दि	04:41 PM	सिद्धः, 3.31 रात कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	07:32	05:29
41	12	**27**	भौम	पंच प्र	10:53PM	धनि दि	02:27 PM	उन्मूलं, स्वर्गी श्री प्रेम नाथ भट्ट बलिदान दिवस, चेतना दिवस, 5.09 रात मकर में बुध।	07:32	05:30
40	13	**28**	बुध	षष्ठी प्र	08:45PM	शत दि	12:46 PM	मानसम्, कुमार षष्ठी व्रत, स्वामी श्रीधर-जू निर्वाण दिवस।	07:33	05:31
43	14	**29**	गुरु	सप्त प्र	07:17PM	पू.भा. दि	11:44 AM	मुद्गरम्, 5.55 प्रातः मीन में चन्द्र, 4.03 दिन मकर में शुक्र, 3.01 दिन बुध वक्री।	07:33	05:31
45	15	**30**	शुक्र	अष्ट प्र	06:34PM	उ.भा. दि	11:24 AM	ध्वजः, अष्टमी व्रत, 10.07 रात धनु में वक्री बुध।	07:33	05:32
46	16	**31**	शनि	नव प्र	06:33PM	रेव दि	11:47 AM	प्रजापत्यः, 11.47 दिन मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	07:34	05:33

47	17	जन	रवि	दश प्र	07:12PM	अश्वि दि	12:48 PM	आनन्दः, ईस्वी 2023 शरू, श्री पृथ्वीनाथ भट्ट नूरपुरा त्राल जयन्ती।	07:34	05:33
50	18	2	सोम	एका प्र	08:24PM	भरण दि	02:23 PM	चरः, पुत्रदा एकादशी व्रत, 8.52 रात वृष में चन्द्र।	07:34	05:34
50	19	3	भौम	द्वाद प्र	10:02PM	कृति दि	04:26 PM	मुसुलं।	07:34	05:35
51	20	4	बुध	त्रयो प्र	12:01AM	रोहि प्र	06:48 PM	शूलम्।	07:34	05:36
53	21	5	गुरु	चर्तु प्र	02:14AM	मृग प्र	09:26 PM	मृत्युः, श्रीमती मथुरादेवी यज्ञ, 8.06 प्रातः मिथुन में चन्द्र।	07:35	05:36
54	22	6	शुक्र	पूर्णि प्र	04:38AM	आर्द्रा प्र	12:14 AM	काम्यः, पूर्णिमा व्रत।	07:35	05:37

श्राद्धः प्रतिपदा से तृती तक पहले दिन, चतुर्थी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

मध्याहनः प्रतिपदा का अपने दिन, द्विती व तृती का पहले दिन, चतुर्थी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- सौरमंडल के नवग्रहों में शुक्र का महत्व अधिक है। आकाश में सबसे तेज चमकदार तारा शुक्र ही है। आकाश में शुक्र ग्रह को आसानी से देखा जा सकता है। इसे संध्या और भोर का तारा भी कहते हैं, क्योंकि इस ग्रह का उदय आकाश में या तो सूर्योदय के पूर्व या संध्या को सूर्यास्त के पश्चात होता है। शुक्र के अस्त दिनों में भी शुभ कार्य वर्जित माने गए हैं। इसका कारण यह कि उक्त वक्त पृथ्वी का पर्यावरण शुक्र प्रभा से दूषित माना गया है। ज्योतिष और वैज्ञानिकों का मानना है कि शुक्र की किरणों का हमारे शरीर और जीवन पर अकाट्य प्रभाव पड़ता है।

माघ कृष्ण पक्ष

7 जनवरी 2023 की ग्रह स्थिति :- धनु में सूर्य, बुध(व); मकर में शुक्र, शनि; मीन में गुरु; मेष में राहु; वृष में भौम(व); तुला में केतु।
सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाकः 1944, ईस्वी 2023

दिन मान	पौष	जन	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, हेमन्त / शिशर ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
24 55	23	7	शनि	प्रति प्र	07:07AM	पुन प्र	03:08 AM	छत्रम्, 8.24 रात कर्कट में चन्द्र।	07:35	05:38
57	24	8	रवि	द्विती	Day Night	तिष्या प्र	06:05 AM	श्रीवत्सः।	07:35	05:39
25 00	25	9	सोम	द्विती दि	09:40AM	अश्ले	Day Night	सौम्यः।	07:35	05:40
04	26	10	भौम	तृती दि	12:10PM	अश्ले दि	09:01 AM	आनन्दः, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 8:45रात), 9.01 प्रातः सिंह में चन्द्र।	07:35	05:40
08	27	11	बुध	चतु दि	02:32PM	मघा दि	11:50 AM	चरः।	07:35	05:41
10	28	12	गुरु	पंच दि	04:37PM	पू.फा. दि	02:24 PM	मुसुलं, 9.00 रात कन्या में चन्द्र, 1.25 रात भौम मार्गी।	07:35	05:42
11	29	13	शुक्र	षष्ठी प्र	06:18PM	उ.फा. दि	04:35 PM	शूलम्, मासान्त।	07:34	05:43
15	माघ	14	शनि	सप्त प्र	07:23PM	हस्त प्र	06:14 PM	मृत्युः, साहिब सप्तमी, 8.45 रात मकर में सूर्य, संक्रान्ति व्रत, शिशर ऋतु।	07:34	05:44
17	2	15	रवि	अष्ट प्र	07:46PM	चित्र प्र	07:11 PM	काम्यः, 6.48 प्रातः तुला में चन्द्र।	07:34	05:45

मकर संक्रान्ति
14 जनवरी

• द्वितीया का जन्मदिन 9 जनवरी

साहिब सप्तम
14 जनवरी

काश्मीरी पण्ड़ित
निष्कासन दिवस
19 जनवरी

20	3	**16**	सोम	नव प्र	07:20PM	स्वात प्र	07:23 PM	छत्रम्।	07:34	05:46
22	4	**17**	भौम	दश प्र	06:06PM	विशा प्र	06:46 PM	श्रीवत्स:, 6.02 सायं कुम्भ में शनि, 1.00 दिन वृश्चिक में चन्द्र।	07:34	05:47
25	5	**18**	बुध	एका दि	04:03PM	अनु दि	05:22 PM	सौम्य:, षटतिला काह 6.42 सायं बुध मार्गी।	07:33	05:48
28	6	**19**	गुरु	द्वाद दि	01:19PM	ज्येष्ठ दि	03:18 PM	कालदण्ड:, 3.18 दिन धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ, निष्कासन दिवस।	07:33	05:49
32	7	**20**	शुक्र	त्रयो दि	10:00AM	मूल दि	12:40 PM	स्थिर:,त्र्यह:(चतुर्द प्र 6.18AM), शिवचतुर्दशी, स्वामी राम जी शैवाचार्य निवार्ण दिवस। • चतुर्दशी का जन्मदिन 20 जनवरी	07:33	05:49
34	8	**21**	शनि	अमा प्र	02:23AM	पू.षा. दि	09:40 AM	मातंग:, 2.53 दिन मकर में चन्द्र।	07:32	05:50

शिवचतुर्दशी व्रत
19, 20, 21 जनवरी

श्राद्ध: प्रति, द्विती अपने दिन, तृती से पंच पहले दिन, षष्ठी से एका अपने दिन, द्वाद से चतुर्द पहले दिन, अमावस का अपने दिन।
मध्याह्न: प्रतिपदा से द्वादशी तक अपने दिन, त्रयोदशी व चतुर्दशी पहले दिन, अमावस का अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- यज्ञोपवीत' शब्द का क्या अर्थ है? यज्ञ + उपवीत = यज्ञोपवीत, अर्थात् जिसे यज्ञ करने का पूर्ण रूप से अधिकार प्राप्त हो जाये। यज्ञोपवीत धारण किये बिना किसी को गायत्री जप अथवा वेद पाठ का अधिकार प्राप्त नहीं होता। इसके पहनने से व्यक्ति ब्रह्म (जिसे ईश्वर, परमरत्मा आदि अनेकों नाम से सम्बोधित करते हैं) के प्रति समर्पित हो जाता है अर्थात् ब्रह्म सूत्र धारण करने के उपरान्त उस व्यक्ति को विशेष नियम आचारणें का पालन करना अनिवार्य हो जाता है। जनेऊ दो प्रकार के होते हैं- तीन धागे वाले अथवा छ: धागे वाले। ब्रह्मचारी के लिए तीन धागे वाले जनेऊ का विधान है, विवाहित पुरुष को छ: धागे वाला जनेऊ धारण करते हैं। धार्मिक व्याख्या के अतिरिक्त यज्ञोपवीत के तीन सूत्रों में प्रथम सूत्र संयमित जीवन, दूसरा सूत्र माता के प्रति कर्तव्य की भावना और तीसरा सूत्र पिता के प्रति कर्तव्य की भावना का बोधक है। छ: सूत्रों वाले यज्ञोपवीत में चौथे, पाचवें व छटे सूत्र का पत्नी, सासू व श्वसुर के प्रति कर्तव्य पालन का स्मरण करता है।

माघ शुक्ल पक्ष

22 जनवरी 2023 की ग्रह स्थितिः- मकर में सूर्य, शुक्र; कुम्भ में शनि; मीन में गुरु; मेष में राहु; वृष में भौम; तुला में केतु; धनु में बुध।

सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाकः 1944, ईस्वी 2023

दिन मान	माघ	जन	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शिशर ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
25 34	9	**22**	रवि	प्रति प्र	10:28PM	श्रवण प्र	03:21 AM	मुसुलं, श्री कशकाक मनिगाम जयन्ती, 3.53 दिन कुम्भ में शुक्र।	07:32	05:51
37	10	**23**	सोम	द्विती प्र	06:44PM	धनि प्र	12:26 AM	शूलम्, चन्द्रदर्शन, 1.51 दिन कुम्भ में चन्द व पंचक आरम्भ।	07:32	05:52
42	11	**24**	भौम	तृती दि	03:22PM	शत प्र	09:58 PM	मृत्युः, गोरी तृतीया।	07:31	05:53
45	12	**25**	बुध	चतु दि	12:34PM	पू.भा. प्र	08:05 PM	काम्यः, त्रपुरा चतुर्थी व्रत, 2.29 दिन मीन में चन्द।	07:31	05:54
50	13	**26**	गुरु	पंच दि	10:28AM	उ.भा. प्र	06:56 PM	छत्रम्, वसन्त पंचमी, कुमार षष्ठी व्रत।	07:30	05:55
54	14	**27**	शुक्र	षष्ठी दि	09:11AM	रेव प्र	06:36 PM	श्रीवत्सः, 6.36 सायं मेष में चन्द व पंचक समाप्त।	07:30	05:56
56	15	**28**	शनि	सप्त दि	08:43AM	अश्वि प्र	07:06 PM	सौम्यः, सूर्य सप्तमी, मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, भीष्म अष्टमी।	07:29	05:57
26 02	16	**29**	रवि	अष्ट दि	09:06AM	भरण प्र	08:21 PM	कालदण्डः, अष्टमी व्रत, श्री निरंजन नाथ कौल, (बडगाम) जयन्ती, 2.46 रात वृष में चन्द।	07:29	05:58
06	17	**30**	सोम	नव दि	10:12AM	कृति प्र	10:15 PM	स्थिरः।	07:28	05:59

09	18	**31**	भौम	दश दि	11:54AM	रोहि प्र	12:39 AM	मातंगः।	07:27	06:00
12	19	फर	बुध	एका दि	02:02PM	मृग प्र	03:23 AM	अमृतम्, **भीमसेन काह**, जया एकादशी, 1.59 दिन मिथुन में चन्द्र।	07:27	06:01
16	20	**2**	गुरु	द्वाद दि	04:26PM	आर्द्रा प्र	06:18 AM	काण्डः, **भीष्म द्वादशी**, स्वा. वामन जी यज्ञ।	07:26	06:02
20	21	**3**	शुक्र	त्रयो प्र	06:58PM	पुन	Day N ight	अलापकम्, 2.32 रात कर्कट में चन्द्र।	07:25	06:03
23	22	**4**	शनि	चर्तु प्र	09:30PM	पुन दि	09:16 AM	छत्रम्, **यक्षिणी चुदाह**।	07:25	06:04
26	23	**5**	रवि	पूर्णि प्र	11:58PM	तिष्या दि	12:13 PM	श्रीवत्सः, पूर्णिमा व्रत, **काव पुनिम**, गुरु रविदास जयन्ती, स्वामी कुमार जी आश्रम यज्ञ मुट्ठी।	07:24	06:05

श्राद्धः प्रतिपदा से तृती तक अपने दिन, चतुर्थी से द्वादशी तक पहले दिन, त्रयोदशी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से चतुर्थी तक अपने दिन, पंचम से दशम तक पहले दिन, एकादशी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- भीष्म पितामह के लिये तर्पण विधि (तिथिः- माघ शुक्लपक्ष अष्टमी)

हाथ में काला तिल लेकर बाया यज्ञोपवीत रखकर दक्षिण दिशा की ओर मुख करकें इस निम्न लिखित मन्त्र से तर्पण करें..

वैयाघ्रपद गोत्राय सांकृत्य प्रवराय च, गंगा पुत्राय भीष्माय सर्वदा ब्रह्मचारिणे ।
भीष्मःशान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः, आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्र पौत्रोचितां क्रियाम।।

अब दाया यज्ञोपवीत रखकर भीष्म पितामह को अर्घ दें।

नोटः- सप्तमी तिथि 'दि' के कारण भीष्म अष्टमी (पितृ क्रिया) 28 जनवरी व अष्टमी व्रत 29 जनवरी को रखें।

फालगुन कृष्ण पक्ष

6 फरवरी 2023 की ग्रह स्थिति :- मकर में सूर्य; कुम्भ में शुक्र, शनि; मीन में गुरु; मेष में राहु; वृष में भौम; तुला में केतु; धनु में बुध।

सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाकः 1944, ईस्वी 2023

दिन मान	माघ	फर	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शिशर ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
26 32	24	**6**	सोम	प्रति प्र	02:19AM	अश्ले दि	03:03 PM	सौम्यः, हुरॅ उकदोह, 3.03 दिन सिंह में चन्द्र।	07:23	06:06
36	25	**7**	भौम	द्विती प्र	04:29AM	मघा दि	05:45 PM	कालदण्डः, 7.27 प्रातः मकर में बुध।	07:22	06:06
41	26	**8**	बुध	तृती प्र	06:23AM	पू.फा. प्र	08:14 PM	स्थिरः, 2.49 रात कन्या में चन्द्र।	07:21	06:07
46	27	**9**	गुरु	चतु	Day Night	उ.फा. प्र	10:27 PM	मातंगः, संकट निवारण चतुर्थी (चन्द्रोदय 9:28रात)।	07:21	06:08
51	28	**10**	शुक्र	चतु दि	07:59AM	हस्त प्र	12:18 AM	अमृतम्।	07:20	06:09
56	29	**11**	शनि	पंच दि	09:08AM	चित्र प्र	01:40 AM	काण्डः, 1.03 दिन तुलां में चन्द्र।	07:19	06:10
27 01	30	**12**	रवि	षष्ठी दि	09:46AM	स्वात प्र	02:27 AM	अलापकम्, मासान्त।	07:18	06:11
05	फा	**13**	सोम	सप्त दि	09:46AM	विशा प्र	02:35 AM	मैत्रम्, कृष्णानन्द सरस्वती यज्ञ, 9.44 प्रातः कुम्भ में सूर्य, संक्रान्ति व्रत, 8.37 रात वृश्चिक में चन्द्र।	07:17	06:12

वटुक नाथ पूजा
(हेरथ)
17 **फरवरी**

10	2	**14**	भौम	अष्ट दि	09:04AM	अनु प्र	02:01 AM	वज्रम्, हुर् अठम, चक्रीश्वर अमृतकुण्ड पुखरीबल यात्रा।	07:16	06:13
14	3	**15**	बुध	नव दि	07:39AM	ज्येष्ठ प्र	12:46 AM	ध्वांक्ष:, त्र्यह:(दश प्र 5:33AM), दयार दहम, 12.46 रात धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ, श्री दामूधर भट्ट (फतेपुर) जयन्ती।	07:15	06:14
19	4	**16**	गुरु	एका प्र	02:50AM	मूल प्र	10:53 PM	धौम्य:, विजया एकादशी।	07:14	06:15
23	5	**17**	शुक्र	द्वाद प्र	11:36PM	पू.षा. प्र	08:28 PM	प्रवर्ध:, हेरथ (शिवरात्रि अर्धरात्रि व्यापिनी त्रयोदशी), हर रात्रि (वटुक पूजन), 1.48 रात मकर में चन्द्र।	07:13	06:15
28	6	**18**	शनि	त्रयो प्र	08:03PM	उ.षा. दि	05:42 PM	क्षय:, शिव चतुर्दशी, महाशिवरात्रि (समस्त भारत)।	07:12	06:16
33	7	**19**	रवि	चर्तु दि	04:19PM	श्रवण दि	02:44 PM	मुसुलं, 1.14 रात कुम्भ में चन्द व पंचक आरम्भ।	07:11	06:17
39	8	**20**	सोम	अमा दि	12:36PM	धनि दि	11:46 AM	शूलम्, वटुक परिमोज़ुन (अपनी रीति के अनुसार), सोमामावसी व्रत।	07:10	06:18

श्राद्ध:: प्रति से चतुर्थी अपने दिन, पंचम से दशम तक पहले दिन, एकादशी से चतुर्दश अपने दिन, अमावस का पहले दिन।

मध्याह्न: प्रतिपदा से चातुर्थी अपने दिन, पंचम से दशम तक पहले दिन, एकादशी से अमावस तक अपने दिन।

हेरथ (शिवरात्रि) के विषय में अवश्य पढ़ें :- भैरवयाग ग्रंथ के अनुसार फाल्गुन कृष्ण पक्ष त्रयोदशी को भगवान शंकर की दृष्टि से घडे में से ज्योति रूप वटुक भैरव या वटुक नाथ त्रयोदशी की अर्धरात्रि में प्रकट हुए हैं। इसी कारण हेरॅथ के विषय में त्रयोदशी का ही विचार किया जाता हैं। यदि फाल्गुन कृष्ण द्वादशी तथा त्रयोदशी दोंनो दिन प्रदोष में हो तो ऐसे योग के होने पर भी जिस दिन अर्धरात्रि में त्रयोदशी व्याप्त हो तो उसी दिन काश्मीरी पण्डित हेरथ का पर्व मनाते आये हैं। सम्पूर्ण भारत में कोई भी सनातन धर्मी हिन्दू सम्प्रदाय (विना काश्मीरी पण्डितों के) इस पर्व को नहीं मनाते हैं। किन्तु हेरॅथ के दूसरे दिन जिस दिन हम शिवचतुर्दशी का व्रत पर्व या स्थनी लोकाचार से सलाम मनाते हैं भारत के अन्य सनातन धर्मी महाशिवरात्रि का पर्व श्रद्धा पूर्वक मनाते है तथा उस दिन वें शिव मन्दिरों में जाकर जागरण, उपवास, यज्ञ आदि से भगवान् शिव का पूजन करते हैं न कि वटुक पूजन करते हैं। इस उपर्युक्त विश्लेषण से यह सपष्ट हो जाता है कि हेरथ तथा महाशिवरात्रि दो विभिन्न पर्व हैं जिन्हे स्थानी लोकाचार ओर रीति-रिवाजों के अनुरूप मनाया जाता है। इस का निष्कर्ष स्पष्ट रूप से यही प्रमाणित करता है कि Herath is Attributed to Vatuk Nath or Vatuk Bhairva and Maha Shiv Ratri is Attributed to Lord Shiva.

फालगुन शुक्ल पक्ष

21 फरवरी 2023 की ग्रह स्थिति :- कुम्भ में सूर्य, शनि; मीन में शुक्र, गुरु; मेष में राहु; वृष में भौम; तुला में केतु; मकर में बुध।
सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाक: 1944, ईस्वी 2023

दिन मान	फाग	फर	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शिशर ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
27 43	9	**21**	भौम	प्रति दि	09:05AM	शत दि	09:00 AM	मृत्यु:, त्र्यहः (द्विती प्र 5.58 AM) चन्द्रदर्शन, 1.11 रात मीन में चन्द्र।	07:09	06:19
48	10	**22**	बुध	तृती प्र	03:25AM	उ.भा. प्र	04:50 AM	अलापकम्।	07:08	06:20
53	11	**23**	गुरु	चतु प्र	01:34AM	रेव प्र	03:44 AM	मैत्रम्, 3.44 रात मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	07:07	06:21
57	12	**24**	शुक्र	पंच प्र	12:32AM	अश्वि प्र	03:26 AM	वज्रम्।	07:06	06:21
28 03	13	**25**	शनि	षष्ठी प्र	12:20AM	भरण प्र	03:59 AM	ध्वांक्ष:, कुमार षष्ठी व्रत।	07:05	06:22
08	14	**26**	रवि	सप्त प्र	12:59AM	कृति प्र	05:18 AM	धौम्य:, 10.14 दिन वृष में चन्द्र।	07:03	06:23
13	15	**27**	सोम	अष्ट प्र	02:22AM	रोहि	Day N ight	प्रवर्ध:, तील अष्टमी, स्वा. नन्दलाल कौल जयन्ती (टिक्कर), अष्टमी व्रत, 4.46 दिन कुम्भ में बुध।	07:02	06:24
22	16	**28**	भौम	नव प्र	04:19AM	रोहि दि	07:19 AM	मातंग:, 8.32 रात मिथुन में चन्द्र।	07:01	06:25

दीपदान मुहूर्त
27 फरवरी

27	17	मार्च	बुध	दश प्र	06:40AM	मृग दि	09:51 AM	अमृतम्।	07:00	06:25
33	18	2	गुरु	एका	Day Night	आर्द्रा दि	12:43 PM	काण्ड:।	06:59	06:26
38	19	3	शुक्र	एका दि	09:11AM	पुन दि	03:43 PM	अलापकम्, अमला एकादशी, 8.58 प्रातः कर्कट में चन्द्र।	06:58	06:27
43	20	4	शनि	द्वाद दि	11:44AM	तिष्या प्र	06:41 PM	मैत्रम्।	06:56	06:28
46	21	5	रवि	त्रयो दि	02:08PM	अश्ले प्र	09:30 PM	वज्रम्, 9.30 रात सिंह में चन्द्र।	06:55	06:29
52	22	6	सोम	चर्तु दि	04:18PM	मघा प्र	12:05 AM	ध्वांक्ष:, होलिका दहन।	06:54	06:29
58	23	7	भौम	पूर्णि दि	06:10PM	पू.फा. प्र	02:22 AM	धौम्य:, पूर्णिमा व्रत, श्री क्रालबब महाराज जयन्ती, यज्ञ गंगा अस्थापन वन्यखुरा, बारामुल्ला, होली।	06:53	06:30

श्राद्ध: प्रतिपदा व द्विती का पहले दिन, तृती से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी से पूर्णिमा पहले दिन।
मध्याह्न: प्रतिपदा, द्वितीया पहले दिन, तृतीया से एकादशी अपने दिन, द्वादशी का पहले दिन, त्रयोदशी से पूर्णिमा अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक:- बेल पत्र में तीन दल (पते) होने का क्या अर्थ है? बेल पत्र के तीन पते (दल) तीन प्रमुख देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) का द्योतक है। तीन दल तीन लोकों को बतलाता है। बल पत्र के तीन दल से तीन महादेवियों (महालक्ष्मी, महासरस्वती व महाकाली) का ज्ञान होता है। देश की तीन पवित्र नदियाँ गंगा, यमुना व सरस्वती भी हैं। महादेव शंकर जी के त्रिशूल में तीन फल होते हैं जिसमें तीनों लोकों का संहार करने की शक्ति निहित है। इसी लिये हेरथ (शिवरात्रि) की सामग्री लेते समय हम बेल पत्र को भी प्राथमिकता देते हैं।

चैत्र कृष्ण पक्ष

8 मार्च 2023 की ग्रह स्थिति :- कुम्भ में सूर्य, बुध, शनि; मीन में गुरु, शुक्र; मेष में राहु; वृष में भौम; तुला में केतु।

सप्तर्षि 5098, विक्रमी 2079, शाक: 1944, ईस्वी 2023

दिन मान	फा	मार्च	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शिशर / वसंत ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
29 03	24	**8**	बुध	प्रति प्र	07:43PM	उ.फा. प्र	04:20 AM	प्रवर्ध:, 8.53 प्रात: कन्या में चन्द्र।	06:51	06:31
06	25	**9**	गुरु	द्विती प्र	08:54PM	हस्त प्र	05:57 AM	क्षय:।	06:50	06:32
12	26	**10**	शुक्र	तृती प्र	09:43PM	चित्र	Day N ight	गज:, 6.37 सायं तुला में चन्द्र।	06:49	06:32
18	27	**11**	शनि	चतु प्र	10:06PM	चित्र दि	07:11 AM	काण्ड:, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 10:20रात), स्वामी गोपालकाक जी यज्ञ, वडीपुरा हन्दवारा।	06:48	06:33
23	28	**12**	रवि	पंच प्र	10:02PM	स्वात दि	08:00 AM	अलापकम्, 8.27 प्रात: मेष में शुक्र, 2.18 रात वृश्चिक में चन्द्र।	06:46	06:34
27	29	**13**	सोम	षष्ठी प्र	09:28PM	विशा दि	08:21 AM	मैत्रम्, मासान्त, सोन्थ थाल भरुण, 5.02 प्रात: मिथुन में भौम।	06:45	06:35
29	चैत्र	**14**	भौम	सप्त प्र	08:22PM	अनु दि	08:13 AM	वज्रम्, सोन्थ, वसन्त ऋतु आरम्भ।	06:44	06:35
33	2	**15**	बुध	अष्ट प्र	06:46PM	ज्येष्ठ दि	07:33 AM	ध्वांक्ष:, संक्रान्ति व्रत, 6.34 प्रात: मीन में सूर्य, 7.33 प्रात: धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	06:43	06:36

38	3	**16**	गुरु	नव दि	04:40PM	पू.षा. प्र	04:47 AM	प्रजापत्यः, श्री किशकाक वडीपुरा हन्दवारा यज्ञ, 10.47 दिन मीन में बुध।	06:41	06:37
44	4	**17**	शुक्र	दश दि	02:07PM	उ.षा. प्र	02:46 AM	आनन्दः, 10.18 दिन मकर में चन्द।	06:40	06:38
48	5	**18**	शनि	एका दि	11:14AM	श्रवण प्र	12:29 AM	स्थिरः, पापमोचिनी एकादशी।	06:39	06:38
53	6	**19**	रवि	द्वाद दि	08:08AM	धनि प्र	10:04 PM	मातंगः, त्र्यह(4.56 प्र AM), 11.17 दिन कुम्भ में चन्द व पंचक आरम्भ।	06:37	06:39
58	7	**20**	सोम	चर्तु प्र	01:48AM	शत प्र	07:39 PM	अमृतम्, स्वामी गाशकाक यज्ञ गोतमनाग, चित्र चुदाह।	06:36	06:40
30 02	8	**21**	भौम	अमा प्र	10:53PM	पू.भा. दि	05:25 PM	काण्डः, थाल भरुण, श्री भट्ठ जयन्ती, विचार नाग यात्रा, ज़नपोरा शुपियन यात्रा (वरनाग), 11.57 दिन मीन में चन्द।	06:35	06:41

श्राद्धः प्रतिपदा से नवमी अपने दिन, दशमी से त्रयोदशी पहले दिन, चतुर्दशी व अमावसी अपने दिन।

मध्याह्नः प्रतिपदा से दश्मी अपने दिन, एकादशी से त्रयोदशी पहले दिन, चतुर्दशी व अमावसी अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- प्रातः काल हाथ (कर) का दर्शन क्यों करें? शास्त्रों में कहा गया है

''कराग्रे वसति लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती। करमूले तु गोविन्दः, प्रभाते कर दर्शनम्।।''

हाथ के अग्र (आगे) भाग में लक्ष्मी निवास करती है, हाथ के मध्य में सरस्वती और मूल में गोविन्द का निवास होता है, इसलिए प्रातः काल हाथ का दर्शन करना चाहिए और जीवन में धन, ज्ञान एवं ईश्वर को प्राप्त करना मानव के हाथ में है। अतः प्रातः काल हाथ का दर्शन करना चाहिए। प्रातः काल देखने योग्य और न देखने योग्य वस्तुओं का विचार मनोविज्ञान पर निर्भर होता है जिसका दिन भर मन मस्तिष्क पर भी प्रभाव बना रहता हैं।

卐 विक्रमी सम्वत् 2079 के 卐

साथ रटुन मुहूर्त

यह मुहूर्त भारतीय समय अनुसार 2022-23 ईस्वी के लिए दिये गऐ हैं। इस में आप लिवुन, मेहन्दी लगाना, मस मुचरुन, यज्ञोपवीत विवाह आदि के लिए नये वस्त्र, मसाला, अग्निवत्र, आभूषण आदि लाने के लिए अपनी सुविधा और आवश्यक्ता अनुसार मुहूर्त चयन करके लाभान्वित हो सकते हैं।

चैत्र शुक्ल पक्ष

3 अप्रेल द्वितीया रविवार
12-37 दिन तक
6 अप्रेल पंचमी बुधवार
7 अप्रेल षष्ठी गुरुवार
10-41 रात तक
11 अप्रेल दशमी सोमवार
6-51 प्रातः तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

17 अप्रेल प्रतिपदा रविवार
18 अप्रेल द्वितीया सोमवार
20 अप्रेल चतुर्थी बुधवार
1-53 दिन से
22 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार
8-14 रात से

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई तृतीया बुधवार
7-33 प्रातः तक
6 मई पंचमी शुक्रवार
9-20 प्रातः से
8 मई सप्तमी रविवार
2-57 दिन तक
12 मई एकादशी गुरुवार
7-30 सायं से

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई तृतीया बुधवार
8-09 प्रातः तक
27 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार
1-00 दिन तक
2 जून तृतीया गुरुवार
4-04 दिन से
9 जून नवमी गुरुवार
8-22 प्रातः से
10 जून दशमी शुक्रवार
12 जून त्रयोदशी रविवार

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

17 जून तृतीया शुक्रवार
6-11 प्रातः तक
23 जून दशमी गुरुवार
24 जून एकादशी शुक्रवार
8-04 प्रातः तक
26 जून त्रयोदशी रविवार

1-06 दिन से

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रतिपदा गुरुवार
1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
6 जुलाई सप्तमी बुधवार
11-44 दिन से
8 जुलाई नवमी शुक्रवार
6-26 सायं से
10 जुलाई एकादशी रविवार
11 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

20 जुलाई सप्तमी बुधवार
12-50 दिन से
24 जुलाई एकादशी रविवार
25 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

29 जुलाई प्रतिपदा शुक्रवार
9-47 प्रातः तक
3 अगस्त षष्ठी बुधवार
4 अगस्त सप्तमी गुरुवार
5 अगस्त अष्टमी शुक्रवार
7 अगस्त दशमी रविवार
8 अगस्त एकादशी सोमवार
2-37 दिन तक
11 अगस्त चतुर्दशी गुरुवार
10-39 दिन से

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

24 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
25 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
5-21 सायं तक
27 नवम्बर चतुर्थी रविवार
4-26 दिन से
28 नवम्बर पंचमी सोमवार
4 दिसम्बर द्वादशी रविवार
8 दिसम्बर पूर्णिमा गुरुवार

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिसम्बर प्रतिपदा शुक्रवार
2-59 दिन तक
11 दिसम्बर तृतीया रविवार
4-15 दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

15 जनवरी अष्टमी रविवार
7-46 सायं तक
16 जनवरी नवमी सोमवार
7-20 सायं से
18 जनवरी एकादशी बुधवार
19 जनवरी द्वादशी गुरुवार
3-18 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

22 जनवरी प्रतिपदा रविवार
27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
6-36 सायं से
1 फरवरी एकादशी बुधवार
3 फरवरी त्रयोदशी शुक्रवार
5 फरवरी पूर्णिमा रविवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
15 फरवरी नवमी बुधवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी पंचमी शुक्रवार
27 फरवरी अष्टमी सोमवार
1 मार्च दशमी बुधवार
9-51 दिन तक
2 मार्च एकादशी गुरुवार
12-43 दिन से
3 मार्च एकादशी शुक्रवार

卐 विक्रमी सम्वत् 2079 के 卐

यज्ञोपवीत मुहूर्त

यह मुहूर्त भारतीय समय अनुसार 2022-23 ईस्वी के लिए दिये गऐ हैं।

चैत्र शुक्ल पक्ष

3 अप्रेल द्वितीया रविवार
8-19 प्रातः से
10-31 दिन तक (वृ)
10-31 दिन से
12-29 दिन तक (मि)

6 अप्रेल पंचमी बुधवार
10-02 दिन से
12-17 दिन तक (मि)

7 अप्रेल षष्ठी गुरुवार
8-04 प्रातः से
9-58 प्रातः तक (वृ)

11 अप्रेल दशमी सोमवार
6-17 प्रातः से
6-51 प्रातः तक (मे)

वैशाख कृष्ण पक्ष

20 अप्रेल चतुर्थी बुधवार
1-53 दिन से
4-07 दिन तक (सिं)

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई तृतीया बुधवार
6-18 प्रातः से
7-33 प्रातः तक (वृ)

6 मई पंचमी शुक्रवार
10-19 दिन से
12-42 दिन तक (क)

8 मई सप्तमी रविवार
7-55 प्रातः से
10-11 दिन तक (मि)

12 मई एकादशी गुरुवार
7-40 प्रातः से
9-55 प्रातः तक (मि)
9-55 प्रातः से
12-19 दिन तक (क)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई तृतीया बुधवार
7-16 प्रातः से
8-09 प्रातः तक (मि)

20 मई पंचमी शुक्रवार
7-08 प्रातः से
9-24 दिन तक (मि)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार
8-36 प्रातः से
11-00 दिन तक (क)
11-00 दिन से
1-00 दिन तक (सिं)

10 जून दशमी शुक्रवार
8-01 प्रातः से
10-25 दिन तक (क)
10-25 दिन से
12-46 दिन तक (सिं)

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

16 जून द्वितीया गुरुवार
12-37 दिन से
4-43 दिन तक (कं)

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रातिपदा गुरुवार
9-06 प्रातः से
11-28 दिन तक (सिं)
11-28 दिन से
1-48 दिन तक (कं)
1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
9-02 दिन से
11-24 दिन तक (सिं)
11-24 दिन से
1-44 दिन तक (कं)
6 जुलाई सप्तमी बुधवार
8-42 प्रातः से
11-04 दिन तक (सिं)
10 जुलाई एकादशी रविवार
9-55 दिन से
10-48 दिन तक (सिं)
10-48 दिन से
1-09 दिन तक (कं)
11 जुलाई द्वादशी सोमवार
8-23 प्रातः से
10-44 दिन तक (सिं)
10-44 दिन से
1-05 दिन तक (कं)

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

25 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
8-50 प्रातः से
10-53 दिन तक (धं)
12-34 दिन से
1-57 दिन तक (कुँ)
28 नवम्बर पंचमी सोमवार
8-38 प्रातः से
10-41 दिन तक (धं)
12-20 दिन से
1-45 दिन तक (कुँ)
2 दिसम्बर दशमी शुक्रवार
8-23 प्रातः से
10-25 दिन तक (धं)
12-04 दिन से
1-29 दिन तक (कुँ)
4 दिसम्बर द्वादशी रविवार
11-56 दिन से
1-21 दिन तक (कुँ)

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिसम्बर प्रतिपदा शुक्रवार
7-55 प्रातः से
9-58 दिन तक (धं)
11-36 दिन से
1-02 दिन तक (कुँ)
11 दिसम्बर तृतीया रविवार
7-47 प्रातः से
9-50 दिन तक (धं)
11-25 दिन से
12-50 दिन तक (कुँ)

माघ शुक्ल पक्ष

26 जनवरी पंचमी गुरुवार
8-28 प्रातः से
9-53 दिन तक (कुँ)
11-12 दिन से

12-44 दिन तक (मे)

27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार

8-24 प्रातः से

9-49 दिन तक (कुँ)

11-08 दिन से

12-40 दिन तक (मे)

1 फरवरी एकादशी बुधवार

8-04 प्रातः से

9-29 दिन तक (कुँ)

10-49 दिन से

11-29 दिन तक (मे)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

8-54 प्रातः से

10-13 दिन तक (मी)

10-13 दिन से

11-45 दिन तक (मे)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

22 फरवरी तृतीया बुधवार

8-07 प्रातः से

9-26 दिन तक (मी)

10-57 दिन से

12-51 दिन तक (वृ)

24 फरवरी पंचमी शुक्रवार

10-50 दिन से

12-43 दिन तक (वृ)

2 मार्च एकादशी गुरुवार

12-43 दिन से

2-35 दिन तक (मि)

3 मार्च एकादशी शुक्रवार

8-51 प्रातः से

10-22 दिन तक (मे)

10-22 दिन से

12-15 दिन तक (वृ)

विक्रमी 2079 (ईस्वी सम्वत् 2022-23) के

विवाह मुहूर्त

यह मुहूर्त भारतीय समय अनुसार 2022-23 ईस्वी के लिए दिये गऐ हैं।

चैत्र शुक्ल पक्ष

15 अप्रेल चतुर्दशी शुक्रवार

9-26 दिन से

11-41 दिन तक (मि)

11-31 रात से

1-34 रात तक (धं)

16 अप्रेल पूर्णिमा शनिवार

9-22 दिन से

11-37 दिन तक (मि)

11-27 रात से

1-30 रात तक (धं)

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रेल पंचमी गुरुवार

10-20 दिन से

11-18 दिन तक (मि)

8-47 रात से

11-08 रात तक (वृँ)

22 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार

8-43 रात से

11-04 रात तक (वृँ)

1-06 रात से
2-45 रात तक (म)
24 अप्रेल नवमी रविवार
8-50 प्रातः से
11-06 दिन तक (मि)
8-35 रात से
10-56 रात तक (वृं)
10-56 रात से
12-58 रात तक (धं)
25 अप्रेल दशमी सोमवार
8-46 प्रातः से
11-02 दिन तक (मि)
27 अप्रेल द्वादशी बुधवार
8-23 रात से
10-44 रात तक (वृं)
10-44 रात से
12-46 रात तक (धं)

12-46 रात से
2-25 रात तक (म)
28 अप्रेल त्रयोदशी गुरुवार
8-35 प्रातः से
10-50 दिन तक (मि)
29 अप्रेल चतुर्दशी शुक्रवार
8-31 प्रातः से
10-46 दिन तक (मि)
10-46 दिन से
1-10 दिन तक (क)
8-15 रात से
10-36 रात तक (वृं)
10-36 रात से
12-39 रात तक (धं)

वैशाख शुक्ल पक्ष

2 मई द्वितीया सोमवार
12-27 रात से
2-06 रात तक (म)
4 मई तृतीया बुधवार
8-11 प्रातः से
10-26 दिन तक (मि)
10-26 दिन से
12-50 दिन तक (क)
7-56 सायं से
10-17 रात तक (वृं)
10-17 रात से
12-19 रात तक (धं)
9 मई अष्टमी सोमवार
7-36 सायं से
10-57 रात तक (वृं)
10-57 रात से
11-59 रात तक (धं)
11-59 रात से
1-38 रात तक (म)

11 मई दशमी बुधवार
7-28 सायं से
9-49 रात तक (वृं)
9-49 रात से
11-51 रात तक (धं)
11-51 रात से
1-30 रात तक (म)
12 मई एकादशी गुरुवार
9-55 दिन से
12-19 दिन तक (क)
7-24 सायं से
9-45 रात तक (वृं)
9-45 रात से
11-47 रात तक (धं)
11-47 रात से
1-26 रात तक (म)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई तृतीया बुधवार
9-31 दिन से
11-55 दिन तक (क)
11-24 रात से
1-03 रात तक (म)
20 मई पंचमी शुक्रवार
9-24 दिन से
11-47 दिन तक (क)
9-14 रात से
11-16 रात तक (धं)
21 मई षष्ठी शनिवार
9-21 दिन से
11-43 दिन तक (क)
9-10 रात से
11-12 रात तक (धं)
25 मई दशमी बुधवार
11-19 रात से
12-35 रात तक (म)
26 मई एकादशी गुरुवार
9-00 प्रातः से
11-24 दिन तक (क)
8-50 रात से
10-52 रात तक (धं)
10-52 रात से
12-31 रात तक (म)
27 मई द्वादशी शुक्रवार
8-56 प्रातः से
11-20 दिन तक (क)
8-46 रात से
10-48 रात तक (धं)
10-48 रात से
12-27 रात तक (म)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार
8-36 प्रातः से
11-00 दिन तक (क)
6 जून षष्ठी सोमवार
8-17 प्रातः से
10-40 दिन तक (क)
8-07 रात से
10-09 रात तक (धं)
8 जून अष्टमी बुधवार
8-09 प्रातः से
10-32 दिन तक (क)
7-59 सायं से
10-01 रात तक (धं)
10 जून दशमी शुक्रवार
8-01 प्रातः से
10-25 दिन तक (क)
7-51 सायं से
9-53 रात तक (धं)
12 जून त्रयोदशी रविवार
11-58 रात से
12-50 रात तक (कुँ)
13 जून चतुर्दशी सोमवार
7-49 प्रातः से
10-13 दिन तक (क)
7-36 सायं से
9-24 रात तक (धं)

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

16 जून द्वितीया गुरुवार
11-09 रात से
12-34 रात तक (कुँ)
12-34 रात से
1-53 रात तक (मी)
17 जून तृतीया शुक्रवार
7-33 प्रातः से
9-57 दिन तक (क)

23 जून दशमी गुरुवार
7-10 प्रातः से
9-33 दिन तक (क)
9-02 रात से
10-41 रात तक (म)
10-41 रात से
12-06 रात तक (कुँ)
24 जून एकादशी शुक्रवार
7-06 प्रातः से
8-04 प्रातः तक (क)
27 जून चतुर्दशी सोमवार
8-47 रात से
10-25 रात तक (म)
10-25 रात से
11-51 रात तक (कुँ)

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

3 जुलाई चतुर्थी रविवार
11-16 दिन से
1-36 दिन तक (कं)
8-23 रात से
10-02 रात तक (म)
10-02 रात से
11-27 रात तक (कुँ)
11-27 रात से
12-46 रात तक (मी)
7 जुलाई अष्टमी गुरुवार
8-07 रात से
9-46 रात तक (म)
9-46 रात से
11-11 रात तक (कुँ)
11-11 रात से
12-31 रात तक (मी)
8 जुलाई नवमी शुक्रवार
10-56 दिन से
1-17 दिन तक (कं)
8-03 रात से
9-42 रात तक (म)
9-42 रात से
11-07 रात तक (कुँ)
11-07 रात से
12-27 रात तक (मी)
9 जुलाई दशमी शनिवार
10-52 दिन से
11-25 दिन तक (कं)
10 जुलाई एकादशी रविवार
10-48 दिन से
1-09 दिन तक (कं)
7-55 सायं से
9-34 रात तक (म)
9-34 रात से
10-59 रात तक (कुँ)

श्रावण कृष्ण पक्ष

20 जुलाई सप्तमी बुधवार
10-09 दिन से
12-29 दिन तक (कं)
8-55 रात से
10-20 रात तक (कुँ)
10-20 रात से
11-40 दिन तक (मी)
21 जुलाई अष्टमी गुरुवार
10-05 दिन से
12-26 दिन तक (कं)
23 जुलाई दशमी शनिवार
8-43 रात से
10-08 रात तक (कुँ)
10-08 रात से
11-28 रात तक (मी)
24 जुलाई एकादशी रविवार

9-53 दिन से
12-14 दिन तक (कं)
8-39 रात से
10-04 रात तक (कुँ)
10-04 रात से
11-23 रात तक (मी)
25 जुलाई द्वादशी सोमवार
9-49 दिन से
12-10 दिन तक (कं)
8-35 रात से
10-00 रात तक (कुँ)
10-00 रात से
11-20 रात तक (मी)

श्रावण शुक्ल पक्ष

30 जुलाई द्वितीया शनिवार
8-16 रात से
9-41 रात तक (कँ)
9-41 रात से
11-00 रात तक (मी)
31 जुलाई तृतीया रविवार
9-26 दिन से
11-46 दिन तक (कं)
1 अगस्त चतुर्थी सोमवार
8-08 रात से
9-33 रात तक (कुँ)
9-33 रात से
10-52 रात तक (मी)
3 अगस्त षष्ठी बुधवार
1-58 दिन से
4-19 दिन तक (वृँ)
8-00 रात से
9-25 रात तक (कुँ)
9-25 रात से
10-45 रात तक (मी)
4 अगस्त सप्तमी गुरुवार
9-10 दिन से
11-30 दिन तक (कं)
1-54 दिन से
4-15 दिन तक (वृँ)
7-56 सायं से
9-21 रात तक (कुँ)
9-21 रात से
10-41 रात तक (मी)
5 अगस्त अष्टमी शुक्रवार
9-06 प्रातः से
11-27 दिन तक (कं)
1-50 दिन से
4-11 दिन तक (वृँ)
10 अगस्त त्रयोदशी बुधवार
9-39 दिन से
11-07 दिन तक (कं)
1-30 दिन से
3-51 दिन तक (वृँ)
8-58 रात से
10-17 रात तक (मी)

भाद्र कृष्ण पक्ष

14 अगस्त तृतीया रविवार
11-33 रात से
1-26 रात तक (वृ)
1-26 रात से
4-41 रात तक (मि)

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

25 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
11-20 रात से
1-42 रात तक (सिं)
1-42 रात से
4-02 रात तक (कं)
26 नवम्बर तृतीया शनिवार

10-49 दिन से
12-28 दिन तक (म)
12-28 दिन से
1-53 दिन तक (कुँ)
27 नवम्बर चतुर्थी रविवार
11-12 रात से
1-34 रात तक (सिं)
28 नवम्बर पंचमी सोमवार
12-20 दिन से
1-45 दिन तक (कुँ)
11-08 रात से
1-30 रात तक . (सिं)
2 दिसम्बर दशमी शुक्रवार
10-25 दिन से
12-04 दिन तक (म)
12-04 दिन से
1-29 दिन तक (कुँ)

10-52 रात से
1-14 रात तक (सिं)
3 दिसम्बर एकादशी शनि०
12-00 दिन से
1-25 दिन तक (कुँ)
10-48 रात से
1-10 रात तक (सिं)
4 दिसम्बर द्वादशी रविवार
10-17 दिन से
11-56 दिन तक (म)
11-56 दिन से
1-21 दिन तक (कुँ)
10-44 रात से
1-06 रात तक (सिं)
8 दिसम्बर पूर्णिमा गुरुवार
12-33 दिन से
1-06 दिन तक (कुँ)

1-06 दिन से
2-25 दिन तक (मी)
10-29 रात से
12-50 रात तक (सिं)

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिसम्बर प्रतिपदा शुक्रवार
11-36 दिन से
1-02 दिन तक (कुँ)

माघ कृष्ण पक्ष

16 जनवरी नवमी सोमवार
9-07 प्रातः से
10-32 दिन तक (कुँ)
10-32 दिन से
11-52 दिन तक (मी)
18 जनवरी एकादशी बुधवार
10-24 दिन से
11-44 दिन तक (मी)

19 जनवरी द्वादशी गुरुवार
10-05 रात से
12-26 रात तक (कं)
20 जनवरी त्रयोदशी शुक्र०
10-16 दिन से
11-36 दिन तक (मी)

माघ शुक्ल पक्ष

22 जनवरी प्रतिपदा रविवार
10-09 दिन से
11-28 दिन तक (मी)
9-53 रात से
12-14 रात तक (कं)
25 जनवरी चतुर्थी बुधवार
9-42 रात से
12-02 रात तक (कं)
26 जनवरी पंचमी गुरुवार
2-37 दिन से

4-52 दिन तक (मि)
9-38 रात से
11-58 रात तक (कं)
27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
2-33 दिन से
4-48 दिन तक (मि)
9-34 रात से
11-54 रात तक (कं)
28 जनवरी सप्तमी शनिवार
9-45 दिन से
11-04 दिन तक (मी)
2-29 दिन से
4-44 दिन तक (मि)
1 फरवरी एकादशी बुधवार
9-29 प्रातः से
10-49 दिन तक (मी)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

8 फरवरी तृतीया बुधवार
8-47 रात से
11-07 रात तक (कं)
9 फरवरी चतुर्थी गुरुवार
8-58 प्रातः से
10-17 दिन तक (मी)
1-42 दिन से
3-57 दिन तक (मि)
10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
8-54 प्रातः से
10-13 दिन तक (मी)
1-.38 दिन से
3-53 दिन तक (मि)
16 फरवरी एकादशी गुरुवार
1-14 दिन से
3-30 दिन तक (मि)
8-15 रात से
10-36 रात तक (कं)
17 फरवरी द्वादशी शुक्रवार
8-28 रात से
10-32 रात तक (कं)
18 फरवरी त्रयोदशी शनिवार
1-06 दिन से
3-22 दिन तक (मि)
8-07 रात से
10-28 रात तक (कं)
19 फरवरी चतुर्दशी रविवार
1-03 दिन से
2-44 दिन तक (मि)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

22 फरवरी तृतीया बुधवार
12-51 दिन से
3-06 दिन तक (मि)
7-51 सायं से
10-12 रात तक (कं)
23 फरवरी चतुर्थी गुरुवार
12-47 दिन से
3-2 दिन तक (मि)
7-48 सायं से
10-08 रात तक (कं)
5 मार्च त्रयोदशी रविवार
2-13 रात से
4-15 रात तक (धं)
6 मार्च चतुर्दशी सोमवार
12-04 दिन से
2-19 दिन तक (मि)
7-04 सायं से
9-25 रात तक (कं)

卐 卐 卐 卐 卐

राशि अनुसार मुहूर्तों के विषय में आवश्यक जानकारी

राशि अनुसार शुद्ध मुहूर्त देखते समय लड़के अथवा लड़की दोनों की राशि से शुद्ध मुहूर्त मिलना आवश्यक नहीं है, एक की राशि से मुहूर्त मिले तो उस को ही शुद्ध मुहूर्त मानिये। यदि आपने घर में कई बच्चों का यज्ञोपवीत एक साथ करना हो तो एक लडके की राशि से मुहूर्त मिलना चाहिये। राशि अनुसार यज्ञोपवीत, विवाह मुहूर्तो में शुद्ध मुहूर्त देखने के लिए सूर्य, चन्द्रमा तथा बृहस्पति चौथे, आठवें और बारहवें भाव में नहीं होना चाहिए, इन तीनों ग्रहों का विचार करके ही ऊपरलिखित मुहूर्त रखे गये है जहाँ चन्द्रमा, सूर्य बृहस्पति इन तीन में से केवल एक ग्रह अनुकूल न हो उस मुहूर्त के साथ उस ग्रह की पूजा लिखी गई है। सूर्य, चन्द्रमा तथा बृहस्पति के नाम सू, चं तथा गु से अंकित किये गये है।

सम्पादक

राशि के अनुसार विक्रमी 2079 (ई. 2022-23) के

यज्ञोपवीत मुहूर्त

मेष सिंह धनु

3 अप्रेल द्वितीया रविवार	सू
6 अप्रेल पंचमी बुधवार	सू
7 अप्रेल षष्ठी गुरुवार	सू
4 मई तृतीया बुधवार	गु
6 मई पंचमी शुक्रवार	गु
12 मई एकादशी गुरुवार	गु
18 मई तृतीया बुधवार	गु
20 मई पंचमी शुक्रवार	गु
1 जून द्वितीया बुधवार	गु
10 जून दशमी शुक्रवार	गु
16 जून द्वितीया गुरुवार	गु
30 जून प्रातिपदा गुरुवार	गु
6 जुलाई सप्तमी बुधवार	गु
1 फरवरी एकादशी बुधवार	गु
10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार	गु
24 फरवरी पंचमी शुक्रवार	गु
2 मार्च एकादशी गुरुवार	गु
3 मार्च एकादशी शुक्रवार	गु

वृष कन्या मकर

3 अप्रेल द्वितीया रविवार	चं
6 अप्रेल पंचमी बुधवार	
7 अप्रेल षष्ठी गुरुवार	
11 अप्रेल दशमी सोमवार	
20 अप्रेल चतुर्थी बुधवार	सू
4 मई तृतीया बुधवार	सू
6 मई पंचमी शुक्रवार	सू
8 मई सप्तमी रविवार	सू
12 मई एकादशी गुरुवार	सू

18 मई तृतीया बुधवार
20 मई पंचमी शुक्रवार चं
1 जून द्वितीया बुधवार
10 जून दशमी शुक्रवार
16 जून द्वितीया गुरुवार चं
30 जून प्रातिपदा गुरुवार
1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
25 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
28 नवम्बर पंचमी सोमवार
2 दिसम्बर दशमी शुक्रवार
4 दिसम्बर द्वादशी रविवार
9 दिसम्बर प्रतिपदा शुक्रवार
11 दिसम्बर तृतीया रविवार
26 जनवरी पंचमी गुरुवार
27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
1 फरवरी एकादशी बुधवार
10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
22 फरवरी तृतीया बुधवार
24 फरवरी पंचमी शुक्रवार चं
2 मार्च एकादशी गुरुवार
3 मार्च एकादशी शुक्रवार

मिथुन तुला कुम्भ

3 अप्रेल द्वितीया रविवार
6 अप्रेल पंचमी बुधवार च
7 अप्रेल षष्ठी गुरुवार
11 अप्रेल दशमी सोमवार
20 अप्रेल चतुर्थी बुधवार
4 मई तृतीया बुधवार चं
6 मई पंचमी शुक्रवार
8 मई सप्तमी रविवार
12 मई एकादशी गुरुवार चं
18 मई तृतीया बुधवार सू
20 मई पंचमी शुक्रवार सू
1 जून द्वितीया बुधवार सू
16 जून द्वितीया गुरुवार
30 जून प्रातिपदा गुरुवार
1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
6 जुलाई सप्तमी बुधवार चं
10 जुलाई एकादशी रविवार
25 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
28 नवम्बर पंचमी सोमवार चं
2 दिसम्बर दशमी शुक्रवार
4 दिसम्बर द्वादशी रविवार
9 दिसम्बर प्रतिपदा शुक्रवार
11 दिसम्बर तृतीया रविवार
26 जनवरी पंचमी गुरुवार सू
27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार सू
22 फरवरी तृतीया बुधवार
24 फरवरी पंचमी शुक्रवार
2 मार्च एकादशी गुरुवार
3 मार्च एकादशी शुक्रवार

कर्क वृश्चिक मीन

3 अप्रेल द्वितीया रविवार गु
6 अप्रेल पंचमी बुधवार गु
7 अप्रेल षष्ठी गुरुवार गु
11 अप्रेल दशमी सोमवार गु
20 अप्रेल चतुर्थी बुधवार
4 मई तृतीया बुधवार
6 मई पंचमी शुक्रवार
8 मई सप्तमी रविवार
12 मई एकादशी गुरुवार
18 मई तृतीया बुधवार
20 मई पंचमी शुक्रवार
1 जून द्वितीया बुधवार चं
10 जून दशमी शुक्रवार
16 जून द्वितीया गुरुवार सू
1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार सू
6 जुलाई सप्तमी बुधवार सू
10 जुलाई एकादशी रविवार सू
11 जुलाई द्वादशी सोमवार सू
25 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
28 नवम्बर पंचमी सोमवार
2 दिसम्बर दशमी शुक्रवार
4 दिसम्बर द्वादशी रविवार
9 दिसम्बर प्रतिपदा शुक्रवार चं
11 दिसम्बर तृतीया रविवार
26 जनवरी पंचमी गुरुवार
27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
1 फरवरी एकादशी बुधवार
10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
22 फरवरी तृतीया बुधवार सू
24 फरवरी पंचमी शुक्रवार सू
2 मार्च एकादशी गुरुवार सू

卐 卐 卐 卐 卐

राशि के अनुसार विक्रमी 2079 (ई. 2022-23) के

विवाह मुहूर्त

मेष सिंह धनु

15 अप्रेल चतुर्दशी शुक्रवार गु
16 अप्रेल पूर्णिमा शनिवार गु
21 अप्रेल पंचमी गुरुवार गु
22 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार गु
24 अप्रेल नवमी रविवार गु
25 अप्रेल दशमी सोमवार गु
27 अप्रेल द्वादशी बुधवार गु
2 मई द्वितीया सोमवार गु
4 मई तृतीया बुधवार गु
11 मई दशमी बुधवार गु
12 मई एकादशी गुरुवार गु
18 मई तृतीया बुधवार गु
20 मई पंचमी शुक्रवार गु
21 मई षष्ठी शनिवार गु
27 मई द्वादशी शुक्रवार गु
1 जून द्वितीया बुधवार गु
6 जून षष्ठी सोमवार गु
8 जून अष्टमी बुधवार गु
10 जून दशमी शुक्रवार गु
12 जून त्रयोदशी रविवार गु
16 जून द्वितीया गुरुवार गु
17 जून तृतीया शुक्रवार गु
23 जून दशमी गुरुवार गु
24 जून एकादशी शुक्रवार गु
27 जून चतुर्दशी सोमवार गु
3 जुलाई चतुर्थी रविवार गु
7 जुलाई अष्टमी गुरुवार गु
8 जुलाई नवमी शुक्रवार गु
9 जुलाई दशमी शनिवार गु
16 जनवरी नवमी सोमवार गु
20 जनवरी त्रयोदशी शुक्र॰ गु
22 जनवरी प्रतिपदा रविवार गु
25 जनवरी चतुर्थी बुधवार गु
28 जनवरी सप्तमी शनिवार गु
1 फरवरी एकादशी बुधवार गु
8 फरवरी तृतीया बुधवार गु
9 फरवरी चतुर्थी गुरुवार गु
10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार गु
16 फरवरी एकादशी गुरुवार गु
17 फरवरी द्वादशी शुक्रवार गु
18 फरवरी त्रयोदशी शनिवार गु
19 फरवरी चतुर्दशी रविवार गु
6 मार्च चतुर्दशी सोमवार गु

वृष कन्या मकर

15 अप्रेल चतुर्दशी शुक्रवार सू
16 अप्रेल पूर्णिमा शनिवार सू
24 अप्रेल नवमी रविवार सू
25 अप्रेल दशमी सोमवार सू
27 अप्रेल द्वादशी बुधवार सू
28 अप्रेल त्रयोदशी गुरुवार सू
29 अप्रेल चतुर्दशी शुक्रवार सू
2 मई द्वितीया सोमवार सू
4 मई तृतीया बुधवार सू
9 मई अष्टमी सोमवार सू
12 मई एकादशी गुरुवार सू
18 मई तृतीया बुधवार चं
20 मई पंचमी शुक्रवार
21 मई षष्ठी शनिवार
25 मई दशमी बुधवार
26 मई एकादशी गुरुवार
27 मई द्वादशी शुक्रवार चं
1 जून द्वितीया बुधवार
6 जून षष्ठी सोमवार चं
8 जून अष्टमी बुधवार
10 जून दशमी शुक्रवार
12 जून त्रयोदशी रविवार
13 जून चतुर्दशी सोमवार
16 जून द्वितीया गुरुवार चं
17 जून तृतीया शुक्रवार

23 जून दशमी गुरुवार चं
24 जून एकादशी शुक्रवार चं
27 जून चतुर्दशी सोमवार
3 जुलाई चतुर्थी रविवार चं
7 जुलाई अष्टमी गुरुवार
8 जुलाई नवमी शुक्रवार
9 जुलाई दशमी शनिवार
10 जुलाई एकादशी रविवार
20 जुलाई सप्तमी बुधवार
21 जुलाई अष्टमी गुरुवार चं
23 जुलाई दशमी शनिवार
24 जुलाई एकादशी रविवार
25 जुलाई द्वादशी सोमवार
30 जुलाई द्वितीया शनिवार
31 जुलाई तृतीया रविवार चं
1 अगस्त चतुर्थी सोमवार चं
3 अगस्त षष्ठी बुधवार
4 अगस्त सप्तमी गुरुवार
5 अगस्त अष्टमी शुक्रवार
10 अगस्त त्रयोदशी बुधवार चं
14 अगस्त तृतीया रविवार
25 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

26 नवम्बर तृतीया शनिवार चं
27 नवम्बर चतुर्थी रविवार चं
28 नवम्बर पंचमी सोमवार
2 दिसम्बर दशमी शुक्रवार
3 दिसम्बर एकादशी शनि.
4 दिसम्बर द्वादशी रविवार चं
8 दिसम्बर पूर्णिमा गुरुवार
9 दिसम्बर प्रतिपदा शुक्रवार
16 जनवरी नवमी सोमवार
18 जनवरी एकादशी बुधवार
19 जनवरी द्वादशी गुरुवार
20 जनवरी त्रयोदशी शुक्र. चं
22 जनवरी प्रतिपदा रविवार
25 जनवरी चतुर्थी बुधवार
26 जनवरी पंचमी गुरुवार
27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
28 जनवरी सप्तमी शनिवार चं
1 फरवरी एकादशी बुधवार
8 फरवरी तृतीया बुधवार चं
9 फरवरी चतुर्थी गुरुवार
10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
16 फरवरी एकादशी गुरुवार चं

17 फरवरी द्वादशी शुक्रवार चं
18 फरवरी त्रयोदशी शनिवार
19 फरवरी चतुर्दशी रविवार
22 फरवरी तृतीया बुधवार
23 फरवरी चतुर्थी गुरुवार
5 मार्च त्रयोदशी रविवार
6 मार्च चतुर्दशी सोमवार

मिथुन तुला कुम्भ

15 अप्रेल चतुर्दशी शुक्रवार चं
16 अप्रेल पूर्णिमा शनिवार चं
21 अप्रेल पंचमी गुरुवार
22 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार
24 अप्रेल नवमी रविवार चं
25 अप्रेल दशमी सोमवार
27 अप्रेल द्वादशी बुधवार
28 अप्रेल त्रयोदशी गुरुवार
29 अप्रेल चतुर्दशी शुक्रवार
2 मई द्वितीया सोमवार चं
4 मई तृतीया बुधवार
9 मई अष्टमी सोमवार

11 मई दशमी बुधवार
12 मई एकादशी गुरुवार चं
18 मई तृतीया बुधवार सू
25 मई दशमी बुधवार सू
26 मई एकादशी गुरुवार सू
27 मई द्वादशी शुक्रवार सू
1 जून द्वितीया बुधवार सू
6 जून षष्ठी सोमवार सू
10 जून दशमी शुक्रवार सू
12 जून त्रयोदशी रविवार सू
13 जून चतुर्दशी सोमवार
16 जून द्वितीया गुरुवार
17 जून तृतीया शुक्रवार चं
23 जून दशमी गुरुवार
24 जून एकादशी शुक्रवार
27 जून चतुर्दशी सोमवार चं
3 जुलाई चतुर्थी रविवार
7 जुलाई अष्टमी गुरुवार चं
8 जुलाई नवमी शुक्रवार
9 जुलाई दशमी शनिवार
10 जुलाई एकादशी रविवार
20 जुलाई सप्तमी बुधवार

21 जुलाई अष्टमी गुरुवार
23 जुलाई दशमी शनिवार चं
24 जुलाई एकादशी रविवार चं
25 जुलाई द्वादशी सोमवार
30 जुलाई द्वितीया शनिवार
31 जुलाई तृतीया रविवार
1 अगस्त चतुर्थी सोमवार
3 अगस्त षष्ठी बुधवार
4 अगस्त सप्तमी गुरुवार
5 अगस्त अष्टमी शुक्रवार
10 अगस्त त्रयोदशी बुधवार चं
14 अगस्त तृतीया रविवार
25 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
26 नवम्बर तृतीया शनिवार
27 नवम्बर चतुर्थी रविवार
28 नवम्बर पंचमी सोमवार चं
2 दिसम्बर दशमी शुक्रवार
3 दिसम्बर एकादशी शनि॰
4 दिसम्बर द्वादशी रविवार
8 दिसम्बर पूर्णिमा गुरुवार चं
9 दिसम्बर प्रतिपदा शुक्रवार
16 जनवरी नवमी सोमवार सू
18 जनवरी एकादशी बुधवार सू
19 जनवरी द्वादशी गुरुवार सू
20 जनवरी त्रयोदशी शुक्र॰ सू
25 जनवरी चतुर्थी बुधवार सू
26 जनवरी पंचमी गुरुवार सू
27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार सू
28 जनवरी सप्तमी शनिवार सू
8 फरवरी तृतीया बुधवार सू
16 फरवरी एकादशी गुरुवार
17 फरवरी द्वादशी शुक्रवार
18 फरवरी त्रयोदशी शनिवार
19 फरवरी चतुर्दशी रविवार चं
22 फरवरी तृतीया बुधवार
23 फरवरी चतुर्थी गुरुवार
5 मार्च त्रयोदशी रविवार
6 मार्च चतुर्दशी सोमवार

कर्क वृश्चिक मीन

15 अप्रेल चतुर्दशी शुक्रवार
16 अप्रेल पूर्णिमा शनिवार चं
21 अप्रेल पंचमी गुरुवार
22 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार
24 अप्रेल नवमी रविवार
25 अप्रेल दशमी सोमवार चं
27 अप्रेल द्वादशी बुधवार
28 अप्रेल त्रयोदशी गुरुवार
29 अप्रेल चतुर्दशी शुक्रवार
2 मई द्वितीया सोमवार
4 मई तृतीया बुधवार चं
9 मई अष्टमी सोमवार
11 मई दशमी बुधवार
12 मई एकादशी गुरुवार
18 मई तृतीया बुधवार
20 मई पंचमी शुक्रवार
21 मई षष्ठी शनिवार
25 मई दशमी बुधवार
26 मई एकादशी गुरुवार
27 मई द्वादशी शुक्रवार
1 जून द्वितीया बुधवार चं
6 जून षष्ठी सोमवार
8 जून अष्टमी बुधवार
10 जून दशमी शुक्रवार चं
12 जून त्रयोदशी रविवार चं
13 जून चतुर्दशी सोमवार
16 जून द्वितीया गुरुवार सू
17 जून तृतीया शुक्रवार सू
23 जून दशमी गुरुवार सू
24 जून एकादशी शुक्रवार सू
27 जून चतुर्दशी सोमवार सू
3 जुलाई चतुर्थी रविवार सू
7 जुलाई अष्टमी गुरुवार सू
10 जुलाई एकादशी रविवार सू
20 जुलाई सप्तमी बुधवार
21 जुलाई अष्टमी गुरुवार
23 जुलाई दशमी शनिवार
24 जुलाई एकादशी रविवार
25 जुलाई द्वादशी सोमवार चं
30 जुलाई द्वितीया शनिवार
31 जुलाई तृतीया रविवार
1 अगस्त चतुर्थी सोमवार
3 अगस्त षष्ठी बुधवार
4 अगस्त सप्तमी गुरुवार चं
5 अगस्त अष्टमी शुक्रवार चं
10 अगस्त त्रयोदशी बुधवार
14 अगस्त तृतीया रविवार चं

25 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
26 नवम्बर तृतीया शनिवार
27 नवम्बर चतुर्थी रविवार
28 नवम्बर पंचमी सोमवार
2 दिसम्बर दशमी शुक्रवार
3 दिसम्बर एकादशी शनि॰
4 दिसम्बर द्वादशी रविवार
8 दिसम्बर पूर्णिमा गुरुवार

9 दिसम्बर प्रतिपदा शुक्रवार चं
16 जनवरी नवमी सोमवार चं
18 जनवरी एकादशी बुधवार
19 जनवरी द्वादशी गुरुवार
20 जनवरी त्रयोदशी शुक्र॰
22 जनवरी प्रतिपदा रविवार
25 जनवरी चतुर्थी बुधवार चं
26 जनवरी पंचमी गुरुवार

27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
28 जनवरी सप्तमी शनिवार
1 फरवरी एकादशी बुधवार
8 फरवरी तृतीया बुधवार
9 फरवरी चतुर्थी गुरुवार
10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
16 फरवरी एकादशी गुरुवार सू
17 फरवरी द्वादशी शुक्रवार सू

18 फरवरी त्रयोदशी शनिवार सू
19 फरवरी चतुर्दशी रविवार सू
22 फरवरी तृतीया बुधवार सू
23 फरवरी चतुर्थी गुरुवार सू
5 मार्च त्रयोदशी रविवार सू
6 मार्च चतुर्दशी सोमवार सू

卐 卐 卐 卐 卐

सूर्य देव को जल देने की विधि !

अगर आप सूर्य देव की आराधना द्वारा सूर्य देव को प्रसन्न कर लेते है तो आपके जीवन से हर बाधा दूर होने लगती है व जीवन में खुशियों का संचार होने लगता है | आइये जानते है किन-किन जातकों को सूर्य देव को जल देना चाहिए या उनकी उपासना करनी चाहिए: –

जिन लोगों की कुंडली सूर्य देव कमजोर हो, आत्मविश्वास की कमी हो उन्हें सूर्य को जल अवश्य देना चाहिए | जो व्यक्ति एक निराशावादी जीवन जी रहा है उसे सूर्य देव की उपासना अवश्य करनी चाहिए | जो जातक घर-परिवार में और समाज में मान-सम्मान चाहते है उन्हें भी सूर्य पूजा करनी चाहिए |

सूर्य उदय के एक घंटे तक ही सूर्य को जल देना चाहिए | सुबह-सुबह स्नान आदि से निवृत होकर किसी खुले स्थान में जाए जहाँ से सूर्य आपको स्पष्ट दिखाई देता हो | एक ताम्बे के पात्र में जल भरकर इसमें थोड़े चावल, थोड़ी चीनी, पुष्प डाले व कुमकुम द्वारा जल में छीटे लगाये | अब आप सूर्य देव के सामने खड़े होकर ताम्बे के पात्र द्वारा दोनों हाथों से जल नीचे जमीन पर छोड़ते जाये | ध्यान दे, ताम्बे के पात्र को अपने सीने के सामने रखे और सूर्य देव को जल अर्पित करते हुए पात्र को कंधो से ऊपर तक ले जाने का प्रयास करें | पात्र द्वारा नीचे गिरने वाली जलधारा में सूर्य के प्रतिबिम्ब को देखने का प्रयास करें | सूर्य को जल देते समय निरंतर इस मंत्र के जप करते जाए : " ॐ सूर्याय नमः " |

सूर्य को जल देने के उपरान्त नीचे झुककर जल को स्पर्श करे और अंत में खड़े होकर हाथ जोड़ते हुए सूर्य देव को प्रणाम करें |

विक्रमी 2079 के (गण्डन साथ)

वाग्दान मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

6 अप्रेल पंचमी बुधवार
7 अप्रेल षष्ठी गुरुवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

17 अप्रेल प्रतिपदा रविवार
21 अप्रेल पंचमी गुरुवार
22 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार
25 अप्रेल दशमी सोमवार
5-12 सायं तक
27 अप्रेल द्वादशी बुधवार
28 अप्रेल त्रयोदशी गुरुवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई तृतीया बुधवार
7-33 प्रातः तक
11 मई दशमी बुधवार
12 मई एकादशी गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई तृतीया बुधवार
8-09 प्रातः से
19 मई चतुर्थी गुरुवार
20 मई पंचमी शुक्रवार
22 मई सप्तमी रविवार
1-00 दिन तक
25 मई दशमी बुधवार
26 मई एकादशी गुरुवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार
1-00 दिन तक
6 जून षष्ठी सोमवार
9 जून नवमी गुरुवार
8-22 प्रातः से

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

16 जून द्वितीया गुरुवार
20 जून सप्तमी सोमवार
26 जून त्रयोदशी रविवार
1-06 दिन से

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

3 जुलाई चतुर्थी रविवार
5-07 सायं से
4 जुलाई पंचमी सोमवार
6 जुलाई सप्तमी बुधवार
8 जुलाई नवमी शुक्रवार
6-26 सायं से
10 जुलाई एकादशी रविवार
9-55 दिन से
11 जुलाई द्वादशी सोमवार
7-50 प्रातः तक

श्रावण कृष्ण पक्ष

13 जुलाई पूर्णिमा बुधवार
14 जुलाई प्रतिपदा गुरुवार
18 जुलाई पंचमी सोमवार
20 जुलाई सप्तमी बुधवार
7-36 प्रातः तक
24 जुलाई एकादशी रविवार
25 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

3 अगस्त षष्ठी बुधवार
7 अगस्त दशमी रविवार
4-30 दिन तक
8 अगस्त एकादशी सोमवार
2-37 दिन से
10 अगस्त त्रयोदशी बुधवार
2-16 दिन तक
12 अगस्त पूर्णिमा शुक्रवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

14 अगस्त तृतीया रविवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

26 सितम्बर प्रतिपदा सोमवार

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

24 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
25 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
5-21 सायं से
27 नवम्बर चतुर्थी रविवार
4-26 दिन से
28 नवम्बर पंचमी सोमवार
2 दिसम्बर दशमी शुक्रवार
7 दिसम्बर चतुर्दशी बुधवार
10-25 दिन से
8 दिसम्बर पूर्णिमा गुरुवार

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिसम्बर प्रतिपदा गुरुवार
14 दिसम्बर षष्ठी बुधवार

माघ कृष्ण पक्ष

18 जनवरी एकादशी बुधवार
5-22 सायं तक
19 जनवरी द्वादशी गुरुवार
3-18 दिन से
20 जनवरी त्रयोदशी शुक्रवार
10-00 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

22 जनवरी प्रतिपदा रविवार
23 जनवरी द्वितीया सोमवार
25 जनवरी चतुर्थी बुधवार
12-34 दिन से
26 जनवरी पंचमी गुरुवार
27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
1 फरवरी एकादशी बुधवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

6 फरवरी प्रतिपदा सोमवार
3-03 दिन से
8 फरवरी तृतीया बुधवार
10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
7-59 प्रातः से
16 फरवरी एकादशी गुरुवार
17 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

22 फरवरी तृतीया बुधवार
1 मार्च दशमी बुधवार
9-51 प्रातः तक
6 मार्च चतुर्दशी सोमवार
4-18 दिन से

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- श्री कृष्ण का मानव जीवन जीने का उपदेश:

चिन्तया जायते दुःखं नान्यथेहेति निश्चयी।
तया हीनः सुखी शान्तः सर्वत्र गलितस्पृहः॥

भावार्थ : चिंता से ही दुःख उत्पन्न होते हैं किसी अन्य कारण से नहीं, ऐसा निश्चित रूप से जानने वाला, चिंता से रहित होकर सुखी, शांत और सभी इच्छाओं से मुक्त हो जाता है ।

विक्रमी 2079 (ईस्वी 2022-23) के

कन् साथ

(शंकु प्रतिष्ठा मुहूर्त)

चैत्र शुक्ल पक्ष

16 अप्रेल पूर्णिमा शनिवार
9-22 प्रातः से
11-37 दिन तक (मि)

वैशाख शुक्ल पक्ष

6 मई पंचमी शुक्रवार
3-04 दिन से
5-24 सायं तक (कं)

7 मई षष्ठी शनिवार
3-00 दिन से
5-21 दिन तक (कं)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

20 मई पंचमी शुक्रवार
7-08 प्रातः से
9-24 प्रातः तक (मि)

21 मई षष्ठी शनिवार
7-04 प्रातः से
9-20 प्रातः तक (मि)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार
6-21 प्रातः से
8-36 प्रातः तक (मि)

4 जून पंचमी शनिवार
6-09 प्रातः से
8-25 प्रातः तक (मि)

10 जून दशमी शुक्रवार
5-46 प्रातः से
8-01 प्रातः तक (मि)

श्रावण शुक्ल पक्ष

3 अगस्त षष्ठी बुधवार
6-52 प्रातः से
9-14 प्रातः तक (सिं)

4 अगस्त सप्तमी गुरुवार
6-48 प्रातः से
9-10 प्रातः तक (सिं)

10 अगस्त त्रयोदशी बुधवार
1-30 दिन से
2-16 दिन तक (वृं)

भाद्र शुक्ल पक्ष

29 अगस्त द्वितीया सोमवार
2-36 दिन से
4-39 दिन तक (धं)

31 अगस्त चतुर्थी बुधवार
3-23 दिन से
4-35 दिन तक (धं)

1 सितम्बर पंचमी गुरुवार
2-25 दिन से
4-27 दिन तक (धं)

8 सितम्बर त्रयोदशी गुरु॰
1-57 दिन से
3-59 दिन तक (धं)

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर पंचमी सोमवार
8-38 प्रातः से
10-41 दिन तक (धं)

2 दिसम्बर दशमी शुक्रवार

8-23 प्रातः से
10-25 दिन तक (धं)

माघ शुक्ल पक्ष

26 जनवरी पंचमी गुरुवार
2-37 दिन से
4-52 दिन तक (मि)
27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
2-33 दिन से
4-48 दिन तक (मि)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
8-54 प्रातः से
10-13 दिन तक (मी)

विक्रमी 2079 (ईस्वी 2022-23) के

गृह प्रवेश मुहूर्त

(नये मकान या फलेट में प्रवेश के मुहूर्त)

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- मकान बनवाने के बाद हम हवन, गृह प्रवेश पूजा पाठ आदि क्यों करवाते है? गृह प्रवेश के समय यज्ञ, रामायण पाठ या गृह प्रवेश पूजा कराने से अनावश्यक गृह दोष का निवारण हो जाता है, घर में लक्ष्मी का आगमन होता है। समस्त कुप्रभावों को नष्ट करने के लिए हम गृह प्रवेश पूजा कराते हैं जिससे घर में सदैव सुख शान्ति व खुशहाली रहती हैं। और शान्त मन तथा प्रसन्न चित होने से उस समय घर में प्रवेश करो तो सदैव प्रसन्नता कायम रहती है।

वैशाख शुक्ल पक्ष

6 मई पंचमी शुक्रवार
3-04 दिन से
5-24 सायं तक (कं)

7 मई षष्ठी शनिवार
3-00 दिन से
5-21 दिन तक (कं)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

20 मई पंचमी शुक्रवार
7-08 प्रातः से
9-24 प्रातः तक (मि)
21 मई षष्ठी शनिवार
7-04 प्रातः से
9-20 प्रातः तक (मि)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार
6-21 प्रातः से
8-36 प्रातः तक (मि)
4 जून पंचमी शनिवार
6-09 प्रातः से
8-25 प्रातः तक (मि)
10 जून दशमी शुक्रवार
5-46 प्रातः से
8-01 प्रातः तक (मि)
18 जून पंचमी शनिवार

विक्रमी 2079 के

लेन्टर (छत) डालने के मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

7 अप्रेल षष्ठी गुरुवार

8 अप्रेल सप्तमी शुक्रवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

17 अप्रेल प्रतिपदा रविवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई तृतीया रविवार

7-33 प्रातः तक

5 मई चतुर्थी गुरुवार

10-01 दिन से

6 मई पंचमी शुक्रवार

8 मई सप्तमी रविवार

2-57 दिन तक

12 मई एकादशी गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

20 मई पंचमी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार

2 जून तृतीया गुरुवार

9 जून नवमी गुरुवार

8-22 प्रातः से

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

16 जून द्वितीया गुरुवार

12-37 दिन से

5-24 प्रातः से

7-29 प्रातः तक (मि)

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार

11-24 दिन से

1-44 दिन तक (कं)

9 जुलाई दशमी शनिवार

10-52 दिन से

1-13 दिन तक (कं)

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर पंचमी सोमवार

8-38 प्रातः से

10-41 दिन तक (धं)

2 दिसम्बर दशमी शुक्रवार

8-23 प्रातः से

10-25 दिन तक (धं)

माघ शुक्ल पक्ष

26 जनवरी पंचमी गुरुवार

2-37 दिन से

4-52 दिन तक (मि)

27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार

2-33 दिन से

4-48 दिन तक (मि)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

8-54 प्रातः से

10-13 दिन तक (मी)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

22 फरवरी तृतीया बुधवार

12-51 दिन से

2-06 दिन तक (मि)

काहनेथर साथ

ज़ातकर्म मुहूर्त / नामकरण मुहूर्त

(विक्रमी 2079 के लिए)

चैत्र शुक्ल पक्ष

6 अप्रेल पंचमी बुधवार

7 अप्रेल षष्ठी गुरुवार
10-41 रात तक

11 अप्रेल दशमी सोमवार
6-51 प्रातः तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

28 अप्रेल त्रयोदशी गुरुवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई तृतीया बुधवार
7-33 प्रातः तक

6 मई पंचमी शुक्रवार

17 जून तृतीया शुक्रवार
6-11 प्रातः तक

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रतिपदा गुरुवार
10-50 दिन से

1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार

6 जुलाई सप्तमी बुधवार

8 जुलाई नवमी शुक्रवार
6-26 सायं से

10 जुलाई एकादशी रविवार
9-55 दिन से

11 जुलाई द्वादशी सोमवार
7-50 प्रातः तक

श्रावण कृष्ण पक्ष

25 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

3 अगस्त षष्ठी बुधवार

7 अगस्त दशमी रविवार

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

27 नवम्बर चतुर्थी रविवार
4-26 दिन से

28 नवम्बर पंचमी सोमवार

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिसम्बर प्रतिपदा शुक्रवार
11-34 दिन से

11 दिसम्बर तृतीया रविवार
4-15 दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

18 जनवरी एकादशी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

1 फरवरी एकादशी बुधवार

2 फरवरी द्वादशी गुरुवार

3 फरवरी त्रयोदशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
7-59 प्रातः से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

1 मार्च दशमी बुधवार

2 मार्च एकादशी गुरुवार

3 मार्च एकादशी शुक्रवार

12 मई एकादशी गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

20 मई पंचमी शुक्रवार

27 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार
1-00 दिन तक

9 जून नवमी गुरुवार
8-22 प्रातः से

10 जून दशमी शुक्रवार

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

16 जून द्वितीया गुरुवार
12-37 दिन से

17 जून तृतीया शुक्रवार
6-11 प्रातः तक

23 जून दशमी गुरुवार

24 जून एकादशी शुक्रवार
8-04 प्रातः तक

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रतिपदा गुरुवार
10-50 दिन से

6 जुलाई सप्तमी बुधवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

18 जुलाई पंचमी सोमवार
12-24 दिन से

20 जुलाई सप्तमी बुधवार
7-36 प्रातः तक

25 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

3 अगस्त षष्ठी बुधवार

4 अगस्त सप्तमी गुरुवार

10 अगस्त त्रयोदशी बुधवार
9-36 प्रातः से
2-16 दिन तक

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर पंचमी सोमवार

30 नवम्बर सप्तमी बुधवार
8-59 प्रातः तक

2 दिसम्बर दशमी शुक्रवार

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिसम्बर प्रतिपदा शुक्रवार
11-34 दिन से
2-59 दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

16 जनवरी नवमी सोमवार
7-20 सायं से

18 जनवरी एकादशी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

23 जनवरी द्वितीया सोमवार

26 जनवरी पंचमी गुरुवार

27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार

1 फरवरी एकादशी बुधवार

3 फरवरी त्रयोदशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
7-59 प्रातः से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

22 फरवरी तृतीया बुधवार

24 फरवरी पंचमी शुक्रवार

1 मार्च दशमी बुधवार
9-51 दिन तक

2 मार्च एकादशी गुरुवार
12-43 दिन से

3 मार्च एकादशी शुक्रवार

विक्रमी 2079 के

नव वस्त्र धारण मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

3 अप्रेल द्वितीया रविवार
12-37 दिन तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

17 अप्रेल प्रतिपदा रविवार
18 अप्रेल द्वितीया सोमवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

12 मई एकादशी गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

22 मई सप्तमी रविवार
11-12 दिन तक
27 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

8 जून अष्टमी बुधवार
8-31 प्रातः तक
9 जून नवमी गुरुवार
8-22 प्रातः से
10 जून दशमी शुक्रवार
12 जून त्रयोदशी रविवार

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

24 जून एकादशी शुक्रवार
8-04 प्रातः तक

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

6 जुलाई सप्तमी बुधवार
7 जुलाई अष्टमी गुरुवार
8 जुलाई नवमी शुक्रवार
6-26 सायं से
10 जुलाई एकादशी रविवार
11 जुलाई द्वादशी सोमवार
7-50 प्रातः तक

श्रावण कृष्ण पक्ष

21 जुलाई अष्टमी गुरुवार
8-12 प्रातः तक

श्रावण शुक्ल पक्ष

3 अगस्त षष्ठी बुधवार
4 अगस्त सप्तमी गुरुवार
7 अगस्त दशमी रविवार
4-30 दिन तक
12 अगस्त पूर्णिमा शुक्रवार
2-49 दिन तक

आश्विन शुक्ल पक्ष

26 सितम्बर प्रतिपदा सोमवार

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

24 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
4 दिसम्बर द्वादशी रविवार

माघ कृष्ण पक्ष

18 जनवरी एकादशी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

23 जनवरी द्वितीया सोमवार
1-51 दिन तक

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी पंचमी शुक्रवार

विक्रमी 2079 के

विद्यारम्भ मुहूर्त

What is the purpose of Vidhyarambh ceremony?
The word *vidya* means *knowledge* and *arambh* denotes *beginning.* Education of the child is a very important aspect of life and deserves all the importance it can be given. In the **Jyotirnibandh** it is said

विद्यया लुप्यते पापं विद्ययाऽयुः प्रवर्धते।
विद्यया सर्वसिद्धिः स्याद्विद्ययामृमश्नुते ।।

With the study of Vedas all sins are eliminated. One lives longer. One succceeds in every thing. The nectar of learning comes just like normal food and water.
The religious text explains the one who is not knowledgeable is deprived of wonderful fruit like morality.

चैत्र शुक्ल पक्ष

3 अप्रेल द्वितीया रविवार
12-37 दिन तक
6 अप्रेल पंचमी बुधवार
7 अप्रेल षष्ठी गुरुवार
8 अप्रेल सप्तमी शुक्रवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रेल पंचमी गुरुवार
22 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार
27 अप्रेल द्वादशी बुधवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई तृतीया बुधवार
7-33 प्रातः तक
5 मंई चतुर्थी गुरुवार
10-01 दिन से
6 मई पंचमी शुक्रवार
8 मई सप्तमी रविवार
11 मई दशमी बुधवार
12 मई एकादशी बुधवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई तृतीया बुधवार
8-09 प्रातः से
20 मई पंचमी शुक्रवार
25 मई दशमी बुधवार
27 मई द्वादशी शुक्रवार
11-48 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार
2 जून तृतीया गुरुवार
9 जून नवमी गुरुवार
8-22 प्रातः से
10 जून दशमी शुक्रवार

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

16 जून द्वितीया गुरुवार
17 जून तृतीया शुक्रवार
6-11 प्रातः तक
19 जून षष्ठी रविवार
23 जून दशमी गुरुवार
24 जून एकादशी शुक्रवार
8-04 प्रातः से

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
3 जुलाई चतुर्थी रविवार
5-07 सायं से
6 जुलाई सप्तमी बुधवार
10 जुलाई एकादशी रविवार

(विक्रमी 2079 के लिए)

अन्न प्राशन मुहूर्त

अथा अन्नप्राशनं कुर्यात्,
षष्ठे मासि विधानतः।।
बालक का अन्न-प्राशन संस्कार छटे मास में ही करना चाहिये।

चैत्र शुक्ल पक्ष

6 अप्रेल पंचमी बुधवार
7 अप्रेल षष्ठी गुरुवार
10-41 रात तक
11 अप्रेल दशमी सोमवार
6-51 प्रातः तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

28 अप्रेल त्रयोदशी गुरुवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

9-55 दिन से

श्रावण कृष्ण पक्ष

17 जुलाई चतुर्थी रविवार
10-50 दिन से
20 जुलाई सप्तमी बुधवार
7-36 प्रातः तक
24 जुलाई एकादशी रविवार
1-46 दिन से

श्रावण शुक्ल पक्ष

31 जुलाई तृतीया रविवार
3 अगस्त षष्ठी बुधवार
4 अगस्त सप्तमी गुरुवार
7 अगस्त दशमी रविवार
4-30 दिन से

भाद्र कृष्ण पक्ष

14 अगस्त तृतीया रविवार

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

25 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
5-21 सायं से
27 नवम्बर चतुर्थी रविवार
4-26 दिन से
30 नवम्बर सप्तमी बुधवार
4 दिसम्बर द्वादशी रविवार

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिसम्बर प्रतिपदा शुक्रवार
11-34 दिन से
11 दिसम्बर तृतीया रविवार

माघ कृष्ण पक्ष

18 जनवरी एकादशी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

22 जनवरी प्रतिपदा रविवार
25 जनवरी चतुर्थी बुधवार
12-34 दिन से
26 जनवरी पंचमी गुरुवार
27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
1 फरवरी एकादशी बुधवार
2 फरवरी द्वादशी गुरुवार
4-26 दिन तक

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

8 फरवरी तृतीया बुधवार
10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
7-59 प्रातः से
16 फरवरी एकादशी गुरुवार
17 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

22 फरवरी तृतीया बुधवार
24 फरवरी पंचमी शुक्रवार
1 मार्च दशमी बुधवार
2 मार्च एकादशी शुक्रवार

4 मई तृतीया बुधवार
7-33 प्रातः तक
6 मई पंचमी शुक्रवार
12 मई एकादशी गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

20 मई पंचमी शुक्रवार
27 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार
1-00 दिन तक
9 जून नवमी गुरुवार
10 जून दशमी शुक्रवार

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

16 जून द्वितीया गुरुवार
12-37 दिन से
17 जून तृतीया शुक्रवार
6-11 प्रातः तक
23 जून दशमी गुरुवार

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रतिपदा गुरुवार
10-50 दिन से
6 जुलाई सप्तमी बुधवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

18 जुलाई पंचमी सोमवार
12-24 दिन से
20 जुलाई सप्तमी बुधवार
7-36 प्रातः तक
25 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

3 अगस्त षष्ठी बुधवार
4 अगस्त सप्तमी गुरुवार
10 अगस्त त्रयोदशी बुधवार
9-36 प्रातः से
2-16 दिन तक

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर पंचमी सोमवार
30 नवम्बर सप्तमी बुधवार
8-59 प्रातः तक
2 दिसम्बर दशमी शुक्रवार

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिसम्बर प्रतिपदा शुक्रवार
11-34 दिन से
2-59 दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

16 जनवरी नवमी सोमवार
7-20 सायं से
18 जनवरी एकादशी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

23 जनवरी द्वितीया सोमवार
26 जनवरी पंचमी गुरुवार
27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
1 फरवरी एकादशी बुधवार
3 फरवरी त्रयोदशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
7-59 प्रातः से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

22 फरवरी तृतीया बुधवार
24 फरवरी पंचमी शुक्रवार
1 मार्च दशमी बुधवार
9-51 दिन तक
2 मार्च एकादशी गुरुवार
12-43 दिन से
3 मार्च एकादशी शुक्रवार

जर-कासय साथ

चूढ़ाकर्म मुहूर्त (विक्रमी 2079 के लिए)

वैशाख कृष्ण पक्ष

20 अप्रेल चतुर्थी बुधवार
1-53 दिन से
4-07 दिन तक (सिं)

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई तृतीया बुधवार
6-18 प्रातः से
7-33 प्रातः तक (वृ)
6 मई पंचमी शुक्रवार
10-19 दिन से
12-42 दिन तक (क)
12 मई एकादशी गुरुवार
7-40 प्रातः से
9-55 प्रातः तक (मि)
9-55 प्रातः से
12-19 दिन तक (क)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई तृतीया बुधवार
7-16 प्रातः से
8-09 प्रातः तक (मि)
20 मई पंचमी शुक्रवार
7-08 प्रातः से
9-24 दिन तक (मि)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार
.8-36 प्रातः से
11-00 दिन तक (क)
11-00 दिन से
1-00 दिन तक (सिं)
10 जून दशमी शुक्रवार
8-01 प्रातः से
10-25 दिन तक (क)
10-25 दिन से
12-46 दिन तक (सिं)

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

16 जून द्वितीया गुरुवार
12-37 दिन से
4-43 दिन तक (कं)

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रातिपदा गुरुवार
9-06 प्रातः से
11-28 दिन तक (सिं)
11-28 दिन से
1-48 दिन तक (कं)
1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
9-02 दिन से
11-24 दिन तक (सिं)
11-24 दिन सें
1-44 दिन तक (कं)
6 जुलाई सप्तमी बुधवार
8-42 प्रातः से
11-04 दिन तक (सिं)
11 जुलाई द्वादशी सोमवार
8-23 प्रातः से
10-44 दिन तक (सिं)

10-44 दिन से
1-05 दिन तक (कं)

आवश्यक सूचना:-

17 अगस्त 2022 से 21 नवम्बर 2022 तक निषेध समय होने से मेखला, विवाह व अन्य शुभ मुहूर्त त्याज्य रहेंगे।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

25 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
8-50 प्रातः से
10-53 दिन तक (धं)
12-34 दिन से
1-57 दिन तक (कुँ)

28 नवम्बर पंचमी सोमवार
8-38 प्रातः से
10-41 दिन तक (धं)
12-20 दिन से
1-45 दिन तक (कुँ)

2 दिसम्बर दशमी शुक्रवार
8-23 प्रातः से
10-25 दिन तक (धं)
12-04 दिन से
1-29 दिन तक (कुँ)

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिसम्बर प्रतिपदा शुक्रवार
7-55 प्रातः से
9-58 दिन तक (धं)
11-36 दिन से
1-02 दिन तक (कुँ)

माघ शुक्ल पक्ष

26 जनवरी पंचमी गुरुवार
8-28 प्रातः से
9-53 दिन तक (कुँ)
11-12 दिन से
12-44 दिन तक (मे)

27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
8-24 प्रातः से
9-49 दिन तक (कुँ)
11-08 दिन से
12-40 दिन तक (मे)

1 फरवरी एकादशी बुधवार
8-04 प्रातः से
9-29 दिन तक (कुँ)
10-49 दिन से
11-29 दिन तक (मे)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
8-54 प्रातः से
10-13 दिन तक (मी)
10-13 दिन से
11-45 दिन तक (मे)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

22 फरवरी तृतीया बुधवार
8-07 प्रातः से
9-26 दिन तक (मी)
10-57 दिन से
12-51 दिन तक (वृ)

24 फरवरी पंचमी शुक्रवार
10-50 दिन से
12-43 दिन तक (वृ)

2 मार्च एकादशी गुरुवार
12-43 दिन से
2-35 दिन तक (मि)

3 मार्च एकादशी शुक्रवार
8-51 प्रातः से
10-22 दिन तक (मे)
10-22 दिन से
12-15 दिन तक (वृ)

विक्रमी 2079 के

दिवचक्षीर मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

3 अप्रेल द्वितीया रविवार
12-37 दिन तक
10 अप्रेल नवमी रविवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

17 अप्रेल प्रतिपदा रविवार
18 अप्रेल द्वितीया सोमवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

9 जून नवमी गुरुवार
8-22 प्रातः से
10 जून दशमी शुक्रवार
12 जून त्रयोदशी रविवार

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

17 जून तृतीया शुक्रवार
6-11 प्रातः तक
24 जून एकादशी शुक्रवार
8-04 प्रातः तक

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

6 जुलाई सप्तमी बुधवार
11-44 दिन सें
8 जुलाई नवमी शुक्रवार
6-26 सायं से
10 जुलाई एकादशी रविवार
11 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

20 जुलाई सप्तमी बुधवार
12-50 दिन से

श्रावण शुक्ल पक्ष

29 जुलाई प्रतिपदा शुक्रवार
9-47 प्रातः तक
3 अगस्त षष्ठी बुधवार
5 अगस्त अष्टमी शुक्रवार
7 अगस्त दशमी रविवार
12 अगस्त पूर्णिमा शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

26 सितम्बर प्रतिपदा सोमवार
4 अक्टूबर नवमी भौमवार

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

24 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
27 नवम्बर चतुर्थी रविवार
4-26 दिन से
28 नवम्बर पंचमी सोमवार
4 दिसम्बर द्वादशी रविवार

पौष कृष्ण पक्ष

11 दिसम्बर तृतीया रविवार
4-15 दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

18 जनवरी एकादशी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

23 जनवरी द्वितीया सोमवार
4-51 दिन तक
5 फरवरी पूर्णिमा रविवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी पंचमी शुक्रवार

विक्रमी 2079 के

कन्न ज़्मॅबनुक साथ

(कर्ण छेदन मुहूर्त)

चैत्र शुक्ल पक्ष

6 अप्रेल पंचमी बुधवार
7 अप्रेल षष्ठी गुरुवार
10-41 रात तक
11 अप्रेल दशमी सोमवार
6-51 प्रातः तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

28 अप्रेल त्रयोदशी गुरुवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई तृतीया बुधवार
7-33 प्रातः तक
6 मई पंचमी शुक्रवार
12 मई एकादशी गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

20 मई पंचमी शुक्रवार
27 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार
1-00 दिन तक
9 जून नवमी गुरुवार
8-22 प्रातः से
10 जून दशमी शुक्रवार

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

16 जून द्वितीया गुरुवार
12-37 दिन से
17 जून तृतीया शुक्रवार
6-11 प्रातः तक
23 जून दशमी गुरुवार
24 जून एकादशी शुक्रवार
8-04 प्रातः तक

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रतिपदा गुरुवार
10-50 दिन से
6 जुलाई सप्तमी बुधवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

18 जुलाई पंचमी सोमवार
12-24 दिन से
20 जुलाई सप्तमी बुधवार
7-36 प्रातः तक
25 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

3 अगस्त षष्ठी बुधवार
4 अगस्त सप्तमी गुरुवार
10 अगस्त त्रयोदशी बुधवार
9-36 प्रातः से
2-16 दिन तक

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर पंचमी सोमवार
30 नवम्बर सप्तमी बुधवार
8-59 प्रातः तक
2 दिसम्बर दशमी शुक्रवार

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिसम्बर प्रतिपदा शुक्र॰
11-34 दिन से
2-59 दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

16 जनवरी नवमी सोमवार
7-20 सायं से
18 जनवरी एकादशी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

23 जनवरी द्वितीया सोमवार
26 जनवरी पंचमी गुरुवार
27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
1 फरवरी एकादशी बुधवार
3 फरवरी त्रयोदशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
7-59 प्रातः से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

22 फरवरी तृतीया बुधवार
24 फरवरी पंचमी शुक्रवार
1 मार्च दशमी बुधवार
9-51 दिन तक
2 मार्च एकादशी गुरुवार
12-43 दिन से
3 मार्च एकादशी शुक्रवार

नया वाहन खरीदने के मुहूर्त

विक्रमी 2079 के लिये

चैत्र शुक्ल पक्ष

6 अप्रेल पंचमी बुधवार
7 अप्रेल षष्ठी गुरुवार
10-41 रात तक
11 अप्रेल दशमी सोमवार
6-51 प्रातः तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

18 अप्रेल द्वितीया सोमवार
20 अप्रेल चतुर्थी बुधवार
1-53 दिन से
22 अप्रेल षष्ठी शुक्रवार
8-14 रात से

वैशाख शुक्ल पक्ष

6 मई पंचमी शुक्रवार
9-20 प्रातः से
12 मई एकादशी गुरुवार
7-30 सायं से

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई तृतीया बुधवार
8-09 प्रातः तक
27 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून द्वितीया बुधवार
1-00 दिन तक
2 जून तृतीया गुरुवार
4-04 दिन से
9 जून नवमी गुरुवार
8-22 प्रातः से
10 जून दशमी शुक्रवार

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

17 जून तृतीया शुक्रवार
6-11 प्रातः तक
23 जून दशमी गुरुवार
24 जून एकादशी शुक्रवार
8-04 प्रातः तक

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रतिपदा गुरुवार
1 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
6 जुलाई सप्तमी बुधवार
11-44 दिन से
8 जुलाई नवमी शुक्रवार
6-26 सायं से
11 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

20 जुलाई सप्तमी बुधवार
12-50 दिन से
25 जुलाई द्वादशी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

29 जुलाई प्रतिपदा शुक्रवार
9-47 प्रातः तक
3 अगस्त षष्ठी बुधवार
4 अगस्त सप्तमी गुरुवार
5 अगस्त अष्टमी शुक्रवार
8 अगस्त एकादशी सोमवार
2-37 दिन तक
11 अगस्त चतुर्दशी गुरुवार
10-39 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

26 सितम्बर प्रतिपदा सोमवार

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

24 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
25 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
5-21 सायं तक
28 नवम्बर पंचमी सोमवार
8 दिसम्बर पूर्णिमा गुरुवार

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिसम्बर प्रतिपदा शुक्रवार
2-59 दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

16 जनवरी नवमी सोमवार
7-20 सायं से
18 जनवरी एकादशी बुधवार
19 जनवरी द्वादशी गुरुवार
3-18 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

27 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
6-36 सायं से
1 फरवरी एकादशी बुधवार
3 फरवरी त्रयोदशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
15 फरवरी नवमी बुधवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी पंचमी शुक्रवार
27 फरवरी अष्टमी सोमवार
1 मार्च दशमी बुधवार
9-51 दिन तक
2 मार्च एकादशी गुरुवार
12-43 दिन से

गृहदेवता
(घर दिवताह)
को प्रसन्न करने के मुहूर्त

पौष कृष्ण पक्ष

10 दिसम्बर द्वितीया शनि॰
13 दिसम्बर पंचमी भौमवार
17 दिसम्बर नवमी शनिवार
20 दिसम्बर द्वादशी भौमवार

(विक्रमी 2079 के लिए)

पन्न साथ

नोटः- पन्न मुहूर्त के लिए भौमवार, शनिवार, पंचक त्रयहः मासान्त, संक्रान्ति आदि निषेध माना जाता है परन्तु स्यंघ पन्न दान के लिए निषेध नहीं है। विनायक चतुर्थी पन्न मुहूर्त के लिए स्वयं सिद्ध मुहूर्त है अतः वारदोष, पंचक, त्रयहः आदि का विचार विनायक चतुर्थी में नहीं किया जाता है। स्यंघ भी पन्न दान के लिए निषेध नहीं है।

शिशुर

लागनुक साथ

नोटः पौष मास शिशुर मुहूर्त के लिए निषेध नही माना जाता है।

नोटः विनायक चतुर्थी पन्न मुहूर्त के लिए स्वयं सिद्ध मुहूर्त है।

भाद्र शुक्ल पक्ष

29 अगस्त द्वितीया सोमवार
31 अगस्त चतुर्थी बुधवार
1 सितम्बर पंचमी गुरुवार
2 सितम्बर षष्ठी शुक्रवार
4 सितम्बर अष्टमी रविवार
8 सितम्बर त्रयोदशी गुरुवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

24 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
28 नवम्बर पंचमी सोमवार
2 दिसम्बर दशमी शुक्रवार
4 दिसम्बर द्वादशी रविवार
8 दिसम्बर पूर्णिमा गुरुवार

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिसम्बर प्रतिपदा शुक्रवार
11 दिसम्बर तृतीया रविवार
18 दिसम्बर दशमी रविवार

पौष शुक्ल पक्ष

29 दिसम्बर सप्तमी गुरुवार
1 जनवरी दशमी रविवार
12-48 दिन तक
4 जनवरी त्रयोदशी बुधवार

माघ कृष्ण पक्ष

12 जनवरी पंचमी गुरुवार
2-24 दिन से

दीपदान मुहूर्त

(प्रेतदीपदान विक्रमी 2079 के लिये)

नोट:- लोकाचार की दृष्टि से 'काश्मीर दैशिकज्योतिः संग्रह' (स्व. केश्व भट्ट ज्योतिषी) तथा मृतत्त्व गृन्थ के आधार से दीपदान के सभी मुहूर्तों का चयन किया गया है।

(प्रेतदीपदान) कार्तिक्यां माघमासे वा फाल्गुने मास एवहि ।
दीपदानं हितं कृष्णषष्ठयां फाल्गुनमाघयोः।।
जीवाऽर्कजे नैव कुजाऽर्कवारे रिक्ते तिथौ चन्द्रबले विहीने।
अृक्षाणि वर्ज्यानि त्रिपुष्कराणि शेषेषु दीपा न्यरिकल्पयन्ति ।। (काश्मीर दैशिकज्योतिः संग्रह)

आश्विन शुक्ल पक्ष

26 सितम्बर प्रतिपदा सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

8 नवम्बर पूर्णिमा भौमवार

माघ कृष्ण पक्ष

18 जनवरी एकादशी बुधवार
20 जनवरी त्रयोदशी शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

1 फरवरी एकादशी बुधवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी चतुर्थी शुक्रवार
7-59 प्रातः से
15 फरवरी नवमी बुधवार
7-39 प्रातः से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी पंचमी शुक्रवार
27 फरवरी अष्टमी सोमवार
1 मार्च दशमी बुधवार
9-51 दिन से
3 मार्च एकादशी गुरुवार
3-43 दिन से

हमारी संस्कृति के प्रतीकः-

दीपदान (तीलद्‌युन) षडमोस या मासवार पर देने का प्रचल्लन जो कुछ समय से आरम्भ हुआ है, गलत है। काश्मीर के किसी भी पौराणिक ग्रन्थ में इस का कही भी वर्णन नहीं है जो इस की आज्ञा देता हो कि षडमोस या मासवार पर दीपदान देना चाहिये, केवल कार्तिक पूर्णिमा व तील अष्टमी दीपदान के स्वयं सिद्ध मुहूर्त हैं। इन दिनों के विना आप कृपया दीपदान देने के लिए दीपदान मुर्हूत का चयन अवश्य करें।

दुध् साथ

लडकी को दूध देने का मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

5 अप्रेल चतुर्थी भौमवार
4-51 दिन से

वैशाख कृष्ण पक्ष

19 अप्रेल तृतीया भौमवार
4-39 दिन तक
21 अप्रेल पंचमी गुरुवार
11-13 दिन तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

8 मई सप्तमी रविवार
2-57 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

31 मई प्रतिपदा भौमवार
10-01 दिन से
2 जून तृतीया गुरुवार
9 जून नवमी गुरुवार
8-22 प्रातः से

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

30 जून प्रतिपदा गुरुवार
10 जुलाई एकादशी रविवार
9-54 दिन से

श्रावण शुक्ल पक्ष

2 अगस्त पंचमी भौमवार
5-29 सायं से
7 अगस्त दशमी रविवार
4-30 दिन तक
11 अगस्त चतुर्दशी गुरुवार
10-39 दिन से

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

24 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
8 दिसम्बर पूर्णिमा गुरुवार
12-33 दिन से

पौष कृष्ण पक्ष

11 दिसम्बर तृतीया रविवार

माघ शुक्ल पक्ष

22 जनवरी प्रतिपदा रविवार
5 फरवरी पूर्णिमा रविवार
12-13 दिन तक

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

16 फरवरी एकादशी गुरुवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

2 मार्च एकादशी गुरुवार
12-43 दिन से

आवश्यक जानकारी:-

देवगोण के लिये मुहूर्त, नक्षत्र, तिथि आदि देखने की कोई आवश्यकता नहीं होती।

यदि देवगोण के दिन भौमवार या शनिवार हो तो देवगोण का आरम्भ सूर्य उदय से पहले ही करें।

ईस्वी 2022-23 के लिए

यात्रा मुहूर्त

यात्रा के लिए शुभ नक्षत्र	अश्विन, पुनर्वसु, अनुराध, तिष्य, मृग, रेवती, हस्त, धनिष्ट।
यात्रा के लिए अशुभ नक्षत्र	भरण, कृति, आर्द्रा, अश्ले, मघा, चित्र, स्वात, विशाख।
यात्रा के लिए शुभ योग	आनन्दः, ध्वजः, श्रीवत्सः, छत्रम्, मैत्रम्, सिद्धः, अमृतम्, गजः।
यात्रा के लिए मध्यम नक्षत्र	रोहिनी, उफा, उषा, उभा, पुफा, पूषा, ज्येष्ठ, मूल, शतभि।
यात्रा के लिए अशुभ योग	कालदण्डः, धौम्यः, ध्वांक्षः, उन्मूलं, मुसुलम्, मुद्‌गरम्, काण्डः, क्षयः, शूलम्।

वार दोष निवारण के लिए :- रविवार को पान खाकर यात्रा को जायें, सोमवार को दूध अथवा खीर, भौमवार को ऑवला अथवा कांजी खट्टी पदार्थ, बुधवार को मीठा, गुरुवार को दही, शुक्रवार को कच्चा दूध, शनिवार को तहर या पीले चावल खकर यात्रा पर जायें।

चैत्र शुक्ल पक्ष

2 अप्रेल पश्चिम उत्तर
3 अप्रेल पूर्व उत्तर
12-37 दिन तक
5 अप्रेल पूर्व दक्षिण
4-51 दिन से
6 अप्रेल उत्तर विना
7 अप्रेल पूर्व पश्चिम
9 अप्रेल पूर्व विना
10 अप्रेल पूर्व उत्तर
11 अप्रेल पूर्व विना
6-51 प्रातः तक
15 अप्रेल पश्चिम विना
16 अप्रेल पूर्व विना
8-39 प्रात तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

19 अप्रेल पूर्व दक्षिण
20 अप्रेल उत्तर विना
21 अप्रेल पूर्व पश्चिम
22 अप्रेल पश्चिम विना
24 अप्रेल पूर्व उत्तर
26 अप्रेल पूर्व यात्रा
27 अप्रेल पूर्व पश्चिम
28 अप्रेल पूर्व पश्चिम
29 अप्रेल पूर्व उत्तर

वैशाख शुक्ल पक्ष

3 मई पूर्व दक्षिण
4 मई उत्तर विना
5 मई पूर्व पश्चिम
6-16 प्रातः तक
6 मई पश्चिम विना
9-20 प्रातः से
7 मई पूर्व विना
8 मई पूर्व उत्तर

2-57 दिन तक
10 मई पूर्व दक्षिण
11 मई उत्तर विना
12 मई पूर्व पश्चिम

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई उत्तर विना
19 मई पूर्व पंश्चिम
20 मई पश्चिम विना
21 मई पूर्व विना
22 मई पूर्व उत्तर
23 मई पश्चिम उत्तर
24 मई पूर्व यात्रा
25 मई पूर्व पश्चिम
26 मई पश्चिम विना
30 मई पूर्व विना
31 मई पूर्व दक्षिण

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

1 जून उत्तर विना
1-00 दिन तक
2 जून पूर्व पश्चिम
4-04 दिन से
3 जून पश्चिम विना
4 जून पूर्व विना
7 जून पूर्व दक्षिण
8 जून उत्तर विना
9 जून पूर्व पश्चिम
13 जून पूर्व विना

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

16 जून पूर्व पश्चिम
17 जून पश्चिम विना
18 जून पूर्व विना
19 जून पूर्व उत्तर
20 जून पश्चिम उत्तर
21 जून पूर्व यात्रा
22 जून पूर्व पश्चिम
23 जून पूर्व पश्चिम
24 जून पश्चिम विना
8-04 प्रातः तक
26 जून पूर्व उत्तर
1-06 दिन से
27 जून पूर्व विना
28 जून पूर्व दक्षिण
5-52 प्रातः तक

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

30 जून पूर्व पश्चिम
1 जुलाई पश्चिम विना
4 जुलाई पूर्व विना
8-43 प्रातः से
5 जुलाई पूर्व दक्षिण
6 जुलाई उत्तर विना
7 जुलाई पूर्व पश्चिम
12-19 दिन तक
10 जुलाई पूर्व पश्चिम
9-55 दिन से
11 जुलाई पूर्व विना
13 जुलाई उत्तर विना

श्रावण कृष्ण पक्ष

14 जुलाई पूर्व पश्चिम
15 जुलाई पश्चिम विना
18 जुलाई पश्चिम उत्तर
19 जुलाई पूर्व यात्रा
20 जुलाई पूर्व पश्चिम
21 जुलाई पूर्व पश्चिम
2-17 दिन तक
23 जुलाई पूर्व विना
7-03 प्रातः से
24 जुलाई पूर्व उत्तर
25 जुलाई पूर्व विना

27 जुलाई उत्तर विना
28 जुलाई पूर्व पश्चिम

श्रावण शुक्ल पक्ष

29 जुलाई पश्चिम विना
31 जुलाई पूर्व उत्तर
2-20 दिन से
1 अगस्त पूर्व विना
2 अगस्त पूर्व दक्षिण
3 अगस्त उत्तर विना
6-24 सायं तक
6 अगस्त पूर्व विना
5-51 सायं से
7 अगस्त पूर्व उत्तर
8 अगस्त पूर्व विना
9 अगस्त पूर्व दक्षिण
10 अगस्त उत्तर विना
11 अगस्त पूर्व पश्चिम
12 अगस्त पूर्व उत्तर

भाद्र कृष्ण पक्ष

13 अगस्त पश्चिम उत्तर
14 अगस्त पूर्व उत्तर
15 अगस्त पश्चिम उत्तर
20 अगस्त पूर्व विना
21 अगस्त पूर्व उत्तर
22 अगस्त पूर्व विना
7-41 प्रातः तक
23 अगस्त पूर्व दक्षिण
10-44 दिन से
24 अगस्त उत्तर विना
25 अगस्त पूर्व पश्चिम
4-16 दिन तक

भाद्र शुक्ल पक्ष

28 अगस्त पूर्व उत्तर
29 अगस्त पूर्व विना
30 अगस्त पूर्व दक्षिण
3 सितम्बर पूर्व विना
4 सितम्बर पूर्व उत्तर
5 सितम्बर पूर्व विना
6 सितम्बर पूर्व दक्षिण
7 सितम्बर उत्तर विना
8 सितम्बर पूर्व पश्चिम
9 सितम्बर पूर्व उत्तर

आश्विन कृष्ण पक्ष

12 सितम्बर पश्चिम उत्तर
13 सितम्बर पूर्व यात्रा
14 सितम्बर उत्तर विना
6-57 प्रातः तक
18 सितम्बर पूर्व उत्तर
19 सितम्बर पूर्व विना
6-10 प्रातः से
20 सितम्बर पूर्व दक्षिण
21 सितम्बर उत्तर विना
24 सितम्बर पूर्व विना
25 सितम्बर पूर्व उत्तर

आश्विन शुक्ल पक्ष

26 सितम्बर पूर्व विना
30 सितम्बर पश्चिम विना
1 अक्टूबर पूर्व विना
2 अक्टूबर पूर्व उत्तर
3 अक्टूबर पूर्व विना
4 अक्टूबर पूर्व दक्षिण
5 अक्टूबर उत्तर विना
6 अक्टूबर पूर्व पश्चिम
7 अक्टूबर पूर्व उत्तर
8 अक्टूबर पश्चिम उत्तर
9 अक्टूबर पूर्व उत्तर

कार्तिक कृष्ण पक्ष

10 अक्टूबर पश्चिम उत्तर

11 अक्टूबर पूर्व दक्षिण
4-17 दिन तक
14 अक्टूबर पश्चिम विना
15 अक्टूबर पूर्व विना
18 अक्टूबर पूर्व दक्षिण
19 अक्टूबर उत्तर विना
8-02 प्रातः तक
21 अक्टूबर पश्चिम विना
12-28 दिन से
22 अक्टूबर पूर्व विना
23 अक्टूबर पूर्व उत्तर
24 अक्टूबर पूर्व विना
2-42 दिन तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

27 अक्टूबर पूर्व पश्चिम
12-10 दिन से
28 अक्टूबर पश्चिम विना
30 अक्टूबर पूर्व उत्तर
31 अक्टूबर पूर्व विना
2 नवम्बर पूर्व पश्चिम
3 नवम्बर पूर्व पश्चिम
4 नवम्बर पूर्व उत्तर
5 नवम्बर पश्चिम उत्तर
6 नवम्बर पूर्व उत्तर
7 नवम्बर पूर्व विना

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

10 नवम्बर पूर्व पश्चिम
11 नवम्बर पश्चिम विना
12 नवम्बर पूर्व विना
7-33 प्रातः तक
13 नवम्बर पूर्व उत्तर
10-18 दिन से
14 नवम्बर पूर्व विना
18 नवम्बर पश्चिम विना
19 नवम्बर पूर्व विना
20 नवम्बर पूर्व उत्तर

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

24 नवम्बर पूर्व पश्चिम
25 नवम्बर पश्चिम विना
26 नवम्बर पूर्व विना
27 नवम्बर पूर्व उत्तर
28 नवम्बर पूर्व विना
29 नवम्बर पूर्व दक्षिण
30 नवम्बर पूर्व पश्चिम
1 दिसम्बर पूर्व पश्चिम
2 दिसम्बर पूर्व उत्तर
3 दिसम्बर पश्चिम उत्तर
4 दिसम्बर पूर्व उत्तर
7 दिसम्बर उत्तर विना
10-25 दिन से
8 दिसम्बर पूर्व पश्चिम

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिसम्बर पश्चिम विना
2-59 दिन तक
10 दिसम्बर पूर्व विना
5-42 सायं से
11 दिसम्बर पूर्व उत्तर
12 दिसम्बर पूर्व विना
17 दिसम्बर पूर्व विना
18 दिसम्बर पूर्व उत्तर
10-17 दिन तक
21 दिसम्बर उत्तर विना
22 दिसम्बर पूर्व पश्चिम
23 दिसम्बर पश्चिम विना

पौष शुक्ल पक्ष

24 दिसम्बर पूर्व विना
26 दिसम्बर पूर्व विना
27 दिसम्बर पूर्व यात्रा

28 दिसम्बर पूर्व पश्चिम
29 दिसम्बर पूर्व पश्चिम
30 दिसम्बर पूर्व उत्तर
31 दिसम्बर पश्चिम उत्तर
1 जनवरी पूर्व उत्तर
12-48 दिन तक
3 जनवरी पूर्व दक्षिण
4-26 दिन से
4 जनवरी उत्तर विना
5 जनवरी पूर्व पश्चिम

माघ कृष्ण पक्ष

7 जनवरी पूर्व विना
11 जनवरी उत्तर विना
11-50 दिन से
12 जनवरी पूर्व पश्चिम
18 जनवरी उत्तर विना
19 जनवरी पूर्व पश्चिम
20 जनवरी पश्चिम विना
21 जनवरी पूर्व विना

माघ शुक्ल पक्ष

22 जनवरी पूर्व उत्तर
23 जनवरी पश्चिम उत्तर
24 जनवरी पूर्व यात्रा
25 जनवरी पूर्व पश्चिम
26 जनवरी पूर्व पश्चिम
27 जनवरी पूर्व उत्तर
28 जनवरी पूर्व विना
31 जनवरी पूर्व दक्षिण
1 फरवरी उत्तर विना
3 फरवरी पश्चिम विना
4 फरवरी पूर्व विना
5 फरवरी पूर्व उत्तर
12-13 दिन तक

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

7 फरवरी पूर्व दक्षिण
5-45 सायं से
8 फरवरी उत्तर विना
9 फरवरी पूर्व पश्चिम
10 फरवरी पश्चिम विना
14 फरवरी पूर्व दक्षिण
15 फरवरी उत्तर विना
16 फरवरी पूर्व पश्चिम
17 फरवरी पश्चिम विना
18 फरवरी पूर्व विना
19 फरवरी पूर्व उत्तर
20 फरवरी पश्चिम उत्तर

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

22 फरवरी पूर्व पश्चिम
23 फरवरी पूर्व पश्चिम
24 फरवरी पश्चिम विना
27 फरवरी पूर्व विना
28 फरवरी पूर्व दक्षिण
1 मार्च उत्तर विना
9-51 प्रातः तक
2 मार्च पश्चिम विना
12-43 दिन से
3 मार्च पश्चिम विना
4 मार्च पूर्व विना

चैत्र कृष्ण पक्ष

7 मार्च पूर्व दक्षिण
8 मार्च उत्तर विना
9 मार्च पूर्व पश्चिम
15 मार्च उत्तर विना
16 मार्च पूर्व पश्चिम
17 मार्च पश्चिम विना
18 मार्च पूर्व विना
20 मार्च पश्चिम उत्तर

卐 卐 卐 卐 卐

विक्रमी 2079 के

सर्वार्थ सिद्धि योग

नोट:- सर्वार्थ सिद्धि योग में विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेश, शंकु प्रतिष्ठा, विद्यारम्भ आदि शुभ कार्य न करें। ऐसे शुभ कार्यो की तिथि का चयन सम्बन्धित मुहूर्त प्रकरण से ही करें।

'सर्वार्थसिद्धि योग' में आभूषण लाना, आफिसर से मिलना, चार्ज लेना, भूमि आदि का क्रय, किसी से समझौता करना, परीक्षा देना, फार्म भरना किसी काम्पेटिशन के लिए आवेदन भेजना, यात्रा या मुकद्दमा करना, वाहन व वस्त्र का क्रय करना इत्यादि आवश्यक परिस्थितिवश किये जा सकते हैं। परन्तु विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेश, शंकु प्रतिष्ठा, विद्यारम्भ आदि शुभ कार्यो के लिये सम्बन्धित मुहूर्त प्रकरण से ही मुहूर्तो का चयन करें।

सर्वार्थ सिद्धि योग		सर्वार्थ सिद्धि योग	
आरम्भ काल		समाप्ति काल	
03–अप्रेल	सूर्य उदय	03–अप्रेल	12:37 PM
05–अप्रेल	सूर्य उदय	05–अप्रेल	4:51 PM
06–अप्रेल	सूर्य उदय	06–अप्रेल	7:39 PM
11–अप्रेल	सूर्य उदय	11–अप्रेल	6:51 AM
12–अप्रेल	सूर्य उदय	12–अप्रेल	8:35 AM
29–अप्रेल	सूर्य उदय	29–अप्रेल	6:42 PM
06–मई	9:20 AM	07–मई	सूर्य उदय
08–मई	5:39 AM	08–मई	2:57 PM
16–मई	1:18 PM	17–मई	सूर्य उदय
21–मई	5:30 AM	21–मई	11:46 PM
30–मई	7:12 AM	30–मई	सूर्य उदय
01–जून	सूर्य उदय	01–जून	1:00 PM
02–जून	4:04 PM	03–जून	सूर्य उदय
03–जून	सूर्य उदय	03–जून	7:05 PM
11–जून	सूर्य उदय	12–जून	2:05 AM
13–जून	सूर्य उदय	13–जून	9:24 PM

सर्वार्थ सिद्धि योग आरम्भ काल		सर्वार्थ सिद्धि योग समाप्ति काल	
17-जून	9:56 AM	18-जून	सूर्य उदय
21-जून	सूर्य उदय	22-जून	5:03 AM
24-जून	सूर्य उदय	24-जून	8:04 AM
27-जून	सूर्य उदय	27-जून	4:02 PM
06-जुलाई	11:44 AM	07-जुलाई	सूर्य उदय
09-जुलाई	सूर्य उदय	09-जुलाई	11:25 AM
15-जुलाई	सूर्य उदय	15-जुलाई	5:31 PM
19-जुलाई	सूर्य उदय	19-जुलाई	12:12 PM
21-जुलाई	सूर्य उदय	21-जुलाई	2:17 PM
25-जुलाई	सूर्य उदय	26-जुलाई	1:05 AM
03-अगस्त	सूर्य उदय	03-अगस्त	6:24 PM
20-अगस्त	सूर्य उदय	20-अगस्त	4:39 AM
22-अगस्त	सूर्य उदय	22-अगस्त	7:41 AM
25-अगस्त	सूर्य उदय	25-अगस्त	4:16 PM
11-सितम्बर	8:02 AM	12-सितम्बर	सूर्य उदय
17-सितम्बर	सूर्य उदय	17-सितम्बर	12:21 PM
25-सितम्बर	सूर्य उदय	26-सितम्बर	सूर्य उदय

सर्वार्थ सिद्धि योग आरम्भ काल		सर्वार्थ सिद्धि योग समाप्ति काल	
30-सितम्बर	सूर्य उदय	31-सितम्बर	4:18 AM
02-अक्टूबर	सूर्य उदय	02-अक्टूबर	1:52 AM
09-अक्टूबर	सूर्य उदय	09-अक्टूबर	4:20 PM
11-अक्टूबर	सूर्य उदय	11-अक्टूबर	4:17 PM
23-अक्टूबर	सूर्य उदय	24-अक्टूबर	2:34 PM
27-अक्टूबर	12:10 PM	28-अक्टूबर	सूर्य उदय
28-अक्टूबर	सूर्य उदय	28-अक्टूबर	10:42 AM
30-अक्टूबर	6:48 AM	31-अक्टूबर	सूर्य उदय
09-नवम्बर	सूर्य उदय	10-नवम्बर	3:09 AM
14-नवम्बर	1:15 PM	15-नवम्बर	सूर्य उदय
20-नवम्बर	7:06 AM	21-नवम्बर	सूर्य उदय
24-नवम्बर	7:10 AM	24-नवम्बर	7:37 PM
27-नवम्बर	12:38 PM	28-नवम्बर	सूर्य उदय
28-नवम्बर	10:29 AM	29-नवम्बर	सूर्य उदय
04-दिसम्बर	सूर्य उदय	5-दिसम्बर	7:15 AM
07-दिसम्बर	सूर्य उदय	07-दिसम्बर	10:25 AM
12-दिसम्बर	सूर्य उदय	12-दिसम्बर	11:36 PM

सर्वार्थ सिद्धि योग आरम्भ काल		सर्वार्थ सिद्धि योग समाप्ति काल	
13–दिसम्बर	सूर्य उदय	14–दिसम्बर	2:32 AM
18–दिसम्बर	सूर्य उदय	18–दिसम्बर	10:18 AM
21–दिसम्बर	8:33 AM	22–दिसम्बर	6:33 AM
25–दिसम्बर	7:32 AM	25–दिसम्बर	7:21 PM
26–दिसम्बर	सूर्य उदय	26–दिसम्बर	4:41 PM
30–दिसम्बर	11:24 AM	31–दिसम्बर	सूर्य उदय
01–जनवरी	सूर्य उदय	01–जनवरी	12:48 PM
03–जनवरी	सूर्य उदय	03–जनवरी	4:26 PM
04–जनवरी	सूर्य उदय	04–जनवरी	6:48 PM
08–जनवरी	सूर्य उदय	09–जनवरी	सूर्य उदय
10–जनवरी	सूर्य उदय	10–जनवरी	9:01 AM
18–जनवरी	सूर्य उदय	18–जनवरी	5:22 PM
21–जनवरी	6:29 AM	21–जनवरी	7:33 AM
27–जनवरी	7:30 AM	27–जनवरी	6:36 PM
01–फरवरी	सूर्य उदय	02–फरवरी	3:23 AM
02–फरवरी	6:18 AM	03–फरवरी	सूर्य उदय
03–फरवरी	7:26 AM	04–फरवरी	सूर्य उदय

सर्वार्थ सिद्धि योग आरम्भ काल		सर्वार्थ सिद्धि योग समाप्ति काल	
05–फरवरी	सूर्य उदय	05–फरवरी	12:13 PM
21–फरवरी	6:38 AM	21–फरवरी	7:08 AM
23–फरवरी	7:07 AM	24–फरवरी	3:44 AM
27–फरवरी	7:03 AM	28–फरवरी	सूर्य उदय
01–मार्च	7:00 AM	01–मार्च	9:51 AM
02–मार्च	12:43 PM	03–मार्च	सूर्य उदय
03–मार्च	सूर्य उदय	03–मार्च	3:43 PM
11–मार्च	7:11 AM	12–मार्च	6:47 AM
13–मार्च	8:21 AM	14–मार्च	6:44 AM
18–मार्च	6:39 AM	18–मार्च	12:29 AM

e-matching of Horoscopes
You can avail the facility of Kundli Matching via e-mail. Drop a message at **vijayeshwer@yahoo.com** or **WhatsApp** on **9419146712, 9419136991** with following details:- Date of Birth, Time of Birth & Birth Place of both Boy and Girl, And get the Matching Report on your email.

मेष राशि का मासिक फल

अप्रेलः- इस मास में आप को आराम कम परन्तु संघर्ष अधिक रहेगा। सहयोगी भाग्य वर्धक साबित होंगे, रिश्तेदारों एवं मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थी वर्ग को इस मास में मानसिक अशान्ति के वातावरण में ही गुज़ारना होगा। अप्रेल मास की 12, 19 व 27 तारीख आप के लिये शुभ है।

मईः- इस मास में शरीर स्वस्थ रहेगा। नौकरी पेशा होने पर अफसरों के साथ यह मास शान्त वातावरण में व्यतीत होगा। इस मास में विद्याथियों को चाहिए कि वे विद्या प्राप्ति के लिए सोमवार तथा शनिवार के दिन भगवान् शंकर पर दूध सहित जल चढ़ाया करें। इस मास के शुभ दिन 12,15,29 मई हैं।

जूनः- मास के आरम्भ पर प्रथम भाव में सूर्य व बुध के एक साथ होने से इस मास में आप ग्रहस्थी जीवन सुख व शान्ति से व्यतीत करेंगे। शरीर भी स्वस्थ रहेगा। नौकरी पेशा होने पर अफसरों के साथ यह मास शान्त वातावरण में व्यतीत होगा। इस मास के शुभ दिन 7, 16 व 30 जून हैं।

जुलाईः- इस मास में सूर्य, गुरु तथा बुध की अच्छी स्थिति में होना आप की आर्थिक स्थिति मज़बूत होने का सूचक है। परन्तु केतु व भौम का शुभ घर में होना आप के शरीर के लिए ठीक नहीं है। शरीर सम्बन्धित चिन्ता अचानक आ घेरेगी वह परेशानी घर के किसी सदस्य को भी हो सकती हे। इस मास में अचानक धन लाभ से भी इन्कार भी नहीं किया जा सकता। इस मास के शुभ दिन 7 व 22 जुलाई हैं।

अगस्तः- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार अफसरों तथा प्रतिष्ठित लोगों से मिलने जुलने के अवसर मिलेंगे। घर में मंगल कार्य तथा धार्मिक उत्सव रचाने के प्रोग्राम बनेगें या घर में बच्चें का जन्म होगा, ज़मीन दार होने पर भूमि से लाभ मिलगा। अगस्त मास के शुभ दिन 9, 18, 24 व 31 हैं।

सितम्बरः- इस मास की ग्रह स्थिति को अध्यन करने से विद्यित होता है कि यह मास मानसिक अशान्ति तथा परेशानी के वातावरण में ही गुज़रना होगा। इस मास में आपकी आमदनी से अधिक खर्चा होने की सम्भावना हे। शुभ कामों पर धन का आशा से अधिक खर्च, सिनेमा, कल्बों तथा मनोरंजनक स्थलों में भी अधिक धन खर्च होगा। इस मास के शुभ दिन 3 व 25 हैं।

अक्टूबर :- इस मास में ग्रहों की स्थिति प्रायः हानिकारक है। शरीर सुख मध्यम रहेगा। इस मास में शरीर कष्ट की भी सम्भावना है, यदि आप गृहस्थी है तो स्त्री की परेशानी रहेगी, घरेलू वातावरण अशान्त रहेगा, आमदनी की दृष्टि से यह मास अच्छा रहेगा, खर्च का योग भी बलवान् है। खाने पिलाने और पार्टियों में सम्मिलित होने का व्यर्थ खर्च बरदाश्त करना होगा।

नवम्बरः- गोचर फलित शास्त्रों के अनुसार यह मास धन के लिए

हानिकारक है अर्थात् धन प्राप्ति में रुकावट पडने की सम्भावना इस मास में हो सकती है। मास के शुभ दिन 2, 21 व 25 हैं।

दिसम्बरः- मास के आरम्भ की ग्रहस्थिति को देखने से विदित होता है कि यह मास आप के लिए शुभ फल का सूचक है। शरीर सुख उत्तम रहेगा। यदि ग्रहस्थी है तो गृहस्थ पक्ष से मानसिक शान्ति रहेगी। शुभ दिन 2, 19 व 28 दिसम्बर हैं।

जनवरी 2023:- ज्योतिष गोचर में यहीं मालूम होता है कि यह मास भी आपका शान्त वातावरण में ही गुज़रेगा, शरीर सुख उत्तम रहेगा। यदि गृहस्थी है तो गृहस्थ पक्ष से शान्ति का योग है और सन्तान पक्ष से भी मानसिक शान्ति बनी रहेगी। जनवरी मास के शुभ दिन 13 व 24 व 29 हैं।

फरवरीः- इस मास में श्रेष्ठ पुरुषों से मेलमिलाप होगा, यदि आप कोई तामीरी काम करना चाहते है या कोई ज़मीन जाएदाद खरीदना चाहते है तो यह मास एसे कामों के लिए उत्तम है।। विद्यार्थी वर्ग को इस मास में विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता अवश्य मिलेगी। इस मास के शुभ दिन 3 व 28 फरवरी हैं।

मार्चः- यह मास संघर्ष तथा दौडधूप में ही व्यतीत होगा। गृहस्थी होने पर गृहस्थपक्ष से मानसिक अशान्ति भी बनी रहेगी। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी यदि इस मास में विद्या सम्बन्धित कोई भी यात्रा बने वह यात्रा भी आप के लिए लाभदायक रहेगी। इस मास केशुभ दिन 5, 10, 15, 25 मार्च हैं।

वृष राशि का मासिक फल

अप्रेलः- इस मास धन की परेशानी आप को घेरे रखेगी, शरीर के बारे में सावधान रहिए, गृहस्थी होने पर स्त्री के शरीर का विशेष ध्यान रखिये। नौकरी पेशा होने पर लाभ की अथवा तरक्की की आशा न रखें बल्कि यह मास भी दौडधूप में ही गुज़रेगा।

मईः- ग्रहों की स्थिति को ध्यान में रखकर यह मालूम होता है कि यह मास हर प्रकार से शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा। प्रायः हर काम में सफलता होगी। यदि इस मास में यात्रा का योग बने तो आप अवश्य यात्रा पर जायें। मास के शुभ दिन 8 व 25 मई हैं।

जूनः- ग्रह चाल के अनुसार इस मास में अचानक लाभ मिलेगा। व्यापारी होने पर इस मास में खरीद आधिक करें, वह खरीद आगे आने वाले मासों में लाभदायक रहेगी। व्यापारी, नौकरी पेशा वर्ग तथा विद्यार्थी वर्ग को इस मास वैष्णव रहना चाहिए।

जुलाईः- यह मास संघर्ष तथा अशान्ति के वातावरण में ही आप को गुज़ारना पडेगा। आपका शरीर भी प्रायः अस्वस्थ रहेगा। भौम तथा बृहस्पति की अच्छी स्थिति न होने की वजह से जाइदाद सम्बन्धित परेशानी की भी सम्भावना है। इस मास के शुभ दिन 2, 15, 19 व 29 जुलाई हैं।

अगस्तः- इस मास के आरम्भ पर सुख और आनन्द की प्राप्त होगी। शरीर भी स्वस्थ रहेगा। आरम्भ किये हुए हर काम

में सफलता होने का योग भी प्रबल है। मास के अन्तिम दो सप्तहों में अत्याधिक खर्च होने की संभावना है। आप के लिए इस मास में यात्रा कष्टदायक रहेगी। इस मास के शुभ दिन 6, 12, 19, व 21अगस्त है।

सितम्बर:- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार यह मास सामूहिक रूप से दौडधूप के वातावरण में ही गुज़ारना होगा। आपका शरीर प्रायः अस्वस्थ रहेगा। शनि की अच्छी स्थिति में न होने की वजह से जाईदाद सम्बन्धित परेशानी की भी सम्भावना है। शुभ दिन 3, 11, 17, व 27 सितम्बर हैं।

अक्टूबर:-इस मास में यदि आप कोई तामीरी काम आरम्भ करना चाहते हो तो अवश्य किसी शुभ मुहूर्त को देख कर करें। विद्यार्थी वर्ग को इस मास में पढाई सम्बन्धित हर काम में उलझने तथा रुकावटों के कारण मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। इस मास के शुभ दिन 9, 14, व 22 अक्टूबर हैं।

नवम्बर:- फलित शास्त्रों के अनुसार बृहस्पति की अच्छी स्थिति से इस मास में हर आरम्भ किये हुए काम में सफलता मिलेगी। यदि आप विद्यार्थी वर्ग से है तो यह मास आपके लिए वर्ष का सर्वोत्तम मास है। इस मास के शुभ दिन 13 व 27 नवम्बर हैं।

दिसम्बर:- आमदनी की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा। जिस काम को आप हाथ में लेंगे चाहे वह कितना भी कठिन हो सफलता अवश्य होगी। शरीर सुख उत्तम रहेगा।। घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा अथवा किसी घनिष्ठ सम्बन्धी के शुभ उत्सव में सम्मिलत होने का अवसर मिलेगा।

जनवरी 2023:- यदि आप कोई तामीरी काम करना चाहते हैं तो इस मास में उस तामीर सम्बन्धित कुछ सामान खरीदकर रखें वह आपके लिए शुभ रहेगा। आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा। धार्मिक अथवा सामाजिक कामों मे भी आपकी दिलचस्पी बनी रहेगी। विद्यार्थियों के लिए यह मास विशेष सफलता का नहीं है। इस मास के शुभ दिन 1, 11, 19, 26 व 29 जनवरी 2013 हैं।

फरवरी:- आमदनी की दृष्टि से यह मास भी उत्तम रहेगा। यदि आप कोई वाहन आदि खरीदना चाहते हैं तो यह मास आपके लिए शुभ रहेगा। फरवरी मास के शुभ दिन 9, 18 व 24 हैं।

मार्च:- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार अफसरों तथा प्रतिष्ठित लोगों से मिलने जुलने के अवसर मिलेंगे। घर में मंगल कार्य तथा धार्मिक उत्सव रचाने के प्रोग्राम बनेगें।

e-matching of Horoscopes
You can avail the facility of Kundli Matching via e-mail.
Drop a message at **vijayeshwer@yahoo.com**
with following details:-
Date of Birth, Time of Birth & Birth Place. And get the Matching Report on your email.

मिथुन राशि का मासिक फल

अप्रेलः- इस मास की ग्रहों की स्थिति आप के आर्थिक संकट को दूर करने में सहायक सिद्ध हो सकती है। कुछ शुभ और अशुभ योगों से इस मास में अकस्मात् लाभ, मानसिक शान्ति, प्रत्येक आरम्भ किये कार्य में सफलता, मित्रों तथा रिशतेदारों से मेल मिलाप की सम्भावना है।

मईः- हर आरम्भ किये कार्य में सफलता होने का योग है। इस मास में यात्रा भी होगी जो आप के लिए लाभ दायक रहेगी। आमदनी भी इच्छा अनुसार ही बनी रहेगी।

जूनः- इस मास में शत्रुओं से आप को सावधान ही रहना चाहिए। यदि आप विद्यार्थी वर्ग से है तो आपको एक एक क्षण का लाभ उठाना चाहिए। सफलता प्राप्त करने का सर्वोउत्तम मास यहीं है। इस मास के शुभ दिन 1 व 9 जून हैं।

जुलाईः- यह मास अशुभ फलदायक ही सिद्ध होगा। मानसिक अशान्ति के साथ साथ आर्थिक संकट तथा धनहानि होन की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। इस मास के शुभ दिन 4 व 14 जुलाई हैं।

अगस्तः- इस मास में आप का शरीर स्वास्थ रहेगा। गृहस्थी होने पर घरेलू वातावरण भी शान्त रहेगा। यदि आप को मातृपक्ष से कोई परेशानी है तो उपाय के रूप में इस मास हर भौमवार को तहर बनाकर पक्षियों को डाललें परन्तु उस तहर (पीले चावल) में नमक के बदले गुढ या चीनी डालें।

सितम्बरः- सामूहिक रूप से अगर देखा जाये तो आप के लिए यह मास शुभ फलदायक ही रहेगा, अगर माता पिता या स्त्री आदि की शोर सम्बन्धित कोई परेशानी है तो ग्रहों के प्रभाव से एसी समस्याओं का स्वयं समाधान होगा। इस मास के शुभ दिन 7, 15, व 27 सितम्बर हैं।

अक्टूबरः- यदि इस मास में आप कोई तामीरी काम या कोई वाहन, भूमि आदि खरीदनने का प्रोग्राम है तो ऐसे मास में ऐसे कार्यों को स्थगित करके नवम्बर मास में कार्य सम्पन्न कर सकते है। इस मास के शुभ दिन 5, 17, व 30 अक्टूबर हैं।

नवम्बरः- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार आप का मन हर समय अशान्त बना रहेगा। यदि इस मास कोई यात्रा का योग व्यापार, विद्या या नौकरी सम्बन्धित बने तो उस यात्रा पर अवश्य जाऐं। जाते समय भगवान् शंकर का ध्यान अवश्य करें। इस मास के शुभ दिन 17, 25 व 29 नवम्बर हैं।

दिसम्बरः- दिसम्बर का यह मास यद्यपि संघष तथा दौडधूप में ही गुज़रेगा परन्तु मान प्रतिष्ठा की रक्षा में बृहस्पति रक्षक रहेगा। यदि आप नौकरी करते हैं तो बुध के प्रभाव से नौकरी में अकस्मात् तर्की का योग बनेगा। इस मास के शुभ दिन 7, 13 व 31 दिसम्बर हैं।

जनवरी 2023:- गोचर फल से विदित होता है कि यह मास सुख शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा। आय की दृष्टि से यदि इस वर्ष कोई काम नये सिरे से आरम्भ करना हो अथवा कारोबार का बढावा देने का विचार हो तो इस मास को ऐसे कार्य के लिए आप अवश्य चुने। शुभ दिन 5 व 22 जनवरी हैं।

फरवरी:-इस मास के ग्रह अच्छी स्थिति में नहीं हैं परन्तु आय की दृष्टि से इस वर्ष का यह मास एक समरणीय मास होगा। आप काम में जुट जाये, हर काम में आप को सफलता मिलेगी, विशेषतया यदि आप खाद्य पदार्थों, दवाई इत्यादि का व्यापार करते है तो आप शान व मान से सफल होंगे। शुभ दिन 15 व 26 फरवरी हैं।

मार्च:- इस मास के अन्त तक आर्थिक संकट बना रहेगा। अगर आप को जाईदाद सम्बन्धित अथवा माता की ओर से कोई चिन्ता है तो यह चिन्ता मिट जायेगी। यदि आप किसी झगडे में उलझे हैं तो उस का समाधान इस मास में होगा। धार्मिक कामों की और अधिक प्रवृति बनी रहेगी। शुभ कामों पर भी धन खर्च होता रेगा। इस मास के शुभ दिन 1, 3, 7, 14, 27 मार्च हैं।

कर्कट राशि का मासिक फल

अप्रेल:- यद्यपि इस मास की ग्रहचाल गोचर फलित के आधार से अनुकूल है परन्तु शरीर की दृष्टि से यह मास शान्तिप्रद नहीं होगा। यदि दैव योग से आप शरीर की परेशानी से बचे रहेंगे तो भी घर के किसी सदस्य के शरीर की चिन्ता आपको अवश्य घेरे रखेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए इस मास के ग्रह अनुकूल हैं। यदि आपने कोई परीक्षा देनी हो अथवा इन्टरविव आदि में सम्मिलित होना हो तो ऐसे कामों के लिए यह मास सफलता का है।

मई:- इस मास की ग्रह स्थिति भी आप के लिए ठीक नहीं है। शरीर सुख आप का मध्यम रहेगा, इस लिए शरीर के विषय में आप को सावधान ही रहना चाहिए। अचानक चोट लगने की भी सम्भावना है। इस मास के शुभ दिन 3 व 14 मई हैं।

जून:- इस मास में आपके आर्थिक संकट के साथ साथ घरेलू समस्याए दूर होने का उत्तम योग है। यह मास प्रायः शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा। इस मास में अच्छे पुरूषों से मेल मिलाप होगा। धर्मिक कामों में भी दिलचस्पी बनी रहेगी।

जुलाई:- शरीर सुख मध्यम रहेग, यदि आप गृहस्थी है तो शरीर कष्ट अथवा स्त्री की ओर किसी प्रकार की मानसिक अशान्ति रहेगी, शरीर के विषय में अगर आप उपाय करना चाहें तो तहर पक्षियों कों अवश्य शनिवार को डाला करें। इस

मास के शुभ दिन 1, 7, व 14 जुलाई हैं।

अगस्तः- यह मास यद्यपि संघर्ष तथा दौड़धूप में ही व्यतीत होगा फिर भी यह मास हर काम में सफलता देने वाला होगा। गृहस्थी होने पर गृहस्थपक्ष से मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी। यदि इस मास में विद्या सम्बन्धित कोई भी यात्रा बने, वह यात्रा भी आप के लिए लाभदायक रहेगी। शुभ दिन 4, 17, व 24 अगस्त हैं।

सितम्बरः- इस मास में शरीर के विषय में सावधान रहिये, यदि आप विवाहित हैं तो कोई न कोई घरेलू परेशानी घेरे रखेगी। इस मास में धार्मिक कामों में दिलचस्पी बनी रहेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए विद्या सम्बन्धित हर एक काम के लिए लाभदायक रहेगा। इस मास के शुभ दिन 1, 12, 21 व 26 सितम्बर हैं।

अक्टूबरः- इस मास में भी आप की ग्रहचाल में कोई सुधार नही हुआ है। धन की परेशानी आप को घेरे रखेगी, शरीर के बारे में सावधान रहिये, गृहस्थी होने पर स्त्री व बच्चों के शरीर का विशेष ध्यान रखिये। इस मास के शुभ दिन 9, 27 व 30 अक्टूबर हैं।

नवम्बरः- यह मास भी सामूहिक रूप से आप के लिए लाभदायक रहेगा। यदि आप किसी परेशानी या मुक्दमे आदि में फंसे हैं तो ऐसी समस्याओं का हल स्वयं निकल आयेगा, लाभ की दृष्टि से यह मास बहुत ही उत्तम है। इस मास के शुभ दिन 2, 9, 21, 27 व 30 नवम्बर हैं।

दिसम्बरः- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार अचानक आर्थिक संकट की संभावना हो सकती है। इस मास आप अपनी पूंजी की रक्षा के विषय में सावधान रहिये, शरीर सुख मध्यम रहेगा। इस मास के शुभ दिन 4, 21 व 29 दिसम्बर हैं।

जनवरीः- इस मास में आपका स्वास्थ कुछ ठीक नहीं रहेगा। गृहस्थ पक्ष से मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। आर्थकि दृष्टि से यह मास आप के लिए उत्तम ही है। यदि आप व्यापार करते हैं तो आपके व्यापार में कुछ कठिनाईयों तथा कठोर परिश्रम के पश्चात ही सफलता प्राप्त होगी।

फरवरीः-यदि आप सीमेन्ट अथवा किसी मिशीनरी से सम्बन्धित व्यापार करते हैं तो इस मास से आप के कारोबार का सुनहरी समय आरम्भ होगा और आप का शरीर स्वस्थ तथा मानसिक शान्ति बनी रहेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिये यह मास कुछ डावाँडोल ही रहेगा। कडे परिश्रम के पश्चात भी सफलता नहीं मिलेगी। मास के शुभ दिन 11, 21 फरवरी हैं।

मार्चः- फलित शास्त्रों के अनुसार इस मास में शरीर अस्वस्थ, मानसिक अशान्ति, भाई बन्धुओं से अनबन, घरेलू अशान्ति, स्त्री की और से परेशानी व्यापार में हानि आदि का सूचक है। इस साल का सब से मनहूस महीना मानना चाहिए। इस मास के शुभ दिन 2, 6, 9, 19 व 26 मार्च हैं।

सिंह राशि का मासिक फल

अप्रेलः- इस मास में ग्रहों के प्रभाव से अन्तिम दो सप्ताह आप के लिए संघर्ष तथा दौढदूप में ही व्यतीत होगें। इन दो सप्ताहों में आप का शरीर अस्वस्थ व आर्थिक स्थिति कमज़ोर रहने की संभावना है। विद्यार्थी होने पर यह मास आप के लिए विशेष सुख शान्ति का नहीं होगा। अप्रेल मास की 1 व 20 तारीख आप के लिये शुभ है।

मईः- इस मास की ग्रहों की स्थिति आप के आर्थिक संकट को दूर करने में सहायक सिद्ध हो सकती है। कुछ शुभ और अशुभ योगों से इस मास में अकस्मात् लाभ, मानिसक शान्ति, प्रत्येक आरम्भ किये कार्य में सफलता, मित्रों तथा रिशतेदारों से मेल मिलाप की सम्भावना है। 5 व 24 मई आप के लिये शुभ है।

जूनः- इस मास में आपको प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मेल जोल होगा। परन्तु शत्रुओं से आप को सावधान ही रहना चाहिए। यदि आप विद्यार्थी वर्ग से है तो आपको एक एक क्षण का लाभ उठाना चाहिए। सफलता प्राप्त करने का सर्वोत्तम मास यहीं है। इस मास की 7, 12 व 30 जून आप के लिये शुभ है।

जुलाईः- इस मास के आरम्भ की ग्रह स्थिति के अनुसार ग्रहों के प्रभाव से गृहस्थ सुख में वृद्धि, स्त्री पक्ष से मानसिक शान्ति, धन लाभ, भाई बन्धुओं के लाभ में वृद्धि होगी।

अगस्तः- इस मास में आप को आराम कम परन्तु संघर्ष अधिक करना पडेगा। परन्तु ग्रह सहयोगी एवं भाग्य वर्धक सिद्ध होंगे, रिश्तेदारों एवं मित्रों का भी सहयोग आप प्राप्त करेंगे। हर आरम्भ किये कार्य में सफलता होने का योग है। इस मास में यात्रा भी होगी जो आप के लिए लाभ दायक रहेगी।

सितम्बरः-इस मास में भी आमदनी इच्छा अनुसार ही बनी रहेगी। विद्यर्थियों को चाहिए कि वह इस मास में परिश्रम करें ताकि आशा से अधिक सफलता प्राप्त कर सकें। इस मास की 2, 16 व 23 सितम्बर आप के लिये शुभ है।

अक्टूबरः- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार अचानक आर्थिक संकट की संभावना हो सकती है। आप अपनी पूंजी की रक्षा के विषय में सावधान रहिये, शरीर सुख मध्यम रहेगा। विद्यार्थियों के लिए भी यह मास कडे संघर्ष का होगा। इस मास की 7, 14 व 29 अक्टूबर आप के लिये शुभ है।

नवम्बरः- इस मास की ग्रहों की स्थिति के अनुसार प्रत्येक आरम्भ किये कार्य में सफलता, होगी। नौकरी तथा व्यापारी वर्ग होने पर प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मेल जोल होगा। परन्तु शत्रुओं से आप को सावधान ही रहना चाहिए। यदि यात्रा का योग इस मास में बनें तो अवश्य जायें, यदि आप विद्यार्थी वर्ग से हैं तो आपको एक एक क्षण का लाभ उठाना चाहिए। सफलता प्राप्त करने का यह सर्वोत्तम मास है। 3 व 27 नवम्बर आप के लिए शुभ है।

दिसम्बरः- गोचर चक्र के अनुसार यह आप के लिए दौडधूप और परेशानी के माहोल में गुज़रेगा। विद्यार्थियों की पढ़ाई की ओर दिलचसपी मास भर कम रहेगी, उसी अन्दाज़े से अपनी सफलता भी समझें। 13 व 25 दिसम्बर आप के लिए शुभ है।

जनवरी 2023:- मास के आरम्भ की ग्रहस्थिति को देखने से विदित होता है कि यह मास आप के लिए शुभ फल का सूचक है। शरीर सुख उत्तम रहेगा। यदि ग्रहस्थी है तो गृहस्थ पक्ष से मानसिक शान्ति रहेगी। 9 व 21 जनवरी आप के लिए शुभ दिन है।

फरवरीः- मास के आरम्भ की ग्रह स्थिति को दृष्टि को ध्यान में रखते हुये ज्योतिष गोचर में यहीं मालूम होता है कि यह मास भी आपका शान्त वातावरण में ही गुज़रेगा, शरीर सुख उत्तम रहेगा। यदि गृहस्थी है तो गृहस्थ पक्ष से शान्ति का योग है और सन्तान पक्ष से भी मानसिक शान्ति बनी रहेगी। फरवरी मास के शुभ दिन 1, 12 व 25 हैं।

मार्चः- इस मास में श्रेष्ठ पुरुषों से मेलमिलाप होगा, यदि आप कोई तामीरी काम करना चाहते है या कोई ज़मीन जाएदाद खरीदना चाहते है तो यह मास एसे कामों के लिए उत्तम है।। नौकरी पेशा होने पर लाभ अथवा तरक्की की आशा सुदृढ़ होगी। व्यापारी होने पर व्यापार से भी अक्समात् लाभ रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को इस मास में विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता अवश्य मिलेगी। इस मास के शुभ दिन 8 व 28 मार्च हैं।

कन्या राशि का मासिक फल

अप्रेलः- यह मास संघर्ष तथा दौडधूप में ही व्यतीत होगा। गृहस्थी होने पर गृहस्थपक्ष से मानसिक अशान्ति भी बनी रहेगी। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी यदि इस मास में विद्या सम्बन्धित कोई भी यात्रा बने वह यात्रा भी आप के लिए लाभदायक रहेगी। इस मास के शुभ दिन 9, 21 अप्रेल हैं।

मईः- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार घर में हर प्रकार से शान्त वातावरण बना रहेगा। कारोबार, आमदनी आदि की दृष्टि से यह मास आप के लिए उत्तम रहेगा। यदि आप नौकरी करते हैं तो यह मास आप के लिए आदर व मान का है।

जूनः- यदि आप व्यापारी हैं तो इस मास की ग्रह स्थिति को आप अपने विपरीत ही मानिये। अचानक हानि की सम्भावना है, खर्च के नये नये साधन निकल आयेंगे, शुत्रओं से भी आप को सावधान रहना चाहिए। इस मास के शुभ दिन 7, 9 व 25 जून हैं।

जुलाईः- ग्रहों की दृष्टि तथा उनकी स्थिती को ध्यान में रखकर यही मालूम होता है कि यह जुलाई मास शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा, प्रायः हर काम में सफलता होगी। गृहस्थी होने पर स्त्री की ओर से सुख तथा शान्ति मिलेगी। बडों से मेल जोल के अवसर मिलेगें। इस मास के शुभ दिन 2, 8 व 19 जुलाई हैं।

अगस्तः- अपने शरीर के विषय में आप को विशेष ध्यान रखना चाहिए। विद्यार्थियों के लिए यह मास भी परेशानी तथा दौड़धूप का ही रहेगा। परन्तु यदि कोई इन्टरव्यू या परीक्षा देनी हो अथवा कोई परिणाम निकलने वाला हो तो उसमें अवश्य सफलता मिलेगी।

सितम्बरः- यद्यपि इस मास के आरम्भ में ग्रहों की स्थिति ठीक नहीं है जिस के प्रभाव से 15 सितम्बर 2022 तक यह मास परेशानी के वातावरण में ही गुज़रेगा, जो कार्य आप हाथ में लेंगे हर प्रकार से उल्टा पडेगा, कोई भी काम उलझन के बिना सिद्ध नहीं होगा। इस मास के शुभ दिन 4 व 21 सितम्बर हैं।

अक्टूबरः- ग्रहों की स्थिति का विचार करने से यह ज्ञात होता है कि इस मास में कडे संघर्ष के पश्चात् ही सफलता मिलेगी। बुरी संगति में पड़ने, शरीर बिगड़ने की सम्भावना से इन्कार नही किया जा सकता है।

नवम्बरः- यह मास आप के लिए हर प्रकार से शुभ फलदायक रहेगा। शरीर सुख उत्तम रहेगा, इस मास के सभी दिन सुख शान्ति के वातावरण में व्यतीत होगें, घर में प्रायः खाने पीने, खिलाने के कार्यक्रम बनते रहेंगे, भाई-बन्धुओं, मित्रों, रिश्तेदारों के आने में वृद्धि होगी। सम्भव है अचानक कुछ धन लाभ भी मिले। व्यापारी होने पर लाभ में वृद्धि होगी। विद्यार्थियों के लिए यह मास विद्या सम्बन्धित हर काम के लिए लाभदायक होगा। इस मास के शुभ दिन 2, 13, व 27 नवम्बर हैं।

दिसम्बरः- इस मास की ग्रह स्थिति को विचार कर यह ज्ञात हो[ता] है कि शारिरिक दृष्टि से आप अस्वस्थ रहेंगे यदि आप गाड़ी आ[दि] खुद चलाते है तो मंगलवार या पंचक में दक्षिण दिशा की अ[ोर] यात्रा पर न जायें, अकस्मात् चोट लगने का अन्देशा है। उपाय [के] रूप में इस मास की मंगलवार को पीले चावल (तहर) बना[कर] पक्षियों को डालें।

जनवरी 2023 :- इस मास में ग्रहों की स्थिति अच्छी है। ध[न] लाभ अर्थात आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। व्यापारी व विद्या[र्थी] वर्ग के लिए यह मास उत्तम रहेगा इस मास के शुभ दिन 1, [...] जनवरी हैं।

फरवरीः- यह मास भी सामूहिक रूप से सुख शान्ति [के] वातावरण में ही गुज़रेगा। शरीर सुख उत्तम रहेगा, आर्थिक स्थि[ति] में सुधार होगा। आदर व मान में वृद्धि होगी, प्रायः हर आरम्[भ] किये हुये कार्य में सफलता होगी। मास के शुभ दिन 4 व 2[...] फरवरी हैं।

मार्चः- 14 मार्च 2023 ईस्वी को मीन में सूर्य के प्रवेश से आ[प] की आर्थिक स्थिति को और सुदृढ तथा हर प्रकार की रुकावटों को दूर करने में सहायक रहेगा। इस मास में हर आरम्भ किय[े] काम का परिणाम लाभदायक सिद्ध होगा। शुभ कामों पर खर्च करने की योजनए बनेगी। गृहस्थी होने पर गृहस्थ पक्ष से हर प्रकार से शान्ति रहेगी। इस मास के किसी भी शनिवार को कोई शुभ

काम आरम्भ न करें। इस मास के शुभ दिन 9 व 29 मार्च हैं।

तुला राशि का मासिक फल

अप्रेलः- मासिक फलादेश के अनुसार यह मास अशुभ फलदायक ही सिद्ध होगा। मानसिक अशान्ति के साथ-साथ आर्थिक संकट तथा धनहानि होने की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। विद्यार्थी होने पर विद्या में सफलता भी मध्यम ही मिलेगी। इस मास के शुभ दिन 3, 28 अप्रेल हैं।

मईः- इस मास के आरम्भ की ग्रह स्थिति आप के पक्ष में नहीं है। अतः आप को हर समय सावधान रहने की अवश्यकता है। भौम की अच्छी स्थिति में न होने की वजह से वह आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है। चोट लगने का भय भी रहेगा।

जूनः- सामूहिक रूप से अगर देखा जाये तो आप के लिए यह मास शुभ फलदायक ही रहेगा, अगर माता पिता या स्त्री आदि की शरीर सम्बन्धित कोई परेशानी है तो ग्रहों के प्रभाव से एसी समस्याओं का स्वयं समाधान इस मास में अवश्य होगा।

जुलाईः- यदि इस मास में आप को कोई तामीरी काम या कोई वाहन आदि खरीदने का प्रोग्राम है तो जुलाई मास में ऐसे कार्यों को स्थगित करके अक्टूबर या नवरात्रों में ऐसे कार्य सम्पन्न कर सकते है। विद्यार्थी या नौकरी पेशा वर्ग से सम्बन्धित जातकों को चाहिए कि वह किसी गरीब या किसी ज़रूरत मंद की मद्द करें, तो उन्हे सफलता हर क्षेत्र में प्राप्त होगी।

अगस्तः- यद्यपि इस मास के ग्रहों की स्थिति अच्छी है फिर भी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। यदि आप व्यापारी वर्ग से हैं तो इस मास में आप को आर्थिक संकटों का सामना करना पडेगा। परन्तु विद्यार्थी वर्ग के लिए इस मास का अन्तिम सप्ताह महत्त्वपूर्ण है। यदि आप किसी इन्ट्रव्यू या परीक्षा में बैठने जा रहें तो सफलता मिलेगी। इस मास के शुभ दिन 13, 20 व 25 अगस्त हैं।

सितम्बरः- इस मास में आप का शरीर स्वस्थ रहेगा। गृहस्थी होने पर घरेलू वातावरण भी शान्त रहेगा। पुत्रपक्ष से शान्ति बनी रहेगी, सन्तानपक्ष सम्बन्धित अगर कोई परेशानी है तो हर एक परेशानी एवं समस्या का समाधान निकल आयेगा।

अक्टूबरः- इस मास की ग्रह स्थिति पर विचार करने से मालूम होता है कि यह मास सुख शान्ति के वातावरण में ही व्यतीत होगा। गृहस्थ पक्ष से भी आपको शान्ति का वातावरण अनुभव होगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास हर प्रकार से सुख शान्ति का है। जिस किसी कार्य में आप का हाथ होगा सफलता अवश्य होगी। पाठ-पठन की प्रवृत्ति में वृद्धि होगी।

नवम्बरः- यदि आप को सन्तान या मातृपक्ष से कोई परेशानी है तो उपाय के रूप में इस मास हर भौमवार व शनिवार को तहर बनाकर पक्षियों को डाललें परन्तु तहर (पीले चावल) में नमक के बदले गुढ या चीनी डालें। व्यापारी वर्ग के लिए यह मास

अधिक से अधिक दौडधूप तथा संघर्ष का होगा।

दिसम्बरः- इस मास में खर्च का योग भी बलवान है। खर्च प्रायः शुभ कार्यों पर ही होगा। घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा। आय की दृष्टि से भी यह मास उत्तम रहेगा। यदि आप को अपने व्यापार को बढावा देने का प्रोग्राम है या कोई नया काम आरम्भ करना चाहते है तो एसा प्रोग्राम इस मास में बनाना हानिकारक सिद्ध होगा।

जनवरी 2023:- इस मास के प्रायः सभी ग्रह आप के अनुकूल है। अगर आप को अपने दुर्भाग्य से किसी नशीली वस्तु के प्रयोग करने की बुरी आदत पडी है, हो सके तो इस मास की भौमवार, बृहस्पतिवार और शनिवार को कदापि सेवन न करें। आय की दृष्टि आप के लिए इस वर्ष का यह मास एक समृणीय मास होगा। इस मास के शुभ दिन 9 व 25 जनवरी हैं।

फरवरीः- माता-पिता के आशिर्वाद से हर क्षेत्र में सफलता अवश्य मिलेगी। यदि आप विद्यार्थी है तो विद्या के हर क्षेत्र में सफलता मिलेगी परन्तु इच्छा अनुसार सफलता प्राप्त करने के लिए आप को हर सोमवार भगवान् शंकर का ध्यान प्रातः काल करना चाहिए। इस मास के शुभ दिन 3 व 21 फरवरी हैं।

मार्चः-इस मास में शरीर सुख आप का मध्यम रहेगा, इस लिए शरीर के विषय में आप को सावधान ही रहना चाहिए। अचानक चोट लगने की भी सम्भावना है।

Need of Customs ?

Almost all the races in all the countries of the world follow some kinds of customs and consecrations. Kashmiri Pandit is known in the World as a community of customs and consecrations. Our religious scriptures especially Kalhan's Rajtarangini and Nilmatpuran, which had been written in ancient times, show the greatness of our customs & other rituals. Customs and consecrations are necessary for a person to have a status in the society. In fact, a baby is not accepted in the society until and unless, consecrations (Sanaskar) for him have been carried out after his birth. All the babies are born with similar features but it is customs and consecrations that differentiate them into distinct human beings with a prominent religious and social label.

According to the Meemansa Darshankar:

कर्मबीजं संस्कारः

Sanskar is the seed of action.

वश्चिक राशि का मासिक फल

अप्रेल :- इस मास में शरीर के विषय में सावधान रहिये, यदि आप विवाहित हैं तो कोई न कोई घरेलू परेशानी घेरे रखेगी। यदि आप व्यापार से सम्बन्धित हैं तो अकस्मात् हानि की सम्भावना है, नौकरी पेशा होने पर आफीसरों से अनबन होने के कारण उन्नति में अड़चन पड़ सकती है। विद्यार्थी वर्ग के लिए विद्या सम्बन्धित हर एक काम के लिए लाभदायक रहेगा। अप्रेल मास की 3, 17 व 27 तारीख आप के लिये शुभ है।

मई:- इस मास में भी आप की ग्रहचाल में कोई सुधार नही हुआ है। धन की परेशानी आप को घेरे रखेगी, शरीर के बारे में सावधान रहिये, गृहस्थी होने पर स्त्री या पति के शरीर का विशेष ध्यान रखिये, ससुराल की तरफ से भी परेशान होने की संभावना है, नौकरी पेशा होने पर लाभ की अथवा तरक्की की आशा न रखें। यदि 5 मई 2022 के बाद यात्रा का योग बने तो आप अवश्य उस यात्रा पर जायें उस में अचानक लाभ मिलेगा। 7, 18 व 19 मई की तारीखे आप के लिये शुभ है।

जून:- इस मास के अन्तिम सप्ताह आप के लिये लाभदायक रहेगे। राज्य अर्थात् राजकीय वर्ग से लाभ, सरकारी कार्यों को सम्पन्न करने में सफलता समाज में ऊचे वर्ग के लोगों से परिचय तथा घनिष्ठता व विवाद में विजय तथा शत्रुओं को पराजित करने में सफलता मिलेगी। इस मास 3, 5 व 13 जून को यात्रा न करें।

जुलाई:- इस मास में शुक्र का प्राभाव आप पर अधिक रहेगा। यदि आप नौकरी करते हैं, तो तबदीली का योग बनेगा जो इच्छानुसार नही होगी। यदि तबदीली न भी हुई तो भी यह मास संघर्ष, दौडधूप और परेशानी के माहोल में गुज़रेगा। ऐसे ही भौम की स्थिति भी आप को शान्ति का दम लेने नही देगी। कोई भी काम विना रुकावट के हल नहीं होगा। यदि यात्रा का योग बने तो यात्रा में अवश्य लाभ होगा। विद्यार्थियों की पढ़ाई की ओर दिलचस्पी कम रहेगी, ईश्वर का कृपा पात्र बन जाने के लिए शनिवार को किसी अपाहिज की सहायता करें।

अगस्त:- मास की ग्रह स्थिति को विचार कर यह कहा जा सकता है कि यह मास आप के भविष्य की सुख शान्ति की तरफ इशारा करता है। आप जो काम हाथ में लेंगें सफलता निश्चित है, परिवार तथा धन की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा, शुभ कामों पर धन सार्थक खर्च होगा। मान व प्रतिष्ठा से भी यह मास मध्यम है। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर कार्य में सफलता मिलेगी।

सितम्बर:- इस मास में ग्रहों की दृष्टि को ध्यान में रखते हुये ज्योतिष गोचर में यही मालूम होता है कि आपका यह मास शान्त वातावरण में ही गुज़रेगा। व्यापारी होने पर व्यापार से भी अकस्मात् लाभ रहेगा, खरीद फरोखत दोनो का धन्धा सन्तोषजनक रूप में चलेगा यदि आप के जीवन निर्वाह का साधन

भूमि, *electronics* वस्तुऐं है तो अवश्य लाभ मिलेगा। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर कार्य में सफलता होगी, यदि आप को ट्रेनिंग आदि करने की योजना है तो इस मास में ड़ट कर परिश्रम कीजिए, इस मास की शुभ तिथियाँ यूँ हैं 5 व 18 सितम्बर।

अक्टूबरः- इस मास में धार्मिक कामों में दिलचस्पी बनी रहेगी। यह मास यद्यपि दौडधूप तथा संघर्ष में ही गुज़रेगा परन्तु हर काम में सफलता होगी, खाने खिलाने तथा धन का व्यय अधिक मात्रा में होगा, रिश्तेदारों तथा मित्रों से मेलमिलाप में वृद्धि होगी, व्यवसाय में मनोनुकूल लाभ मिलेगा। विद्यार्थियो के लिए यह मास विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता देने वाला होगा। अक्टूबर मास की 7, 12 व 27 तारीख आप के लिये शुभ है।

नवम्बरः- सूर्य की दृष्टि से शत्रु सम्बन्धी गुप्त परेशानियाँ बढ़ेगी। बृहस्पति व भौम की अच्छी स्थिति में होने से दौड़धूप तथा संघर्ष होने पर भी हर काम में सफलता होगी। कोई तामीरी काम आरम्भ करना हो अथवा गाडी आदि फरोखत करनी हो उस दृष्टि से 8, 17 व 18 नवम्बर 2022 पर ही एसे कार्य करें।

दिसम्बरः- इस मास में आप के रुके काम बिना किसी उलझन के सुलझ जायेगें, घर में किसी शुभ काम के रचाने का प्रोग्राम बनेगा। इस मास में आपकी सामाजिक कामों में रुचि बढ़ेंगी, पूजापाठ में भी अच्छा मन लगेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए चेतावनी है कि वह परिश्रम करें अन्यथा परिणाम उनके विपरीत होंगे।

जनवरी 2023:- मास चक्र में सूर्य, बुध प्रथम, शुक्र द्वितीय भाव में होने से वह शरीर कष्ट का सूचक है। यदि आप विवाहित हैं तो स्त्री की ओर से परेशानी बनी रहेगी। परिवार का वातावरण भी अशान्त ही रहेगा। 7, 19 व 28 जनवरी 2023 इस मास के शुभ दिन है।

फरवरीः- इस मास की ग्रहों की स्थिति आप के आर्थिक संकट को दूर करने में सहायक सिद्ध हो गी। कुछ शुभ तथा शुभ योगों से इस मास में अकस्मात् लाभ, मानसिक शान्ति, प्रत्येक आरम्भ किये कार्य में सफलता, मित्रों तथा रिश्तेदारों से मेल मिलाप की सम्भावना है। नौकरी तथा व्यापारी वर्ग होने पर प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मेल जोल होगा। यदि आप विद्यार्थी वर्ग से हैं तो आपको एक एक क्षण का लाभ उठाना चाहिए। सफलता प्राप्त करने का यह सर्वोत्तम मास है।

मार्चः- नौकरी तथा व्यापारी वर्ग को इस मास में शत्रुओं से परेशानी ही होगी। यदि आप किसी झगडे में उलझें हैं तो उस में आप की हार होगी। यदि आप का कोई तरक्की आदि का केस विचाराधीन है तो वह भी ज्यूं का त्यों लटकता रहेगा, यदि आप विवाहित है तो स्त्री के स्वास्थ्य का ख्याल अवश्य रखें।

धनु राशि का मासिक फल

अप्रेलः- गोचर चक्र के अनुसार घर में हर प्रकार से शान्त वातावरण बना रहेगा। कारोबार, आमदनी आदि की दृष्टि से यह मास आप के लिए उत्तम रहेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास परेशानी का रहेगा। 5 व 18 अप्रेल इस मास के शुभ दिन है।

मईः- इस मास में आप अपने शरीर के विषय में आप को विशेष ध्यान रखें। विद्यार्थियों के लिए यह मास भी परेशानी तथा दौड़धूप का ही रहेगा। आपने यदि कोई इन्टरव्यू या परीक्षा देनी हो अथवा कोई परिणाम निकलनेवाला हो तो उसमें अवश्य सफलता मिलेगी। इस मास की शुभ तिथियाँ यूँ हैं 1 व 19 मई।

जूनः- ग्रहों की दृष्टि तथा उनकी स्थिति को ध्यान में रखकर यही मालूम होता है यह मास शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा, प्रायः हर काम में सफलता होगी। गृहस्थी होने पर स्त्री की ओर से सुख तथा शान्ति मिलेगी। नौकरी पेशा होने परअफसरों तथा सम्बन्धित कार्यकर्ताओं से मेल जोल का वातावरण बना रहेगा। व्यापारी होने पर आप इस मास में डट के काम में लगें रहिये, आशा से अधिक लाभ मिलेगा।

जुलाईः- यद्यपि इस मास के आरम्भ में ग्रहों की स्थिति ठीक नहीं है जिस के प्रभाव से 18 जुलाई तक यह मास परेशानी के वातावरण में ही गुज़रेगा, कोई भी काम उलझन के बिना सिद्ध नहीं होगा। पहले 18 दिन व्यतीत होने पर अकस्मात् लाभ के द्वार खुलेंगे। यदि आप व्यापार करते हैं तो हर काम में सफलता होगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए भी आरम्भ के लगबग 18 दिन दौड़धूप में ही गुज़रेंगे परन्तु मास के दूसरे भाग में विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी। 4 व 16 जुलाई इस मास के शुभ दिन हैं।

अगस्तः- अगर आप नौकरी अथवा व्यापारी वर्ग से सम्बन्धित हैं तो इस मास में कोई ऐसी उलझन आ घेरेगी जो आप की मानप्रतिष्ठा के लिए ठीक नही होगी। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है, यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो इस मास में ज़रा सी दौड़धूप करने से सफलता आप के पक्ष में होगी। शुभ दिन 16 व 29 अगस्त है।

सितम्बरः- यह मास आप के लिए हर प्रकार से शुभ फलदायक होगा। शरीर सुख उत्तम रहेगा, इस मास के सभी दिन सुख शान्ति के वातावरण में व्यतीत होगें, घर में प्रायः खाने पीने, खिलाने के प्रग्राम बनते रहेंगे, भाई बन्धुओं मित्रों, रिश्तेदारों के आने में वृद्धि होगी। इस मास के शुभ दिन 1 व 24 सितम्बर है।

अक्टूबरः- इस मास की ग्रह स्थिति को विचार कर यह ज्ञात होता है कि इस मास में शरीर के विषय में सावधान रहिए, यदि आप गाड़ी आदि खुद चलाते है तो मंगलवार को दक्षिण दिशा की ओर लम्बी यात्रा पर न जायें, अक्समात् चोट लगने का अन्देशा है। उपाय के रूप में इस मास की मंगलवार को पीले चावल तहॅर

बनाकर पक्षियों को डालें। शुभ दिन 7, 19 व 28 अक्टूबर हैं।

नवम्बर:- फलित गोचर के आधार से मालूम पडता है कि यह मास संघर्ष, दौड़धूप तथा मानसिक अशान्ति के वातावरण में ही व्यतीत होगा। परन्तु धन लाभ अर्थात आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। व्यापारी वर्ग तथा नौकरी पेशा वर्ग के लिए यह मास उत्तम रहेगा। घर में किसी सदस्य के शरीर की परेशानी बनी रह सकती है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे विद्या प्राप्ति के लिए सोमवार के दिन भगवान् शंकर पर दूध सहित जल चढ़ाया करें। इस मास के शुभ दिन 1,4, 16 व 29 नवम्बर है।

दिसम्बर:- इस मास में आप की आर्थिक स्थिति को और सुदृढ तथा हर प्रकार की रुकावटों को दूर करने में शुक्र ग्रह सहायक रहेगा। इस मास में हर आरम्भ किये काम का परिणाम लाभदायक होगा। शुभ कामों पर खर्च करने की योजना बनेगी। गृहस्थी होने पर गृहस्थ पक्ष से हर प्रकार से शान्ति रहेगी। तामीरी काम, वाहन अथवा ज़मीन की खरीद पर धन खर्च करना हो तो इस मास की बुधवार तथा शुक्रवार ही इन कार्यों के लिए चुनें। इस मास के शुभ दिन 5,9, 12 व 26 दिसम्बर हैं।

जनवरी 2023:- यह मास सामूहिक रूप से सुख शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा। शरीर सुख उत्तम रहेगा, आर्थिक स्थिति सुदृढ रहेगी। आदर व मान में वृद्धि होगी, प्रायः हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता होगी। किसी झगडें अथवा उलझन में आप के फंसे रहने की सम्भावना है, परन्तु इस मास के अन्त तक हर झगडे तथा हर उलझन का समाधान शान्त वातावरण में ही होगा। इस मास के शुभ दिन 8,9, 24 व 31 जनवरी हैं।

फरवरी:- इस मास के आरम्भ की ग्रह स्थिति आप के पक्ष में नहीं है। अतः आप को हर समय सावधान रहने की आवश्यकता है। भौम की अच्छी स्थिति में न होने की वजह से वह आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है। मास के अन्त में यदि यात्रा का योग बने तो वह आप के लिए लाभदायक रहेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास कडे संघर्ष का होगा। शुभ दिन 1, 27 फरवरी।

मार्च:- यद्यपि इस मास के ग्रहों की स्थिति अच्छी है फिर भी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। चन्द्रमा की अच्छी स्थिति में न होने से मानसिक अशान्ति के साथ साथ परिवार में झगडा, प्रायः हर कार्य में असफलता आदि का सूचक है। यदि आप नौकरी वर्ग से है तो दफतर का माहौल आप के प्रतिकूल ही होगा। इस मास के शुभ दिन 4, 17 व 29 मार्च हैं।

ॐ नमो प्रीं पीताम्बराय नमः

धनु राशि वाले जातक ग्रहों के कुप्रभाव को कम करने के लिये नित्य प्रातः 108 बार इस मन्त्र का जप किया करें, श्रयेस्कर रहेगा।

मकर राशि का मासिक फल

अप्रेलः- इस मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति अच्छी है। केवल भौम के बारहवें भाव में होने से आप का शरीर अस्वस्थ रहेगा, अचानक चोट लगने का खतरा है, यदि आप का शरीर स्वस्थ रहेगा फिर भी स्त्रीपक्ष से आप परेशान रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा। धार्मिक अथवा सामाजिक कामों से आप की दिलचस्पी बनी रहेगी। विद्यार्थियों के लिए यह मास विशेष सफलता का नही है। शुभ दिन 3, 11 व 29 अप्रेल हैं।

मईः- मास के आरम्भ में भौम और शुक्र की स्थिति अच्छी नही है। यह मास संघर्ष के वातावरण में ही गुज़रेगा। शरीर का स्वामी बुध अच्छी स्थिति में हैं अतः शरीर प्रायः स्वस्थ रहेगा। आर्थिक दृष्टि से यह मास आप के लिए डावाँडोल स्थितिवाला ही रहेगा। विद्या सम्बन्धित हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता निश्चित है। यदि आप ने कोई परीक्षा दी है अथवा कोई इन्टरविव आदि देना है, उस में सफलता होगी। इस मास के शुभ दिन 6, 18 व 22 मई हैं।

जूनः- इस मास के आरम्भ में केवल दो ग्रह आप के हित में हैं। शेष सभी गहों का शुभ होना अशान्ति का सूचक है। इस कारण यह मास गत मास की तरह ही गुज़रेगा इस मास के शुभ दिन 7, 14 व 20 जून हैं।।

जुलाईः- इस मास के शुभ और शुभ ग्रहों को देखते हुए विदित होता है कि यह महीना कुछ कुछ शन्ति के ही माहोल में गुज़रेगा, आपकी आमदनी में वृद्धि न होने पर भी आप कुछ शान्ति अनुभव करोगे। फज़ूल खरची में बहुत अन्तर आएगा। यदि कोई तामीरी काम करना चाहते हैं तो इस मास में न करें।

अगस्तः- इस मास के ग्रहों से लाभ उठाएं आप जो भी काम करते हैं उसमें जुट जाएं, सफलता अवश्य मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास सन्तोष जनक नही है। पढ़ाई की ओर अल्प प्रवृति रहेगी। इस मास के शुभ दिन 6 व 20 अगस्त हैं।

सितम्बरः-इस मास में आरम्भ किया हुआ तामीरी काम बहुत देर तक लटकता रहेगा। यदि आप किसी लडके अथवा लडकी का विवाह सम्बन्ध निश्चित करने का प्रयत्न कर रहें हैं तो इस मास में न करें, यदि यात्रा का योग बने तो वह यात्रा आप के लिए लाभदायक रहेगी। शुभ दिन 2, 9 व 28 सितम्बर हैं।

अक्टूबरः- आप के लिए कोई चमत्कारिक मास नहीं है। अपितु सर्वसाधरण रूप से यह मास भी चलता रहेग। इस मास का अधिक भाग रिश्तेदारों, भाई बन्धुओं तथा मित्रों के मेल मिलाप में ही व्यतीत होगा। शुभ दिन 6 व 24 अक्टूबर हैं।

नवम्बरः- यह मास सामान्यतया शुभ ही रहेगा। आपकी

आथिक स्थिति भी मज़बूत बनेगी। परन्तु शत्रुओं का ज़ोर तथा उनमें वृद्धि, कोई भी रोग लगने का भय रहने की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। इस मास के शुभ दिन 5, 10, 17 व 29 नवम्बर हैं।

दिसम्बरः- सूर्य, भौम तथा बुध की स्थिति भी अच्छी है जिस के प्रभाव से यह मास हर प्रकार से लाभदायक तथा सफलता देने वाला रहेगा। शुभ दिन 3, 9, 15, 19 व 27 दिसम्बर हैं।

जनवरीः- यदि आप व्यापार करते हैं तो आप के लिए ग्रह अनुकूल हैं। आप को इस मास में आशा से अधिक आर्थिक सफलता मिलेगी। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो इस मास में सफलता अवश्य मिलेगी। धार्मिक कार्यों में धन खर्च होने का भी योग है। शुभ दिन 1 व 18 जनवरी हैं।

फरवरीः- इस मास के आरम्भ की ग्रह स्थिति को विचार कर के यह ज्ञात होता है कि यह मास आप के लिए कोई शुभ फलदायक नहीं है। इस मास के शुभ दिन 10, 11, 17, 23 फरवरी हैं।

मार्चः- इस मास में आपके खर्च का योग बलवान है। परन्तु खर्च प्रायः शुभ कामों पर ही होगा, भाई बन्धुओं व रिश्तेदारों से मिलने जुलने का सुअवसर मिलेगा, व्यापारी वर्ग भी लाभ में रहेगा अथवा उन के काम को लाभ के साथ साथ कारोबार को भी बढावा मिलेगा। शुभ दिन 11 व 19 मार्च हैं।

कुम्भ राशि का मासिक फल

अप्रेलः- मास के आरम्भ की ग्रह स्थिति से मालूम होता है कि इस मास में आप की सभी इच्छायें पूर्ण होने का योग है। इस मास में आपका स्वास्थ भी ठीक रहेगा। मित्रों से मेलजोल बढ़ने का भी योग है। नौकरी पेशा के लिए यह मास सफलता का ही है। इस मास के शुभ दिन 12, 18, 19 अप्रेल हैं।

मईः- ग्रहों की स्थिति को ध्यान में रखकर यही मालूम होता है कि यह मास भी हर प्रकार से शन्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा, प्रायः हर काम में सफलता होगी। इस मास में शुक्र, सूर्य तथा बुध अपनी राशि बदलेंगे जिस से अधिक धन की प्राप्ति का योग बनेगा। शुभ दिन 1, 7, 13 व 27 मई हैं।

जूनः- फलित शास्त्रों के अनुसार यह मास सामूहिक रूप से अशान्ति तथा दौड़धूप के वातावरण में ही गुज़रेगा। आप का शरीर प्रायः अस्वस्थ रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को इस मास पढाई सम्बन्धित हर काम में उलझनें तथा रुकावटों के कारण सानसिक अशन्ति बनी रहेगी। शुभ दिन 6, 19, 21 जून हैं।

जुलाईः- इस मास में आरम्भ किये हुए हर काम में सफलता मिलने का योग प्रबल है। सूर्य के कर्कट राशि में प्रवेश करने से सूर्य चौथे भाव में होगा जिस के प्रभाव से मास के अन्तिम दो सप्ताहों में अत्याधिक खर्च होने की संभावना है। इस मास के शुभ दिन 12, 19, 26 जुलाई हैं।

अगस्तः-आप के लिए इस मास में यात्रा करना कष्टदायक होगी। यदि आप नौकरी करते हैं तो वेतन में वृद्धि या किसी और दिशा से अकस्मात् धन मिलेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास सफलता का है। शुभ दिन 9, 15, 30 अगस्त हैं।

सितम्बरः- हर आरम्भ किये हुये काम में संघर्ष के बाद ही सफलता होगी। यदि आप विद्यार्थी है, तो पढने लिखने से सम्बन्धित हर काम में रुकावट के बाद ही सफलता प्राप्त होगी, इस लिए इस मास में आप को कठोर परिश्रम करना चाहिए। इस मास के शुभ दिन 11, 16 व 29 सितम्बर हैं।

अक्टूबरः- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार नौकरी पेशा वर्ग तथा व्यापारी वर्ग किसी तर्की या लाभ की आशा न रखें अपितु अपने काम के विषय में सावधान रहिये, अकस्मात् हानि की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। यदि आप कोई वाहन या भूमि खरीदना चाहते हैं तो विजयेश्वर जन्त्री के मुहूर्त प्रकरण में दिये गए मुहूर्तों पर ही ऐसे कार्य करने का निश्चय करें। इस मास के शुभ दिन 19, 26 अक्टूबर हैं।

नवम्बरः- फलित शास्त्रों के आधार पर इस मास में सूर्य तथा शुक्र की स्थिति शुभ मानी गई है। जिस से अकस्मात् कोई तामीरी काम या जाईदाद बनाने के प्रोग्राम को असली रूप दिये जाने का योग है। गृहस्थी होने पर किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धी चिन्ता बनी रहेगी। विद्यार्थी वर्ग इस मास में विद्या सम्बन्धित कार्यों में कम दिलचसपी लेंगे।

दिसम्बरः- इस मास वैष्णव रहें, गृहस्थी होने पर ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करें, यदि आप स्वयं वाहन चलाते हैं तो भौवार को सावधानी से ही सफर करें। इस मास में आप पर शुत्रओं का अधिक दबाव रहेगा। इस मास शुभ दिन 12, 17 दिसम्बर हैं।

जनवरीः- इस मास में तर्की या तबदीली का योग है। घरेलू वातावरण भी शान्त रहने की सम्भावना है। इस मास में यात्रा का योग बनेगा जो आप के लिए लाभदायक रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को सावधान रहना चाहिए, इसलिए आवश्यक है कि आप अपने समय का एक क्षण भी व्यर्थ न करें।

फरवरीः- इस मास में कोई महोत्सव रचाने का परोग्राम बनेगा जिस में आप का विशेष योगदान होगा। विद्यार्थी वर्ग को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता मिलेगी। मित्रों के साथ मेलमिलाप में वृद्धि तथा धार्मिक कार्यों में भी रुचि बड़ने की सम्भावना है। इस मास के शुभ दिन 2, 25 फरवरी हैं।

मार्चः- यदि आप का जाईदाद सम्बन्धित कोई झगडा चल रहा है तो इस मास में उसके सुलझने की सम्भावना है। यदि आप कोई महोत्सव रचाने का विचार रखते हैं तो इसी मास में सम्पन्न करें, वह महोत्सव आप की शान व मान को बढ़ाने का कारण बनेगा। इस मास के शुभ दिन 6, 13, 19 व 27 मार्च हैं।

मीन राशि का मासिक फल

अप्रेलः-यदि आप किसी लडकी या लडके की शादी के प्रयत्न में हैं तो ऐसे कामों में सफलता अवश्य मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास ठीक नहीं है, विद्या सम्बन्धित कार्यों में असफलता की सम्भावना है परन्तु आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम ही रहेगा। इस मास के शुभ दिन 1 व 21 अप्रेल हैं।

मईः- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार 14 मई तक आर्थिक संकट के साथ साथ मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। शत्रु पक्ष के प्रभावी होने की भी सम्भावना है। अगर आप व्यापार करते है तो 14 मई तक किसी भी कार्य में निवेश न करें या कोई भी नया कार्य आरम्भ न करें। आर्थिक संकट अवश्य दूर होगा। शुभ दिन 6, 17 व 21 मई हैं।

जूनः- इस मास में हर प्रकार से सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आरम्भ किये हुये प्रायः हर काम में सफलता होगी। गृहस्थी होने पर गृहस्थपक्ष से शुभ सन्देश मिलेगा अथवा घर में लडके का जन्म होगा। शुभ दिन 2, 10 व 29 जून हैं।

जुलाईः- यदि आप व्यापार करते हैं और अपने व्यापार को बढाना चाहते हैं तो यह मास आप के लिए लाभदायक रहेगा। विद्यार्थी होने पर इन्टरविव हो या कालेज का प्रवेश आदि हो तो किसी परिणाम की प्रतिक्षा हो, हर क्षेत्र में सफलता होगी।

अगस्तः- इस मास में मानसिक शान्ति के साथ साथ गृहस्थ में भी सुख और शान्ति का वातावरण बना रहेगा। अगर आप विद्यार्थी वर्ग से सम्बन्धित हैं तो विद्या के क्षेत्र में इस मास में बहुत सी बाधायें आऐंगी अतः कड़े परिश्रम के पश्चात ही सफलता की आशा रखें। शुभ दिन 7 व 24 अगस्त हैं।

सितम्बरः- यदि आप ने अपने घर में कोई शुभ काम आरम्भ करना हो तो जहां तक हो सके इस मास में आरम्भ कीजिए चन्द्रमा की अच्छी स्थिति होने से आप को हर काम में सफलता होगी। इस मास के शुभ दिन 2 व 19 सितम्बर हैं।

अक्टूबरः- मिलेजुले योग के अनुसार यह मास शान्त वातावरण में ही गुज़रेगा, आर्थिक दृष्टि से भी यह मास उत्तम रहेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास सफलता का ही है परन्तु दौडदूप के साथ साथ कुछ मानसिक अशान्ति भी बनी रहेगी।

नवम्बरः- यह मास भी सामूहिक रूप से आप के लिए लाभदायक रहेगा। यदि आप किसी परेशानी या मुक्दमा आदि में फंसे हैं तो ऐसी समस्याओं का हल स्वयं निकल आयेगा, लाभ की दृष्टि से यह मास बहुत ही उत्तम है, यदि आप कोई वाहन आदि खरीदना चाहें तो इन की खरीद इस मास में लाभदायक रहेगी परन्तु जाईदाद आदि बेचना हानिकारक होगा।

दिसम्बरः- इस मास के गोचर चक्र के अनुसार अचानक किसी आर्थिक संकट की संभावना है। इस मास आप अपनी

पूंजी की रक्षा के विषय में सावधान रहिये, शरीर सुख मध्यम रहेगा। शुभ दिन 2, 15, 25 व 29 दिसम्बर हैं।

जनवरी:- गोचर से लग्न में सूर्य तथा बुध की अच्छी स्थिति में न होने से इस मास में आपका स्वासथ्य कुछ ठीक नहीं रहेगा। आर्थकि दृष्टि से यह मास आप के लिए उत्तम ही है। विद्यार्थियों के लिए भी यह मास कडे संघर्ष का होगा। इस मास में उपाय के रूप में भौमवार को पीलेचावल (तहर) बना कर पक्षियों को डालना चाहिए।

फरवरी:- यदि आप व्यापार करते हैं तो इस मास में आपके व्यापार में कुछ कठिनाईयों तथा कठोर परिश्रम के पश्चात ही सफलता प्राप्त होगी। कोई वाहन आदि खरीदना चाहते हैं तो इस मास में ऐसे कामों का श्रीगणेश अवश्य करें। इस मास में आप अधिक अतिथि सेवा में लगे रहेंगे। रिश्तेदारों और मित्रों का आना जाना अधिक रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को कडे परिश्रम के पश्चात भी इच्छा अनुसार सफलता मिलेगी।

मार्च:- इस मास में आप शत्रुओं से सावधान ही रहिये। आप के शत्रु आप पर विजय प्राप्त करने की जी तोड़ कोशिशें करेंगे। अगर आप व्यापार करते हैं तो इस मास में किसी भी नये कार्य के लिए निवेश न करें। अगर यात्रा का योग बने तो उस में बहुत कष्ट होगा। बहुत खर्च करने पर ही यात्रा सफल होगी। इस मास के शुभ दिन 3, 15 व 22 मार्च हैं।

In the **Ramcharitmanas** Sant Tulsidas has said that a devotee wins over the confidence of God through devotional songs & hymns. In response, God ensures success and happiness for His devotees also.

In the **Padampuran,** Uttarakhand, 14/23, it is said:

नाहं वसामि वैकुंठेयोगिनां ह्रदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ।।

O Narad! I reside nither in Vaikunth, nor in the hearts of devotees. I reside where my devotees form a loving companionship to sing devotional songs and hymns. I reside within their ultimate motive.

In the religious texts it is also said:

मुक्तिः ददति कश्चित् न भक्तियोगम् ।

God makes salvation easily accessible to those who sing devotional songs and hymns. However, He does not give devotion to everyone.

In the **Bhagavad Gita,** 9/30, it is said

अपि चेत्सुदूराचारो भजते मामनन्यभाक् ।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ।।

Even if a wicked sinner worships Me with pure devotion, he should be considered a saint because he has correctly resolved that there is nothing better than devoted worship of God.

प्रमुख व्रतपर्वों के विषय में धर्मशास्त्र का निर्णय

निम्नलिखित व्रतपर्वो के विषय में धर्म सम्मत विचार सनातन धर्म में आस्था तथा उच्छ्रंखल जीवन को तिरस्कृत करने वाल काश्मीरी पण्डित समुदाय की जानकारी के लियें प्रस्तुत है।

१ संकट चतुर्थी व्रत / गणेश चतुर्थी व्रत

इस व्रत का विचार चन्द्रोदय पर किया जाता है, चतुर्थी तिथि पर चन्द्रमा का उदय होना आवश्यक है। यदि तृतीया तिथि की समाप्ति पर चतुर्थी तिथि पर चन्द्रमा का उदय हो तो तृतीया तिथि के दिन ही संकट चतुर्थी का व्रत होता है। विजयेश्वर जन्त्री में तिथि के साथ 'दि' या 'प्र' के साथ साथ जो समय बजे मिन्टों में A.M, PM के साथ दर्शाया गया है, वह उस तिथि का समाप्ति काल है, यानि Ending Time of Tithi ।

२ चन्दन षष्ठी चन्दन षष्ठी के लिये चन्द्रोदय के समय षष्ठी तिथि का होना आवश्यक है। यदि पंचमी तिथि की समाप्ति पर षष्ठी तिथि पर चन्द्रमा का उदय हो तो पंचमी तिथि के दिन चन्दन षष्ठी होती है।

३ जन्मअष्टमी काश्मीरी पण्डित समुदाय भी स्मार्त सम्प्रदाय से सम्बन्धित सनातन धर्मियों की तरह ही जन्माष्टमी के लिए अर्धरात्रि में अष्टमी का होना आवश्यक मानते है क्योंकि भगवान कृष्ण का जन्म अष्टमी की अर्धरात्रिव्यापिनी में ही हुआ है। सप्तमी तिथि की समाप्ति पर यदि अष्टमी तिथि अर्धरात्रि में व्याप्त हो तो सप्तमी तिथि के दिन जन्म अष्टमी होती है। इसी कारण काश्मीरी पण्डित इस को जन्मसतम् के नाम से भी उच्चरित करते है।

४ कुमार षष्ठी कुमार षष्ठी का व्रत श्राद्ध (पितृ व्रत) के सम्मान देखा जाता है। यदि षष्ठी तिथि के साथ 'प्र' (प्रव्युठ) लिखा हो तो कुमार षष्ठी अपने ही दिन अर्थात् षष्ठी तिथि को आती है। यदि षष्ठी तिथि के साथ 'दि' (दिवा) लिखा हो तो कुमार षष्ठी का व्रत पहले दिन अर्थात् पंचमी तिथि वाले दिन आयेगा। इस प्रकार पूर्णिमा, अमावसी, एकादशी तथा अष्टमी व्रतो के विषय में दिवा, प्रव्युठ का विचार करके अपनी ही तिथी पर व्रत रखें, किन्तु इस बात का ख्याल रखें कि यदि त्र्यहः अर्थात् किसी तिथि का क्षय हो या उपर्युक्त व्रत पर्वों में से कोई तिथि लुप्त हो तो देव व्रत, जन्म दिन तथा श्राद्ध या पितृ कार्य पहली तिथि यानि एक दिन पूर्व ही सम्पन्न करें। यदि त्रिस्पृक अर्थात जब अधिक तिथि हो या एक ही तिथि दो दिन तक रहें तो ऐसी स्थिति में देव व्रत व जन्म दिन दूसरी तिथि को मनायें किन्तु श्राद्ध अथवा पितृ कार्य पहली तिथि को सम्पन्न करें।

५ यक्षमावसी यक्षमावसी के लिये सूर्य अस्त के समय अमावस होना आवश्यक है, यदि अमावस सूर्य अस्त से पहले दिन में ही समाप्त होती है तो यक्षामावसी का पर्व चतुर्दशी तिथि पर आता है।

६ शिवचतुर्दशी शिवचतुर्दशी में चतुर्दशी का विचार किया जाता है, चतुर्दशी अर्धरात्रि व्यापिनी होनी चाहिए अतः माघ कृष्णा पक्ष की शिवचतुर्दशी तथा फाल्गुन कृष्णा पक्ष की शिवचतुर्दशी के लिये चतुर्दशी अर्धरात्रि व्यापिनी होनी अनिवार्य है।

७ शिवरात्रि (हेरॅथ) यह काशमीरी पण्डितों का एक महान पर्व एवं प्रमुख त्यौहार है। काश्मीरी पण्डित इस पर्व को हर रात्रि, हेरॅथ अथवा हूरा रात्रि कहते हैं। इस पर्व को काश्मीरी पण्डित बडे ही धूमधाम तथा एवं निष्ठा से अपने धरों में

सपरिवार पूजापाठ, व्रत, उपवास, जाग्रण आदि से वटुक नाथ का पूजन श्रद्धा पूर्वक करते है।

भैरवयाग के अनुसार फाल्गुन कृष्ण पक्ष त्रयोदशी को भगवान शंकर की दृष्टि से घडे में से ज्योति रूप वटुक भैरव या वटुक नाथ त्रयोदशी की अर्धरात्रि में प्रकट हुए हैं। इसी कारण हेरॅथ के विषय में त्रयोदशी का विचार किया जाता है। यदि फाल्गुन कृष्ण द्वादशी तथा त्रयोदशी दोनो दिन प्रदोष में हो तो ऐसे योग के होने पर जिस दिन अर्धरात्रि में त्रयोदशी व्याप्त हो तो उसी दिन काश्मीरी पण्डित हेरथ का पर्व मनाते हैं।

सम्पूर्ण भारत में कोई भी सनातन धर्मी हिन्दू सम्प्रदाय (विना काश्मीरी पण्डितों के) इस पर्व को नहीं मनाते है। किन्तु हेरॅथ के दूसरे दिन जिस दिन हम शिवचतुर्दशी का व्रत पर्व मनाते हैं भारत के अन्य सनातन धर्मी महाशिवरात्रि का पर्व श्रद्धा पूर्वक मनाते है तथा उस दिन वें शिव मन्दिरों में जाकर जागरण, उपवास, यज्ञ आदि से भगवान् शिव का पूजन करते है। इस प्रकार महा शिरात्रि अर्धरात्रि व्यापिनी फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी ग्रहण की जाती है।

इस प्रकार उपर्युक्त विश्लेषण से यह सपष्ट होजाता है कि हेरथ तथा महाशिवरात्रि दो विभिन्न पर्व हैं जिन्हे स्थानी लोकाचार ओर रीति रिवाजों के अनुरूप मनायाजाता है। इस क निष्कर्ष स्पष्ट रूप से यही प्रमाणित करता है कि Herath is Attributed to Vatuk Nath or Vatuk Bharva and Maha Shiv Ratri is Attributed to Lord Shiva.

Note: All kind of Muhurts listed in Vijayeshwer Jantri are first calculated manually, cross-checked with Computer and then they are published in Jantri. For further clarification regarding Muhurts contact.

Vijayeshwer Jyotish Karalaya (Regd.)
Borhi, Patta, Jammu-02
Ph 0191-2555064, e-mail : vijayeshwer@yahoo.com

सर्वतोमुखी अभ्युदय के लिए नित्य प्रार्थना

सूर्योदय से पहले शय्या त्याग कर सर्वप्रथम अपने दाहिने हाथ को देख कर पढ़ें :

कराग्रे वसति लक्ष्मी करमध्ये सरस्वती,

करमूले तु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम्।

स्नान आदि से निवृत होकर महा गायत्री (यज्ञोपवीत) को अभिषेक देते हुए तीन बार पढ़ें

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

यज्ञोपवीत को गले में फिर से धारण करते हुए पढें :

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्,

आयुष्यम् अग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीत् बलम् अस्तु तेजः।।

श्री गणेश जी का ध्यान करते हुए पढ़ें :

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् प्रसन्न वदनं ध्याये सर्वविघ्नोपशान्तये। अभिप्रीतार्थ सिद्धयर्थं

पूजितो यः सुरैरपि सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः।

नव ग्रहों की शान्ति के लिए यह मन्त्र नो बार पढ़ें :

ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरान्त कारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च, गुरुश्च शुक्र:शनि राहु केतवः, कुर्वन्तु सर्वेमम सुप्रभातम।।

सुख व मंगल प्राप्ति मन्त्र पढ़ें :

सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सवार्थ साधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।

सभी उलझनों से छुटकारा पाने का मन्त्र पढ़ें :

सर्वाबाधा विनिर्मुक्ते, धनधान्य समन्वितः, मनुष्यो मत्प्रसादेन, भविष्यति न संशयः।

अपने गुरूदेव को स्मरण करते हुए पढ़ें:

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः, गुरुरेव जगत्सर्व तस्मै श्री गरूवे नमः । अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्, तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरूवे नमः । हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन, सर्वदेव स्वरूपाय तस्मै श्री गुरूवे नमः ।। नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरुपिणम्, शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थ सिद्धये।।

गुरुस्तुति

ॐ शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्, प्रसन्न वदनं ध्याये सर्वविघ्नोपशान्तये।
अभिप्रीतार्थ सिद्धयर्थं पूजितो यःसुरैरपि, सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः।।१।।
ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति, द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमलमऽचलं सर्वधीसाक्षिभूतं, भावातीतं त्रिगुणरहितं स तं नमामि ।।२।।
स्मारं स्मारं जनिमृतिभयं जातनिर्वेद वृत्ति- र्ध्यायं ध्यायं पशुपतिं उमाकान्तं अन्तर्निषणम् ।
पायं पायं सपदि परमानन्द पीयूपधारां, भूयो भूयो निजगुरु पदाम्भोज युग्मं नमामि ।।३।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुविष्णुः गुरु साक्षात् महेश्वरः,गुरुरेव जगत्सर्वम् तस्मै श्री गरुवे नमः ।।४।।
अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्, तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।५।।
अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शिलाकया, चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।६।।
श्लोक त्रयं पेठत्प्रातः गुरुपादाम्बुजं स्मरन् । त्रिवर्गफल भागत्रयं मृतौ मोक्षपदं व्रजेत् ।।
हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन। सर्वदेव स्वरूपाय तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।७।।

स्थावरं जङ्गमं व्याप्तं यत्किंचित्सचराचरम् । तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।८।।

चिन्मयं व्यापितं सर्वं यत्किंचित्सचराचरम् । तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।९।।

सर्वश्रुति शिरोरत्न विराजित पदाम्बुजः। वेदान्ताम्बुज सूर्यो यः तस्मै श्रीगुरुवे नमः ।।१०।।

चैतन्यः शाश्वतः शान्तो व्योमातीतो निरञ्जनः । बिन्धुनाद कलातीतः तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।११।।

ज्ञानशाक्त समारूढः तत्व मालाविभूषितः। भुक्तिमुक्ति प्रदाता च तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।१२।।

अनेक जन्मसंप्राप्तकर्मबन्ध विदाहिने । आत्मज्ञान प्रदानेन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।१३।।

शोपणं भ्वसिन्धोश्च ज्ञापनं सारसम्पदः। गुरोः पादोदकं सम्यक् तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।१४।।

न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः। तत्त्वज्ञानात्परं नास्ति तस्मै श्रीगुरुवे नमः ।।१५।।

मन्नाथः श्रीजगन्नाथो मद्गुरुः श्रीसद्गुरुः। मदात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्रीगुरुवे नमः ।।१६।।

गुरुरादिरनादिश्च गुरुः परमदैवतम् । गुरोः परतरं नास्ति तस्मै श्रीगुरुवे नमः ।।१७।।

नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम् । शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थसिद्धये ।।१८।।

श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दाम्यानन्दविग्रहम् । यस्य सान्निध्य मात्रेण चिदानन्दायते पुमान् ।।१९।।

नमोस्तु गुरवे तस्मा त् इष्टदेवस्वरूपिणे । यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसारसंज्ञकम् ।।२०।।

श्रीगुरुं ज्ञानसत्सिन्धुं दीनबन्धुं दयानिधिम् । देवीमन्त्र प्रदातारं ज्ञानानन्दं नमाम्यहम् ।।२१।।
नमस्ते नाथ भगवन् शिवाय गुरुरूपिणे । विद्यावतार संसिद्धयै स्वींकृतानेक विग्रह ।।२२।।
नवाय नवरूपाय परमार्थैक रूपिणे । सर्वाज्ञा नतमोभेद भानवे चिद्धनाय ते ।।२३।।
स्वतन्त्राय दयाक्लृप्त विग्रहाय परात्मने । परतन्त्राय भक्तानं भव्यानां भव्यरूपिणे ।।२४।।
विवेकिनां विवेकाय प्रकाशाय प्रकाशिनाम् । ज्ञानिनां ज्ञानरूपाय विमर्शाय विमर्शिनाम् ।।२५।।
पुरस्तात्पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यामुपर्यधः । सच्चिदानन्दरूपेण विधेहि भवदासनम् ।।२६।।
ध्यानमूलं गुरोर्मूतिः पूजामूलं गुरोः पदम् । शास्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा ।।२७।।
यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ । तस्यैतं कथिता ह्यर्थाः प्रकाश्यन्ते महात्मनः ।।२८।।
अहं देवो न चान्योस्मि ब्रह्मैवाहं न शोकभाक् । सच्चिदानन्द रूपोहं नित्यमुक्त स्वभाववन् ।।२९।।
संसार सागरं मउत्तरणैकमन्त्रं । ब्रह्मादि योगिमुनि पूजिता सिद्धिमन्त्रम् ।
दारिद्रदुःखभयरोग विनाश मन्त्रं,वन्दे महाभयहरं गुरुराजमन्त्रम् ।।३०।।

।।इति गुरुस्तुतिः।।

।।श्री गणेश प्रार्थना।।

हेमजा सुतं भजे गणेशं ईशनन्दनम् ।एकदन्त वक्रतुण्ड नागयज्ञ सूत्रकम्।।
रक्तगात्र धूम्रनेत्र शुक्लवस्त्र मण्डितम् । कल्पवृक्ष भक्त्त रक्ष नमोस्तु ते गजाननम् ।।
पाशपाणि चक्रपाणि मूषकादि रोहिणम् । अग्निकोटि सूर्य ज्योति वज्र कोटि निर्मलम् ।।
चित्र माल भक्तिजाल भालचन्द्र शोभितम् । कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तु ते गजाननम् ।।
भूतभव्य हव्यकव्य भृगु भार्गवार्चितम् । दिव्य वह्नि कालजाल लोकपाल वन्दितम् ।।
पूर्णब्रह्म सूर्यवर्ण पुरुषं पुरान्तकम् । कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तु ते गजाननम् ।।
विश्ववीर्य विश्व सूर्य विश्वकर्म निर्मलम् । विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम् ।।
चतुर्मुखं चतुर्भुजं सेवितुं चतुर्युगम् । कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तु ते गजाननम् ।।
ऋद्धि बुद्धि अष्ट सिद्धि नवनिधान दायकम् । यज्ञ कर्म सर्वधर्म सर्ववर्ण अर्चि ।।
भूतधूम्र दुष्ट मुष्ट दानवै सर्दार्चितम् । कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तु ते गजाननम् ।।
हर्ष रूप वर्ष रूप परुष रूप वन्दितम् । शूर्प कर्ण रक्त वर्ण रक्त चंदन लोपितम्।।
योग इष्ट योग सृष्ट योग दृष्टि दायिकम । कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तु ते गजाननम् ।।

आसय शरण करतम दया,
ॐ श्री गणेशाये नमः

आसय शरण करतम दया, ॐ श्री गणेशाये नमः। गणपथ गणेश्वर हे प्रभो, कलिराज़ राज़न हुन्द वैभौ पज़ि लोल पादन तल नमः, ॐ श्री गणेशाये नमः। गुडनी च्यछु आधिकार, कलिकालकुयु च्य ताजदार पज़ि लोल पादन तल प्यॅमा, ॐ श्री गणेशाये नमः। मूषक च्य वाहन शूभवुन, त्रन लूकनय मेज़ फेरुवुन सहायक म्यॅ रोज़तम हरदम, ॐ श्री गणेशाये नमः। यज्ञस ज़पस व्यवहारसुय,गुड़ छि सुरॉन प्रथ कारसय कारस अन्नान छुकॅ च्य जमः ॐ श्री गणेशाये नमः। सुन्दर लम्बोधर एकदन्त, स्मरन च्यबतियन म्ये अन्द रति वेल सुन्दर छुस समः, ॐ श्री गणेशाये समः। स्मरण यिचॅन यिम करान, भवसागरस अपोर तरान रट् सानि नावे चय नमा, ॐ श्री गणेशाये नमः। रमरन यि चानि भक्ति ज़न, पूरण गछन तमॅसुन्द छुप्रना चरणोदकुक अमृत चमा, ॐ श्री गणेशाये नमः। ज़गतुक महेश्वर च्य पिता, सीता रूप सितधर्मच सत्ता माता च्य गौरी श्री वुमा, ॐ श्री गणेशाये नमः। बाह नाव सुन्दर शूभवन, स्वर्ग गस गछन तिम बोलवन

पूरण करुम पूरण तमहः, ॐ श्री गणेशाये नमः। आमुत भक्त च्य छुस शरण, प्योमुत खोरनतल छुय परण वर दिथ कास्तम च्य गमा, ॐ श्री गणेशाये नमः। सुबह प्यठ भक्त, छि लारान प्रेम पोश हथ छिय प्रारान छुयख च्य पूजि लागनुक तमा, ॐ श्री गणेशाये नमः। गण्शिबल प्यठ आख चीलथअय

अंग अंग सेंदरा मीलथय गोड़ बोज़ म्यन प्रार्थना

ॐ श्री गणेशाये नमः।

ॐ श्री गणेशाये नमः।

ॐ श्री गणेशाये नमः।

ॐ श्री गणेशाये नमः।

ॐ श्री गणेशाये नमः।

ॐ श्री गणेशाये नमः।

ॐ श्री गणेशाये नमः।

ॐ श्री गणेशाये नमः।

शारदा वंदना

नमामि त्वां शारदा देवीम्, महाभागाम् भगवतीम्, काशमीर पुर वासिनीम्, विद्या दायिनीम्
रक्ष माम् रक्ष माम् नमामि त्वाम् ।।ॐ।।

नमामि त्वाम् शारदा देवीम्, पीतवस्त्र धारिणीम्, श्वेताम्बुज विहारणीम्, चर्तुभुज धारिणीम्
रक्ष माम् रक्ष माम् नमामि त्वाम् ।।ॐ।।

नमामि त्वाम् शारदा देवीम्, शततंत्र वीणा वादिनीम्, मोक्ष दायिनीम् पाप नाशिनीम्
रक्ष माम् रक्ष माम् नमामि त्वाम् ।।ॐ।।

नमामि त्वाम् शारदा देवीम्, वितस्ता रूपिनीम्, हिमाच्छादित गिरि शोभिनीम्, कलशामृत धरिणीम्
रक्ष माम् रक्ष माम् नमामि त्वाम् ।।ॐ।।

सरस्वति का ध्यान करें

या कुन्देन्दु तुषारहार धवला या शुभ्र वस्त्रावृता,
या वीणा वरदण्ड मण्डित करा या श्वेत पद्मासना ॥
या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभि र्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वति भगवती निःशेषजाडय्‌यापहा ॥
शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगदव्यापिनीं,
वीणा पुस्तक धारिणीमभयदां जाडय्‌यान्ध कारापहाम् ॥
हस्ते स्फाटिकमालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थितां,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥
सरस्वती महाभागे विद्ये कमललोचने।
विश्वरूपे विशालाक्षि विद्यां देहि सरस्वति ॥।

महालक्ष्मी का ध्यान करते हुए पढ़ें:

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते। शंखचक्र गदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥१॥ नमस्ते गरूडारूढ़े कोलासुर भयंकरि । सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥२॥ सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि । मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥३॥

माँ जगदम्बा या इष्ट देवी का ध्यान करते हुए पढें

लीलारब्ध-स्थापित-लुप्ताखिल-लोकां, लोकातीतै-योर्गिभिर्-अंतर्-हृदि-मृग्याम् ।
बालादित्य श्रेणी समान द्युति पुञ्जां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ॥
आशा-पाश-क्लेश-विनाशं विदधानां, पादाम्भोज-ध्यान-पराणं पुरुषाणम् ।
ईशीम्-ईशाड् आर्ध हरां तां तनुमध्यां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ॥

प्रत्याहार-ध्यान-समाधि-स्थितिभाजां, नित्यं चित्ते निवृति काष्ठां कलयन्तीम ।
सत्य-ज्ञान-आनन्दमयीं तां तडित्-आभां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ।।
चन्द्रापीडा-नन्दितमन्द-स्मितवक्त्रां, चन्द्रापीडा-लंकृत-लोला लकभाराम् ।
इन्द्रोपेन्द्रा-द्यर्चित-पादाम्बुजयुग्मां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ।।
नाना-कारैः शक्ति-कदम्बै-र्भुवनानि, व्याप्यतं स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका ।
कल्याणीं तां कल्पलताम्-अनतिभाजां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ।।
मुलाधारात्-उत्थित-वन्तीं विधिरन्ध्रं, सौरं-चान्द्रं धाम विहाय ज्वलितांगीम् ।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां ताम्-अभिवन्द्यां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ।।
आदि-क्षन्ताम्-अक्षर मूर्त्या विलसन्तीं, भूते भूते भूत-कदम्बं प्रसवित्रीम् ।
शब्द-ब्रह्मानन्दमयीं ताम्-अभिरामां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ।।
यस्याः कुक्षौ लीनम्-अखण्डं जगत्-अण्डं, भूयो भूयः प्रादुर-अभूत- अक्षतमेव ।
भर्त्रा सार्धं तां स्फुटिकाद्रौ विहरन्तीं, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईड्ये ।।

यस्याम्-एतत्प्रोतम्-अशेषं मणिमाला, सूत्रे यत्-वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च ।
ताम्-अध्यात्म-ज्ञानपदव्या-गमनीयां, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईडये ।।
नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः, साक्षी यस्याः सर्गविधौ संहरणे च ।
विश्वत्राण-क्रीडन शीलां शिवपत्नीं, गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईडये ।।
प्रातः काले भावविशुद्धिं विदधानो, भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः ।
वाचां सिद्धिं सम्पतिम्-उच्चैः शिवभक्तिं, तस्या-वश्यं पर्वत-पुत्री विदधाति ।।

परूहूतप्रिया कान्ता कामिनी पदमलोचना, प्रह्लादिनी महामाता दुर्गा दुर्गतिनाशिनी।
अघोर व्याधिनाशी च घोरदुःख निवारिणी, अष्टा दशभजा दुर्गा शारिका श्याम सुन्दरी।
निर्गुणे निष्क्रिये नित्ये सच्चिदांनन्द रूपिणि, नमोस्तुते महाराज्ञि पाहिमाम् शरणगतम्।
ज्वालामुखी महाज़्वाले ज्वाला पिंगललोचने, ज्वाला तेज़े महातेज़े ज्वालामुखि नमोस्तुते।
शारदे वरदे देवि मोक्षदातृ सरस्वति, नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो नमः।
या देवी सर्व भूतेषु दया रूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।
सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सवार्थ साधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोस्तुते।

।। इन्द्राक्षी स्तोत्रम् ।।

अस्य श्री इंद्राक्षी स्तोत्रमन्त्रस्य, पुरंदर ऋषिः, अनुष्टप्-छन्दः, इन्द्राक्षी देवता, ह्रीं बीजम्, श्री शक्तिः, क्लीं कीलकम्। सकलकामना सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः।

अथ-ध्यानम्

इन्द्राक्षी द्विभुजां देवीं पीत वस्त्र धरां शुभाम् वामे हस्ते वज्रधरां दक्षिणे चाभय प्रदाम्। सहस्र नेत्रां सूर्याभां नानालंकार भूषिताम्, प्रसन्न वदनां नित्यम् अप्सरो गणसेविताम्। श्री दुर्गा सौम्य-वदनां पाशांकुशधरां परां, त्रैलोक्य मोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम। ॐ श्री ह्रीं श्रीं इन्द्राक्षीं श्रीं प्रीं स्वाहा।

इन्द्र उवाच

इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहृता, गौरी शाकंभरी देवी दुर्गानाम्नीति विश्रुता ।१। कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपः, गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ।२। नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला, अग्निज्वाला रौद्रमुखी काल रात्रि-स्तपस्विनी ।३। मेघश्यामा सहस्त्राक्षी विष्णुमाया जलोदरी, महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ।४। आनन्दा भद्रजा नंदा रोगहर्त्री शिवप्रिया, शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी ।५। इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्र-शक्ति परायणा, महिषासुर संहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता ।६। वाराही नारसिंही च भीमा भैरव नादिनी, श्रुतिः स्मृति-धृति मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ।७। आनन्दा विजया पूर्णा मानस्तोकाऽ पराजिता, भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंम्बिका शिवा ।८। शिवा भवानी रुद्रानी शंकरार्ध शरीरिणी, एतैःनाम-पदै-र्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ।९। आयुर् आरोग्यम् ऐश्वर्यसुख संपतिकारकम, क्षय-पस्मार-कुष्ठादिताप ज्वर निवारणम् ।१०।

अपराधक्षमास्तोत्र

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदापि च न जाने स्तुतिमहो,न चाह्वानं ध्यानं तदापि च न जाने स्तुतिकथाः ।
न जाने मुद्रास्ते तदापि च न जाने विलपनं, परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ।१।
विधेरज्ञानेन द्रविण विरहेणालस तया, विधेयाशक्यत्वा तव चरणयो र्या च्युतिरभुत् ।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।२।
पृथव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः, परं तेषां मध्ये विलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।३।
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता, न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।४।
परित्यक्ता देवा विविधविध सेवा कुलतया, मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता, निरालम्बो लम्बोदर जननि कं यामि शरणम् ।५।
श्वपाको जल्पाको भवति मुधुपाकोपम गिरा, निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।

तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं, जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ।६।

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो, जटाधारी कण्ठे भुजगपति हारी पशुपतिः।

कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकप दवीं, भवानि त्वत्पाणिग्रहण परिपाटीफलमिदम् ॥७॥

न मोक्षस्याकांक्षा भवविभववाञ्छापि च-न मे, न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।

अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै, मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ।८।

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः, किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।

श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे, धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।

नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननी स्मरन्ति ॥१०॥

जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।

अपराधपरंपरापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम्॥११॥

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।

एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ।१२।

अथ राज्ञीस्तोत्रम्

ॐ शीतांशुबालार्क कृशातुनेत्रां चतुर्भुजामेणत्वगासनस्थाम्। शंखाब्जशूलासिधरां सहेशीं राज्ञीं भजेऽहं तुहिनाद्रिरूपाम्। स्मृतैवान्तर्गता पुंसां हरन्ती सकलं मलम्। जयत्येषा महाराज्ञी भक्तानां क्षेमदायिनी।२।

त्रिजगन्मोहिनीमढ्ये मयूरीभूतसन्दुणे। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि० ।३।

शेषाशेषमुखैर्गुण्ये गुणिगुणगणप्रिये। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि० ।४।

सुरा सुर मुनी इन्द्राद्यैर्वन्दनीयपदाम्बुजे। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि० ।५।

चराचरजगत् सृष्टिस्थितिसंहृतिकारिणि। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि० ।६।

भक्तकल्पलतेऽ नल्पवा ङ्माधुर्याजिताखिले। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि० ।७।

ब्रह्मा विष्णु महेशादिवन्दिते गिरिनन्दिनि। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि ० ।८।

भक्तानां भीमसंसारपारावारप्रतारिणि। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि ० ।९।

निर्गुणे निष्क्रिये नित्ये सच्चिदानन्दरूपिणि। नमोऽस्तु ते महाराज्ञि ० ।१०।

राज्ञीस्तोत्रमिदं पुण्यं त्रिसन्ध्यं प्रयतः पठन्। असंशयं विशेषेण वशयेदखिलं जगत।११।

इति राज्ञीस्तोत्रम्।।

अथ शारिकास्तोत्रम्।

बीजैः सप्तभिरुज्जवलाकृतिरसौ या सप्तसप्तिद्युतिः सप्तर्षिप्रणताङ्घ्रिपङ्क्तजयुगा या सप्तलोकार्तिहृत्। कश्मीरप्रवरेशमध्यनगरीप्रद्युम्नपीठे स्थिता देवी सप्तकसंयुता भगवती श्रीशारिका पातु नः।। जय भगवति विन्ध्यवासिनि श्मशानवासिनि कैलासवासिनि हुड्कारिणि कालायनि कात्यायनि हिमगिरितनये कुमारमातःगोविन्दभगिनि शितिकण्ठकण्ठाभरणे अष्टादशभुजे भुजगवलय मण्डिते केयूरहाराभरणे जय खड्ग त्रिशूल डमरु मुद्गरपरशु शशिकला शरचाप वरा भय पाश पुस्तक कपाल खट्वाङ्ग गदा मुसल तोमर वरहस्ते कृपापरे प्रभूतविविधायुधे चण्डिके चण्डघण्टे किरातवेषे ब्रह्माणि रुद्राणि नारायणि ब्रह्मचारिणि वेदमातः गायत्रि सावित्रि सरस्वति सर्वाधारे सर्वेश्वरि विश्वेश्वरि सर्वकर्त्रिं समाधिविश्रान्तिमये चिन्मये चिन्तामणिस्वरूपे कैवल्ये कैवल्यस्वरूपे शिवे निराश्रये निरुपाधिमये ब्रह्मविष्णुमहेश्वरनमिते मोहिनि तोषणि भयङ्करनाशिनि दितिसुतप्रमथिनि

काले कालाग्निशिखे कालरात्रे अजे नित्ये सिंहरथे योगरते योगीश्वरनमिते भक्तजनवत्सले सुरप्रिये कारुण्ये दुर्गे दुर्जये शरण्ये कुरु मे जयम्।। प्रद्युम्नशिखरासीनां मातृचक्रोपशोभिताम्। पीठेश्वरीं शिलारूपां शारिकां प्रणमाम्यहम्। अमा माऽवतु कामा च चार्वङ्गी टङ्कधारिणी। तारा च पार्वती चैव यक्षिणी शारिकाष्टमी।

इति शारिकास्तोत्रम्।।

अथ त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रम्

ॐ श्वेतपद्मासनारूढां शुद्धस्फटिकसन्निभाम्। ध्यात्वा वाग्देवतां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ।१। सर्वलोकप्रियकरीं सर्वलोकेषु संस्थिताम्। सर्वैश्वर्यप्रदां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ।२। पद्मालयां पद्मपीठां पद्मासेवितपत्कजाम्। पद्मरागनिभां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ।३। पञ्चबाण-धनुर्बाणन्पाशाङ्क्तशधामिमाम्। पञ्चब्रह्ममयीं वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ।४। हृत्पुण्डरीकनिलयां षडास्यजननीमिमाम्। षट्कोणेषु स्थितां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ।५। अष्टैश्वर्यमयाकारामष्टबाहुयुतायुधाम्। अष्टमूर्तिमयीं वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ।६।

नवमाणिक्यमुकुटां नवमाणिक्यसेविताम्। नवयौवनगां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ।७।
काञ्चीधाममनोरम्यां काञ्चीधामविभूषिताम्। काञ्चीपुरीश्वरीं वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ।८।
हरार्धभागनिलयामम्बाभिष्टार्थ- दायिनीम्। हरप्रियां निजां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम्।।

इति त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रम् ।।

अथ ज्वालास्तोत्रम्।

ॐनताः स्तुतिपराः सर्वे यस्या नित्यं दिवौकसः। तमो हत्वा शंकरस्य भूयात्सदाशिवा।१।
श्रीसुन्दरीं जगद्धात्रीं ज्वालाव्याप्तदिगन्तराम्। सुरै सिद्धैः स्तुतां भूपैः सुमुखीं नौम्यहं शिवाम्।२।
दैत्यानां भटकोटिको टिमुकुटाटोपानधः कुर्वतीं विघ्नानां कटकान्यतीव कटुकान्यापाटयन्तीं स्फुटम्। भक्तानामभयं वरं च दधतीं शान्तात्मनां सर्वदा षड्वक्रेण जितां क्रियाविरहतो ज्वालामुखीं नौम्यहम्।३। ब्रह्माणं मधुकैटभौ वधपरौ सन्त्रासयन्तौ परं नानारूपधरावतीव भयदौ स्थूलोन्नतौ संयुगे। तौ हत्वा विनिवर्तितां कृतवतीं तन्मेदसा मेदिनीं सर्वेषां शुभदायिनीं भगवतीं ज्वालामुखीं नौम्यहम्।४। सैन्यानां महिषासुरस्य मृतिदां सिंहाधिरूढां च तां नाना काविशंष सौख्यजननी

देहान्तरे संस्थिताम् बालामध्यमवृद्धरूपरमणीं श्रीसुन्दरीं वैष्णवीं स्त्रीरूपेण जगद्विमोहनकरीं ज्वालामुखीं नौम्यहम्।५। देवानां भयदायकौसुकठिनौ शुम्भो निशुम्भस्तथा नानाशस्त्रधरौ रिपू धृतिहरौ तौ चण्डमुण्डाकिंतौ। सङ्ग्रामे ऽप्यपराजितौ रिपू धृतिहरौ द्वौ रक्तबीजान्वितौ हत्वैवं सुबलां प्रसन्नवदनां ज्वालामुखीं नौम्यहम्।६। संसारार्णवतारिणीं रविशशिकोटिप्रभां सुप्रभां पापातंकनिवारिणी हरिहरब्रह्मादिभिः संस्तुताम्। दारिद्र्यस्य विनाशिनीं सुकृतिनां जाड्यं हरन्तीं भृशमज्ञानान्धमतेः कवित्वजननीं ज्वालामुखीं नौम्यहम्।७। रत्नपञ्चकनामानं श्रीसुन्दर्याः स्तवं वरम्। अव्याकुलं यः पठति सोऽभीष्टां सिद्धिमाप्नुयात्।८। ज्वालामुखी महाज्वाले ज्वाला पिङ्गललोचने। ज्वालातेजी महातेजी ज्वालामुखि नमोऽस्तु ते।।

इति ज्वालामुखीस्तोत्रम्।।

।। ओ३म् नमः पराशक्तये ।।

आदिक्षान्त समस्तवर्णविभवा यामातृकारूपिणी, मंत्रवीर्य परामृतरसा स्वादात्सुख दायिनी।
भावव्रात समुद्रगर्भलहरी शब्दार्थतत्वव्यापिनी, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराज राजेश्वरी।।१।।
वाच्य वाचक सारपूर्ण विभवा देवी षडध्वाश्रया, श्री चक्रान्तरवह्निकोण निलयाया बिन्दुमात्रात्मिका
सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरा परामृतमयी नित्यं जगत्तर्पिनी, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी।।२।।
पूर्णाहन्त्वविमर्श पावनकरी नित्यं मलक्षालिनी, भक्तानां भवभीति भञ्जनकरी हृत्पंकजे संस्थिता।
बाह्याभ्यन्तरचारिणी सुरस्तो हंसेनया सेविता, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी।।३।।
उर्ध्वाधः स्थितनाडिवृन्दविभवे संजीविकामध्यमा, स्वात्मामर्शन तत्परैश्च सततं भक्तैः खलु प्राप्यते।

मूलाद्द ब्रह्मबिलावधितडिदिवया ब्रह्मनाडी स्मृता, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी।।४।।
वर्णावर्णनिवर्ण भेद निबहातत्राप्यभेदात्मिका, वेदान्तागमतन्त्र सार महिमाषड् दर्शनोल्लंघिनी।
सर्वाचार विचार पालन परायानिर्गता चारका, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी।।५।।
ओं तत्सदितिनामभिर्निगदिता सर्वागमे योगिभिः, तत्प्राणान्त विचार्यभक्त निबहैः हीतमिव शष्पवत्।
ऐन्द्रं-धाम विहाय क्षीणकलुषैर्मोक्षाय या स्वीकृता, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी।।६।।
सौरं ज्योतिरिदमपि परिमितंह्नीतं तथा यत्पदात, ओं मित्येतद्विमर्शनेन सततं सर्वमिदं स्वात्मनि।
रक्तेस्तत्पद प्रेप्सुभिञ्च मुनिभिःस्वस्थै सदास्वीकृतम्, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी।।७।।
तैस्तैर्योगिवरैः सदा कवियशोनक्तं दिनं यत्पद-ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा प्राप्तं महत् निर्मलम्
मोक्षं भोगं ददाति या प्रभुदिता विद्याधरैर्वदिंता, सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी।।८।।

इति श्रीराज राजेश्वर्याः स्तुतिः राजानक

विद्याधर विरचिता शुभायास्तु।

इति शिवम्

विष्णु स्तुति

अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्। श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं, जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे।। अच्युतं केशवं सत्य-भा-माधवं, माधवं, श्रीधरं राधिकाऽराधितम्। इन्दिरा मन्दिरं चेतसा सुन्दरं, देवकी नन्दनं नन्दनं सन्दधे।। विष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे, रुक्मिणी रागिणे जानकी जानये। वल्लवी-वल्लभा-याऽर्चिता-यात्मने, कंस-विध्वंसिने-वंशिने-ते-नमः।। कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण, श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे। अच्युतानन्त हे माध्वाधोक्षज, द्वारका नायक द्रौपदी रक्षक।। राक्षस-क्षोभितः-सीतया-शोभितो, दण्डकारण्य-भू-पुण्यता-कारणः। लक्ष्मणेनाऽन्वितो-वानरैः-सेवितो-गस्त्य-सम्पूजितो-राघवः-पातु-माम्।। धेनुकारिष्टको-ऽनिष्टकृत्-द्वेषिणां, केशिहा-कंसहृत्-वंशिका-वादिकः। पूतना कोपकः सूरजा खेलनो, बाल गोपालकः पातु मां सर्वदा।। विद्युत-द्योतवान्-प्रस्फुरत्-वाससं, प्रावृडम्-भोदवत्-प्रोल्लसत्-विग्रहम्। वन्यया मालया शोभितोरः स्थल, लोहितांघ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे।। कुञ्चितैः-कुन्तलैः-भ्राजमा-नानं, रत्न-मौलिं-लसत्-कुण्डले-गण्डयोः। हारकेयूरकं-कंकण-प्रोज्जवलं, किंकिणीं-अंजुलं-श्यामलं-तं-भजे।। अच्युतस्याष्टकं-यः-पठेत्-इष्टदं, प्रेमतः-प्रत्यहं-पूरुषः-सस्पृहम्। वृत्ततः सुन्दरं कर्तृ विश्वम्भरं तस्य वश्यो हरिजर्यायते सत्त्वरम्।।

।। विष्णु प्रार्थना ।।

जय नारायण जय पुरुषोतम जय वामन कंसारे, उद्धर मामसुरेशविनाशिन् पतितोहं संसारे । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं, माम अनुकम्पय दीनम् अनाथं कुरु भव सागरपारम्। घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मष भारं ।।१।। जय जय देव जया सुरसूदन जय केशव जय विष्णो, जय लक्ष्मीमुख कमल मधुव्रत जयदशकन्धर जिष्णो। घोरं हर मम नरकरिपो केशवकल्मष भारं ।।२।। यद्यापि सकलम् अहं कलयामि हरे, नहि किम् अपि स सत्वम् । तत् अपि न मुञ्चति माम इदम् अच्युत, पुत्रकलत्र ममत्वं । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।३।। पुनर् अपि जननं पुनर् अपि मरणं, पुनर अपि गर्भ निवासम् । सोढुम् अलं पुनर अस्मिन् माधव, माम् उद्धर निजदासम्। घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।४।। त्वं जननी जनकः प्रभुर अच्युत, त्वं सुहृत् कुलमित्रम । त्वं शरणं शरणागतवत्सल, त्वं भव जलधि वहित्रं । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।५।। जनक सुता पति चरण परायण शंकर मुनिवर गीतं । धारय मनसि कृष्ण पुरुषोतम, वारय संसृति भीतिम् । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।६।।

भागवान शंकर का ध्यान करते हुए पढ़ें :

प्रणतोस्मि महादेव प्रपन्नोस्मि सदाशिव, निवारय महामृत्युं, मृत्युञ्जय नमोस्तु ते ।१। मृत्युंजय महादेव, पाहि मां शरणागतम, जन्ममृत्यु-जरारोगैः, पीडितं भवबन्धनात् ।२। कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्रं हारम्। सदा रमन्तं हृदयारबिन्द, भवं भवानी सहितं नमामि ।३। हर शम्भो महादेव विश्वेशामर वल्लभ शिव शंकर सर्वात्मन् नीलकण्ठ नमोस्तु ते ।४। तव तत्वं न जानामि, कीदृशोसि महेश्वर,यादृशोसि महादेव, तादृशाय नमो नमः। आधीनाम् अगदं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनम् उपद्रवाणां दलनं महादेवम् उपास्महे ।६। आत्मा त्वं गिरिजा मतिः परिजनाः प्राणाः शरीरं गृह, पुजा ते विषयोप भोगरचना, निद्रा समाधिस्थितिः। संचारोऽपि परिक्रमः पशुपते, स्तोत्राणि सर्वा गिरो, यत् यत् कर्म करोमि देव भगवन् तत् तत् तवाराधनम् ।७। नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय, भस्मांग रागाय महेश्वराय । देवाधि देवाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय ।८। मातंग चरमाम्बर भूषणाय, समस्त गीर्वाण गणार्चिताय, त्रैलोकनाथाय पुरान्तकाय, तस्मै मकाराय नमः शिवाय ।९। शिवा मुखाम्भोज विकासनाय, दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय, चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय, तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ।१०। वशिष्ठ कुम्भोत् भव गौतमादि, मुनीन्द्र वन्द्याय गिरीश्वराय, श्रीनीलकण्ठाय

वृषध्वजाय, तस्मै वकाराय नमः शिवाय ।११। यज्ञ स्वरुपाय जठाधराय, पिनाक हस्ताय सनातनाय, नित्याय शुद्धाय निरंजनाय, तस्मै यकाराय नमः शिवाय ।१२। वपुष्प्रादुर्भावात् अनुमितम् इदं जन्ममनि पुरा । पुरारे नैवाहं क्वचित् अपि भवन्तं प्रणतवान् नमन्मुक्तः सम्प्रत्य तनुर् अहम् अग्रेप्यनतिमान्, महेश क्षन्तव्यं तत् इदम् अपराध द्वयम् अपि ।१३। करचरणकृत वाक् कायजं कर्मजं वा, श्रवण नयनजं वा, मानसं वाऽ पराधम् । विदितम् अविदितं वा, सर्वम् एतत् क्षमस्व, जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ।१४।

लिंगाष्टकम्

ब्रह्मा मुरारिः सुरार्चित लिंगं, निर्मल-भासित-शोभित-लिंगम ।
जन्मज- दुःख-विनाशक-लिंगं, तत्प्रणमामि सदा शिव-लिंगम्।।१।।
देव-मुनि-प्रवरा-र्चितलिंगम्, कामदहं करुणाकर-लिंगम् ।।
रावणदर्प-विनाशित-लिगं, तत्प्रणमामि सदाशिावलिंगम् ।।२।।
सर्व-सुगन्धि सुलेपित-लिगं, बुद्धिविवर्धन-कारण-लिगंम्।।

सिद्ध-सुरासुर-वंदित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।३।।
कनक-महामणि-भूषित-लिंगं, फणिपति वेष्टित-शोभित-लिगंम् ।।
दक्ष-सुयज्ञ-विनाशक लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।४।।
कुकुम चंदन लोपित लिंगं, पंकज हार सुशोभित लिंगम् ।।
संचित पाप विनाशन लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ।।५।।
देव गणार्चित सेवित लिंगम्, भावेर्भक्तिभिरेव च लिंगम् ।।
दिनकर-कोटि प्रभाकर लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम ।।६।।
अष्ट-दलोपरि वेष्टित-लिंगम्, सर्व-समुद्र-भव-कारण-लिंगम् ।।
अष्ट दरिद्र विनाशित लिंगं, तत्प्रणामि सदाशिवलिंगम् ।।७।।
सुरगुरु-सुरवर-पूजित-लिंगम्, सुरवन-पुष्प-सदा-र्चित-लिंगम् ।।
पारत्परं-परमात्मक-लिंगम् तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ।।८।।

शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं

मनो बुद्धि अहंकार चित्तानि नाहं, नच श्रोत्र जिह्वे नच घ्राण नेत्रे।
नच व्योम भूमिर्न तेजो न वायुः, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।१।
नच प्राण संज्ञो न वै पंचवायु, न वा सप्त धतुर्न वा पंचकोशः।।
न वाक् पाणिपादं न चोपस्थ पायुः,चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।२।
नमे द्वेषरागौ न मे लोभ मोहौ, मदो नैव मात्सर्य भावः।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।३।
न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं, न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भुक्ता, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।४।
न मृत्युर्न शंका न मे जातिभेदः, पिता नैव मे नैव माता च जन्म।

न बन्धुर्न मित्रं गुरु नैव शिष्यः, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।५।

अहं निर्विकल्पी निराकार रूपो, लघुत्वात् च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्।

न चा संगतं नैव मुक्ति र् न मेयः, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।६।

शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं, शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं

इति श्रीमत् शङ्कराचार्य विरचितं निर्वाणषटक् सम्पूर्णम्

शिव चामर स्तुति

ॐ अतिभीषण कटुभाषण यमकिंकर पटली, कृत ताडन परिपीडन मरणागम समये।

उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्, शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ।।१।।

अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु सञ्चय दलिते, पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण चलिते।

शिवया सह ममचेतसि शशिशेखर निवसन्, शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ।।२।।

भव भञ्जन सुर रञ्जन खलवञ्चन पुरहन्, दनुजान्तक मदनान्तक रतिजान्तक भगवन्।

गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्, शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ।।३।।

शक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये, कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये।

द्विज क्षत्रिय वनिता शिशुदर कम्पित हृदये, शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ।।४।।

भवसम्भव विविधामय परिपीडितवपुषं, दयितात्मज ममताभर कलुषी कृत हृदयम्।

करु मां निजचरणार्चन निरतं भव सततं, शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ।।५।।

शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम्,

शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम्

इति श्रीमत् अभिनव गुप्त विरचितं शिव चामर स्तुतिः सम्पूर्णम्

ॐ नमः शिवाय

भैरवस्तुति

ॐ व्यापत-चराचर-भाव-विशेषं, चिन्मयम्-एकम्-अनन्तम्-अनादिम् ।
भैरव नाथम् अनाथ शरणयम्, तन्मय-चित्ततया-हृदि-वन्दे ।।१।।
त्वन्मयम्-एतत्-अशेषम्-इदानीं, भाति मम त्वत्-अनुग्रह शक्त्या ।
त्वं च महेश सदैव ममात्मा, स्वात्ममयं मम तेन समस्तम् ।।२।।
स्वात्मानि-विश्वगते त्वयि नाथे, तेन न संसृति-भीतेः कथास्ति ।
सत्-स्वपि दुर्धर-दुःख-विमोह, त्रास-विधायिषु कर्म-गाणेषु ।।३।।
अन्तक! मां प्रति मा दृशम्-एनां, क्रोध-कराल-तमां विदधीहि ।
शंकर-सेवन-चिन्तन-धीरो, भीषण-भैरव-शक्ति-मयोस्मि ।।४।।
इत्थम्-उपोढ-भवन्मय-संवित्, दीधिति-दारित-भूरि-तमिस्त्रः।
मृत्यु-यमान्तक कर्म-पिशाचै, र्नाथ! नमोस्तु न जातु बिभेमि ।।५।।
प्रोदित-सत्य-विबोध-मरीचि-प्रोक्षित-विश्व-पदार्थ-सतत्वः ।
भाव-परामृत-निर्भरपूर्णे, त्वय्यऽहं-आत्मनि निर्वृतिम्-एमि ।।६।।

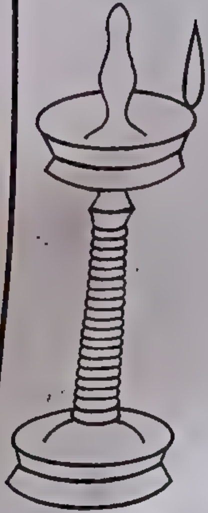

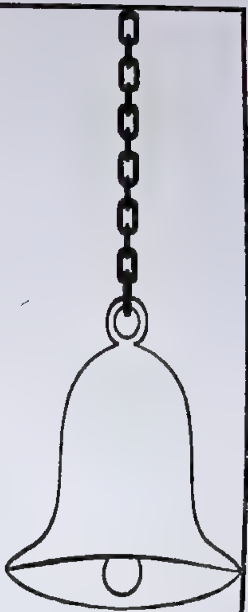

मानस-गोचरम्-एति, यदैव-क्लेश-दशा-तनु-ताप-विधात्री
नाथ! तदैव मम-त्वत्-अभेद, स्तोत्र-परामृत-वृष्टिर्-उदेति।।७।।
शंकर! सत्यम्-इदं व्रत-दान-स्नान-तपो-भव-ताप विनाशि ।
तावक शास्त्र परामृत- चिन्ता सिन्ध्यति चेतसि निर्वृति धारा ।।८।।
नृत्यति गायति हृष्यति गाढं, संवित् इयं मम भैरवनाथ ।
त्वां प्रियं आप्य सुदर्शनम् एकं, दुर्लभम् अन्यजनैः, समयज्ञम् ।।९।।
वसुरसपौषे कृष्णदशम्यां, अभिनवगुप्त स्तवम् अकरोत् ।
येन विभु भव मरु सन्तापं, शमयति झटिति जनस्य इमम् दयालुः।।१०।।
हरिरेव जगज्जगदेव हरिः, हरितोजगतो न हि भिन्नमणु।
इति यस्यमतिः पमार्थगति, स नरो भवसागरमुत्तरति ।। ११।।
आदावन्ते चिन्द्रस रूपं, मध्येचिद्रस बुदबुदरूपम् ।
भातं भातं भा रूपं स्यात् नो, भातं चेतिन्नतरां न स्यात् ।।१२।।
।। इति अभिनवगुप्त शिव स्तुति।।

श्री रुद्राष्टकम्

नमामि-ईशं-ईशान-निर्वाण-रूपं, विभुं-व्यापकं-ब्रह्म-वेद-स्वरूपम्।
अजं-र्निगुणं-निर्विकल्पं-निरीहं, चिदा-कारम्-आकाशवासं-भजेऽहम्।।
निराकारं-ओंकार-मूलं-तुरीयं, गिरा-ज्ञान-गोतीतं-ईशं-गिरीशम्।
करालं-महाकाल-कालं-कृपालं, गुणा-गार-संसार-पारं-नतोऽहम्।।
तुषाराद्रि-सङ्काश-गौरं-गभीरं, मनो-भूत-कोटि-प्रभाश्री-शरीरम्।
स्फुरन्-मौलि-कल्लोलिनी-चारु-गङ्गा, लसत्-भाल-बालेन्दु-कण्ठे-भुजङ्गा।।
चलत्-कुण्डलं-भुसुनेत्रं-विशाल-प्रसन्नाननं-नीलकण्ठं-दयालम्।
मृगाधीश-चर्माम्बर-मुण्डमालं, प्रियं-शङ्करं-सर्वनाथ-भजामि।।
प्रचण्डं-प्रकृष्टं-प्रगल्भं-परेशं, अखण्डं-अजं-भानु-कोटि-प्रकाशम्।
त्रयः-शूल-निर्मूलनं-शूल-पाणिं, भजेऽहं-भवानीपतिं-भाव-गम्यम्।।

कलातीत-कल्याण-कल्पान्त-कारी, सदा-सज्जना-नन्ददाता-पुरारिः।

चिदानन्द-सन्दोह-मोहाप-हारी, प्रसीद-प्रसीद-प्रभो-मन्मथारिः।।

न-यावत्-उमानाथ-पादार-विन्दं, भजन्तीह-लोके-परे-वा-नराणाम्।

न-तावत्-सुखं-शान्ति-सन्ताप-नाशं, प्रसीद-प्रभो-सर्व-भूताधिवासं।।

न जानामि-योगं-जपं-नैव-पूजां, नतोऽहं-सदा-सर्वदा-देव-तुभ्यम्।

जरा-जन्म दुखौघ तातप्यमानं, प्रभो-पाहि-शापात्-नमामीश-शम्भो।।

रुद्राष्टकं-इदं प्रोक्तं, विप्रेण हर तुष्टये।

ये पठन्ति नरा-भक्तया, तेषां शम्भुः प्रसीदति।।

ॐ नमः शिवाय

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्र हाराय त्रलिोचनाय, भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय।१।
मन्दाकिनी-सलिल-चन्दन-चर्चिताय, नन्दीश्वर-प्रमथनाथ-महेश्वराय।
मन्दारपुष्प-बहुपुष्प-सुपूजिताय, तस्मै म काराय नमः शिवाय।२।
शिवाय-गौरी-वन्दनाब्ज-वृनद, सूर्याय-दक्षाऽध्वर-नाशकाय।
श्रीनीकलण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।३।
वसिष्ठ-कुम्भोद्भव-गौतमार्य, मुनीन्द्र-देवाऽर्चित-शेखराय।
चन्द्रार्क-वैश्वानर-लोचनाय, तस्मै वकाराय नमः शिवाय।४।
यक्षस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै यकाराय नमः शिवाय।५।
पंचाक्षरम्-इदिं पुण्यं यः पठेत्-शिव-सन्निधौ।
शिवलोकम्-अवाप्नोति-शिवेन-सह-मोदते।।

शिव षडक्षरस्तोत्रम्

ॐकारं बिन्दुसंयुक्त नित्यं धयायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः।१।
नमन्ति ऋषयो देवा, नमन्ति-अप्सरसां गणाः।
नरा नमन्ति देवेश न काराय नमो नमः।२।
महादेवं महात्मानं महाधयानं परायणम्।
महापापहरं देवं मकाराय नमो मः।३।
शिवं-शान्तं-जगन्नाथं, लोका-नुग्रह-कारकम्।
शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः।४।
वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम्।
वामे शक्तिधरं देवं वकाराय नमो नमः।५।
यत्र यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः।
यो गुरुः सर्वदेवानां यकाराय नमो नमः।६।
षड्-अक्षरं-इदं-स्तोत्रं-यः-पठेत्-शिव-सन्निधौ।
शिव-लोकं-अवाप्नोति, शिवेन-सह-मोदते।७।

* * *

अनुवाद :- आनन्द स्वामी प्राणनाथ भट्ट ''गरीब''

अभिनव गुप्त कृत शिवस्तुतिः

ॐ व्याप्त-चराचर भाव-विशेष,
चिन्मयम्, एकं अनन्तम-अनादिम।
भैर-व-नाथम-अनाथ-शरण्यम-
वन्मय-चित्तया-हृदि वन्दे।। (1)

अनुवादः-कॅरिथ प्रक्रम शिवस छुय वश करान मन, वन्दान तस पान करान सोरुय बु अर्पण, येमिस गर्भस अन्दर सृष्टी छि रोज़ान, छु बोड ज्ञॉनी अनन्त रूप पानु ईशान, चे भैरवनाथु भॉरव छीय चे पूज़ान, यिमन छुनु कांह तिमन नखि डखि चु रोज़ान, बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रेह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान।।

त्वन्मयम-एतत-अशेषम इदानी,
भाति मम त्वत्-अनुग्रह शक्तया।
त्वं च महेश सदैव ममात्मा,
स्वातममयं मम तेन समस्तं।। (2)

अनुवादः- यि छुय कुल कायनातस रूप चोनुय, कोरुथ अनुग्रेह मे गव आभास चोनुय, ज़गत पनुनुय सरूपा छुममे बासान, योहय अनुभव मे द्रह रात छालु मारान, बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रेह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान।।

स्वातमनि-विश्वगते त्वयि नाथे,
तेन न संसृति -भीतेः कथास्ति।
सत्-स्वपि दुधर्र-दुःख विमोह,
त्रास विद्यायिषु कर्म गणेषु।। (3)

अनुवादः- भयंकर द्वख तु मुह पैदा करान नाथ, फ़सेमुत्य बॅखुत्य चान्य ज़ालस छि शिवनाथ, मगर सोरुय ज़गत चोनुय स्वरूप छुय, यिमन समसॉर्य द्वखन छुख ना चटान चुय, तवय शिव लोलु वाल्यन भय चलान छुय, यि म्योनुय रूप शिव-सॅदुरस रलान छुय, दुयुत त्रॉविथ कुनुय सम्भाव आसान, दोयिम छुनु कांह तु त्यॆलि क्युथ भयि छु बासान, बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रेह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान।।

अन्तक मा प्रति मा दृशम-एना,
क्रोध-कराल-तमां विदधीहि।
शंकर-सवेत-चिन्तन-धीरो,
भीषण-भैरव-शक्ति-मयोस्मि।। (4)

अनुवादः- हतो यमराज़ क्रूधुच मो नज़र कर, फ़ना यिनु करि नज़र मो बन भयंकर, बु छुस दोह रात शिवस कुर्बान सपदान, करान तन-मन बु सेवा तस वन्दान प्राण, करान ध्यान भैरवी बल छुम मे वरदान, यमो चॉन्य कालु दृष्टी नो मे भोरान, बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रेह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान।।

इत्थम्-उपोढ-भवन्मय-संवित,
दीधिति-दारित-भूरि-तमिस्त्र:।
मृत्यु-यमान्तक कर्म-पिशाचै: नाथ,
नमोस्तु न जातु बिभेमि।। (5)

अनुवादः-यि कुलहम बस ज़गत चोनुय स्वरूप छुम, न्यॅन्दुर मुहची गॅज़ुम अज्ञानुय चॉलुम, सिर्यि ह्युव ज्ञानु प्रकाश व्वदय सपदुम, भूत-पेशाच़ भय च़ोलुम मन शान्त सपदुम, अयाल यमुराज़ु सुन्द कति खोचुनावान, बु बारम्बार प्रणाम पादन चे सोज़ान बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रेह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान।।

प्रोदित-सत्य-विबोध-मरीचि,
प्रोक्षित-विशव-पदार्थ-सतत्व:।
भाव-परामृत-निभर्रपूर्षे,
त्वय्यहम-आत्मनि निर्वृतिम-एमि।। (6)

अनुवादः-योहय ज्ञान येलि मे प्यव थनु शांत गॅयि प्राण, चु रूदुख यड बॅरिथ अमृयत मे चावान, चु अवनिॉशी अमर चोन रूप आसान, यि चोनुय कुल सोरूप अॅन्दरी बु डेशान, बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्यम अनुग्रेह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान।।

मानस-गोचरम्-एति-यदैव,
क्लेश-तनु-ताप-विधात्री।
नाथ! तदैव मम-त्वत्-अभेद,
स्तोत्र-परामृत-वृष्टिर्-उदेति।। (7)

अनुवादः- शरीरुचि व्यॉज़ येलि मन काँपुनावान, तमी विज़ि चोन अनुग्रेह गाश हावान, गलान द्वख दॉद्य मन छुम शांत सपदान, स्वखानन्द सिर्यि ह्युव ज़न गर्भ नेरान बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्‌यम अनुग्रेह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान।।

शंकर! सत्यम् इदं व्रत-दान,
स्नान-तपो-भव-ताप-विनाशि।
ताबक-शास्त्र-परामृत-चिन्ता,
सिध्यति-चेतसि-निर्वृति-धारा।। (8)

अनुवादः- हतो शिवनाथ तिमन द्वख दूर सपदान, दरान वृत, तप, हवन बेयि छी करान दान, मगर यिम चॉन्य शिवलीला छि स्मराण, व्यतस्ता-अमृयतुच छख ग्रायि मारान बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्‌यम अनुग्रेह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान।।

नृत्यति तायति हृष्यति गाढं,
संवित-इय मम भैरवनाथ।
त्वां प्रियं आप्य सुदर्शनम एकं,
दुर्लभम-अन्यजैनः समयज्ञम।। (9)

अनुवादः- चु भैरवनाथ अनाथन हुन्द कुनुय नाथ, सुदृढ यज्ञि-वृच़ वज़ान द्वह तु बेयि राथ, वॅरिथ च्योनुय मे दर्शुन मन छु हरशान, वृंचुन हुन्ज़ पॅरियि छम वुछ डाल मारान, मोदुर मेछर बॅरिथ वुछ लोलु इरफान, गछ़ान हरशास यि क्युथ नाटुक छु सपदान बु अभिनवगुप्त शिवस मनु पोश लागान, कर्‌यम अनुग्रेह तु ड्यकुलोन नेरि शोलान।।

वसु-रस-पौषे-कृष्ण-दशम्यां,
अभिनव-गुप्तः स्तवम-इमम अकरोत्।
येन विभु-भव-मरू संतापं,
शामयति-झटिति जनस्य दयालु।। (10)

अनुवादः- यि अभिनवगुप्त कोताह रुत तु बेयि जान, यि छुम ना लोलु वाल्यन प्यठ दयावान, गटु पछ दॅहम पोह सनु ६८ आसान, यि अभिनवगुप्त शिव ग्वन आव लेखान, करव चिन्तन-मनन शोद पॉठ्य करव ज़ान, कठिन्यि-भवसरु पनुन शिव रोज़ि तारान, 'गरीबस' सार च्यतुक आकाश प्रज़लान, यि वन कुस लोलु कोस्तूर वर्गु बोलान।

★ ★ ★

शिव आरती

जय शिव ओंकारा, भज जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धांगी धारा, ओ३म् हर हर महादेव।।

एकानन चतुरानन पंचानन राजे, स्वामी पंचानन राजे।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे, ओ३म् हर हर महादेव।।

दो भुज चारु चतुर्भुज दश भुज अति सोहे, स्वामी दस भुज अति सोहे।
तीनों रूप निखरत, त्रिभुवन-जन मोहे, ओ३म् हर हर महादेव।।

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी, स्वामी मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी, ओ३म् हर हर महादेव।।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे, स्वामी बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरुड़ादिक भूतादिक संगे, ओ३म् हर हर महादेव।।

कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र त्रिशूल धारी, स्वामी चक्र त्रिशूल धारी।
सुखकारी दुखहारी जग-पालन कारी, ओ३म् हर हर महादेव।।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका, स्वामी जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका, ओ३म् हर हर महादेव।।

त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे, स्वामी जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे, ओ३म् हर हर महादेव।।

शिव भजन

आधार ज़गतुक कुनॅय छु मन्त्र शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।
त्रिपंच नयनो ही आदि दीवो, जटा मकुट छुयॅ गंडिथ च्य दीवो।
चन्द्र अर्द्ध शेखर, त्रिलोचनाय, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।।
च्य नील कंठो जटन छय गंगा च्य मोक्षदायक गुसोज्य नंगा।
अलक्ष अगोचर छयपन गुफाये, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।।
बिहिथ छय गौरी च्य सूत्थ नालय वलिथ छुस सर्पन हुंदुय दुशालै।
सहस्त्र सूर्यि तीज़ च्य मंज़ जटाये, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।।

अथस च्य डाबर चू बीन वायान, कपाल माल त्रिशूल धारान।
भक्तयन अभय छुख दिवान यछाये, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।।
रटिंथ चू अंकुश खडगधारिथ, धनुर धनन मंज़ पिनाक चारथि।
वुदनि बू डंडवथ करय हा माये, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।।
भवाय दीवो शर्वाय दीवो, भस्माय दीवो सुरान च्य ज़ीवो।
च्य जीव पूज़ान छिय भावनाये, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।।
संसार सुदरस म्य तार तारुम अमर बनावुम शिव मार्ग हावुम।
वोलुस कुकर्मव कुवासनाये, शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।।
अनाथ बन्धो दयायि सागर संसारकी दुख म्य यिम छि तिम चठ।
जगतस दया कर च हय्थ ओमाये शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।।

गायत्री महामन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

ओ३म्	सबकी रक्षा करने वाला।
भूःर्भुवः	जो सब जगत के जीवन का आधार, प्राण से भी प्रिय और स्वयंभू है।
स्वः	जो नानाविध जगत् में व्यापक हो के सबका धारण करता है।
तत्	उसी परमात्मा के स्वरूप को हम लोग,
सवितुः	जो सब जगत का उत्पादक तथा सब ऐश्वर्य का दाता है।
वरेण्यम्	जो स्वीकार करने योग्य अति श्रेष्ठ,
भर्गो	शुद्धस्वरूप और पवित्र करने वाला चेतन ब्रह्मस्वरूप है।

देवस्य	जो सब सुखों को देने वाला तथा जिसकी प्राप्ति की कामना सब करते हैं।
धीमहि	धारण करें किस प्रयोजन के लिये कि,
धियो	बुद्धियों को,
यो	जो सविता देव परमात्मा,
नः	हमारी,
प्रचोदयात	प्रेरणा करें अर्थात् बुरे कामों से छुडाकर अच्छे कामों में प्रवृत्त करें।

मानव को चाहिये कि सत् चित् आन्नदस्वरूप, नित्यज्ञानी, अजन्मा, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, व्यापक, कृपालु सारे जगत् के जनक और धारण करने वाले परमेश्वर की सदा गायत्री महामन्त्र से उपासना करें। जिस से धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष (मनुष्य शरीर रूपी वृक्ष के चार फल) ईश्वर भक्ति एवं कृपा से सर्वथा मनुष्यों को प्राप्त हो। (यहीं गायत्री मन्त्र का संक्षिप्त अर्थ है)

गायत्री चालीसा

ॐ भूर्भवः स्वः ॐ युतजननी, गायत्री नितकलिमल दहनी।

अक्षर चौबीस परम पुनिता, इनमें बसे शास्त्र श्रुति गीता।

शाश्वत सतोगुणी सत् रूपा, सत्य सनातन सुधा अनूपा।

हंसारूढ सितम्बर धारी, स्वर्णकान्ति, शुचि गगन बिहारी।

पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला, शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला।

ध्यान धरत पुलकित हियहोई, सुख उपजल दुख दुरमति खोई।

कामधेनु तुम सुर तरु छाया, निराकर ही अद्भुत माया।

तुम्हरी शरण गहै जो कोई, तरै सकल संकट सो सोई।

सरस्वती लक्ष्मी तुम काली, दिपै तुम्हारी ज्योति निराली।

तुम्हरी महिमा पार न पावै, जो शारद शत मुख गुन गावै।

चार वेद की मातु पुनीता, तुम ब्रह्माणी गौरी सीता।

महा मन्त्र जितने जग माही, कोऊ गायत्री सम नाहीं।

सुमरत हिय में ज्ञान प्रकासै, आलस्य पाप अविद्या नासै।

सृष्टि बीज जग जननि भवानी, कालरात्रि वरदा कल्याणी।

ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते, तुमसों पावें सुरता तेते।

तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे, जननि हिं पुत्र प्राण ते प्यारे।

महिमा अपरम्पार तुम्हारी, जै जै जै त्रिपदा भय हारी।

पूरित सकल ज्ञान–विज्ञाना, तुम सम अधिक न जग में आना।

तुमहि जानि कछू रहे न शेषा, तुमहिं पाय कछू रहै न कलेषा।

जानत तुमहिं तुमहिं है जाई, पारस परसि कुधातु सुहाई।

तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाईं, माता तुम सब ठौर समाई।

ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेर, सब गतिवान् तुम्हारे प्रेरे।
सकल सृष्टि की प्राण विधाता, पालक पोषक नाशक त्राता।
मातेश्वरी दया व्रतधारी, तुम सम तेर पालकी भारी।
जा कर कृपा तुम्हारी होई, ता पर कृपा करे सब कोई।
मन्द बुद्धि ते बुद्धि बल पावें, रोगी रोग रहित है जावें।
दारिद्र मिटै कटै सब पीरा, नासै दुख हर भव भीरा।
गृह क्लेश चित चिन्ता भारी, नासै गायत्री भय हारी।
सन्तति हीन सुसन्तति पावें, सुख सम्पत्ति युत मोद मनावें।
भूत पिशाच सबै भय खावें, यम के दूत निकट नहीं आवें।
जो सधवा सुमिरै चितलाई, अछत सुहाग सदा सुखदाई।
घर बर सुख प्रबल हैं कुमारी, विधवा रहें सत्य व्रत धारी।
जयति जयति जगदम्ब भवानी, तुम सम और दयालु न दानी।

जो सद्‌गरु से दीक्षा पांवैं, सो साधन को सफल बनावें।

सुमिरन करै सुरुचि बडभागी, लहैं मनोरथ गृही विरागी।

अष्ट सिधि नव निधि की दाता, सब समर्थ गायत्री माता।

ऋषि मुनि तपस्वी योगी, आरत अर्थी चिन्तित भोगी।

जो जो शरण तुम्हारी आवैं, सो सो निज वांछित फल पावैं।

बल विद्या शील सुभाऊ, धन वैभव यश तेज उछाहू।

सकल बढ़ें सुख नाना, जो यह पाठ करै धर ध्याना।

यह चालीसा भक्तियुत, पाठ करै जो कोय,

तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय ॥

* * *

देवी प्रार्थना

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमःप्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः। ज्योत्स्नायै चेन्दुरुपिण्यै सुखायै सततं नमः।
कल्याण्यै प्रणतां वृद्धयै सिद्धयै कुर्मो नमो नमः। नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः।
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै। ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः।
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः। नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः।
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्य-भिधीयते, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या। भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः।

चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत्। नमस्तयै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता। करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।

या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै, रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते। या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः, सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः।।

* * *

दुर्गा सप्तशती का सारभूत मंत्र

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः

पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः,

श्रद्धा सत्तां कुलजन प्रभवस्य लज्जा,

त्वां त्वां नताःस्म परिपालय देवि! विश्वम्।

श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार।।

चौपाई

जय हुनमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा।
अंजनि- पुत्र पवन सुत नामा।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुण्डल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै।
काँधे मूँज जनेऊ साजै।।
संकर सुवन केसरी नन्दन।
तेज प्रताप महा जग बन्दन।।
बिद्यावान गुनी अति चातुर।
राज काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनबि को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रुप धरि सियहिं दिखावा।
बिकट रुप धरि लंक जरावा।।

भीम रुप धरि असुर सँहारे।
रमचन्द्र के काज सँवारे।।
लाय सजीवन लखन जियाये।
श्री रघुबीर हरषि उर लाये।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा।।
तुम्हारो मंत्र बिभीषन माना।
लंकेस्वर भए सब जग जाना।।
जुग सहस्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हारे तेते।।
राम दुआरे तुम रखबारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसार।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रच्छक काहू को डर ना।।

आपन तेज सम्हारो आपै।

तीनों लोक हाँक तें काँपै।।

भूत पिसाच निकट नहिं आवै।

महाबीर जब नाम सुनावै।।

नासै रोग हरै सब पीरा।

जपत निरंतर हनुमत बीरा।।

संकट तें हनुमान छुड़ावै।

मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।

सब पर राम तपस्वी राजा।

तिन के काज सकल तुम साजा।।

और मनोरथ जो कोइ लावै।

सोइ अमित जीवन फल पावै।।

चारों जुग परताप तुम्हारा।

है परसिद्ध जगत उजियारा।।

साधु संत के तुम रखवारे।

असुर निकंदन राम दुलारे।।

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।

अस बर दीन जानकी माता।।

राम रसायन तुम्हरे पासा।

सदा रहो रघुपति के दासा।।

तुम्हरे भजन राम को पावै।

जनम जनम के दुख बिसरावै।।

अंत काल रघुबर पुर जाई।

जहाँ जन्म हरि- भक्त कहाई।।

और देवता चित्त न धरई।

हनुमत सेइ सर्ब सुख करई।।

संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जै ज़ै जै हनुमान गोसाईं।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं।।
जो सत-बार पाठ कर कोई।
छूटहि बंदि महा सुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
'तुलसीदास' सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

एक श्लोकी रामायण

आदौ राम- तपोवनादि-गमनं,
हत्वा मृगं कांचनं,
वैदेही- हरणं जटायु- मरणं
सुग्रीव सम्भाषणम्।।
बाली निर्दलनं समुद्र तरणं
लंकापुरी- दाहनं,
पश्चात् रावण कुम्भकर्ण-
हननं चैतत्- हि- रामायणम्।।

श्री हनुमान आरती

आरती कीजै हनुमान लला की,
दुष्टदलन रघुनाथ कला की।
जाके बल से गिरिवर काँपै,
रोग-दोष जाके निकट न झाँकै।
अंजनि पुत्र महा बलदाई,
संतन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीरा रघुनाथ पठाये,
लंका जारि सिया सुधि लाये।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई,
जात पवनसुत बार न लाई।
लंका जारि असुर संहारे,
सीयारामजी के काज सँवारे।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे,
आनि सजीवन प्रान उबारे।
पैठि पताल तोरि जमकारे,
अहिरावन की भुजा उखारे।
बायें भुजा असुर दल मारे,
दहिने भुजा संतजन तारे।
सुर पर मुनि आरती उतारें,
जै जै जै हनुमान उचारें।
कंचन धार कपूर लौ छाई,
आरती करत अंजना माई।
जो हनुमान जी की आरति गावै,
बसि बैकुंठ परमपद पावै।
लंक विध्वंस कीन्ह रघुराई,
'तुलसीदास' प्रभु कीरति गाई।

आरती को 'आरात्रिका' अथवा आरार्तिक और निराजन भी कहते हैं। पूजा के अन्त में आरती की जाती है। पूजन में जो त्रुटि रह जाती है, आरती से उसकी पूर्ति होती है। स्कन्दपुराण में कहा गया है मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत् पूजनं हरेः। सर्वे सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे।। पूजा मन्त्रहीनं और क्रियाहीन होने पर भी आरती करलेने से उसमें सारी पूर्णता आ जाती है। यथार्थ में आरती पूजन के अन्त में इष्टदेव की प्रसन्नता के हेतु की जाती है।'इसमें इष्टदेव को दीपक दिखाने के साथ ही उनका स्तवन तथा गुणगान किया जाता है।

आरती गणेश जी

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
एक दंत दयावंत, चार भुजा धारी। मस्तक पर सन्दूर सोहे, मूसे की सवारी।।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
अंधन को आंख देत, कोढ़िन को काया। बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया।।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
हार चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा। लडडुअन का भोग लगे, संत करे सेवा।।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।

आरती श्री रामचन्द्र जी की

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं।
नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज पद कंजारुणं।।
कंदर्ष अगणित अमित छबि, नवनील-नीरद सुंदरं।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि सुचि नौमी जनक सुता वरम्।।
भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनं।
रघुनंद आनँदकंद कौशलचंद दशरथ-नंदनं।।
सिर मुकुट कंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं।।
इति वदति 'तुलसीदास' शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खलदल-गंजनं।।

आरती ज्येष्ठा माता की

ओ३म् जय ज्येष्ठा माता, जय जय ज्येष्ठा माता।
तू ही कष्ट निवारे, हे माँ सुख दाता।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाकर, तुम दारिद्र हरो।
सकल काम प्रदायिनी, दुःख माँ दूर करो।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।
महा दैत्य संहारी, तू माँ दुर्गति हारी।
महामोह हटा दो, ज्येष्ठेश्वर प्यारी।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।
माता खप्पर धारी, मेरी विपदा सारी।
दूर करो हे माता, प्रिय भक्तन प्यारी।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।

अमृत कुंड विराजे, कमल हाथ में साजे।
करे हित सभी का, निर्धन या राजे।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।
झूठी माया सारी, हम को लगती प्यारी।
अविद्या दूर करो, हे पीताम्बर धारी।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।
भक्ति बढ़ाने वाली, कोई युक्ति करो।
भयहारिणी माता तुम, भव भय सदा हरो।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।
हम अति दीन दु:खी माँ, तेरी आस खड़े।
जाने न विद्या कोई, तेरी शरण पड़े।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।
ओम् जय ज्येष्ठा माता, जय जय ज्येष्ठा माता।
तू ही कष्ट निवारे, हे माँ सुख दाता।। ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।
ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।
ओ३म् जय ज्येष्ठा माता।।

श्री लक्ष्मी जी की आरती

ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु दाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तु ही जग माता, मैया तु ही जग माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता, मैया तु ही सुख-सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता, मैया तु ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।
जिस घर में तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता, मैया सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता, मैया वस्त्र न हो पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।
शुभ-गुण मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता, मैया क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता, मैया जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।

श्री लक्ष्मी-वन्दना

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।।

आरती श्री गंगा जी

ओ३म् जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता, ओ३म् जय गंगे माता।।
चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता, मैया जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता, ओ३म् जय गंगे माता।।
पुत्र सागर के तारे, सब जब को ज्ञाता, मैया सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता, ओ३म् जय गंगे माता।।
एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता, मैया शरण जो तेरी आता।
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता, ओ३म् जय गंगे माता।।
आरती मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता, मैया जो नर नित गाता।
सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता, ओ३म् जय गंगे माता।।

नवग्रहपीडाहर स्तोत्रम्

सूर्य	ग्रहाणाम्-आदिर्-आदित्यो-लोकरक्षण-कारकः, विषमस्थान-सम्भूतां-पीडां-हरतु-मे रविः।।
चन्द्रमा	रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः, विषमस्थान-सम्भूतां-पीडां-हरतु-मे विधुः।।
भौम	भूमिपुत्रो महातेजो जगतां भयकृतृ सदा, वृष्टिकृद्-वृष्टि-हर्ता च पीडां हरतु मे कुजः।।
बुध	उत्पातरूपो जगतां चन्द्र पुत्रो महाद्युतिः, सूर्यप्रिय करो विद्वान, पीडां हरतु मे बुधः।।
बृहस्पति	देवमन्त्री विशालाक्षः, सदा लोकहिते रतः, अनेक शिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः।।
शुक्र	दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः, प्रभुस्तारा ग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः।।
शनि	सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः, मन्दाचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः।।
राहु	महाशिरो महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः, अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखीः।।
केतु	अनेक-रूप-वर्णश्च शतशोथ सहस्त्रशः, उत्पादरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः।।

एक-श्लोकी- नवग्रहस्तोत्रम्

ब्रह्मा- मुरारिः- त्रिपुरान्त- कारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च, गुरुश्च शुक्रः शनि- राहु केतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे, ॐ जय जगदीश हरे
जो ध्यावे फल पावे दुखविनशे मन का
सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का, ॐ जय जगदीश हरे
मात पिता तुम मेरे शरण पडों किसकी
तुम बिन और न दूजा आस करू जिसकी।। ॐ जय जगदीश हरे
तुम-पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यमी
पारबह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी। ॐ जय जगदीश हरे

तुम करूणा के सागर तुम पालन कर्ता

में सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्ता। ॐ जय जगदीश हरे

तुम हो एक अगोचर सब के प्राणपति

किस विधि मिलों दयामय तुमको में कुमति। ॐ जय जगदीश हरे

दीन बन्धु दुख हर्ता रक्षक तुम मेरे

अपने चरण लगाओ द्वार पडा तेरे। ॐ जय जगदीश हरे

विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा

श्रद्धा भक्ति बढाओ सन्तन की सेवा। ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरें ।

ॐ जय जगदीश हरें।   ॐ जय जगदीश हरें।

श्री भगवान गोपीनाथ जी

'बोड दरबार'

-डॉ. रोशन सराफ (रोशि रोशि)

ओंम नमो भगवते गोपीनाथाय, चानि पूज़ये वंदव मन तॅ प्राण,
बजि बारगाहे आमुत्य पज़ि श्रदाये, चानि पूज़ाये वंदव मन तॅ प्राण।।
भक्त्यन आश चान्य, चान्यी, छख सथा, वथा असलुच्य हावतख काँह,
तार दितॅ भवसर पनुनि यछायें, चानि पूज़ाये ।।

केंचन रूगन शफा, केंचन दाद्यन दवा, केंचन खा गोंछ लोलु अमरयथ,
सूर मनकलि हुंद सारिनय बलरावे, चानि पूज़ाये ।।
डॉल्या ह्यथ यिवान लोलुच्य हतुबद्य, वद्य-वद्य बोजनावान हाल दिलकुय,
अशि सूत्य गौड दिवान न्र्यमल ख्रावे-चानि पूज़ाये ।।
सदॅराह कठिन छुख-वोरू वोर करान, तुलान गतु ग्यूर आवलुन छुख,
नम रठतु पानय यथ भवसर नावे-चानि पूज़ाये ।।
मोल चुय मॉज्य चुय-चुय छख भगवान, बखशान चु पापन तु शापन छुख,
अनुग्रह चोन वातान जायि जाये- चानि पूज़ाये ।।
व्यचारन शोंद्धि- वेकलस बोंद्धि, खोंद्धि दितु पथर प्येमुत्यन,
अथुरोट कर पनुन पनिने प्रजाये -चानि पूज़ाये ।।
चोन नाव सुबु शाम स्वखना पखना, जखना लोल सूत्य समरण चॉन्य,
रोशि-रोशि युथ खसि खुमार ग्रायि ग्राये-चानि पूज़ाये ।।

जन्म दिन पूजा

प्रातः काल स्नान करके नये अथवा स्वच्छ वस्त्र धारण करें। पवित्र आसन इस प्रकार बिछायें कि बैठने पर आप का मुख पूर्व दिशा की ओर रहे। एक कम्बल (चादर) बिछायऐ जिस पर पूजा समग्री रखें। एक थाली में साफ चावल, नमक तथा दक्षिणा सजा कर रखें। नया यज्ञोपवीत (जनेऊ), सात गॉठ लगा हुआ नारीवन, अर्घ्य, पुष्प, धूप, तिलक (संभव हो तो केसर का) थोड़ा सा दूध और दही, स्वच्छ जल से भरा पानी का लोटा, एक दो कटोरियॅ आसन पर तैयार रखें। पवित्र या अंगूठी अथवा दर्भ के दो तिनके भी रखें। पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें, रत्नदीप और धूप जलायें। नया यज्ञोपवीत (जनेउ) धोते हुए गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयो नः प्रचोदयात् ।।

तीन बार पढ़ें। फिर इसे गले में डालते हुए पढ़ें

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्, आयुष्यं अग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः, यज्ञोपवीतं असि यज्ञस्यत्वा उपवीतेन उपनह्यामि । *इसके बाद पढ़ें*

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्याये सर्व विघ्नोपशान्तये। अभिप्रेतार्थ सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैर्अपि सर्व-विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः। गुरुब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः। गुरुरेव जगत् सर्वम् तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

पानी की छीटें (लवह) हृदय और मुख को छिड़कते हुए पढ़ें

तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति। मा नः शंस्योर् अरूरूषो धूर्तिः प्राणङ्. मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते। *अनामिका उंगली में पवित्र या अंगूठी या दर्भ के दो तिनके या कोई फूल धारण करके अपने आप को तिलक, अर्घ्य और फूल लगाते हुए पढ़ें।*

परामत्मने पुरुषोतमाय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।

रत्नदीपं और धूप को तिलक, अर्घ्य और पुष्प अर्पण करें। सूर्य भगवान का ध्यान करते हुए तिलक, अर्घ्य और फूल अर्पण करते हुए पढ़ें। नमो धर्म-निधानाय नमः स्वकृतसाक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय श्री भास्कराय नमो नमः। *खाली रखी हुई थाली में नारीवन को रखें और उस पर कटोरी से जल की धारा डालते हुए पढ़ें।*

यत्रास्ति-माता न पिता न बन्धु-र्भ्रातापि नो यत्र सुहृत्-जनश्च न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रि-स्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय-आधारशक्त्यै धूपदीपसङ्.-कल्पात् सिद्धिर्-अस्तु धूपो नमः दीपो नमः।

कटोरी में जल डालें और उसमें तिलक और पुष्प डालते हुए पढ़े

सं वः सृजामि हृदयं, संसृष्टं मनो अस्तु वः, संसृष्टः तन्वः सन्तु वः, संसृष्टः प्राणाः अस्तु

वः, संयावः प्रियास्तन्वः, संप्रिया हृदयानि वः। आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियस्तन्वो मम।

अब इस कटोरी में रखा हुआ जल नारीवन पर डालते हुए पढें

अश्विनोः प्राणस्तो ते प्राणं दतां तेन जीव । बृहस्पते प्राणः सते प्राणं ददातु तेन जीव जन्मोत्सव देवताभ्यः जीवादानं परिकल्पयामि नमः।

चावल के साथ दर्भ के दो तिनके या दो फूल हाथ में रखते हुए तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़ें

ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयो नः प्रचोदयात् ।।

ॐ जन्मोत्सव देवतानां अर्चाम् अहं करिष्ये ऊँ कुरूष्व।

हाथ में लिए हुए फूल या दर्भ आदि निर्माल्य में डालें। पुनः नारीवन के सामने दो पुष्प डालते हुए पढ़ें

सप्तचिर जन्मोत्सव देवतानां आसनं नमः

हाथ में चावल सहित दर्भ या फूल लें और फिर कन्धें से सिर्फ चावल फैंकते हुए पढ़ें

सप्तचिर जन्मोत्सव देवताभ्यः युष्मान् पूजयामि ॐ पूजय *दो फूल हाथ में पकड़ते हुए पढ़ें* सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। सभूमिम् विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठत् दशांगुलम् जन्मोत्सव देवताः आवाहयिष्यामि ॐ आवाहय।

पहले से रखे हुए दर्भ के दो तिनके निर्माल्य में डालकर नारीवन पर फूल डालते हुए तीन बार पढ़ें

भगवन् पुण्डरीकाक्ष भक्तानुग्रह कारक अस्मात् दयानुरोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो।

अपने दोनों कन्धों के ऊपर चावल फैंक कर प्राणायाम करें। फिर कटोरी में जल डालते हुए पढ़ें

पाद्यर्थम् उदकम् नमः शन्नो देवीरभिष्ठय आपो भवन्तु पीतये। शंयोर अभिस्नवन्तु नः।

फूल, दूध, तिलक, दर्भ तथा जल कटोरी में डालकर नारीवन पर यह सब मिश्रण डालते हुए पढ़ें

अश्वत्थामने बलये व्यासाय हनुमते कृपाचार्याय मार्कण्डेयाय परशुरामाय सप्तचिरजीवेम्यः पाद्यं नमः *कटोरी में बचा हुआ मिश्रण निर्माल्य में डालें। दुबारा कटोरी में पानी डालते हुए पढें*

शन्नो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये। शंयोर् अभिस्नवन्तु नः। *दूध, दही, जल, घी, तिलक, चावल, और दर्भ कटोरी में डालें और यही मिश्रण नारीवन पर डालते हुये पढ़ें*

अश्वत्थामन बलये व्यास हनुमते कृपाचार्य मार्कण्डेय परशुरामाय सप्तचिरजीविनः इदं वो अर्घ्यं नमः *केवल पानी डालते हुए पढ़ें* प्रजापते जन्मोत्सव देवताभ्यः आचमनीयं नमः *दूध, जल, अर्घ्य और पुष्प आदि का मिश्रण डालते हुए पढ़ें* तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुराततम् तत् विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत् परमं पदम्। प्रजापति जन्मोत्सव देवताभ्यः स्नानं नमः। *किसी अन्य कटोरी में नारीवन के लिए फूलों से आसन बनाते हुए पढ़ें*

आसनाय नमः गरुडासनाय नमः पद्मासनाय नमः शतदल पद्मासनाय नमः, सहस्त्रदल पद्मासनाय नमः। किमासनं ते गरुढासनाय, किं भूषणं ते कौस्तुभ भूषणाय, लक्ष्मीकलत्राय, किम् अस्ति, देयं वागीश किं ते वचनीयम् अस्ति।। *नारीवन को आसन पर बिठाते हुए पढ़ें*

उत्तिष्ठ भगवान् विष्णो उत्तिष्ठ कमलापते। उत्तिष्ठ त्रिजगन्नाथ त्रैलोकी मंगलं कुरु।।

नारीवन के सात गाठों को तिलक लगाते हुए पढ़ें अश्वत्थाम्ने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय, मार्कण्डेयाय, परशुरामाय सप्तचिर-जीवेभ्यः समालभनं गन्धो नमः।

इन्ही सात नामों का उच्चारण करते हुए नारीवन पर अर्घ्य और पुष्प चढ़ाते हुए पढ़ें अश्वत्थाम्ने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय, मार्कण्डेयाय, परशुरामाय सप्तचिर-जीवेभ्यःअर्घो नमःपुष्पं नमः

रत्नदीप और धूप नारीवन के इर्द-गिर्द घुमाते हुए (आलहनाव) पढ़ें

तेजसो शुक्रमसि ज्योतिरसि धामसि प्रियं देवानाम अनादृष्टं देवयजनं देवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृहणामि यज्ञेभ्यस्त्वा यज्ञिभ्यो गृहणामि जन्मोत्सव देवताभ्यः रत्नदीपं कर्पूरं च परिकल्पयामि नमः

नारीवन को नमस्कार करते हुए पढ़ें

जय नारायण जय पुरुषोतम जय वामन कंसारे, उद्धर मामसुरेश विनाशिन् पतितोहं संसारे । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं, माम अनुकम्पय दीनम् अनाथं कुरु भव सागरपारम्, घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।१।। जय जय देव जया सुरसूदन जय केशव जय विष्णो, जय लक्ष्मीमुख कमल मधुव्रत जयदशकन्धर जिष्णो। घोरं हर मम नरकरिपो केशवकल्मषभारं ।।२।। यद्यापि सकलम् अहं कलयामि हरे नहि किम् अपि स सत्वम् । तत् अपि न मुञ्चति माम इदम् अच्युत पुत्रकलत्र ममत्वं । घोरंहर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।३।। पुनर् अपि जननं पुनर् अपि मरणं पुनर अपि गर्भ निवासम् । सोढुम् अलं पुनर अस्मिन् माधव माम् उद्धर निजदासम् । घोरंहर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।४।। त्वं जननी जनकः प्रभुर अच्युत त्वं सुहृत् कुलमित्रम । त्वं शरणं शरणा गतवत्सल त्वं जलधि वहित्रं । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।५।। जनक सुता पति चरण परायण शंकर मुनिवर गीतं । धारय मनसि कृष्ण पुरुषोतम वारय संसृति भीतिम् । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।६।। भगवते वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय

सप्तजन्मोत्सव देवताभ्यः चामरं छत्रं परिकल्पयामि नमः

नारीवन पर फूल चढाते हुए पढ़ें

ध्येयं सदा परिभवघ्नम् अभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिव विरञ्चि नुतं शरण्यम्। भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं। वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्

नारीवन को नमस्कार करते हुए पढ़ें

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा च अष्टांग-नमस्कारं करोमि नमः *कटोरी में थोड़ा दूध, शहद, या खाण्ड रख कर अर्पण करते हुये पढ़ें*

वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय प्रजापति-जन्मोत्सवदेवताभ्यः मात्रामधुपर्क ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः। *नारीवन पर दक्षिणा डालते हुये पढ़ें* जनमोत्सव देवताभ्यः दक्षिणायै तिल हिरण्य रजत निष्कर्ष ददानि। *दक्षिणा अर्पण करते हुये पढ़ें* एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु ॥ *फूल चढ़ाते हुये पढ़ें* ओं तद्विष्णोः परम पदं सदापश्यन्ति-सूर्यः दिवीव चक्षुर-आततम्। तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्। *अब नैवेद्य तहर या क्षीर थाली में लाकर एक पात्र में अलग चटू और पांच म्यचिर्यॉ रखें, नैवेद्य के साथ ही मिसरी भी रखें। नैवेद्य की थाली को दोनों हाथों से पकड़कर सारा प्रप्युन*

पढ़ें (प्रेप्युन विजयेश्वर जन्त्री में अलग से लिखा है, वहीं से पढ़ें)। प्रेप्युन के बाद पढ़ें आज्ञा मे दीयतां नाथ नैवैद्यस्यास्य भक्षणे। शरीरयात्रा सिद्धयर्थ भगवन क्षन्तुम अर्हसि।। *नारीवन पर पुष्प चढाते हुए पढ़ें* आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवंस्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम । *पवित्र निकालकर दाईं कलाई में नारीवन बाँधिए। चटू को बाहर कहीं साफ स्थान पर रखें। निर्माल्य को नदी या पेड़ के नीचे या किसी गमले में डाल कर नैवेद्य के साथ दही, मिश्री या चीनी दाईं हथेली में रखकर मुँह में डालते हुए पढ़ें* माकार्डण्डेय नमस्तुभ्यं सप्तकलपान्त जीवन, आयुर्-आरोग्य सिद्धयर्थ प्रसीद भगवन मुने। मार्कण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्त-जीवन, चिरन्जीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवरद्विज, कुरुष्व मुनिशार्दूल, तथा मां चिरजीविनम् ।।

शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

इति जन्मदिन पूजा विधि

प्रेप्युन

।। अथ नैवेद्य मन्त्राः ।।

एक थाली में नैवेद्य तथा दूसरी थाली में च़टू और उसकी सात म्यचियां या टुकडे रखें। च़टू को तिलक, अर्घ्य और फूल अर्पण करें। शुद्ध पानी अपने आप पर छिडकें, दोनों हाथों से नैवेद्य ग्रहण करते हुये पढ़ें

अमृतेश मुद्रयाऽमृतीकृत्य अमृतमस्य अमृतायतां नैवेद्य। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामाददे।। महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वारर्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वरदेवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञ-पुरुषाय अग्निष्वातादिभ्यः पितृगणदेवताभ्यः। ॐ भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी सहिताय नारायणाय, भवाय देवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय विनायकाय वल्लभासहिताय श्रीगणेशाय । क्लीं कां कुमाराय भगवते हां हीं सः सूर्याय प्रभासहिताय आदित्याय भगवत्यै अमायै कामायै

चार्वङ्ग्यै टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका भगवत्यै श्री शारदा भगवत्यै श्री महाराज्ञी भगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै श्री व्रीढा भगवत्यै श्री वैखरी भगवत्यै वितस्ता भगवत्यै गंगा भगवत्यै यमुना भगवत्यै कालिका भगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरासुन्दर्ये सहस्त्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै अभयंकरी देव्यै भवान्यै क्षेमंकरी भगवत्यै सर्वशत्रुघातिण्यै इहराष्ट्राधिपतये अमुकभैरवाय इन्द्रदिभ्यो शलोकपालेभ्य: आदित्यादिभ्यो नवग्रहदेवताभ्य: ब्रह्मधुवाभ्यां अनन्तागस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूर्माय ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिख्यादिभ्य: पञ्च चत्वारिंशिंद्वास्तोष्पतियागदेवताभ्य: ब्राह्मयादिभ्यो मातृभ्य: ललितादिभ्य: मातृभ्य: ललितादिभ्य: मातृभ्य: दुर्गाक्षेत्रा गणेश्वरदेवताभ्य: राकादेवता भ्य: त्रिकादेवताभ्य: सिनी वालीदेवताभ्य: यामीदेवताभ्य: रौद्रीदेवताभ्य: वारुणीदेवताभ्य: वार्हस्पत्य देवताभ्य:। ॐ भूर्देवताभ्य: ॐ भुवो देवताभ्य: ॐ स्वर्देवताभ्य: ॐ भूर्भुवस्वर्देवतभ्य: अखण्ड ब्रह्माण्डयागदेवताभ्य: महागायत्र्यै सावित्र्यै हेरकादिभ्य: वटुकादिभ्य: उत्पन्नमतृं दिव्यं प्राक्रक्षी-रोदधिमन्थनात् अन्नामृतरूपेण नैवेद्यं प्रति गृह्यताम् ।। *अपने इष्ट देवता का ध्यान करते हुये पढ़ें :* ॐ तत्सद् बृह्म अद्यतावात् तिथौ अद्य अमुक मासस्य, अमुक पक्षस्य, तिथौ अमुकायां, आत्मनो वाङ्गमन: कायोपार्जितपाप निारणार्थम ॐ

नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः। *चरु को हाथ से स्पर्श करते हुए पढ़ें* या काचित् योगिनी रौद्रा सौम्या घौरतरा परा, खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा, *चरु को तिलक लगाते हूये पढ़ें* आकाश मातृभ्यः अन्नं नमः आकाशमातृभ्यः समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः। *चरू की सात प्यचियॉ बनाकर हर एक मिची के सात सपर्ष करते हूये पढ़ें* 1. भगवते वासुदेवाय अन्नं क्षीरं मोदकादीन् समर्पयामि नमः। 2. भगवते भवाय देवाय अन्नं समर्पयामि नमः। 3. भगवते विनायकाय अन्नं समर्पयामि नमः4. ह्लीं ह्लीं सूर्याय अन्नं समर्पयामि नमः। 5.इष्टदेवी भगवत्यै अन्नं मोदकान् मिष्ठानं क्षीरं समर्पयामि नमः। *अंतिम दो प्यचियों को स्पर्श करे तथा अर्घ, फूल व पानी डालते हूये पढ़ें* योस्मिन् निवसति क्षेत्रे क्षेत्रपालः सकिंकरः तस्मै निवेदयाम्यद्यबलिं पानीय संयुतं क्षां क्षेत्राधिपतयेऽन्नं नमः, राराष्ट्राधिपत येऽन्नं नमः सर्वा भयवरपदो मयि पुष्टिं पुष्टि पति र्दधातु । *नमस्कार करते हुए पढ़ें* नमामि नारायण पादपंकजं, करोमि नारायणपूजनं सदा वदामि नारायण नामनिर्मलं स्मरामि नारायण तत्वम् अव्ययम् । उभाम्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा उरसा नमस्कारं कारोमि नमः। शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

श्राद्ध संकल्प विधि

'श्रद्धया दीयते यस्मात् तस्मात् श्राद्धं निगद्यते'। अर्थात जो वस्तु श्रद्धा से दी जाती है उसे 'श्राद्ध' कहते हैं। देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण से मुक्ति पाने के लिए श्राद्ध आवश्यक है। श्राद्ध संकल्य के लिए पहले यह सामग्री इक्कठी कीजिए:
एक थाली में चावल (साफ किए हुए) नमक, फल तथा दक्षिणा सजा कर रखें। आसन इस तरह विछायें कि आप का मुख पूर्व दिशा की ओर रहे। सामग्री से सजी थली आसन पर रखें, ताज़ा पानी का लोटा, थोडा सा तिल, धूप, अर्घ्य फूल और तिलक भी आसन पर रखें। जिस पितृ का श्राद्ध हो उसके फोटो पर फूल माला लगायें। पद्ममासन लगा कर पूर्व दिशा की तरफ मुँह करके वैठें, धूप जला कर रखें। यज्ञोपवीत को दाहिनी तरफ रखते हुए नमस्कार करें और पढ़ें

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् प्रसन्नवदनं ध्याये सर्व-विघ्नोपशान्तये।। अभिप्रीतीर्थ-सिद्धयर्थ पूजितो यःसुरैर्-अपि। सर्व-विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपत्ये नमः। गुरुबह्मा गुरु विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः। गुरुरेव जगत् सर्वम् तस्मै श्री गुरुवे नमः।। परम गुरूवे नमः

पानी की छींटें लवह मुहँ और पैरों को डालते हुए पढ़ें तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मा नः शंस्योर अरुरुषो धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

पवित्र या अंगूठी अनामिका नामक उंगली में पहनकर अपने को मध्यमा उंगली से तिलक लगायें। थोड़ा सा अर्घ्य और फूल अपने

सिर पर डालें। आसन पर रखी हुई खाली थाली में थोड़ा तिलक, अक्षत, (चावल के सावूत दाने) और फूल डालें। सूर्य भगवान् का ध्यान करके थोड़ा सा तिलक अर्घ्य सूर्य की तरफ डालते हुए पढें

नमो धर्मनिधनाय नमः

स्वकृत साक्षिणे, नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः *हाथ में अर्घ्य रखकर एक कटोरी से पानी ऐसे डालें कि वह पानी उंगर्लियों की तरफ से थाली में गिरना चाहिए और साथ-साथ पढ़ें*

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धु भ्रातापि न यत्र सुहृतजनश्च न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्म दीपं शरणं प्रपद्ये ॐ तत् सत् ब्रह्मा अद्य तावत् तिथौ *जो महीना है उसका नाम लें जैसे वैशाख* मासस्य *शुक्ल या कृष्ण जो भी पक्ष हो* पक्षस्य *जो भी तिथि हो जैसे प्रतिपदा अथवा द्वितीया आदि* तिथौ *जो भी वार हो जैसे रविवार अथवा सोमवार आदि* वासरान्वितायां विष्णु प्रीत्यर्थम दीप धूप संकल्पात् सिद्धिर् अस्तु दीपो नमः धूपो नमः। *यज्ञोपवीत को वाई-भुजा में धारण करके तिल हाथ में रखकर पानी डालते हुए अंगूठे की ओर से थाली में गिरना चाहिए पढ़ें* ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् ,,,, मासस्य ,,,, पक्षस्य ,,,,तिथौ*यदि श्राद्ध तिथि देवा हो तो तिथि बोलकर अगली तिथि भी 'परत' के साथ पढ़ें* वासरान्वितायां *गोत्र*

सहित नाम लें **पितृे** *पिता का नाम लें* **मातृे** *माता का नाम लें* **पितामहाय** *दादा का नाम लें* **प्रपितामहाय** *पडदादा का नाम लें* **मातामहाय** *नाना का नाम लें* **प्रमातामहाय** *माता के दादा का नाम लें* **वृद्धप्रमातामह** *माता के पढदादा का नाम लें* **मातामह्यै** *नानी का नाम लें* **प्रमातामह्यै** *मां की दादी का नाम ले* **वृद्ध प्रमातामह्यै** *मां की पढदादी का नाम लें* समस्त माता पितृभ्यः द्वादश दैवतेभ्यः पितृभ्यः नित्यकर्म निमितं दीपः स्वधः धूपः स्वधः *जिस पितृ का श्राद्ध हो उसका नाम गोत्र के साथ लेकर मुठठी में पानी रखकर थाली में रखे हुए चावल, नमक, फल, दक्षिणा आदि पर छिड़कते हुए पढें* ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत्,,,तिथौ अद्य,,,,मासस्य,,,,पक्षस्य ,,, तिथौ,,,,वासरा सांवत्सरिके श्राद्धे *यदि पितृपक्ष हो तो पढें* आपरिपाके कन्यार्कगते श्राद्धे इदं अन्नं सलवणं सवस्त्रं फलमूलसहितं सदक्षिणां संकल्पयामि संकल्पयामि *फिर दायें बाजू में यज्ञोपवीत रखकर पढ़ें* नमो-ब्रह्मणे-नमो-अस्तु-अग्नये-नमः पृथिव्यै-नमः, औषधीभ्यः नमो वाचस्पतये नमो विष्णदे बृहते कणोमि। इति एतासाम्-एव-देवतानां-सारिष्टिं सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम् आप्नोति य एवं विद्वान्-स्वाध्यायम्-अधीते।

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति ॥

पन्न कथा

एक समय नैमिषारण्य तीर्थ में ऋषियों ने श्रीसूत जी से पूछा, हे मुनिश्रेष्ठ। कोई ऐसा व्रत अथवा उपाय बतलाइये जिससे संसार की सभी मानवजाति थोडे से ही समय में किसी सरल उपाय से मनोवांच्छित फल तथा मानिसक शान्ति प्राप्त कर सके। सर्वशास्त्रज्ञाता श्री सूत जी बोले हे ऋषियो। आप ने मानवजाति के हित की बात पूछी अब मैं उस व्रत को आप लोगों में कहूँगा – अत: आप ध्यान से सुनिये – काशी नगरी में एक निर्धन ब्रह्मण रहता था। वह अति निर्धन होने के कारण भूख और प्यास से पीडित घूमता रहता था। पूर्वजन्म के किसी शुभ संस्कार से भगवान् आदि देव श्री गणेश जी का स्मरन प्राय: करता ही रहता था, उस ब्राह्मण को इस दुर्दशा से मुक्त करने के निमित्त सभी दु:खों तथा विघ्नों को दूर कने वाले श्री गणेश जी ने ब्राह्मण का रूप धारण कर उस के पास आकर आदर के साथ पूछा – हे ब्राह्मण देवता! आप ऐसी शौचनीय तथा दु:खी दशा में क्यों घूमते हैं, ब्राह्मण बोला मैं बहुत निर्धन हूँ, तथा मेरा कोई पुत्र भी नहीं है जो मेरी कुछ सेवा करता, मेरा शरीर भी रोगी है तथा मेरी पत्नी भी शरीर के रोगों और धन के अभाव से दू:खी रहती है। हे दयालु, ब्राह्मण देवता! यदि आप इस कष्ट से हमें निकालने का कोई उपाय जानते हैं तो कृपा कर के मुझे बताइये। वृद्ध ब्राह्मण बोला – गणेश जी, जो ऋद्धि सिद्धि के स्वामी है तथा जो विघ्नहर्ता माना जाता है – उसी आदिदेव गणेश जी का व्रत धारण करने से आपको अवश्य मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी। यह गणेश जी का व्रत जिसको ''सिद्धि विनायक व्रत'' कहते हैं भाद्रशुक्लपक्ष चतुर्थी को किया जाता है। यदि इस चतुर्थी के दिन रविवार या मंगलवार हो तो इस व्रत को महाचतुर्थी व्रत कहते हैं। यह व्रत ''गणपति चतुर्थी'' या विनायक चतुर्थी के नाम से भी प्रसिद्ध है। यह भाद्रपक्ष मास गणेश जी द्वारा ऋद्धि सिद्धि बाँटने का मास है। अत: इस मास में शुक्लपक्ष में किसी शुभ दिन पर गणेशपूजन तथा मोदक आदि गणेश जी को अर्पण करने से भक्तों की हर एक मनोकामना सिद्ध होती है यह पर्व कश्मीरी पण्ड़ित बडे घूमधाम तथा श्रद्धा से मनाते है। महराष्ट्र में भी यह त्यौहार मनाया जाता है। कश्मीर में इस व्रत को ''पन्नदान व्रत'' कहते हैं। काश्मीरी पण्ड़ित इस शुभ दिन पर लडकी के हाथ से काता

हुआ कपास का धगा कलश के घडवे को बान्धते हैं। धागे को कश्मीर में ''पन्न'' कहते है, चूंकि इस गणेश पूजन में धागा (पन्न) का प्रयोग किया जाता है अतः इस पूजा को ''पन्नदान व्रत'' भी कहते हैं। हे ब्राह्मण देवता तुम भाद्रशुकलपक्ष में विध्यनुसार तथा श्रद्धा से गणेश ज़ी की पूजा कर के, अपनी शक्ति के अनुसार शुद्ध घी से पूडियाँ ''सवासेर'' आदि बनाकर भगवान् को अर्पण करने के पश्चात् आपका दारिद्रय समाप्त होगा और मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी। ब्राह्मण को सारे व्रत का विधान बतलाकर बूढ़े ब्राह्मण ने यह ''पन्नदान व्रत'' करने का दृढ़ संकल्प किया, चूंकि यह मास भाद्रमास का चल रहा था अतः मैंने शीघ्रातिशीघ्र यह व्रत मनाना है। इस भवाना से ब्राह्मण भिक्षा के लिये निकला, गणेश जी की कृपा से भिक्षा में उसको पर्याप्त धन मिला, उसने आने वाले शुभ मुहूर्त पर ही भाई-बन्धुओं तथा मित्रों को एकत्रित करके यह पन्नदान व्रत किया और हर वर्ष भाद्र शक्लपक्ष में इस ''पन्नदान व्रत'' को करने की प्रतिज्ञा की। गणेश जी कीं कृपा से वह ब्राह्मण धनधान्य से सम्पन्न हुआ और उसकी सभी मनोकामनायें सिद्ध हुई सर्वशास्त्र ज्ञाता तपस्वी सूत जी कहते है जो मनुष्य इस ''पन्नदान व्रत'' को करेगा। गणेश जी की कृपा से उसे धनधान्य की प्राप्ति होगी, निर्धन धनी होगा, बन्दी बन्धन से मुक्त हो जायेगा, सन्तानहीनों को सन्तान प्राप्ति होगी, रोगी निरोगी होंगे। विशेषता इस ''पन्नदान व्रत'' के करने से उलझनों में उलझे हुये गृहस्थियों की हर एक उलझन सुलझ जायेगी और हर एक मनोकामना सिद्ध होगी। पन्न कथा के अन्त में हाथ में ली हुई द्रमन फूल आदि कलश के घडवे पर डालते हुये पढें : **''उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा मनसा च नमस्कार करोमि नमः।''** पूडी सवासेर आदि सामने सभी सदस्य प्रसाद की थालियों को स्पर्श करें : **''अमृतेश मुद्रया अमृतीकृत्य अमृतम् अस्तु अमृतायतां नैवेद्यम्। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे श्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णों हस्ताभ्याम् आददे महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्मयै विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्राह्मणकलशदेवताभ्यः ब्रह्म विष्णु महेश्वर – देवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतु – पतये नारायणाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निष्वात्ता दिभ्यः पितृगणदेवता भ्यः। भगवते वासुदेवाय संकर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सहस्त्र नाम्ने विष्णवे लक्ष्मी सहिताय नारायणाय। भवाय देवाय शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय पशुपतये देवाय उग्राय देवाय भीमाय देवाय महादेवाय ईशानाय देवाय**

ईश्वराय देवाय उमा – सहिताय शिवाय – पार्वता सहिताय परमेश्वराय। विनायकाय एकदन्ताय कृष्न – पिंगलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्रांय हे रम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्ष्याय वल्लभासिहताय श्रीमहागणेशाय। कलीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूर – वाहनाय सेनायि – अना श्वाय एका श्वाय, नीलाश्वाय प्रत्यक्ष देवाय परमार्थ साराय तेजोरूपाय प्रभासिहताय आदितया। भगवत्यै आमयै कामायै वार्वग्यै टंकधारिण्यैतारायै पार्वत्यै भगवत्यै ज्वाला भगवत्यै व्रीडा – भगवत्यै वैखरी भगवत्यै वितस्य भगवत्यै गंगा भगवत्यै यमुना भगवत्यै कालिका भगवत्यै सिद्ध – लक्ष्म्यै महात्रिपुर सुन्दर्यै सहस्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै अभंयकरी – देव्यै क्षेमं करी भगवत्यै सर्व शुत्रु घातिन्यै इह राष्ट्राधिपतये आनन्देश्वर – भैखाय इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्ति हस्ताय, यमाय दण्ड हस्तायनैऋतये खड्गहस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजहस्ताय कुवेराय गदा – हस्ताय ईशानाय त्रिशूलहस्ताय, ब्रह्मणे पद्महस्ताय विष्णवे चक्र हस्ताय अनन्तातिदभ्यः अष्टाभ्यः कुल नाग देवताभ्यः अग्न्या दित्याभ्यां वरुण चन्द्रमोभ्यां कुमार भौमाभ्यां विष्णु बुधाभ्यां इन्द्रा बृहस्पतिभ्यां सरस्वती शुक्राभ्यां प्रजापति शनैरचराभ्यां गणपति राहुभ्यां रूद्र – केतुभ्यां ब्रहा-ध्रुवाभ्यां अनन्ता – गस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूमार्य ध्रुवाय अनन्ताय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिखादिभ्यः पंच चत्वा रिशंत् वास्तोष्पति याग देवताभ्यः ब्राह्मादिभ्यो मातृभ्यः गौयादिभ्यो देवताभ्यः राका देवताभ्याः त्रिका देवताभ्याः सिनीवाली देवताभ्यः ब्रार्हस्पत्य देवताभ्यः ॐ भू देवताभ्याः ॐ भूवो देवताभ्यः ॐ स्व र्देवताभ्यः रौद्री देवताभ्यः ॐ भूर्भव स्वर्देवताभ्यः अखण्ड ब्रह्माण्ड याग देवताभ्यः धूर्म्यः उपधर्म्यः महागात्र्यै सर – स्वत्यै हरे – कादिभ्यो वटुकादिभ्यः। उत्पन्नम् अमृतं दिव्यं प्राक् क्षीरो दधि मन्थनात् अन्नम् अम्त रूपेण नैवेधं प्रति गृह्यताम्। सामूहिक आरती "जय जगदीश" करें फिर से हाथ में फूल लेकर पढ़ें :-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भा भवेत्।।
असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योति र्गमय मृत्योर्माऽ मृतंगमय।
ॐ शान्ति शान्ति शान्ति।।

✸

वटुक पूज़ा

(शिवरात्रि पूज़ा)

शिव महिम्नस्तोत्रम् सहित

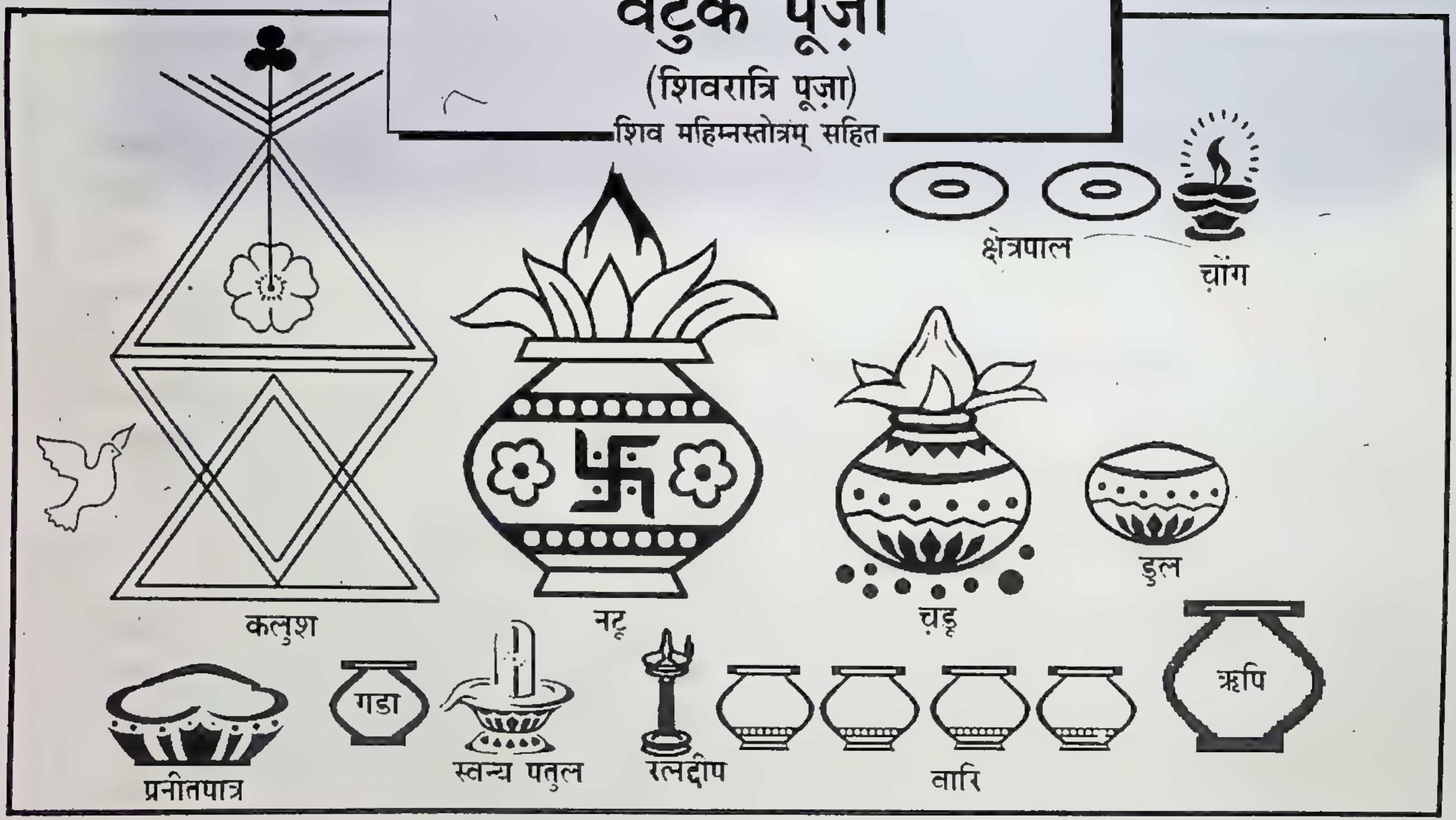

कलश की सामग्री

चूना या चावल का आटा (मुटठी भर), गणेश, कुमार, लक्ष्मी, सरस्वती, विश्र्वकर्मा की तसवीरें या प्रतिमा, एक घडा जिस में ज़रुरत के मुताबिक कलश के अखरोट रहें, तिलक, फूल, अर्घ्य, धूप, पानी, प्रणीतपात्र के लिये थाली।

वटुक सामग्री

बरतनों की सामग्री: एक नोट (शिव रुप), चार डुलिजियाँ (गण), चार वारि (छोटी घड़वियाँ), एक नारीकचलू या खोसु, दो छोटी घड़वियाँ (सत्रवारि), एक रत्नदीप, एक दीपक, एक बुल (चिलमची)

पूजा की सामग्री

सत्रपुतुल, सिन्दूर, कर्पूर, धूप, अगरबत्ती, कण्ठगण, घी, रूई, कन्द, फूल, (ब्यल वथर), चावल अघ्र्य के लिए , रूप वर्क (चान्दीवर्क), अखरोट, नाबद, किशमिश, न्या यज़ोपवीत, दूध, दही, ज़ंग के लिए एक थाली में चावल, नमक, सिक्का, एक अखरोट, नाबद, मधु, कण्ठघण, सुखे धान्य का घास, आसन बनाने के लिए आरियाँ लगभग १ ३, दर्भ, वुसर्य बनाने के लिए रक्षा सूत्र (नाखिन) फूलों की मालायें, माचिस सर्षप।

कलश पूज़ा

कलश को फूलों से सजा कर उसपर तिलक से ॐकार बनाऐं और पढें.

ॐकारो यस्य मूलं क्रम-पद-जठर-च्छन्द-विस्तीर्ण-शाखा, ऋक्पत्रं सामपुष्पं यजुर उचित फलः स्यात-अथर्व:प्रतिष्ठा। यज्ञच्छाया सुशीतो दूिजगण-मधुपैः-र्गीयते यस्य नित्यं शक्तिः सन्धया-त्रिकालं दुरितभयहरः पातु नो वेदव्रक्षः।। मुक्ता-विद्रुम-मुकटां तत्वात्मवर्णोत्मिकाम। गायत्रीं वरदाभयोङ्कुशकरां शूलं कपालं गुणं शङ्ख चक्रम अधार-बिन्द-युगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे।। आयातु वरदा देवी

त्र्यक्षरा ब्रह्मवादिनी। गायत्री च्छन्दसां मातर्ब्रह्मयोने नमोस्तु ते।। भद्रं पशयेम प्रचरेम भद्रं भद्रं वदेम श्रृणुयाम भद्रम। तत्रो मित्रो वरुणो मामहन्ताम-अदितिः सिन्धुः पृथिवीर-उत-द्यौः। अभि नो देवीरवसा, महः शर्मणा नृपत्नीं :, अच्छित्रपत्राः सचन्ताम। इहेन्द्राणीमुपहवये, वारुणानीं स्वस्तये, अग्नायीं सोमपीतये।। मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम, पिपृतां नो भरीमभिः।। तयोर-इत घृतवत पयो विप्रा रिहन्ति धीतिभिः, गन्धर्वस्य ध्रुवे पदे। स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी, यच्छाऽन शर्म सप्रथः।। अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णु-विचक्रमे, पृथिव्याः सप्त-धामभिः।। इंद विष्णु- विचक्रमे त्रेधा निदेधे पदम । समूह्यस्य पांसुरे ।। त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः , अतो धर्माणि धारयन। विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पृशे, इन्द्रस्य युज्यः सखा। तत् विष्णोः परमं पंद सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर-आततम।। तत विप्रासो विपन्यवो जागृवांस समिन्धते विष्णोर्यत परमं पदम ।। ॐ गायत्र्यै नमः ॐ भूर्भुवः-स्वः-तत-सवितु-र्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात।।

क्षेत्रपालो(डुलिजियो) को अर्घ्य डालते हुए पढें

अश्वमेधे घोराणामार्षम।। ॐ द्रष्ट्रे नमः उपद्रष्ट्रे नमोऽनुद्रष्ट्रे नमः ख्यात्रे नम उपख्यात्रे नमो, नुक्शास्त्रे नमः, श्रृण्वते नमः उपश्रृण्वते नमः, सते नमोऽसते नमो जाताय नमो जनिष्यमानाय नमो भूताय नमो भविष्यते नमः चक्षुषे नम श्रोत्राय नमो मनसे नमो वाचे नमो ब्रह्मणे नमः शान्ताय नमः तपसे नमः।।

कलश पर फूल चडाते हुए पढ़ें

ॐ आब्रह्मन ब्राह्मणो ब्रह्म-वर्चस्वी जायताम-अस्मिन राष्ट्रे राजन्य इषव्यः शूरो महारथो जायतां, दोग्ध्री धेनु र्वोढाऽनड्वान् आशुः सप्ति-र्जिष्णू-रथेष्ठः, पुरन्धि-र्योषा

सभेयो, युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे न: पर्जन्यो वर्षतु फलवतीर्न ओषधय: पच्यन्तां योगक्षेमो न: कल्पताम।।

अब विष्टर वाले प्रणीतपात्र में अर्घ्य, पुष्प, पानी, तिलक तथा तीन फूल चडाते हुए निम्नलिखित तीन मंत्र पढ़ें

1.संव्व: सृजामि ह्रदयं संसृष्टं मनो अस्तु व:।

2.संसृष्टास्तन्व: सन्तु व: संसृष्ट प्राणो अस्तु व:।

3.संय्याव: प्रियास्तन्व: संप्रिया ह्रदयानि व:।

4.आत्मा वो अस्तु सं प्रिय: संप्रियास्तन्वो मम।

(ज़ीवाधान)

प्रणीतपात्र के विष्टर से कलश, क्षेत्र पालों को पानी छिडकते हुए पढ़ें

१.अश्विनो प्राणस्तौ ते प्राणं दतां तेन जीव।

२.मित्रावरुणयो: प्राणस्तौ ते प्राणं दतां तेन जीव।

३.बृहस्पते:प्राण: स ते प्राणं दतांतु तेन जिव।

कलश के पूर्व में अर्घ्य फेकते हुए पढ़ें

ये देवा: पुर: संदोग्निनेत्रा रक्षोहणस्ते न: पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्य: स्वाहा। *कलश के दिक्षण में अर्घ्य फेकते हुए पढ़ें*

यं देवा दक्षिणात सदो यमनेत्रा रक्षोणस्ते न: पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्य: स्वाहा। *कलश के पश्चिम में अर्ध्य फेकते हुए पढ़ें*

ये देवा: पश्चात सदो मरुत नेत्रा रक्षोहणस्ते न: पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्य: स्वाहा।

कलश के उत्तर दिशा की ओरअर्ध्य फेक्ते हुए पढ़ें

ये देवा उतरात् सदो मित्रावरुण-नेत्रा रक्षोहणस्ते न: पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्य: स्वाहा। *अपने आप को तिलक लगाते हुए पढ़ें* अध्वर्योयं यज्ञो अस्तु देवा ओषधीभ्य: पशुभ्यो मे धनाय। विश्र्वस्मै भुताय ध्रुवो अस्तु देवा: स पिन्वव घटवत-देवयज्ञ। *अर्ध्य और फूल चढाते हुए पढ़ें*

इहैवैधि मा पच्योष्ठाः पर्वता इवाविचाचलत। इन्द्र इवेह ध्रव-तिष्ठेह ज्ञमुदारय। *दो दर्भ के तिनके अपने आसन के रुप में रखते हुए पढ़ें* इमम-इन्द्रो अदीधरत-ध्रुवं ध्रवेण हविषा हविः। तस्मै सोमो अधिब्रवतस्मा उ ब्रह्मणस्पतिः। *कलश के सामने दो तिनक दर्भ के छोड़ते हुए पढ़ें* ध्रुवा द्यौर्धुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्र्वमिदं, जगत ध्रुवो राजा विशामसि। *पृथ्वी माता को तिलक फूल तथा अर्घ्य लगाते हुए पढ़ें* मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम । पिपृतां न भरीमभिः। *आकाश की ओर अर्घ्य फेकते हुए पढ़ें*

बडित्था पर्वतानां क्षेत्रं बिभर्षि पृथिवि प्रया भूमिं प्रवत्वति महना जिनोषि महिनि। *आटे या चूने से लिखे अष्टदल के उत्तर पश्चिम कोने (गणेश) पर पुष्प, अर्घ्य, तिलक आदि लगाते हुए पढ़ें*

निषुसीद गणपते गणोषुत्वामाहु-विप्रतमं कवीनाम। न ऋते त्वत्क्रियते किंचारे महामर्कं मघवंश्चित्रमर्च। *अष्टदल के पश्चिम दक्षिण कोने पर पुष्प, अर्घ्य, तिलक आदि लगाते हुए पढ़ें (कुमार जी)*

कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे। अनीकमस्य नमिनज्जनासः पुरा पश्यन्ति निहितमरतौ। *अष्टदल के पूर्वोत्तर के कोने पर (लक्ष्मी) पर पुष्प, अघर्य, तिलक आदि लगाते हुए पढ़ें*

अश्र्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम। *अष्टदल के उत्तर के कोने पर (सरस्वती) पर पुष्प, अघर्य, तिलक आदि लगाते हुए पढ़ें* इयं शुष्मेभि विसखा इवारुजत-सानुर्गिरीणान्त-र्विश्र्वभिर-ऊर्मिभिः।पारावतघ्नीम-अवसे सुवृक्तिभिः सरस्वतीम - आविवासेम धीतिभिः। *अष्टदल के बीच में (लक्ष्मी) पर अघर्य , तिलक आदि लगाते हुए पढ़ें*

कास्यस्मितां हिरण्य प्राकाराम- आर्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां

तर्पयन्तीम। पद्मवर्णां ताम-इहोपहवये श्रियम। *पूर्व दक्षिण कोने पर (विश्वकर्मा) पुष्प, अर्घ्य, तिलक आदि लगाते हुए पढ़ें*

विश्वकर्मा विश्वदेवो विश्व ज़ित विश्वदर्शित:। ते त्वा घृतस्य धारया श्रैष्ठाय समसूषत। *–बीच में रखें हुए कलश (गडवे) में अर्घ्य, तिलक लगाते हुए पढ़ें* ब्रह्मा देवानां पदवी: कवीनाम - ऋषिर्विप्राणां महिषो मृगानाम। श्येनो गृदध्रणां स्वधिति:- वनानां सोम:पवित्रम- अत्येति रेभन। प्रेतत-विष्णु: स्तवते वीर्येण मृगो न भीम: कुचरो गिरिष्ठ:। यसयोरुषु त्रिषु विक्रमणेष्व-धिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा। यो रुद्रो अग्नौ योऽप्सु य ओषधीषु यो वनस्पतिषु। योरुद्रा विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवा:।। अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवम् -ऋत्विजम्। होतारं रत्नधातमम ।। इषे त्वोर्जे त्वा वायव: स्थो, पायव: स्थ देवो व: सविता प्रार्पयत, श्रेष्ठतमाय कर्मणे ।। अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये निहोता सत्सि बर्हिषि।। शन्नो देवीर -अभीष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरऽभि स्त्रवन्तु न: ।। आहं पितृन सुविदत्रां अवित्सि न पातञ्च विक्रमणं च विष्णो:।। बर्हिषदो ये सुधया सुतस्य भाजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठा:।। वषटते विष्णावास आकृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम। वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभि: सदान:।। फाल्गुने शक्ति सहिताय चक्रिणे नम:, क्रियासहिताय दामोदराय नम:। दुर्गायै त्रयमबकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निष्वात्तदिभ्य: पितृगणदेवताभ्यो नम: ।। (प्रधान) रात्रीं प्रपद्ये जननीं सर्वभूत-निवेशिनीम । भद्रां भगवतीं कृष्णां विश्वस्य जगतो निशाम।। संवेशिनीं संयमनी ग्रहनक्षत्रमालिनीम। प्रपन्नोहं शिवां रात्रीं भेद्र पारमशीमहि नम:। कालरात्र्यै नम: तालरात्र्यै नम: राज्ञिरात्र्यै नम: शिवरात्र्यै नम:। यो रद्रो अग्नौ य अप्सु य ओषधीषु यो वनस्पषि। यो रुद्राय विश्वाभुवना विवेश तस्मै

रुद्राय नमो अस्तु देवाः। *सभी क्षेत्रपालों (डुलिजियों) पर अर्घ्य, डालते हुए पढ़े)* क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव जयामसि गामश्र्वं पोषयित्वा स नो मृडातीदृशे नमः हेरंकादिभ्यो नमः बटुकादिभ्यो नमः।। यौ ते श्र्वानौ यमरक्षतारौ चतुरक्षौ पथिरक्षी नृचक्षसौ । ताभ्यामेनं परिदेहिराजं - स्वस्ति चास्मा अनमीवञ्च धीहि।। यत्र वेत्थ वनस्पते देवानां गुह्या नामानि तत्र हव्यानि गन्तय।। मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञात-यक्ष्माद उत राजयक्ष्मात। ग्राहि जग्राह यदि वैतदेनन्तस्या इन्द्राग्नी प्रमुक्तम एनम। । आत्मनस्-तम्-इंद विवृहामि ते।। तद्विष्णु परमं पदं सदा पश्यन्ति सूर्यः दिवीव चक्षुराततम्। तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवासंः समिन्धते, विष्णोर्यत्परमं पदम्।। *कलश के समीप नैवेद्य रखकर निम्लिखित (नैवेद्य) मन्त्र पढ़ें*

सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्र्वि नोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्यामादधे। महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्र्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णुमहेश्र्वरदेवताभ्यः चातुर्वेदेश्र्वराय सानुचराय।। ऋतुपतये नारायणाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय, यज्ञपुरुषाय अग्निष्वात्तादिभ्यः पितृगणयागदेवताभ्यः भगवते भवायदेवाय शर्वायदेवाय रुद्रायदेवाय पशुपतयेदेवाय उग्रायदेवाय भीमायदेवाय महादेवाय ईशानायदेवाय पार्वतीसहिताय परमेश्र्वराय।। अजैकपर्दिने अहिर्बुध्नयाय कृत्तिवाससे पिनाकभृते सिन्धवे बहुरूपाय हराय त्र्यम्बकाय त्रिनेत्राय वृषभ-वाहनाय शत-रुद्रेश्र्वराय मृत्युञ्जयभट्टारकाय। विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिङ्गलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्ष्याय वल्लभासहिताय महागणेशाय। क्लींकां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधियतये कुमाराय। भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्गयै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै

सहस्त्रनाम्नयै देव्यै भवान्यै। विष्णुपञ्चयतनदेवताभ्य: अभयङ्करीदेव्यै क्षेमङ्करीभवान्यै सर्वशत्रुघातिन्यै इह राष्ट्राधिपतये *(अपने भैरव का नाम लें)* अमुकभैरवाय हेरकादिभ्यो वटुकादिभ्य: *(तिल, चावल, दूध, मुधु से मिलाया, हुआ)* तिलतण्डुलमात्रं दधिमधुमिश्रं ॐ नमो नैवेधं निवेदयामि नम:।।

कलश पर पुष्प, अर्घ्य, चडाते हुए पढ़ें हिरण्यगर्भ: समवर्त-नाग्ने भूतस्य जात: पतिर्-एक आसीत्। स दाधार पथिवीं द्याम्-उतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।। य: प्राणतो निमिषतश्च राजा पतिर्विश्वस्य जगतो बभूव। ईशेयो अस्य द्विपदश्-चतुष्पद: कस्मै देवाय हविषा विधेम।। ये ओजदा बलदा यस्य विश्र्व उपासते प्रशिषं यस्य देवा:।
यस्य छायामृतं यस्य मृत्यु: कस्मै देवाय हविषा विधेम।। येन द्यौर्-उग्रा पृथिवी दृढा येन सुस्तम्मितं येन नाकम।। यो अन्तरिक्षं विममे-वरीय: कस्मै देवाय हविषा विधेम।। य इमे द्यावा पृथिवी तस्तभाने आधारय द्रोधसी रेजमाने। यस्मिन्-नधि वितता: सूर एति कस्मै देवाय हविषा विधेम। यस्येमे विश्र्वे गिरयो महित्वा समुद्रं यम्य रसया सहाहु:।
दिशो यस्य प्रदिश: पञ्चदेवी कस्मै देवाय हविषा हविषा विधेम। आपो ह यन्महती विश्र्वम्-आयु:- गर्भं दधाना जनयन्तीर्-अग्निम्।। ततो देवानां निरवर्त तासुर्-एक: कस्मै देवाय हविषा विधेम।। आ न: प्रजाञ्-जनयतु प्रजापति धार्ता दधातु सुमनस्यमान:। संवत्सर त्ऋतुभिश्चाक्लृपानो मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधातु।। अर्चन्तस्र्वा हवामहे अर्चन्त: समिधीमहि, अग्नेर्-अर्चत ऊतये अर्चत प्रार्चत प्रियमेधसो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्णाम्-अर्चत अर्चत।।

।।इति कलशस्थापनम्।।

वटक पूज़ा

परिवार में जिस सदस्य ने शिवरत्रि व्रत रखा होगा वह नए अथवा स्वच्छ वस्त्रों को धारण कर परिवार के अन्य सदस्यों के सहयोग से सामग्री एकित्रत करते हुए भगवान् शंकर का ध्यान करें और 'ओ३म् नमः शिवाय' का उच्चारण करते रहें। अपनी-अपनी रीति के अनुसार वटुक को सजा कर आसन (आरियों) पर रखें। यजमान नया यज्ञोपवीत धारण करें। परिवार के अन्य सदस्य भी नया यज्ञोपवीत धारण करें। यज्ञोपवीत धारण करते हुए 'ज़ंग' भी रखें और गायत्री मन्त्र पढ़ें। थाली में अथवा भद्रपीठ पर सञ्पतुल या पार्थिश्वर रख कर नारीकचलू या खोसू से पात्र में जल की धारा डालते हुए पढ़ें।

अस्य श्री आसन शोधन मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन शोधने विनियोगः।

पृथ्वी को तिलक लगा कर फूल चावल चढ़ाते हुए पढ़ें

प्रीं पृथिव्यै आधार शक्त्यै समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः, पुष्पं नमः।

हाथ जोड़ कर पढ़ें पृथवी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु च आसनम्। *दर्भ के दो तिनके दोनों हाथों की अनामिका अंगुलियों में रख कर गणेश जी का ध्यान करते हुए पढ़ें*

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्याये-सर्वविघ्नोपशान्तये नमः। अभिप्रतार्थ सिद्धयर्थ पूजितो यः सुरैर् अपि सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपते नमः। कर्पूरगौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेद्रं हारम्। सदा रमन्तं हृदयारबिन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः, गुरुदेव जगत्सर्व तस्मै श्री गुरुवे नमः। गुरवे नमः। परम गुरवे नमः परमेष्ठ गुरवे नमः, परमाचार्याय नमः, आदि सिद्धेभ्यो नमः।

दर्भ के दो तिनके पकड़ कर इस तरह अङ्गन्यास कीजिए -

हृदय को दोनों हाथों से छूते हुए पढ़ें

ॐ यो रुद्रो अग्नौ हृदयाय नमः *सिर को स्पर्श करते हुए पढ़ें* यो अप्सु य औषधीषु शिरसे स्वाहा, *चोटी को छूते हुए पढ़ें* यो वनस्पतिषु शिखायै वषट् *कानों को छूते हुए पढ़ें* यो रुद्रो विश्वाभुवना विवेश कवचाय हुम्। *आखों को छूते हुए पढ़ें* तस्मै रुद्राय नेत्राभ्यां वौषट् *चुटकी मार कर प्राणायाम करते हुए पढ़ें* नमो अस्तु देवा अस्त्राय फट् *चारों ओर तिल फैंकते हुए पढ़ें* अपसर्पन्तु ते भूता ये भुवि संस्थिताः, ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया। *प्राणायाम करके हृदय और मुख को जल की छीटें देते हुए पढ़ें*

तीर्थे स्नेयं तीर्थम् एव समानानां, भवति मानः शंस्यो
अरुरुषो धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

अनामिका अंगुली (पहले पर्व अर्थात् गण्ड) पर पवित्र धारण करें और पढ़ें शतधारं वसूनां पवित्रम् असि सहस्त्रधारम अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्ति। *यजमान को तिलक लगाते हुये (ज़ंग भी लगायें) पढ़ें* मन्त्रार्थाः सफलता सन्तु पूर्णा मन्तु मनोरथा शत्रुणां बुद्धि नाशो अस्तु मित्राणाम् उदयः तव आयुर् आरोग्यम् ऐश्वर्यम् एतत् त्रतियम् अस्तु ते! जीव त्वं शरदः शतम। *यजमान नारिवन को बांध कर अपनी मध्यमा अंगुली से अपने आपको तिलक पुष्प लगाते हुये पढें* परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंच भूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधार शक्तयै समालभनं गन्धोनमः। अर्घनमः। पुष्पं नमः।

दीपक को तिलक लगाते पढ़ें स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतः तिमिरा अपहः, प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पिपतः।

धूप को तिलक अर्घ पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें वनस्पति रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्ध-उत्तमः, आहवानं सर्वदेवानां धूपोयं प्रति गृह्यताम् परिकल्पितः। *सूर्य देवता को निर्माल्य के थाल में अघर्य चावल, फूल चढ़ाते हुये पढ़ें* नमो धर्म

निधानाय, नमः स्वकृत साक्षिणे, नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः। *दर्भ सहित कटोरी से शिवलिंग अथवा सञ्पुतलू पर जलधारा डालते हुये पढ़ें* यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुर् भ्रातापि नो यत्र सुहृत् जनश्च, न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्र आत्मदीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय आधार शक्तयै धूप दीप संकल्पात् सिद्धिर अस्त धूपो नमः, दीपो नमः।

ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुण मासस्य कृष्णापक्षस्य तिथौ द्वादश्यां *(यदि द्वादश्यां दिवा हो)*/ परतः *त्रयोदश्यां (जो भी वार हो)* वासरा नित्वायां महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वारदेवताभयः प्रजापतये ब्राह्मणे कलश देवताभ्यः ब्रह्म-विष्णु-महेश्वर देवताभ्यः चतुर्वेदेश्वराय सानुचराय मासपतये नारायणाय फाल्गुने शक्ति-साहिताय चक्रिणे क्रिया-सहिताय गोविन्दाय दुर्गायै त्रयम्बकाय वरुणाय यज्ञ-पुरुषाय अग्नि ष्वातादिभ्यः पितृगण देवताभ्यः भगवते भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय ह्लीं श्रीं देवीपुत्राय वटुकनाथाय कालरात्र्यै तालरात्र्यै राज्ञिरात्र्यै शिवरात्र्यै समस्त क्षेत्रपालेभ्यः धूपदीप संकल्पात् सिद्धिर् अस्तु धूपो नमः दीपो नमः।

बायां यज्ञोपवीत रखकर तिल सहित पानी से पितरों को जल देते हुये सञ्पुतलू पर जलधारा डालते हुये पढ़ें (धारा अंगूठे की तरफ से गिरनी चाहिए)

समस्त माता पितृभ्यो द्वादश दैवतेभ्यः पितृभ्यो शिवरात्रिवृतनिमित्तं-धूपः स्वधा दीपः स्वधा

दाईं भुजा में यज्ञोपवीत धारण करके विष्टर अथवा दर्भ के जल से पूर्ण खोसू या नारी कचलू में तिलक और तीन पुष्प डालते हुये पढ़ें

सं वः सृजामि हृदयं, संसृष्टं मनो अस्तुवः संसृष्टा तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणोऽस्तु वः। संख्या वः प्रियास्तन्वः

संप्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियाः तन्वोमम। *इसी खोसू के जल से सञ्पुतलू अथवा शिवलिंग या पार्थिवेश्वर और सारे वटुक नाथ को जल की छीटें दर्भ के तिनकों अथवा विष्टर से देते हुये पढ़ें*

अश्विनोः प्राणः तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव, मित्रा वरुणयोः प्राणः तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव बृहस्पतेः प्राणः सते प्राणं ददात् तेन जीव। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः जीवादानं परिकल्पयामि नमः। *गायत्री मन्त्र तीन बार पढ़ें*

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।। *अब पढ़ें*

ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुन मासस्य कृष्णपक्षस्य तिथौ महापर्वणि द्वादश्यां परतः त्रयोदश्यां *(जो भी वार हो)* वासरान्वितायां, भगवतः भवस्य देवस्य, ईशानस्य देवस्य, महादेवस्य पार्वती सहितस्य परमेश्वरस्य देवीपुत्र वटुक नाथस्य कालरात्र्याः तालरात्र्याः शिवरात्र्याः समस्त शिवरात्रि देवतानां अर्चाम् अहं कारिष्ये ॐ कुरुष्व।

हाथ में पहले से पकड़े हुए दर्भ के दो तिनके निर्माल्य में छोड़कर थोड़ा तिल सर्षप और जव को लेकर कंधो पर से फेंकें, अब शंकर की मूर्ति के सामने दर्भ के दो तिनके (दर्भ के अभाव में दो फूल) आसन के रूप में डालते हुए पढ़ें ॐ विश्वेश्वर महादेव राजराजेश्वर श्वर आसनं दिव्यम् ईशान दास्याभि अहं परमेश्वर भगवतः भवस्य देवस्य महादेवस्य पार्वती सहितस्य परमेश्वरस्य इदम आसनं नमः।

चावल सहित दर्भ के दो तिनके अनामिका और मध्यमा अंगुलि पर अँगूठे से दबा कर यदि घंटी आपके पास हो बाएँ हाथ से बजाते हुए पढ़ें भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, पशुपतये देवाय रुद्राय देवाय भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय, ईश्वराय देवाय महादेवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय देवी पुत्र वटुक नाथाय कालरात्र्यै समस्त्

शिवरात्रि देवताभ्यः युष्मान् पूजामि ॐ पूजय।
चावलों को कंधों पर से फेंक कर दर्भ के पहले से रखे हुए दो तिनकों को हाथ में रख कर नए चावल के दानों के सहित पकड़ कर पढ़ें
भगवन्तं भवं देवं, शर्वं देवं, रुद्रं देवं, पशुपतिं देवं, उग्रं देवं, भीमं देवं, ईशानं देवं, ईश्वरं देवं, महादेवं, पार्वतीसहितं परमेश्वरं देवीपुत्र वटुक नाथं कालरात्री तालरात्री शिवरात्री समस्त शिवरात्रि देवता आवाहयिष्यामि, ॐ आवाहय।।
भगवान् शंकर की मूर्ति पर फूल चढ़ाते हुए पढ़ें
लिंगेऽद्य भक्त-दयया क्षणमात्रम् एकं स्थानं निधाय भव मत विहितां पुरारे। सर्वेश विश्वमय। हृत् कमलादि रूढ पूजां गृहाण भगवन् भव मे अद्य तुष्टः। भूमेर् जलात् च पवनात् अनलात् हिमांशोर् उष्णार्चिषो हृदयतो गगनात् समेत्य, लिंगद्य सन्मणिमये मत् अनुग्रहार्थं भक्तयैक लभ्य। भगवन् कुरु सन्निधानम् भगवन् पार्वतीनाथ भक्तानुग्रह कारक अस्मत् दयानुरोधेन सन्निधानं कुरु प्रंभो।। *दोनों हाथों में मुट्ठी भर फूल उठाकर तीन बार गायत्री पढ़ कर भगवान् शंकर पर चढ़ाते हुए पढ़ें* इति आहूय तु गायत्रीं त्रिसम् उच्चार्य तत्त्ववित्, मनसा चिन्तितैर् द्रव्यै देवम् आत्मनि पुनर्यजेत्। पूजयेत्, तेजोरूपं ततः क्षिप्तवा प्रतिमायां पुनर्यजेत् *दोनों कन्धों से जव फेंक कर प्राणायाम करें और खोसू में जल डालते हुए पढ़ें* पाद्यार्थम् उदकं नमः, शन्नो देवीर् अभिष्टये आपो भवन्तु पीतये, शंयोर् अभि स्रवन्तु नः। *अब यही खोसू हाथ में लेकर पढ़ें*
भगवन्तः पाद्यं पाद्यम् *खोसू का जल भगवान् शंकर पर डालते हुए पढ़ें* महादेव महेशान महानन्द परात् पर गृहाण पाद्यं मत् दत्तं पार्वती परमेश्वर। भगवते भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय देवीपुत्र वटुक नाथाय, कालरात्र्यै तालरात्र्यै शिवरात्र्यै समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः पाद्यं नमः।। *इस पाद्य से बचा हुआ जल निर्माल्य पात्र में*

डालकर खोसू में फिर से जल डालते हुए पढ़ें शन्नो देवीर् अभीष्टय ।ापो भवन्तु पीतये शंयोर् अभि स्रवन्तुन:

दर्भ, जल, दूध, घी, दही, चावल से बने अर्घ्य को जल में डाल कर शंकर भगवान् पर अथवा ससञ्युतलू पर डालते हुए पढ़ें भगवन्तो अर्ध्यम् अर्घ्यम्। त्र्यम्बकेश सदाचार विपदां प्रतिघातक अर्घ्यं गृहाण देवेश सम्प्त् सर्वार्थ साधक। भगवन् भवदेव पार्वती सहित परमेश्वर देवीपुत्र वटुक नाथ कालरात्रि तालरात्रि राज्ञिरात्रि शिवरात्रि समस्त शिवरात्रि देवता: इदं वोऽर्घ्यं नम:।

अब भगवान् शंकर को पंच दश स्नान इस प्रकार कीजिए, जल, दूध, दही, शहद, घी, फूल, सर्षप इन सब को मिलाकर शिवलिंग पर जल की धरा डालते हुए पढ़ें

1. असंख्याता: सहस्त्राणि ये रुदा अधिभूम्यां, तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि

2. योस्मिन् महति अर्णवे अन्तरिक्षे भवा अधि। तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि

3. ये नीलग्रीवा: शतिकण्ठा दिवं रुद्रा उपाश्रिता, तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि

4. ये नीलग्रीवा शिति कण्ठा शर्वा अध: क्षमा चरा तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि

5. ये वनेषु शिषिपिंजरा नीलग्रीवा विलोहिता: तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि

6. ये एतावन्तो वाभूयां सो वा दिशो रुद्रा वितिष्ठिरे तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि

ॐ यो रुद्रो अग्नौ यौ अप्सु य औषधीषु यो वनस्पतिषु। यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवा:। भगवते भवाय देवाय उमा सहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय पंचदश स्नानं परिकल्पयामि नम:।

देवता तथा पितरों के लिए चावल, दही, तिल और घी सहित जल से तर्पण करते हुए पढ़ें ब्रह्मादया देवा:

तृप्यन्ताम् *गले में यज्ञोपवीत रखकर पढ़ें* सनकादय: ऋषय: तृप्यन्ताम्

यज्ञोपवीत बाएँ तरफ रख कर पढ़ें

अग्नि ष्वात्ता दय: पितर: तृप्यन्ताम् तृप्यन्ताम् तृप्यन्ताम्।

यज्ञोपवीत दायाँ रख कर पढ़ें ॐ नमो देवेभ्य:।

यज्ञोपवीत गले में रख कर पढ़ें स्वाहा ऋषिभ्य:

बायाँ यज्ञोपवीत रखकर पढ़ें स्वधापितृभ्य:,

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढ़ें आब्रह्म स्तम्ब पर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं जगत् तृप्यतु तृप्यतु तृप्यतु।

शंकर भगवान् या सञ्पुतलू पर फिर से स्नान के निमित्त जलधारा डालते हुए पढ़ें

त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकम् इव बन्धनात् मृत्योर मुक्षीय मामृतात्। शिवरात्रि देवताभ्य: मन्त्रगुडकं नम:।

बाईं हथेली के मध्य में थोड़ा सा चावल सहित जल और उसी हाथ की तर्जनी और अँगूठी में थोड़ा सा चावलों सहित जल लेकर उसी हाथ को देवताओं यानी वटुक राज के चारों ओर घुमाकर उस जल और चावलों को बाएँ कंधे पर से फेंकते पढ़ें (यानी आलथ निकालते हुए पढ़ें)

रक्षोहणं वाजिनम् आजिघर्मि मित्रं पृथिष्ठम् उपयामि शर्म। शिशानो अग्नि: क्रतुभि: समिद्धः सनो देव: सरिष: पातु नक्तम्। शिवरात्रि देवताभ्य: आरात्रिकां परिकल्पयामि नम:।

दाएँ अँगूठे तथा तर्जनी यानी अँगूठे की साथ वाली अंगुलि से सञ्पुतलू शिव मूर्ति का स्पर्श करके अपने नेत्रों से लगाते हुए पढ़ें।

भवाय देवाय उमासहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय नेत्र स्पर्शनं नम:।

अब जहाँ शंकर की मूर्ति कौ बिठाना हो वहाँ फूलों से आसन सजाते हुए पढ़ें

आसनाय नम: वृषभासनाय नम: शतदल वृषभ आसनाय

पद्मासनाय नमः सहस्त्रदल पद्मासनाय नमः।
अब सोने के वर्कों और मालाओं से शंकर भगवान् तथा वटुक नाथ को सजाकर महिम्नापार तथा देवी के श्लोक पंचस्तवी आदि के श्लोक पढ़ते हुए फूल चढ़ाते जायें। भगवान् शंकर पर वस्त्र के रूप में फूल चढ़ाते हुए यह श्लोक पढ़ें कालाग्निरुद्र सर्वज्ञ वरदाऽभयदायक वस्त्रं गृहाण देवेश दिव्य वस्त्रोप शोभितम्। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः वस्त्रं परिकल्पयामि नमः।
यज्ञोपवीत के रूप में पुष्प चढ़ाते हुए पढ़ें
यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्, आयुष्यम् अग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीत् बलम् अस्तु तेजः। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः यज्ञोपवीतं परिकल्पयामि नमः।। *शंकर की मूर्ति वटुक नाथ को तिलक, सञ्युतलू को चन्दन तथा बाक़ी पात्रों को सिंदूर लगाते हुए पढ़ें*

त्रिपुरान्तक देवेश पार्वती प्राण वल्ल्भ। गृहाण गन्धं काश्मीर चन्द्रचन्दन कल्पितम्। भगवते भवाय देवाय, महादेवाय, ईशानाय देवाय, उमासहिताय शिवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय देवीपुत्र वटुकनाथाय कालरात्र्यै तालरात्र्यै शिवरात्र्यै समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः अर्घोनमः पुष्पं नमः।
(धूप आलनावुन)
महादेव मृढानीश जगत ईश निरंजन धूपं गृहाण देवेश साज्यं गुग्गुल कल्पितम्। *(रत्न दीप और काफ़ूर आलनावुन)*
ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य फाल्गुन मासस्य कृष्णपक्षस्य तिथौ समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः रत्नदीपं परिकल्पयामि नमः *'दर्भ हुड़' से चामर करते हुए आरती करें* ॐ अतिभीषण कटुभाषण यमकिङ्कर पटली, कृत ताडन परिपीडन मरणागम समये। उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्। अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु सञ्चय दलिते,

पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण चलिते। शिवया सह ममचेतसि शशिशेखर निवसन्, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्। भव-भञ्जन सुर-रञ्जन खलवञ्चन पुरहन्, दनुजान्तक मदनान्तक रविजान्तक भगवन्। गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम। शक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये, कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये। द्विज क्षत्रिय वनिता शिशुदर कम्पित हृदये, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम। भवसम्भव विविधामय परिपीड़ितवपुषं, दयितात्मज ममताभर कलुषी कृत हृदयम्। करु मां निजचरणार्चन निरतं भव सततं, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्। शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्।।

ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुनमासस्य कृष्णपक्षस्य द्वादश्यां परतः त्रयोदश्यां तिथौ समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः चामरं परिकल्पयामि नमः।

फूल चढ़ाते हुए पढ़ें नवरत्नमयं दिव्यं मुक्ता जाल विभूषितम् गृहाण छत्रं भगवान् शिव भद्रासन प्रद। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः छत्रं परिकल्पयामि नमः। *आईना दिखाते हुए पढ़ें*

एताभ्यः समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः आदर्शं परिकल्पयामि नमः *फिर से वटुक नाथ आदि को फूल चढ़ाते हुए पढ़ें*

एताभ्यः समस्त शिरात्रि देवताभ्यः वासो नमः

नमस्कार करते हुए पढ़ें एतासां देवतानाम् अर्घ्यदानादि अर्चन विधि सर्वः परिपूर्णः अस्तु।

दूध कन्द या नाभद आदि वटुक में डालते हुए पढ़ें

क्षीराज्य मधु सम्मिश्रं शुभ्रदध्ना समन्वितम्। षड् रसैश्च समायुक्तं गृहाण अन्नं निवेदये। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः मात्रा मधुपर्क चरुं नैवेधं समर्पयामि नमः।

फूलों की अंजलि चढ़ाते हुए पढ़े

हर विश्वा खिलाधार निराधार निराश्रय पुष्पाँजलिम् इमं शम्भो गृहाण वरदो भव। समस्त शिवरात्रि देवताभ्य: पुष्पाँजलिम् समर्पयामि नम:। *मन से अर्ध परिक्रमा करते हुए पढ़ें*

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्या-दिकानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति शिवस्यार्ध प्रदक्षिणात्

भगवान् शंकर पर फूल चढ़ाते हुए पढ़ें

नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय, भस्मांग रागाय महेश्वराय। देवधि देवाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय ॐ नम: शिवाय। मातङ्ग-चरमाम्बर-भूषणाय, समस्त-गीर्वाण-गणार्चिताय। त्रैलोक्य नाथाय पुरान्तकाय, तस्मै मकाराय ॐ नम: शिवाय। शिवा-मुखाम्भोज-विकासनाय दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय। चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय तस्मै शिकाराय ॐ नम: शिवाय। वशिष्ठ-कुम्भोत्-भव गौतमादि-मुनीन्द्र-वन्द्याय गिरीश्वराय। श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै वकाराय ॐ नम: शिवाय। यज्ञ-स्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय। नित्याय शुद्धाय निरंजनाय तस्मै यकाराय ॐ नम: शिवाय।

आत्मा त्वं गिरिजा मति: सहचरा: प्राणा: शरीरं गृहं पूजा ते विषय उपभोग रचना, निद्रा समाधि स्थिति:। संचार: पदयो: प्रदक्षिण विधि: स्त्रोत्राणिसर्वा गिर:। यत् यत् कर्म करोमि तत् तत् अखिलं शम्भो: तव आराधनम।

उभाभ्यां जानुभ्यां शिरसा उरसा वचसा नमस्कारं करोमि नम:।

चावल (ज़ंग) आदि को (लव देते हुए) संकल्प करते हुए पढ़ें

अन्नं नम:अन्नं नम: आज्यं अन्नम् अद्य दिने अद्य यथा संकल्पात् सिद्धिर् अस्तु। अन्न हीनं विधि-हीनं द्रव्य-हीनं यत् गतं तत्सर्वम् अछिद्र सम्पूर्णम् अस्तु एवम् अस्तु

खोसू में दाएँ हाथ की अंगुलियों के ऊपर से जल डाल कर उसी जल से शंकर भगवान तथा वटुक नाथ आदि को जल आचमन के रूप में देते हुए पढ़ें

शं नो देवीर् अभिष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभि स्रवन्तु नः, समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः अपोशानं नमः आचमनीयं नमः *फिर से दायें हाथ की अंगुलियों के ऊपर से खोस में जल डालकंर उस में सिक्के के रूप में कुछ दक्षिणा भी डालें, वह दक्षिंणा सभी वटुक नाथ आदि को अर्पण करते हुए पढ़ें*

शंनो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभिस्रवन्तु नः समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः दक्षिणायै तिल हिरण्य रजत निष्कर्णं ददानि। *फिर से कुछ सिक्के आदि अर्पण करते हुए पढ़ें* एता देवताः सदक्षिणान् अनेन प्रीयन्तां प्रीतांः सन्तु।

वटुक नाथ को फूल चढ़ाते हुए पढ़ें

नाथं नाथं त्रिभुवन नाथं भूति सितं त्रिशूल धरं उपवीती कृतं भोगिनम् इन्दु कलाशेखरं वन्दे।

वैश्वदेव विधि

(अपनी रीति के अनुसार वेश्वदेव विधि की जिए) वटुक नाथ के सामने ही अग्नि जलाकर, उस अग्नि के दक्षिण पश्चिम कोण पर विष्टर (दर्भ) तिल और चावल पानी सहित एक कटोरी रखें (यह प्रणीत पात्र कहलाता हैं) इस प्रणीत पात्र में तीन बार फूल डालते हुए पढ़ें

1. संवः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः
2. संसृटा तन्वः सन्तु वः, संसृष्टः प्राणो अस्तु वः
3. संय्यावः प्रिया स्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः,

आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रिया स्तन्वो मम

दर्भ के दो तिनके अग्नि में जलाकर दाएँ ओर फेंकते हुए पढ़ें निर्दग्धं रक्षो निर्दग्धा रातिर् अपाग्ने, अग्नि मामांद जहि निष्क्रव्या दं देवयजनं वह *प्राणायाम करके अग्नि के दाएँ ओर रखें हुए प्रणीतापात्र में से नौ बार दर्भ से पानी*

छिड़कते हुए पढ़ें

1. ऋतंत्वा सत्येन परिसमू ह्यामि।
2. सत्यं त्वर्तेनं परिसमूह्यामि।
3. ऋत्त सत्याम्यां त्वा परिसमूह्यामि।
4. ऋतं त्वा सत्येन पर्युक्षामि।
5. सत्यं त्वर्तेन पर्युक्षामि।
6. ऋत सत्याभ्यां त्वा पर्युक्षामि।
7. ऋतं त्वा सत्येन परिषिंचामि।
8. सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि।
9. ऋत सत्याभ्यां त्वा परिषिञ्चामि।

अग्नि के चारों ओर दर्भ के चार तिनके पूर्व, दक्षिण, उत्तर और पश्चिम से छोड़ते हुए पढ़ें यज्ञस्य सन्ततिर्-असि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै स्तृणामि। *अग्नि को तिलक फूल चढ़ाते हुए पढ़ें*

अग्नये शुकारूढाय स्वाहासहिताय त्रिनेत्राय तेजोरूपाय सभालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः *घी सहित पकाए हुए अन्न या रोटी पर दर्भ के दो तिनके लगाते हुए पढ़ें* वैश्वदेवस्य सिद्धस्य सर्वगतोग्ग्रस्य अन्नस्य जुहोति पाकस्य घृतेन संलिप्य यजमानाय स्वस्ति अस्तु श्रृतम-अभिघार्य। *इसी अन्न या रोटी (चोचवोर) से अग्नि में आहुतियाँ डालते हुए पढ़ें* सोमय स्वाहा, मित्राय स्वाहा, वरुणाय स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, अनुमत्यै स्वाहा, ध्वान्वन्तरये स्वाहा, वास्तोष्पतये स्वाहा, वासुदेवाय स्वाहा, सङ्कर्षणाय स्वाहा, प्रद्युम्नाय स्वाहा, अनिरुद्धाय स्वाहा, मत्याय स्वाहा, पुरुषाय स्वाहा, अष्युताय स्वाहा, माधवाय स्वाहा, गोविन्दाय स्वाहा, सहस्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मी सहिताय नाराणाय स्वाहा। *किसी थाली आदि में सिलोना, चावल आदि रख कर सभी परिवार के सदस्य उस थाली को हाथों से स्पर्श करते हुए प्रेप्युन पढ़ें*

।।अथ नैवेद्य मन्त्राः।।

प्रेप्युन

दोनों हाथों से नैवेद्य ग्रहण करते हुए पढ़ें।

अमृतेश मुद्रया-अमृतीकृत्य अमृतम-स्तु अमृतायतां नैवेद्यं सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य-त्वा-सवितुः प्रसवेऽश्विनो-र्बाहुभ्यां पूष्णो-हस्ताभ्याम्-आदधे, महागणपतये कुमाराय श्रियै सेस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वादेवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णु-महेश्वर-देवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञ-पुरुषाय अग्निष्वात्तादिभ्यः पितृगणदेवताभ्यः ॐ भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी सहिताय नारायणाय, भवाय देवाय पार्वतीसहिताय नारायणाय, भवाय देवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय विनायकाय वल्लभासहिताय श्रीगणेशाय क्लीं कां कुमाराय भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय प्रभासहिताय आदित्याय भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्ग्यै टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका भगवत्यै श्री शारदा-भगवत्यै श्री महाराज्ञी-भगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै व्रीढा-भगवत्यै वैखरी-भगवत्यै वितस्ता-भगवत्यै गंगा-भगवत्यै यमुना-भगवत्यै कालिका-भगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महात्रिपुरासुन्दर्यै सहस्रनाम्नयै देव्यै भवान्यै अभयंकरी देव्यै भवान्यै क्षेमंकरी भगवत्यै सर्वशत्रु-घातिण्यै इहराष्ट्राधिपतये *(जिस भैरव से आप के कुल का संबंध है उसका नाम ले)* भैरवाय इन्द्रादिभ्यो दशलोक पालेभ्यः आदित्यादिभ्यो नवग्रह देवताभ्यः ब्रह्मादिभ्यः मातृभ्यः गौर्यादिभ्यः मातृभ्यः ललितादिभ्यः मातृभ्यः बार्हस्पत्य देवताभ्यः। ॐ भूर्देवताभ्यः ॐ भुवो देवताभ्यः ॐ स्वर्देवताभ्यः ॐ भूर भुवः स्वः देवताभ्यः अखण्ड ब्रह्माण्डयागदेवताभ्यः महागायत्र्यै सावित्र्यै हेरकादिभ्यः वटुकादिभ्यः उत्पन्नम् अमृतं दिव्य प्राक् क्षीरो दधिमन्थनात्

अन्नं अमृतं रूपेण नैवेद्यं प्रति गृह्यताम्।

अपने इष्ट देवता का ध्यान करते हुए पढ़ें।

ॐतत्सद् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य फाल्गुन मासस्य, कृष्ण पक्षस्य द्वादश्यां परतः त्रयोदश्यां तिथौ अमुकायां, आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पापनिवारणार्थं शिरात्रि व्रत निमितम् ॐनमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

अग्नि के दाईं ओर पूर्व की ओर सिर वाले दर्भ बिछाकर उसी बिछाई हुई दर्भ पर दक्षिण पश्चिम कोण से पंक्ति में (लाईन) में साँप आकार में रोटी के तीन टुकड़े देवताओं को बलि देते हुए आगे लिखे छत्तीस नामों से रोटी के टुकड़े या अन्न डालते हुए पढ़ें

ताक्षाय नमः, उपतक्षाय नमः, अम्बा-नामासि नमस्ते, दुला-नामासि नमस्ते, नितंत्री नामासि नमस्ते, चुपनीका-नामासि नमस्ते, अभ्रयन्ती नामासि-नमस्ते, मेघयन्ती नामासि नमस्ते, वर्षयन्ती नामसि नमस्ते, नन्दिनि नमस्ते, सुभगे नमस्ते, सुमङ्गिल नमस्ते, भद्रं-करि नमस्ते, श्रियै हिरण्य केश्यै नमः, वनस्पतिभ्यो नमः, धर्माय नमः, अधर्माय नमः, मृत्यवे-नमः मरुत्भ्यो नमः, वरुणाय नमः, विष्णावे नमः वैश्रवणाय-राज्ञे-नमः, भूतेभ्यो नमः, इन्द्राय नमः, इन्द्र-पुरुषेभ्यो नमः, सोमाय-नमः, सोम पुरुषेभ्यो नमः, वरुणाय नमः, वरुण पुरुषेभ्यो नमः, ब्रह्म-नमः, ब्रह्म पुरुषेभ्यो नमः ऊधर्वं आकाशाय नमः, स्थण्डिले-दिवंचरेभ्यो भूतेभ्यो-नमः, नक्तं चरेभ्यो नमः, षट्-त्रिंशत् तक्षादिभ्यो अन्नं नमः।

पानी डालते हुए पढ़ें आचमनीयं नमः

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर दर्भ बिछाते हुए दर्भ पर तिल और जल से छींटे देते हुए पढ़ें

समस्त माता पितृभ्यो द्वादश दैवतेभ्यः पितृभ्यो भूपृष्ठे दर्भास्तरणे तिलोदकेन अवने-जनं स्वधा।

इसी बिछाई हुई दर्भ को अँगूठे से स्पर्श करते हुए पढ़ें

उशन्तस्त्वा हवामह उशन्त: समिधीमहि, उशन्न-उशत आवह पितृन् हविषे अत्तवे।

तिल, पानी, दूध, दीप, धूप, अन्न, घी और शहद (यह पितरों का अन्न) एक पात्र में रखें और पढ़ें

तिलास्तोयं तथा क्षीरं दीपधूपौ बलिस्तथा। मधु-सर्पि: समायुक्तम् अष्टांगम् अन्न सम्भवम्।

बायाँ घुटना पृथवी पर रखकर पितरों का नाम उच्चारण करते हुए पात्र में रखा हुआ यह अन्न दर्भ पर रखते हुए पढ़ें

देवताभ्य: पितृभ्यश्च महा योगिभ्य एवच। नम: स्वधा च स्वाहा च नित्यम्-एव भवतु इह

ॐतत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुन मासस्य कृष्णापक्षस्य तिथौ द्वादश्यां वासरान्वितायां

पितरों का नाम लेते हुए अन्न दर्भ पर डालते जाए,

पितामह एतत् ते अन्नं ये च त्वानु, प्रपितामह एतत् ते अन्नं ये च त्वानु मात एतत् ते अन्नं याश्च त्वानु।

इसी तरह मृत स्त्रियों के नाम लेते हुए अन्न रखते जाएँ और सभी मृत पितरों को अन्न डालकर जिन के नाम याद न हों रोटी के टुकड़े अन्नादि हाथ में लेकर यह मंत्र पढ़ें

मातृपक्ष्यास्तु ये केचित् ये चान्ये पितृपक्षजा: गुरु श्वशुर बन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवा:, ये प्रतेभावम् आपन्ना ये चान्ये श्राद्ध वर्जिता: अन्न दानेन ते सर्वे लभन्ताम् तृप्तिम् उत्तमाम्।

समस्त माता पितृभ्यो द्वादश दैवतेभ्य: पितृभ्योऽन्नं स्वधा।

अन्न का लेप साफ़ करके हाथ धोकर तिलक तथा फूल चढ़ाते हुए पढ़ें समस्त माता पितृभ्य: समालभनं गन्ध: स्वधा, समस्त माता पितृभ्य: अर्घ्य: स्वधा, धूप:स्वधा।

तर्पण करते हुए पढ़ें

समस्त माता पितृभ्य: दीप: स्वधा, धूप: स्वधा।

भक्ष्य भोज्य रखते हुए पढ़ें

समस्तमाता पितृभ्य: भक्ष्य भोज्य फल मूल बलि नैवेद्यम् आहरादि अन्नं स्वधा। *तिल, पानी, शहद डालते हुए पढ़ें*

समस्त माता पितृभ्यः तिल मधु मिश्रमुदक पात्रम् आचनीयं जलं स्वधा *तर्पण करते हुए पढ़ें*

समस्त माता पितृभ्यः हिमपानं स्वधा क्षीरपानं स्वधा मधुपानं स्वधा तिलोदकं स्वधा उदक तर्पणं हिमं हिमं रजतं रजतम्।

दायाँ यज्ञोपवीत रखते हुए पढ़ें

वसन्ताय नमः, ग्रीष्माय नमः, वर्षाभ्यो नमः, शरदे नमः, हेमन्ताय नमः, शिशराय नमः, षड् ऋतुभ्यो नमः।

अग्नि में अन्न की आहुति डालते हुए पढ़ें

अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। *हाथ धोकर प्राणायाम करके अग्नि को प्रणेतपात्र से पानी छिड़कते हुए पढ़ें*

1. ऋतुंत्वा सत्येन विमुंचामि।
2. सत्यं त्वर्तेन विमुंचामि।
3. ऋत सत्याभ्यां त्वा बिमुंचामि।

अग्नि के चारों तरफ़ छोड़ी हुई दर्भ उत्तर दिशा से उठाते हुए पढ़ें

यज्ञस्य सन्तातिर असि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै नयामि।

फूल हाथ में लेते हुए अग्नि देवता से आर्शीवाद मागँते हुए पढ़ें

धर्मं देहि, धनं देही, पुत्रपौत्रान् च देहि मे, आयुर् आरोग्यम् ऐश्वर्यम् देहि मे, हव्य वाहन तेजोसि तेज मयि देहि।

अग्नि की ज्योति हाथ से अपनी ओर लेते हुए पढ़ें

इत्यात्मानं देहि भगवन् सन्निधत्सु।

पृथ्वी पर थोड़ा सा अन्न फिर से डालते हुए पढ़ें

भगवन् यक्ष्म एतत्तेऽन्नं नमः, एतत् ते आचमनीयं नमः।

यज्ञोपवीत गले में रखते हुए पढ़ें

हन्त मनुष्यभ्यः, सनकादिभ्यः ऋषिभ्यः अन्नं नमः आचमनीयं नमः

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर 'चदू' को हाथों से पकड़ कर तिलक पुष्प लगाते हुए पढ़ें

या काचित् योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा परा, खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवतु मे सदा, आकाश मातृभ्यो अन्नं नम:, समालभनं गन्धोनम: अर्घो नम: पुष्पं नम:।

भगवान् शंकर का ध्यान मन में रख कर किसी पात्र में थोड़ा सा अन्न रखते हुए पढ़ें

शिवरात्रि देवताभ्य: बलिं समर्पयामि नम:

अब जो दर्भ पर अपने अन्न कण रखे है उनके पास ही पृथ्वी पर और प्राणियों को अन्न डालते हुए पढ़ें (गोग्रास)

सौर भेय्या: स्वर्ग हिता: पवित्रा पुण्यराशय: प्रति गृहणन्तु मे ग्रासं गाव: त्रैलोक्य मातर:। गोभ्योऽन्नं नम:, ऐन्द्र वारुण वायव्या याम्या नैऋति काश्च ये वायसा: प्रति गृहणन्तु इमं पिण्डं मयोद्धतम्, काकेभ्य: अन्नं नम:, श्वानौ द्वौ शाव शवलौ वैवस्वत कुलोद्भवौ, ताभ्यां पिण्डं प्रदस्यामि स्याताम् एतौ अहिंसकौ श्वभ्य: श्वानकेभ्य: अन्नं नम:

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढ़ें

रौरवाधीन सत्वानां प्रेत द्वार निवासिनाम्, अर्थिनां याचमानानाम् अक्षय्यम् उपतिष्ठतु।

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढ़ें

शुनां च पतितानां च श्वपचां पाप रोगिणाम्। वातसानां क्रिमीणां च शनकैर् निक्षिपेत् भुवि, देवा मनुष्या: पशवो वयांसि सिद्धा: सयक्षोरग दैत्यसंघा:, प्रेता पिशाचा: तरव: समस्ता ये चान्नम् इच्छन्ति मया प्रदत्तम्। पिपीलिका: कीट पतंग काद्या बुभुक्षिता: कर्मणि बद्धा:, प्रयान्तु ते तृप्तिम् इंद मयान्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु। येषां न माता न पिता न बन्धुर् नैवान्न सिद्धिर् न तथान्नम् अस्ति तत् तृप्तयेऽन्नं भुवि दत्तम् एतत् ते यान्तु तृप्तिं मुदिता भवन्तु, भूतानि सर्वाणि तथाननम् एतत् अयं चरिष्णुर् न ततोन्यत् अस्ति तस्मात् अहं भूत निकाय भूतम् अन्नं प्रयच्छामि भवाय तेषाम्। चतुर्दशो भूतगणो य एष तत्र स्थिता येऽखिल भूत संघा:, तृप्त्यर्थम् अन्नं हि मया विसृष्टं, तेषाम् इंद ते मुदिता भवन्तु, इत्युच्चार्य

नरो दद्यात् अन्नं श्रद्धा समन्वितः, भुवि भूतोप काराय गृही सर्वाश्रयो यतः।

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर अँगूठे की तरफ़ से अन्न सलोना डालते हुए पढ़ें

यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च, वैवस्वताय कालाय सर्वप्राणहराय च, औदुम्बराय नीलाय ब्रघ्नाय परमेष्ठिने, वृकोदराय भीमाय चित्रगुप्ताय वै नमः, पाशहस्त कृतान्ताय प्रेताधिपतये नमः, श्रीयमराज धर्मराज चित्रगुप्त तृप्तयेऽस्तु।

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर 'पवित्र' निकाल कर ऋष डुलिजी को छोड़कर अन्य सभी क्षेत्र पालों (डुलिजियों) में अन्न सलोना डालते हुए पढ़ें

ये विश्व भाविन भूता ये च तेषु अनुयायिनः, आहरन्तु बलिं तुष्टाः प्रयच्छन्तु शिवं मम। योऽस्मिन् निवसति क्षेत्रे क्षेत्रपाल सकिंकरः, तस्मै निवेदयामि अद्य बलिं पानीय संयुतम्। क्षां क्षेत्राधिपतये बलिं नमः, रां राष्ट्राधिपतये बलिं नमः, सर्वे अभय वरप्रदा मह्यं पुष्टिं पुष्टिपतयो ददातु ।।

इस के बाद अपनी रीति के अनुसार ऋषि डुलिजि में वैष्णव भोजन ही डालें बायाँ यज्ञोपवीत रखकर अन्न कणों पर फूल चढ़ाते हुए पढ़ें

1. आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गमोक्षौ सुखानि च,
प्रयच्छन्तु तथा राज्यं नृणां प्रीताः पितामहाः

2. एष पिण्डो मया दत्तः तव हस्ते जनार्दन,
गयायां पितृरूपेण स्वयं एवोपगृहताम्

3. आत्मनश्चार्थ लाभाय क्षेमाय विजयाय च,
शत्रूणां बुद्धिं नाशाय पितृन् उद्धरणाय च

4. पंचक्रोशं गयाक्षेत्रं क्रोशम् एकं गयाशिला,
यत्र तत्र स्मरेत् नित्यं पितृणां दत्तम् अक्षयम्।

।। इति वैश्वदेव विधि ।।

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर देवताओं का विसर्जन दर्भ के दो तिनके चावल सहित हाथ में रखकर इस तरह करें

ॐ भूः पुरुषं विसर्जयामि नमः, ॐ भुवः पुरुषं विसर्जयामि नमः, स्वः पुरुषं विसर्जयामि नमः

ॐ तत् पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुणमासस्य कृष्णपक्षस्य द्वादश्यां वारान्वितायां भवस्य देवस्य उग्रस्य देवस्य भीमस्य देवस्य कालरात्र्यः तालरात्र्यः शिवरात्र्यः समस्त शिवरात्रि देवतानाम् पूजनमऽच्छिद्रं सम्पूर्णम् अस्तु एवम् अस्तु। *चावल सहित जल से तर्पण करते हुए पढ़ें*

एताभ्यो देवताभ्यो यवोदकं नमः उदक तर्पण नमः आज्ञा मे दीयतां नाथ नैवेद्यस्य अस्य भक्षणे, शरीर यत्रा सिद्धयर्थं भगवन् क्षन्तुम् अर्हसि आपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्।

शब्द ब्रह्मये स्वच्छे देवि त्रिपुर सुन्दरि, यथा शक्ति जपं पूजां गृहाण परमेश्वरि। दर्शनात् पाप शमनी, जपात् मृत्यु विनाशिनी, पूजिता दुःख दौर्भाग्य हरा त्रिपुर सुन्दरी।

आहवानं नैव जानामि क्षम्यतां परमेश्वर।

प्रणाम करते हुए पढ़ें

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा नमस्कारं करोमि नमः। *तर्पण करते हुए पढ़ें*

नमो ब्रह्मणे, नमो अस्त्वग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः औषधीभ्यः, नमो वाचे, नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते कृणोमि इति एतासाम् एव देवतानां सामीप्यं सारिष्टतां सायुज्यं सलोकतां आप्नोति य एवम् एव विद्वान् स्वाध्यायम् अधीते। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

शिव महिम्नस्तोत्रम्

संधि-विच्छेद कृत

श्री योगेश्वर हाली

अगले पृष्ठ से

अथ श्री शिव महिम्नः स्तोत्रम्

महिम्नः पारं ते परम् अविदुषः यदि असदृशी,
स्तुतिः ब्रह्मा आदीनाम् अपि तत् अवसन्नाः त्वयि गिरः।
अथ अवाच्यः सर्घः स्वमति परिणाम अवधि गृणन्,
मम अपि एषः स्तोत्रे हर! निर् अपवादः परिकरः।।१।।

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ् मनसयोः
अतत् व्यावृत्त्या यं चकितम् अभिधत्ते श्रुतिः अपि।
सः कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः,
पदे तु अर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः।।२।।

मधु स्फीता वाचः परमं अमृतं निर्मित वतः
तव ब्रह्मन्! किं वाक् अपि सुर गुरोः विस्मय पदम्।
मम तु एताम् वाणीं गुण-कथन-पुण्येन भवतः
पुनामि इति अर्थे अस्मिन् पुरमधन! बुद्धिः व्यवसिता।।३।।

तव ऐश्वर्यं यत् तत् जगत् उदय रक्षा प्रलय कृत्,
त्रयी वस्तु व्यस्तं तिसृषु गुण भिन्नासु तनुषु।
अभव्यानाम् अस्मिन् वरद! रमणीयाम् अरमणीम्,
विहन्तुं वि-आक्रोशीम् विदधते इह एके जडधियः।।४।।

किं ईहः कि कायः स खलु किं उपायः त्रिभुवनम्।
किं आधारः धाता सृजति किं उपादान इति च।
अतर्क्य ऐश्वर्ये त्वयि अनवसर दुःस्थः हत धियः,
कुतर्कः अयं कांश्चित् मुखरयति मोहाय जगतः।।५।।

अजन्मानः लोकाः किम् अवयव वन्तः अपि जगताम्,
अधिष्ठातारं किं भव-विधिः अनादृत्य भवति।
अनीशः वा कुर्यात् भुवन-जनने कः परिकरम्,
यतः मन्दाः त्वाम् प्रति अमर वर! संशेरते इमे।।६।।

त्रयी सांख्यं योगः पशुपति मतं वैष्णवं इति,
प्रभिन्ने प्रस्थाने परं इदम् अदः पथ्यं इति च।
रुचीनां वैचित्र्यात् ऋजु कुटिल नाना पथ जुषाम्,
नृणाम् एकः गम्यः त्वं असि पयसाम् अर्णव इव।।७।।

महा उक्षः खटु अङ्गं परशुः अजिनं भस्म फणिनः,
कपालं च इति इयत् तव वरद! तन्त्र उपकरणम्।
सुराः तां ताम् ऋद्धिं दधति तु भवत्-भ्रू-प्रणिहिताम्,
न हि स्व-आत्मा-आरामं विषय-मृग-तृष्णा भ्रमयति।।८।।

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलम् अपरः तु अध्रुवम् इदम्,
परः ध्रौव्य-अध्रौव्ये जगति गदति व्यस्त विषये।
समस्ते अपि एतस्मिन् पुरमथन! तैः विस्मित इव,
स्तुवन् जिहेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता।।९।।

तव ऐश्वर्यं यत्नात् यत् उपरि विरिंचिः हरिः अधः,
परिच्छेत्तुं यातौ अनलम् अनल-स्कन्ध-वपुषः।
ततो भक्ति-श्रद्धा-भर-गुरु-गृणद्भ्यां गिरिश! यत्,
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किम् अनुवृत्तिः न फलति।।१०।।

अयत्नात् आसाद्य त्रिभुवनम्-अवैर-व्यतिकरम्,
दश-आस्यः यत् बाहून अभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरः पद्म-श्रेणी रचित चरण-अम्भोरुह बलेः,
स्थिरायाः त्वत् भक्तेः त्रिपुर-हर! विस्फूर्जितम् इदम्।।११।।

अमुष्य त्वत् सेवा सम् अधिगत सारं भुज-वनं,
बलात् कैलासे अपि त्वत् अधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पाताले अपि अलस चलित अङ्गुष्ठ शिरसि,
प्रतिष्ठा त्वयि आसीत् ध्रुवम् उपचितः मुह्यति खलः।।१२।।

यत् ऋद्धिं सुत्राम्णः वरद! परम उच्चैः अपि सतीम्,
अधः चक्रे बाणः परिजनविधेय त्रिभुवनः।
न तत् चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वत् चरणयोः,
न कस्य अपि उन्नत्यै भवति शिरसः त्वयि अवनति।।१३।।

अकाण्ड ब्रह्माण्ड क्षय चकित देव असुर कृपा-
विधेयस्य आसीत् यः त्रिनयन! विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियं अहो,
विकारः अपि श्लाघ्यः भुवन भय भंग व्यसनिनः।।१४।।

असिद्ध अर्थाः न एव क्वचित् अपि स-देव-असुर-नरे,
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनः यस्य विशिखाः।
स पश्यन् ईश! त्वाम् इतर-सुर-साधारणं अभूत्,
स्मरः स्मर्तव्य आत्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः।।१५।।

मही पाद आघातात् व्रजति सहसा संशय-पदम्,
पदं विषणोः भ्राम्यत् भुज-परिघ-रुग्ण-ग्रह-गणम्।
महुः द्यौः दौस्थ्यं याति अनिभृत-जटा-ताड़ित-तटा,
जगत्-रक्षायै त्वं नटसि ननु वामा एव विभुता।।१६।।

वियत्-व्यापी-तारा-गण-गुणित-फेन उद्गम रुचिः,
प्रवाहः वाराम् यः पृषतलधु दृष्टः शिरसि ते।
जगत् द्वीप आकारं जलधि-वलयं तेन कृतम्,
इति अनेन एव उन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः।।१७।।

रथः क्षोणी यन्ता शत धृतिः अगन्द्रो धनुः अथो
रथ-अङ्गे चन्द्र-अर्कौ रथ चरण-पाणिः शरः इति।
दिधक्षोः ते कः अयं त्रिपुर तृणम् आडम्बर विधि,
विधेयैः क्रीडन्त्यः न खलु पर-तन्त्रा प्रभु-धियः।।१८।।

हरिः ते साहस्त्रं कमल-बलिम् आधाय पदयोः
यत् एक ऊने तस्मिन् निजम् उदहरत् नेत्र कमलम्।
गतः भक्ति उद्रेकः परिणतिम् असौ चक्र-वपुषा,
त्रयाणाम् रक्षायै त्रिपुर-हर! जागर्ति जगताम्।।१९।।

क्रतौ सुप्ते जाग्रत त्वं असि फल-योगे क्रतुमताम्,
क्व कर्म प्रध्वस्तम् फलति पुरुष आराधनम् ऋते।
अतः त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फल-दान प्रतिभुवं,
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढ़-परिकरः कर्मसु जनः।।२०।।

क्रिया-दक्षः दक्षः क्रतु-पतिः अधीशः तनु भृताम्-
ऋषीणाम् आर्त्विज्यं शरणद! सदस्याः सुरगणाः।
क्रतु-भ्रंशः त्वत्तः क्रतु-फल-विधान-व्यसनिनो,
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धा-विधुरम् अभिचाराय हि मखाः।।२१।।

प्रजा–नाथं नाथ! प्रसभम् अभिकं स्वां दुहितरं,
गतं रोहित् भूतां रिरमयिषुम् ऋष्यस्य वपुषा।
धनुः पाणेः यातं दिवम् अपि सपत्रा कृतम् अमुम्,
त्रसन्तं ते अद्य अपि त्यजति न मृग व्याध रभसः।।२२।।

अपूर्वं लावण्यम् विवसन तनोः ते विमृशताम्,
मुनीनां दाराणां समजनि सकोप व्यतिकरः।
यतः भग्ने गुह्ये सकृत् अपि सपर्यां विदधताम्,
ध्रुवं मोक्षः अश्लीलं किम् अपि पुरुषार्थं प्रसविते।।२३।।

व लावण्या आशँसा धृत धनुषम् अह्नाय तृणवत्,
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन! पुष्प आयुधम् अपि।
यदि स्त्रैणं देवी यम निरत देह अर्ध घटनात्,
अवैति त्वां अद्धा बत वरद मुग्धाः युवतयः।।२४।।

श्मशानेषु आक्रीड़ा स्मरहर! पिशाचाः सहचराः
चिता भस्म आलेपः स्रक् अपि नृकरोटी परिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नाम एवम् अखिलम्
तथा अपि स्मर्तृणां वरद! परमं मङ्गलं असि।।२५।।

मनः प्रत्यक् चित्ते सविधम् अवधाय आत्त-मरुतः
प्रहृष्यत् रोमाणः प्रमद सलिल उत्सङ्गित दृशः।
यत् आलोक्य आह्लादं ह्रद इव निमज्ज्य अमृतमये
दधति अन्तः तत्त्वं किम् अपि यमिनः तत् किल भवान्॥२६॥

त्वम् अर्कः त्वम् सोमः त्वम् असि पवनः त्वं हुतवहः
त्वम् आपः त्वम् व्योम त्वमु धरणिः आत्मा त्वं इति च।
परिच्छिन्नाम् एवं त्वयि परिणताः बिभ्रति गिरम्,
न विद्मः तत्तत्वं वयं इह तु यत् त्वं न भवसि।।२७।।

त्रयीं तिस्रो वृत्तीः त्रिभुवनम् अथो त्रीन् अपि सुरान्
अकार आद्यैः वर्णैः त्रिभिः अभिदधत् तीर्ण-विकृति।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिः अवरुन्धानम् अणुभिः,
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद! गृणाति ओम् इति पदम्।।२८।।

भवः शर्वः रुद्रः पशुपतिः अथ उग्रः सह महान्
तथा भीम ईशानौ इति यत् अभिधान-अष्टकम् इदम्।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव! श्रुतिः अपि,
प्रियाय अस्मै धाम्ने प्रणिहित नमस्योऽस्मि भवते।।२९।।

वपुः प्रादुर्भावात् अनुमितं इदम् जन्मनि पुरा,
पुरारे! नैव अहं क्वचित् अपि भवन्तम् प्रणतवान्।
नमन् मुक्तः सम्प्रति अतनुः अहम् अग्रे अपि अनतिमान्,
महा ईश! क्षन्तव्यं तत् इदम् अपराध द्वयं अपि।।३०।।

नमो नेदिष्ठाय प्रिय-दव! दविष्ठाय च नमो,
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर! महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन! यविष्ठाय च नमो,
नमः सर्वस्मै ते तत् इदम् अति सर्वाय च नमः।।३१।।

बहुल रजसे विश्व-उत्पतौ भवाय नमो नमः,
प्रबल तमसे तत् संहारे हराय नमो नमः।
जन सुखकृते सत्त्व उद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः,
प्रमहसि पदे निःत्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः।।३२।।

कृश-परिणति चेतः क्लेश वश्यं क्व च इदम्,
क्व च तव गुण सीमा उल्लङ्घिनी शाश्वत् ऋद्धिः।
इति चकितम् अमन्दी कृत्य मां भक्तिः आधात्,
वरद! चरणयोः ते वाक्य पुष्प उपहारम्।।३३।।

असित गिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धु पात्रे,
सुर-तरु-वर-शाखा लेखनी पत्रम् उर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्व कालम्,
तद् अपि तव गुणानाम् ईश! पारं न याति।।३४।।

असुर-सुर-मुनि-इन्द्रैः अर्चितस्य इन्दु मौलेः
ग्रथित-गुण महिम्नः निर्गुणस्य ईश्वरस्य।
सकल-गण-वरिष्ठः पुष्पदन्त अभिधानः,
रुचिरम् अलघुवृत्तैः स्तोत्रम् एतत् चकार।।३५।।

अहः अहः अनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रम् एतत्,
पठति परम भक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः।
स भवति शिवलोके रुद्र तुल्यः तथा अत्र,
प्रचुरतर धन आयुः पुत्रवान् कीर्तिमान् च।।३६।।

महेशात् न अपरः देवः महिम्नः न अपरा स्तुतिः।
अघोरात् न अपरःमन्त्रःनअस्ति तत्त्वं गुरोःपरम्।।३७।

दीक्षा दानं तपः तीर्थं ज्ञानं याग आदिकाः क्रियाः।
महिम्नः स्तव पाठस्य कलां न अर्हन्ति षोडशीम्।।३८।।

कुसुम दशन नामा सर्व गन्धर्व राजः,
शिशु शशिधर मौलेः देवदेवस्य दासः।
स खलु निज महिम्नः भ्रष्ट एव अस्य रोषात्,
स्तवनम् इदम् अकार्षीत् दिव्य-दिव्यं महिम्नः।।३९।।

सुर-वर-मुनि पूज्यं स्वर्ग-मोक्ष-एक हेतुम्,
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिः न अन्य चेताः।
व्रजति शिव समीपं किन्नरैः स्तूयमानः,
स्तवनम् इदम् अमोघं पुष्पदन्त-प्रणीतम्।।४०।।

आसमाप्तं इदम् स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्व-भाषितम्।
अनौपम्यं मनोहारि शिवम् ईश्वर वर्णनम्।।४१।।
इति एषा वाङ्मयी पूजा श्रीमत् शंकरं पादयोः।
अर्पिता तेन देव-ईशः प्रीयतां मे सदाशिव।।४२।।

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर!
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः।।४३।।
एक कालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेत् नरः।
सर्व-पाप-विनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते।।४४।।

श्री पुष्पदन्त मुख-पंकज निर्गतेन,
स्तोत्रेण किल्विष-हरेण हर-प्रियेण।
कण्ठ स्थितेन पठितेन समाहितेन,
सुप्रीणितो भवति भूतपतिः महेशः।।४५।।

विष्णु पूजन विधिः

(हर एक पूजा में उपयोगी, धूपदीप)

कटोरी से थाली अथवा किसी पात्र में जल की धारा डालते हुये पढ़ें:-

अस्य श्री आसन-शोधन-मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ-ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन-शोधने विनियोगः।।

पृथिवीमाता को तिलक पुष्प चावल चढ़ाते हुये पढ़ें:-

प्रीं पृथिव्यै आधार-शक्त्यै समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः,

दोनों हाथ जोड़कर पढ़े - **पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता त्वंच धारय मां देवि पवित्रं कुरु-चासनम्।।**

दर्भ के दो तिनके दोनों उंगुनिलयों में रख कर गणेश जी का ध्यान करके नमस्कार करते हुये पढ़े:-

शुक्लाम्बर धरं विष्णुं शशिवर्णं चतु भुर्जम्। प्रसन्न वदनं ध्याये, सर्व विघ्नोप शान्तये। अभि प्रीतार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर् अपि सर्व विघ्न छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः।। गुरुः ब्रह्मा, गुरुः विष्णु, गुरुः साक्षात् महेश्वरः। गुरुर् एवं जगत सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः, परम गुरवे नमः, परमेष्ठिने गुरवे नमः, परमाचार्याय नमः, आदि सिद्धिभ्यो नमः।

अंगन्यास

गायत्री मन्त्र का न्यास करने के लिये दो दर्भ के तिनके दोनों अनामिका उंगुलियों में पीछ की ओर मुड कर रखिये, फिर दोनों हाथों की अंगुलियों से नाभि को स्पर्श करते हुये पढ़े:-

ॐ "अ" नाभौ, "उ" ह्यदि (हृदय को) **"म" शिरसि** (सिरको) **ॐ भूः" पादयोः** (पांवों को) **ॐ भुवः" ह्यदि** (हृदय को) **ॐ स्वः शिरसि** (सिर को) **"ॐ भूः" अंगुष्ठाभ्यां नमः** (अंगूठों को) **"ॐ भुवः" तर्जनीभ्यां नमः**

(तर्जनी को) ''ॐ स्वः'' मध्यमाभ्यां नमः (मध्यमा को) ''ॐ महः अनामिकाभ्यां नमः (अनामिका को) ''ॐ जनः'' कनिष्ठि काभ्यां नमः (कनिष्ठा को) ''ॐ तपः सत्यं'' करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः (दोनों हथेलियों को) ''ॐ भूः पादयोः'' (दोनों पांवों को) ''ॐ भुवः जान्वोः'' (दोनो गुठनो को) ''ॐ स्वः गुह्ये'' (गुह्यास्थान को) ''ॐ महः नाभौ'' (नाभि को) ''ॐ जनः हृदि'' (हृदय को) ''ॐ तपः कण्ठे'' (कण्ठ को) ''ॐ संत्य शिरसि'' (सिर को) ''ॐ भूः हृदयाय नमः'' (हृउय को) ''ॐ भुवः शिरसि स्वहा'' (सिर को) ''ॐ स्वः शिखायै वषट्'' (चोटी का) ''ॐ महः कवचाय हुम्'' (वस्त्रों को) ''ॐ जनः नेत्राभ्यां वौषट्'' (नेत्रों को) ''ॐ तपः सत्यम् अस्त्राय फट्'' (चुटकी मार कर) आगे भी ऊपर की भांति अंगुष्ठ आदि को स्पर्श करते हुये पढ़े:-

''ॐ तत् सवितुर अंगुष्ठाभ्यां नमः, वरेण्यं तर्जनीभ्यां नमः, भर्गो देवस्य मध्यमाभ्यां नमः धीमहि अनामिकाभ्यां नमः, धियो यो नः कनिष्ठिकाभ्यां नमः प्रचोदयात् करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः, ॐ तत् पादयोः सवितुर जान्वोः वरेण्यं कट्याम भर्गो नाभौ देवस्य हृदये धमहि कण्ठे धियो नासिकायां यः चक्षुषोः नः ललाटे प्रचोदयात् शिरसि। ॐ तत सवितुर हृदयाय नमः वरेण्यं शिरसे स्वाहा भर्गो देवस्य शिखायै वष्ट् धीमहि कवचाय हुं, धियो योनः नेत्राभ्यां वौषट् प्रयोदयात् अस्त्राय फट्, ॐ आपः स्तनयो (स्तनो को) ज्योतिः नेत्रयोः रसो मुखे अमृतं ललाटे (माथे को) ब्रह्म भूर् भुवः स्वरोम् (शिरसि)।

अंगन्यास समाप्त

चारों और तिल फेंकते हुये पढ़े :- **अपसर्पन्तु ते भूता, ये भूता भुवि-संस्थिताः, ये भूता विघ्न कर्तारस्ते नशन्तु शिवाज्ञया।** प्राणायाम करके हृदय को जलसे छिड़कते हुये पढ़ें :- **तीर्थे स्नेयं तीर्थम् एव, समाननां भवति, मानः शंसो अररुषो धूर्तिः प्राणङ्-मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।** अनामिका अंगुली में पवित्र धारण करते हुये पढ़ें :- **वसोः पवित्रम् असि शतधारं वसूनां पवित्रम् असि, सहस्र धारम्, अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्तीः।** यजमान को तिलक लगाते हुये पढ़ें:- **मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः स्नतु मनोरथाः, शत्रूणं बुद्धि नाशोस्तु, मित्राणाम् उदयस्तव, आयुर आरोग्यम् ऐश्वर्यम् एतत् त्रितयम् अस्तु ते, जीव त्वं शरदः शतम्।** अपने आप को तिलक लगाते हुये पढ़ें :- **परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंच भूतात्मकाय विश्वात्मने मंत्र नाथाय, आत्मने नारायणाय आधार शक्त्यै, समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः।** दीप को तिलक पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें :- **स्वप्रकाशो महादीपः सर्वत स्तिमि रापहः प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।** धूप को तिलक पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें :- **वनस्पति रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत् तमः आधारः सर्वदेवानां धूपोऽयं परिकल्पितः।** सूर्य भगवान को तिलक पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें :- **नमो धर्म निधानाय नमः स्वकृत साक्षिणे, नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः।** कटोरी से थाली में जल की धारा डालते हुये पढ़ें :- **यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः भ्रातापि नो यत्र सुहृत् जनश्च, न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्म दीपं शरणं प्रपद्ये आत्मने नारायणाय आधार शक्त्यै, दीप दूप संकल्पात् सिद्धिर अस्तु दीपो नमः धूपो नमः। अपसव्येन।।** बायाँ यज्ञोपवीत रख कर कटोरी से थाली में तिल सहित जल की धारा डालते हुये पढ़ें :- **नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो, नमो धर्माय विष्णवे।**

नमो यमाय रुद्राय कान्तार पतये नमः। मास, पक्ष, तिथि, वार का नाम लेकर तर्पण करें, तर्पण करते समय यदि माता पिता जीवित हूँ तो उनका नाम न लेकर पढ़ें :- **पित्रे पितामहाय प्रपितामहाय, मात्रे पितामह्यै प्रपितामह्यै। मातामहाय प्रमातामहाय वृद्ध प्रमाता महाय। मातामह्यै प्रमाता मह्यै वृद्ध प्रमातामह्यै। समस्त माता पितृभ्यो द्वादश दैवतेभ्यः पितृभ्यो दीपः स्वधा, धूपः स्वधा।**

प्रत्येक पूजा में काम आने वाला
(दीप धूप समाप्त)

यक्षामावसी पूजा

(क्ष्यचिमावस)

गोलाकार किसी पत्थर (काजवठ) को कुबेर जी के रूप में पूजा के स्थान पर सामने रखकर 1 से 3 पर से दीप धूप पढ़ कर जीवादान के लिये विष्टर अथवा दर्भ सहित कटोरी में तिलक और तीन फूल डालते हुये पढ़ें :-
संवः सृजामि हृदयं संपृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टा स्तन्वः सन्तु वः। संसृष्टः प्राणो अस्तु वः। संयावः प्रिया स्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः। आत्मा वो अस्तु सं प्रियः संप्रिया स्तन्वो मम।। इसी पानी से कुबेर जी की मूर्ति पर जल छिड़कते हुये पढ़ें :- **अश्विनोः प्राणस्तौ ते**

प्राणं दत्तां तेन जीव। मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणं ददातु तेन जीव।। चावल सहित दर्भ के दो कांड हाथ में लेकर तीन बार पढ़ें :- **यक्षणीशाय विद्महे गदाहस्ताय धीमहि तन्नो कुवेरः प्रचोदयात्।** फिर से पढ़ें ॐ ततृ सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य मास पक्ष तिथि पार का नाम लेकर पढ़ें :- **भगवतः कुवैरस्य त्र्यम्बक सरवस्य यक्षेशस्य धनाधिपतस्य अर्चा अहंकरिष्ये ॐ पूजय।** चावल कन्धों से फेंक कर दर्भ के दो काण्ड हाथ में ही रख कर पढ़ें :- **भगवन्तं कुबेरं त्र्यम्बकसखं यक्षेशस्य धनाधिपम् आवाह यिष्यामि ॐ आवाहय।।**

चावल कन्धों से फैंक कर दर्भ निर्माल्य में डालें और पढ़ें :- **पाद्यार्थम् उदकं नमः। शन्नो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये, शं योर् अभि सवन्तु नः।** इस मन्त्र से खोसू या कटोरी में जल डाल कर उसी पानी से कुबेर जी को छिड़कते हुये पढ़ें :- **भगवते कुवेराय त्र्यम्बक सखाय यक्षेश्वराय धनाधिपताय पाद्यं नमः।** पाद्य का बचा हुआ जल निर्माल्य में डाल कर फिर से अर्घ्य के लिये इसी कटोरी में शन्नो देवीर् अभीष्टय ... ऊपर लिखे मन्त्र से जल डाल कर कुवेर जी को दर्भ से छिड़कते हुये पढ़ें **भगवन् कुवेर त्र्यम्बकसस्य यक्षेश्वर धनाधिप इदं वोऽर्घ्यं नमः।** कटोरी में आचमन के लिये फिर से जल डाल कर कुवेर जी को अर्पण करते हुये पढ़ें :- **कुवेराय त्र्यम्बकसखाय यक्षेश्वराय धनाधिपाय इदं आचमनीयं नमः,** खासू अथवा कटोरी में जल डालते हुये पढ़ें :- **अन्नं नमः अन्नं नमः, आज्यं आज्यम्** ***अद्यदिने अद्य यथा***

संकल्पातज् सिद्धिर् अस्तु। अंजील धारण करते हुये पढ़ें अन्नहीनं क्रिया हीनं विधिहीनं द्रव्यहीनं मन्त्रहीनं यत् गतं तत् सर्वम् अच्छिद्रं सम्पूर्णम् अस्तु। एवम् अस्तु। कटोरी में दायें हाथ की अंगुलियाँ से जल डाल कर उसी जल से कुबेर जी को आचमन अर्पण करें यानी थोड़ा सा जल डालें। कटोरी में चावल जल दीक्षिणा डालते हुयें पढ़ें :- एता देवताः सदक्षिणन्नेन प्रयन्तां प्रीताः सन्तु।

अब खिचड़ी का प्रेप्युन वियेश्वर जन्त्री से पढ़कर चुटू आदि रख कर दीपः स्वधा धूपः स्वधा तक पढ़कर दो दर्भकाण्ड हाथ में लेकर कुबेर जी को विसर्जन करते हुये तीन बार पढ़ें यक्षेशाय विद्महे गदाहस्ताय धीमहि तन्न कुबेरः प्रचोदयात्। यह पढ़कर फिर से पढ़ें :- ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य मासस्य यक्षेशस्य तिथौ वासरा न्वितायां भगवत कुबेरस्य त्र्यम्बक सरवस्य यक्षेश्वरस्य धनाधिपस्य आत्मनो वांगमनः कायोपार्जित पाप निवार नार्थं कुबेर पूजनम् अच्छिद्रं सम्पूर्णम् अस्तु एवम् अस्तु। फिर से कुबेर जी को अर्घ पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें :- आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम् पूजाभागं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर। नमस्कार करते हुये पढ़ें :- उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा मनसा वचसा नमस्कारं करोमि नमः।

हाथ जोड़ के फिर से प्रार्थना करें :- ॐ धनाध्यक्षाय देवाय नर यानोप वेशिने। नमस्ते राजराजाय कुबेराय महात्मने।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

शंकुप्रतिष्ठा

(बुनियाद मकान) पूजा
(कन दिर्नुच पूज़ा)

पूज़ा सामग्री सात तीर्थो नदियों तालाब आदि का जल लगभग एक किलू वज़न (सात धातु) सोना, चांदी, तांगा, लोहा, पीतल, कांसी, ज़सद आदि (सात अनाज) यानी सतसोस्, गेहूँ, मक्की, जव, माष, मूँग, चना, मटर आदि (सात औषधियाँ) सोंठ, हलदी, बनुफशा, गुलाब पत्र, ग्यवथीर, कलव्युठ आदि जो कुछ सुलभ हो वही लायें हमारी लिखी हुई चीज़ें ही ज़रूरी नहीं, परन्तु संख्या में सात होने आवश्यक है। (पाँच मिटियाँ) काश्मीर में चक्रेश्वर, क्षीरभवानी काश्मीर से बाहिर होने पर प्रसिद्ध स्थानों हरिद्वार, मथुरा आदि, चुराहे की मिट्टी जहाँ चार रास्ते मिलते हैं, स्यकट्रेट अथवा किसी राजभवन की, गौशाला की, कुलमिलाकर मिट्टी एक पाव तक होनी चाहिये। फूल पाँच प्रकार के होने चाहिये, काला फूल नहीं होना चहिये, इलाची, दारचीनी, लोंग, काली मिर्च ये सभी वस्तुयें एक एक तोला होनी चाहिये। सुफारी काठ पाँच अदद, सुफारी, चिकनी 5 अदद पाँच पत्थर चोरस (चार कोने वाली) 5 अदद चार प्रतिमायें ताँबि के पत्र पर बनाई हूँ। एक एक ताँबि का पत्र चार चार ऊंगुल चोरस होना चाहिये जिन पर अलग अलग खुदी हुई मूर्तियाँ होनी चाहिये। वह मूर्तियाँ पाँच हैं वृषभ, घोड़ा, हाथी, मनुष्य। इन चार प्रतिमाओं के इलावा चांदी की तार का साँप होना चाहिये जिसका वज़न लगभग एक तोला होना

चाहिये। पाँच मिट्टी की वारियाँ। रत्नदीप के लिये पाँच दीपक चोंग धूप, कण्ठगण, तिल, सिन्दूर, नारीवन, लाय, दूध, दही, सर्षप, सर्वौषधि, घी, फूल, चावल, नाबद, किशमिश। रत्नदीप के लिये रूई, माचस। ज़ंग के लिये चावल, नमक, अखरोट, थोड़ा सा चूना। प्रसाद के लिये सत्यदेव रोठ आदि होना चाहिये। तहर आदि भी बनायें। कण्ठगण आदि जलाने के लिये थोड़े से कोयले, बिछाने के लिये आसन आदि।

यदि आप ने नींव मुहूर्त से पहले ही खोदी होगी, तो चार कोनों पर और बीच में खोदी हुई नींव से नीचे गहरे छोटे इतने गढ़े बनायें जिन में आप की लाई हुई वारियाँ समा सकें, यदि नींव खोदा न हो तो चारकोणों पर तथा बीच में इतने गहरे गढ़े बनाये जहाँ पूजा करते समय पूजा करनेवाला बैठ सके और जहाँ आप वारियाँ दबाकर रखेंगे। वहाँ से नींव खोदते समय वे वारियाँ निकल न जायें (गढ़े सोच समझा कर बनायें) मासान्त, पंचक, भौमवार के दिन नींव न खोदे बाकी विशेष मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं है, (परन्तु पंचक कन् पूजा के लिए निषेद नहीं है)।

मुहूर्त के दिन मुहूर्त से कुछ समय पहले सभी परिवार तथा सम्बन्धी प्रतिष्ठा यानी 'कँन्' के स्थान पर पहुँच कर जब तक सारी सामग्री इकट्टी हो जाये, मुहूर्त के समय तक सभी मिल जुलकर ऊँचे ऊँचे स्वर में उच्चरण करें '**सर्वमंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।** अथवा **ॐ श्रीमत नारायण नारायण ॐ, ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च, नमः**

शिवाय च शिक्तराय अथवा हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। सभी समग्री जल मिट्टी औषधियाँ आदि बांट कर वारियों में डाले, सभी वारियों पर सिन्दूर से लिखें "श्रीः" वारियों को फूल की मालाओं से सजायें पाँचो पत्थरो पर सिन्दूर से "श्रीः" लिखें। रत्नदीप धूप जला कर रखें। यह सारा काम समाप्त करके (उत्तर पूर्व) कोण यानी ईशनी कोण पर आसन छियें, खूँटियाँ और पत्थर पाँच गढ़ों पर पहुँचा के रखें, पाँचों वारियाँ जो औषध्यिें जल से भरी होगी एक बड़ी थाली या पहरात में रखें उन वारियों के ऊपर क्रमशः बैल, घोड़ा, मनुष्य हाथी तथा सांप की मूर्ति रखें और पूजा आरम्भ कीजिये। पहले दीप धूप पूजा करें दीपो नमः धूपो नमः तक पढ़कर :- ॐ तत् सत् बह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य मासस्य पक्षस्य तिथौ वासरान्वितायां (मास तिथि वार का नाम लेकर पढ़ें):- महागणपते, कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे, द्वार देवताभ्यः ब्रह्मणे वास्तोष्पति देवताभ्यः ध्रुवाय हरये, लक्ष्मयै कूर्माय, वृषभाय, अश्वाय, नराय गजाय अनन्ताय शंकु प्रतिष्ठा निमितं दीप धूप संकल्पात् सिद्धिर् अस्तु दीपो नमः धूपो नमः। जीवादान के लिये विष्ठर अथवा दर्भकांड सहित कटोरी में तिलक और तीन फूल डालते हुये पढ़ें :- संवः सृजामि हृदयं, संसृष्ट मनो अस्तुवः। संसृष्टा तन्वः सन्तु-वः संसृष्टः प्राणः अस्तु वः। संयावः प्रिया स्तन्वः संप्रिया हृदयानिवः। आत्मा वो अस्तु संप्रियः, संप्रिय स्तन्वो मम।। यही जल क्रमशः पाँच वारियों की प्रतिमाओं पर जो क्रमशः रखी हैं वृषभ,

घोड़ा, मनुष्य, हाथी, सांप पर डालते हुये पढ़ें :- **अश्विनो:, प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तं तेन जीव, मित्रा वरुणयो: प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव बृहस्पते: प्राण: स ते प्राणं ददातु तेन जीव। जीवादानं परिकल्पयामि नम:।** चावल सहित दर्भ के दो काण्ड हाथ में लेकर पढ़ें **गायत्र्यै नम:, ॐ भूभुर्व: स्व: तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात्, ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य मासस्य पक्षस्य तिथौ वारा न्वितायां ध्रुवस्य हरे:, लक्ष्मया: कूर्मस्य अश्वस्य नरस्य गजस्य अनन्तस्य आत्मनो वांगमन: कायोपार्जित पापनिवाराणार्थ शुभ फल प्राप्तयर्थ शंकु प्रतिष्ठा पूजनं शिला प्रतिष्ठा पूजनम् अहं करिष्ये ॐ कुरुष्व।** चावल को कन्धों से फैंक कर दोनों दर्भकांड निर्माल्य में डालकर फिर से दो दर्भकांड आसन के रूप में डालते हुये पढ़ें :- **ध्रुवस्य हरे: लक्ष्म्या: कूर्मस्य वृषभस्य अश्वस्य नरस्य गजस्य अनन्तस्य आसनम् नम:।** चावल और दर्भ के दो कांड हाथ में पकड़कर **ध्रुवं हरिं लक्ष्मीं कूर्म वृषभं अश्वं नरं गजं अनन्तं आवाहयिष्यामि ॐ आवा-हय।** दोनों कन्धों से चावल फेंक कर प्राणायाम करके कटोरी में जल डालते हुये पढ़ें :- **पाद्यार्थम् उदकं नम: शन्नो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शयोर अभि सवन्तु न:।** इसी जल में लाय तिलक सर्वौषधि दर्भ जल डाल कर दर्भ से अथवा फूल से पांचों मूर्तियों को छिड़कते हुये पढ़ें :- **ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै कूर्माय वृषभाय अश्वास नराय गजाय अन्नताय पाद्यं नम:।** पाद्य का बाकी बचा हुआ जल निर्माल्य में डालकर फिर से अर्घ्य के लिये

जल डालते हुये पढ़ें :- **शन्नो देवी अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर अभि सवन्तु नः।** इसी जल में दूध, दर्भ, घी, दही, चावल, जव, सर्षप डालते हुये पढ़ें :- **ध्रुव हरे लक्ष्मि कूर्म वृषभ अश्व नर गज अनन्त इदं वोऽर्ध्यं नमः।** पाँचो प्रतिमाओं पर फिर से जल डालते हुये पढ़ें :- **उदत्यं जात वेदसं देवं वहन्ति केतवः दृश्ये विश्वाय सूर्य स्नानं परिकल्पयामि नमः।** यहाँ तक आप पांच प्रतिमाओं की पूजा एक ही स्थान पर इकट्टे करें यहाँ से अब अपने अपने स्थान गढ़े पर जाकर पूजा करें अब पहले वृषभ की प्रतिमा वाली वारी उठाकर पूर्व ईशान कोण पर गढें में रखी हुई पत्थर के ऊपर फूल चढ़ाते हुये पढ़ें :- **आसनाय नमः पद्मासनाय नमः शतदल पद्मासनाय नमः।** गढ़े में पहले से रखी हुई पत्थर पर वारी सहित प्रतिमा रखें और अपने दायें हाथ की तरफ गढ़े में पहले से रखी हुई खूँटी किसी पत्थर से गाढें खूँटी (शंकू) दबाते हुये पढ़ें :- **ध्रुवा द्यौ र्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमा ध्रुवं विश्वं इदं सर्वं ध्रुवो राजा विश्वाम् असि।** अब प्रतिमा वारी खूँटी तथा पत्थर पर तिलक अर्घ फूल लगाते हुये पढ़ें :- **ध्रुवाय लक्ष्म्यै वृषभाय शंकवे प्रतिष्ठा शिलायै समालभनं गन्धो नमः, अर्घोनमः, पुष्पं नमः।** वारी प्रतिमा खूँटी की नारीवन बांधते हुये पढ़ें :- **ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै वृषभाय शंकवे प्रतिष्ठा शिलायै वासो नमः,** नमस्कार करते हुये पढ़ें :- **ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै वृषभाय शंकवे प्रतिष्ठा शिलायै नमस्कारं करोमि नमः** एतासां देवतानां *अर्घ्य दाना धर्चन विधिः सर्वः*

परिपूर्णोऽस्तु जल प्रतिमा आदि पर डालते हुये पढ़ें **अन्नं नमः, अन्नं नमः, आज्यं आज्यं अन्नं अद्यदिने अद्य यथा संकल्पात् सिद्धिर अस्तु।** अंजलि धारण करते हुये पढ़ें :- **अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं द्रव्यहीनं मन्त्रहीनं यत् गतं तत् सर्वम् अछिद्रं सम्पूर्णम् अस्तु एवम् अस्तु।** खोसू में दायें हाथ की ऊँगलियों पर से जल डालकर उसी जल से वृषभ की मूर्ति पर आचमन के रूप में थोड़ा सा जल डालते हुये पढ़ें :- **शंनो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभिस्रवन्तुनः ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै वृषभाय शंकु प्रतिष्ठा शिलायै आचमनीयं नमः**, फिर से खोसू में अर्घ जल दक्षिणा डालते हुये पढ़ें :- **शंनो देवरी अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभि स्रवन्तुनः ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै वृषभाय शंकु प्रतिष्ठा शिलायै तिल हिरण्य रजत निष्कर्ण ददानि।** फिर से कुछ दक्षिणा डालते हुये पढ़ें :- **एता देवताः सदक्षिणा न्नेन प्रीयन्तां सन्तु।** नैवेद्य किशमिश नाबद आदि अर्पण करते हुये पढ़ें :- **ॐ तत् सत् ब्रह्म मासस्य पक्षस्य तिथौ वारन्वितायां ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै वृषभाय शंकवे प्रतिष्ठा शिलायै ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सर्वमंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते।** इस मन्त्र का बार-बार उच्चारण करते हुये वारी को प्रतिमा सहित उठा कर जो बड़े गढ़ें में छोटा सा गढ़ा खोदा है उस में रख कर उस के ऊपर पूजा किया हुआ पत्थर रखें प्रणाम करते हुये फूल चढ़ाते हुये पढ़ें :- **ॐ तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर-आततं, तत् विप्रासो विपन्यवो**

जागृवांसः समिन्धते, विष्णो र्यत्परमं पदम्। सभी खड़े होकर फूल हाथ में लेते हुये पढ़ें :- **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरमयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चित् दुःखभाक् भवेत्।**

अग्निकोण : पूर्व दक्षिण कोण पर वारी सहित घोडे की प्रतिमा लायें पूर्वदक्षिणकोण के गढ़े में पत्थर पर फूल बिछा कर ऊपर दर्ज किये हुये ईशान कोण (पूर्व उत्तर) की पूजा की भांति सब पूजा करें केवल वृषभाय के बदले अश्वाय पड़ें।

नैऋतिकोण : दक्षिण पश्चिम कोण पर मनुष्य वाली वारी रखकर उसकी पूजा ऊपर लिखी पूजा की भांति कीजिये केवल वृषभय के बदले (नराय) पढ़ें।

वायुकोण : पश्चिम उत्तर कोण पर हाथी की मूर्ति वाली वारी रखकर उसकी पूजा ऊपर लिखी पूजा की भांति करें, केवल वृषभाया के बदले गजाय पढ़ें।

बीचवाले गढ़े में : साँपन मूर्ति वाली वारी की पूजा ऊपर लिखि विधि से कीजिये वृषभाय के बदले अनन्ताय पढ़ें। बीच वाले गढ़े की पूजा समाप्त करके सभी परिवार वाले एकत्रित होकर सामूहिक रूप में पढ़ें : **ॐ श्रीमत् नारायण नारायण नारायण ॐ। हरे राम हरे राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।** अब तहर आदि का प्रेप्युन विजयेश्वर जन्त्री से पढ़ें। अन्त में सामूहिक आरती करें। आरती के पश्चात् प्रसाद बाँटें।

०००

गृह प्रवेश पूजा

नये मकान में दाखिल होना

प्रवेश के लिये सामग्री – गौमाता श्री भगवद्गीता महालक्ष्मी का अथवा इष्टदेवी का फोटु, लाल झाँडियाँ जिस में कील दबाने के लिये छोटी छोटी लकडी लगी हो, पानी से भरा हुआ घड़ा, दूध का घड़ा अथवा बालटी, असली घी का डिबा, चावल की बोरी अथवा बड़ी चिलमची चावल से भरी हुई, धान्य की थाली, सतसोस सात अजनास (गेहूँ, मक्की, मूँग, चन्ना, माष, राजमाष, मटर आदि) हर अनाज एक एक पाव इकट्टे थाली में रखें, भिन्न भिन्न प्रकार के फूलो से भरी टोकरियाँ, आग सहित अंगीठी जिस में कण्ठगण और तिल पहले से ही जलता हो, रत्नदीप, जलता हुआ धूप, शंख, घर के किसी बुज़ुर्ग अथवा गुरु का फोटू, ऊखल, शुप, छुरी, झाडू आदि यानि घर में काम आने वाली वस्तुयें, पूजा के लिये सिन्दूर, केसर, नारीवन, तिल, लाय, जव, किशमिश, शहद, बरफी, जंग के लिये चावल, नमक अखरोट आदि।

जिस दिन प्रवेश करना हो उस दिन मुहूर्त समय से पहले सारी ऊपर लिखी सामग्री नये मक़ान के आंगन में चटाई आदि बिछा कर इकट्टी करें – मकान के चारों ओर विशेषतया जिस दरवाज़े से प्रवेश करना हो उस द्वार की दोनों दीवारों पर चूने से क्रूल बनावें, दरवाज़े के ऊपर तीन झँडियाँ लगाये, बाकी तीन तरफ से भी चूने का क्रूल झँडियाँ कील से दबायें, फूलों नारीवन तथा सिन्दूर

के तिलक से दरवाज़े को पहले से ही सजा कर रखें। दरवाज़े पर सिन्दूर से लिखें "श्रीः ॐ" यह सब कुछ पूर करके पूजा आरम्भ करें। पूजा से पहले गोमाता को प्रवेश दरवाज़े के सामने सहन में बांधकर रखें, खाने के लिए कुछ चारा डालें ताकि वह पूजा के समय शांत रूप से टिकी रहे। गोमाता को तिलक लगा कर फूल की माता अर्पण करके चारों पाँव के नीचे थोड़ा सा तिलक (ऋग्वेदाय, सामवेदाय, अर्थववेदाय) इन नामों से लगायें। इन्ही नामों से अर्घ फूल, दक्षिणा तथा नैवेद्य किशमिश डाल कर प्रणाम करें। हाथ जोड़ कर पढ़े :– "न **केवलानां पयसां प्रसूति अवेहि मां कामदुघां प्रसन्ना।**" गोमाता को कमरों के अन्दर प्रवेश करवाने की आवश्यकता नहीं ऐसा न हो वह उसके मकान में प्रवेश करते समय कोई अड़चन पैदा हो – भूसा गुड आदि खिला कर प्रवेश के पश्चात् गाय को खुला छोड़कर आदर से बाहर निकाले।

प्रवेश पूजा विधि

जिस दरवाज़े सये प्रवेश करना हो उस दरवाज़े की ओर मुख करके आसन बिछा कर दीप धूप जला कर पूजा आरम्भ करें – पूजा आरम्भ करने से पहले नया यज्ञोपवीत धारण करें – यज्ञोपवीत धारण के समय लड़की से ज़ंग लानी चाहिये यज्ञोपवीत धारण करते हुये पढ़ें और शंक बजवाये :– **यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापते र्यत् सहजं पुर स्तात् आयुष्यम् अग्रयं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलम् अस्तु तेजः। ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य** (मास पक्ष तिथि वार का नाम लेकर) पढ़ें :– **महागणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै लक्ष्मयै विश्वकर्मणे द्वार देवताभ्यः *धर्माय, अधर्माय,* देहिल्यै,**

खिंखिन्यै मेरु प्रकार देवताभ्यः दीपधूप संकल्पात् सिद्धिर अस्तु दीपोनमः धूपोनमः। दूध, घी, शहद, जव, पानी, तिल मिलाकर देवताओं ऋषियों और पितरों का तर्पण दरवाज़े के निचले भाग पर करते हुये पढ़ें :- **ॐ भूः तृप्यतां, ॐ भुवः तृप्यतां, ॐ स्वः तृप्यताम्, ॐ भू-भुर्वःस्वः तृप्यताम् ब्रह्मा तृप्यतां रूद्रः तृप्यतां, ईश्वरः तृप्यतां, सदा-शिवः तृप्यतां, पृथिवी तृप्यतां, आपः तृप्यतां, तेजः तृप्यतां, वायुः तृप्यतां आकाशः तृप्यतां, वह्निं तर्पयामि, सूर्यम् तर्पयामि, वरुणं तर्पयामि, वायुं तर्पयामि, यमं तर्पयामि, कुबेरं तर्पयामि, सूर्यादिग्रहान् तर्पयामि, देवर्षीन् तर्पयामि, राजर्षीन् तर्पयामि, पितृर्षिन् तर्पयामि, धर्म तर्पयामि, अर्थ तर्पयामि, कामं तर्पयामि, मोक्षं तर्पयामि, सर्वदेवताः तर्पयामि।** गले में यज्ञोपवीत रखकर पढ़ें :- **कण्ठोपवीत स्वाहा ऋषिभ्यः** बायाँ यज्ञोपवीत रखकर पढ़ें :- **अपसव्येन स्वधापितृभ्यः** दायाँ यज्ञोपवीत करके पढ़ें :- **सव्येन आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं जगत् तृप्यतु तृप्यतु तृप्यतु - एवम अस्तु** जीवादान के लिये विष्टिर सहित खोसू अथवा कटोरी में तिलक और तीन फूल डालते हुये पढ़ें :- **सं वः सृजामि हृदमं संसृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टा स्तन्वः सन्तुवः संसृष्टः प्राणो अस्तुवः। संयावः प्रियास्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियस्तन्वो मम।** दरवाज़े के चारों ओर दर्भ अथवा विष्ठर से - छिड़कते हुये पढ़ें :- **अश्विनो, प्रणस्तौ ते प्राणं तेन जीवा। मित्रावरुणायेः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव बृहस्पतेः प्राणः स-ते प्राणं ददातु तेन जीव। धर्माय, अधर्माय, देहिल्यै खिंखिन्यै मेरु प्रकार देवताभ्यः जीवादानं परिकल्पयामिनमः।** चावल सहित दर्भ के दो कांड हाथ में लेकर तीन बार पढ़ें :- **ॐ गं तत् पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती,**

प्रचोदयात् - ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य मासस्य पक्षस्य तिथौ वारान्वितायां धर्मस्य अधर्मस्य देहल्याः खिंखिन्याः मेरु प्रकार देवतानां द्वार पूजनं अहं करिष्ये ॐ कुरुष्व। चावलों को कन्धो से फेंक कर दर्भकाण्ड निर्माल्य में डालकर दो-दो दर्भ काण्ड आसन के रूप में डालते हुये पढ़ें। दरवाजे के दायें ओर **धर्मस्य** बायें ओर **अधर्मस्य** नीचे की ओर देहल्याः ऊपर की ओर **रिवं खिन्याः मेरुप्रकार देव तानां इदं आसनं नमः,** दायें हाथ से दर्भकाण्ड चावल सहित पकड़ते हुये पढ़ें :- **धर्माय अधर्माय देहिल्यै खिंखिन्यै मरु प्रकार देवताभ्यः युष्मान् पूजयामि ॐ पूजय।** चावल फेंक कर केवल दो दर्भ हाथ में रख कर पढ़ें :- **धर्म अधर्म देहिलं, खिंखनिं, मेरु-प्रकार देवताः आवाहय-ष्यामि ॐ आवाहय।** दरावजे के ऊपर की ओर फूल चढ़ाते हुये पढ़ें :- **आवाहयम्यहं देवं गणेशं सुर-पूजितं, सदैव विघ्न हर्तारं सर्वकाम फलप्रदम्।** दोनों कन्धों से जव चावल फेंक कर प्राणायाम करके कटोरी में जल डालते हुये पढ़ें :- **पाद्यार्थम् उदकं नमः, शन्नो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभि सवन्तु नः,** इसी जल में तिलक सर्वौषधि आदि डालकर विष्टर से दरवाजे को छिड़कते हुये पढ़ें :- **धर्माय अधर्माय देहिल्यै खिंखिन्यै मेरु प्रकार देवताभ्यः पाद्यं नमः,** पाद्य - के बाकी बचे पानी को निर्माल्य में डालकर अर्घ्य के लिये कटोरी में पानी डालते हुये पढ़ें :- **शन्नो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभि सवन्तु नः,** इसी कटोरी के पानी में दूध घी दही डालते हुये विष्टर से दरवाजे को छिड़कते हुये पढ़ें :- **धर्म अधर्म देहलि खिंखिनि, मेरु प्रकार देवता इदं वोऽर्ध्य नमः,** दायें बायें तथा ऊपर क्रमशः तिलक लगाते हुये पढ़ें :- **धर्माय अर्धामय दैहिल्यै खिं खिन्यै मेरुप्रकार देवताम्यः समालभनं**

गन्धो नमः, दायें बायें और ऊपर नीचे फूल चढ़ाते हुये पढ़ें :- **धर्माय अधर्माय देहिल्यै खिंखिन्यै मेरु-प्रकार देवताभ्यः अर्घोनमः पुष्पं नमः।** नमस्कार करते हुये पढ़ें :- **एतासां देवतानां अर्घ्य दानाद्यर्चन विधि सर्वः परिपूर्णः अस्तु।** चावल की थाली को जल से छिड़कते हुये पढ़ :- **अन्नं नमः, अन्नं नमः, आज्यं आज्यं अन्नं अद्य दिने अद्य यथा संकल्पात् सिद्धिर अस्तु।** अंजलि धारण करते हुये पढ़ें :- **अन्न हीनं क्रियाहीनं द्रव्य हीनं, मन्त्र हीनं यत् गतं तत् सर्व अछिन्द्रं सम्पूर्णम् अस्तु एवम् अस्तु।** खोसू में दायें हाथ की ऊँगलियों के ऊपर से जल डालकर उसी जल से दरवाजे पर आचमन के रूप में थोड़ा सा जल डालते हुये पढ़ें :- **शन्नो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभिस्रवन्तु नः धर्माय अधर्माय देहिल्यै खिंखिन्यै मेरु प्रकार देवताभ्यः आचमनीयं नमः।** फिर से शन्नो देवीर् अभीष्टये यही मन्त्र पढ़कर कटोरी में नया अर्घ जल तथा दक्षिणा डालते हुये पढ़ें :- **धर्माय अधर्माय देहिल्यै खिंखिन्यै मेरु प्रकार देवताभ्यं: दक्षिणायै तिल हिरण्य रजत निष्कर्ण ददानि।** कुछ और दक्षिणा डालते हुये पढ़ें :- **एता देवताः सदक्षिणा न्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।** नैवेद्य के रूप में किशमिश आदि अर्पण करते हुये पढ़े :- **धर्माय अधर्माय देहिल्यै खिंखिन्यै मेरु प्रकार देवताभ्यः ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।** अच्छिद्र न करें। तर्पण करते हुये तीन बार पढ़ें :- **नमो ब्रह्मणे, नमो अस्तु अग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः औषधीभ्यः नमो वाचे, नमो वाचस्पतये नमो विष्णावे, बृहते कृणोमि, इति एतासाम् एव देवतानां साष्टिं सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम् अप्नोति य एवं विद्वान् स्वाध्यायम् अधीते।।3।।** नमस्कार करते हुये पढ़ें :- **मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यत् गतम्। तत्सर्वं क्षम्यतां**

देव कृपया परमेश्वर। यत् अक्षर पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यत् गतम्, त्वया तत् क्षसम्यतां देव कृपया पुरुंषोत्तम। उभाभ्यां जानुम्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।

ऊपर लिखी विधि के अनुसार दरवाजे की पूजा करके "**सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके शरण्ये त्र्यम्बके गोरि नमोस्तु ते**", इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये पहले से ही नियत किये हुये कमरे में जहां साफदरी मसनन्द आदि बिछा हुआ हो। घर के सभी सदस्य भाई बन्धु मित्रादि अपने अपने हाथ में उठाई हुई सामग्री, भगवत् गीता, पानी का घड़ा, दूध, फल, चावल आदि विशेषतया इष्ट देवी, गुरु आदि का फोटू हाथ में लेकर प्रवेश करें। कमरे में किसी उच्च स्थान अथवा कुरसी आदि पर सजा के रखें। उस के सामने सभी सामग्री रत्नदीप आदि तरतीब से रखें। झाड़ू, चक्की एक ओर कोणे में रखें, घर के सभी सदस्य खड़े रहे - यजमान को चाहिये महालक्ष्मी देवी अथवा गुरु आदि के फोटू की तिलक लगा कर फूल की मालायें अर्पण करें - ॐ जय जगदीश से सामूहिक आरती करें, नाबद किशमिश - बरफी आदि नैवेद्य के रूप में इष्ट देवी को अर्पण कीजिये - उसी प्रसाद में से सभी को थोड़ा थोड़ा प्रसाद भांट कर सभी परिवार के व्यक्तियों को तिलक लगाकर नारीवन बांधे। यह कार्यक्रम समाप्त करके रसोई में जाकर अन्नपूर्णाभगवती का ध्यान करके नमस्कार करते हुये पढ़ें :-

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राण वल्लमे, ज्ञान वैराग्य सम्पूर्णे अन्न पूणे नमोस्तु ते। गैस या चूल्हे के ऊपर के भाग पर सिन्दूर से "श्रीः" लिखें अर्घ फूल चढ़ाते हुये पढ़ें :-

अन्नपूर्णाभगवत्यै समालभनं गन्धो अर्घो नमः पुष्पं नमः।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

रोठ तहर आदि में असली घी डाला हुआ थालियों में भर कर इष्टदेवी अथवा महालक्ष्मी के सामने लायें और विजयेश्वर जन्त्री से प्रेप्युन पढ़ें :- चुटू मकान के छत पर रखें। प्रसाद सभी में बाँटिये -

यजमान तथा यजमान पत्नी को पूजा की समाप्ति तक व्रत रखना चाहिये -

आप इन बातों का व्रत लीजिये - "**यज्ञ देवपूजा संगतिकरण दाने षु**" - वह इन नियम है,

(1) देव पूजन घर में नित्य भगवत् नाम की कीर्तन।

(2) परिवार के सदस्यों में सच्चा संगठन।

(3) यथाशक्ति दान

जिस घर में इन तीन नियमों का पालन होगा, वहाँ विष्णु भगवान् लक्ष्मी सहित निवास करता है।

०००

दीपमाला पूजा विधि

दीपधूप समाप्त करके विष्टर अथवा दर्भ सहित कटोरी में तिलक और तीन फूल डालते हुये पढ़ें :- **सं वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टा स्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः। सं यावः प्रिया स्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः। आत्मावो अस्तु सं प्रियः सं प्रियास्तन्वो मम।** किसी पात्र में रूपये 11 या 21 रख कर उन को कटोरी के जल से छिडकते हुये पढ़ें :- **अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव, बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणं ददातु तेन जीव, श्रीमहालक्ष्म्यै - जीवादानं परिकल्पयामिः नमः।** चावल सहित दो दर्भ काण्ड हाथ में लेते हुये तीन बार पढ़ें **श्रियै, विद्महे,**

कमलवासिन्यै धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।।3।। तत् सत् ब्रह्म आद्य तावत् तिथौ अद्य मासस्य पक्षस्य तिथौ वारान्वितायां श्री महालक्ष्म्याः अर्चा अहं किरिष्ये ॐ कुरुष्व आसन के रूप में दो पुष्प अथवा दर्भ डालते हुये पढ़ें :- श्रीमहालक्ष्म्याः इदम् आसनं नमः चावल सहित दो दर्भ अथवा फूल हाथ में पकड़ते हुये पढ़ें :- श्री महालक्ष्म्यै युष्मान् पूजयामि ॐ पूजय। चावल कन्धों से फेंक कर केवल दर्भ हाथ मं रखकर पढ़ें :- ॐ सर्वलोकस्य जननीं शूलहस्तां त्रिलोचनाम् सर्वदेवमयीम् ईशां देवीम् आवाहया म्यहम्। श्रीमहालक्ष्मीं आवाह यिष्यामि ॐ आवाहय। चावल कन्धों से फेंक कर दर्भ निर्माल्य में डाल कर पढ़ें पाद्यार्थम् उदकं नमः शन्नोदेवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभी स्रवन्तु नः। इसी जल में लाय केसर, सर्वौषधि दर्भ डालकर रूपयो पर पानी की धारा डालते हुये पढ़ें :- गंगादि तीर्थ सम्भूतं गन्ध पुष्पादि सं युतम् पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमोस्तुते श्रीमहालक्ष्म्यै पाद्यं नमः। पाद्य से बचा हुआ जल निर्माल्य में डालकर फिर से अर्घ्य के लिये कटोरी में जल डालते हुये पढ़ें :- शन्नो देवीर् अभीष्टये - आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभिस्रवन्तु नः। इसी कटोरी में दूध दर्भ घी चावल सर्षप डालकर रूपयों पर जलधारा डालते हुये पढ़ें :- अष्ट गन्ध समायुक्तं स्वर्णपात्र प्रपूरितम् अर्घ्यं गृहाण मत् दत्तं महालक्ष्म्यै नमोस्तुते महालक्ष्म्यै इद वो अर्घ्यं नमः। शुद्ध जल आचमन के रूप में डालते हुये पढ़ें :- श्री महालक्ष्म्यै आचमनीयं

नमः, लाय केसर आदि से मिला हुआ जल महालक्ष्मी पर डालते हुये पढ़ें :- **पंचामृत समायुक्तं जाह्नवी सलिलं शुभम् गृहाण विश्वजननि स्नानार्थ भक्त्व त्सले महालक्ष्म्यै अष्टंग स्नानं परिकल्पयामि नमः**, रूपों को साफ करके आसन पर बिठाते हुये पढ़ें :- **आसनाय नमः कमलसनाय नमः शतदलवद्मसनाय नमः, सहस्रल पद्मासनाय नमः** तिलक लगाते हुये पढ़ें :- **कुं कुमं कामदं दिव्यं कुंकुमं कामरूपिणम् अखण्ड काम सौभाग्यं कुंकुमं प्रतिखताम्। गन्धद्धारां दुराधर्षा नित्य पुष्टां करीषिणीं ईवरीं सर्वभूतानां ताम् इहोपह्वये श्रियम् महालक्ष्म्यै समालभनं गन्धो नमः।** बही खाता, पेटी, दवात, कलम को भी तिलक लगायें, दरवाज़े के ऊपर सिन्दूर से "**श्रीः**" बही खाते दवात कलम आदि पर भी फूल अर्घ चढ़ाते हुये पढ़ें :- **नमोस्तु ते महामाये श्री पीठ सुर पूजिते शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मि नमोस्तुते श्री महालक्ष्म्यै अर्घो नमः पुष्पं नमः।** धूप कर्पूर रत्नदीप घुमाते हुये पढ़ें :- **तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य कार्तिक मासस्य कृष्ण पक्ष्स्य चतुर्दश्यां** (अथवा) **अमावस्यां** वार का नाम लेकर **श्री महालक्ष्म्यै धूपं कर्पूर रत्नदीपनं परिकल्पयामि नमः।** अब चामर करते हुये 'लीलारब्ध' सभी श्लोक तथा 'ॐ जय जगदीश' आरती पढ़ें :- **श्री महालक्ष्म्यै चामरं परिकल्पयामि नमः** तर्पण करते हुये पढ़ें :- **एताभ्यः देवताभ्यः दीपधूप संकल्पात् सिद्धिर अस्तु दीपो नमः धूपो नमः** वस्त्र चढ़ाते हुये नमस्कार करते हुये पढ़ें :- **श्री महालक्ष्म्यै वासोनमः एतासां देवतानां अर्घ्यदाना द्यर्चन विधिः सर्वः परिपूर्णः**

अस्तु॥ नमस्कार करते हुये पढ़ें :- उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा अष्टांगं नमस्कारं करोमि नमः। तर्पण करके अंजलिधारण करते हुये पढ़ें :- अन्नं अन्नं नमः आज्यं आज्यं अन्नं, अद्यदिने अद्य यथा संकल्पात् सिद्धिर् अस्तु अन्न हीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं मन्त्रहीनं यत गतं तत् सर्वम् अछिद्रम् अस्तु सर्म्पूण अस्तु। कटोरी में जल डालते हुये पढ़ें शन्नो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर् अभिस्रवन्तु नः रूपयो पर यही जल डालते हुये पढ़ें :- एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु नैवेद्य की पूरिया बर्फी आदि थाली में रख कर विजयेश्वर जन्त्री से सारा प्रेप्युन पढ़ कर फिर से पढ़ें :- तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य कार्तिक मास्य कृष्ण पक्षस्य

अमावस्यां .... वारान्वितायां श्रीमहालभ्यै दीपमाला महोत्सवः देवताभ्यः मिष्टान्नं पक्वान्नं ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः चुटू आदि को भी तिलक पुष्प आदि डालकर दो दर्भ (फूल) हाथ में लेकर तीन बार पढ़ें :- श्रियै विद्महे कमलवान्वितायां दीपमाला महोत्सव देवतानां श्रीमहालक्ष्म्याः पूजनं अछिदं सम्पूर्णम् अस्तु एवम् अस्तु नमस्कार करते हुये पढ़ें :- आह्वानं नैवजानामि नैवजानामि पूजनं, पूजाभागं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि - उभाभ्यां जानुभ्यां पाणभ्यां शिरसा उरसा वचसा नमस्कारं करोमि नमः तर्पण करतु हुये पढ़ें :- नमो ब्रह्मणे नमो अस्तु अग्नये, नमः पृथिव्यै, नम औषधीभ्यः नमो इति एतासाम् एव देवतानां सार्ष्टि सायुज्यं सलोकतां सामीप्यं आप्नोति य एवं विद्वान् स्वाध्या यम् अधीते ॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

بھٕوٗ رۄُپ گربھ

नमः स्वच्छन्दभैरवाय

اوم نماہ، سوچھند بھیراوے

ब्रह्मादिकारणातीत स्वशक्त्यानन्दनिभरम्।

नमामि परमेशानं स्वच्छन्दं वीरनायकम।।१।।

(۱) برہمادِ، کارنا، تی تم، سوشکھتیا، نند، نِر بھرم
نمامی، پرمے شانم، سوچھندم، دِیر، نالکیم

कैलासशिखरासीनं देवदेवं जगद्गुरुम्।

पप्रच्छ प्रणता देवी भैरवं विगतामयम्।।

(۲) کیلاس، شکھرا، سی نم، دیو، دیے دم، جگت، گورُوم
پہ پرچھ، پرنتا، دیوی، بھیروم، وِگتامہ یم

श्रीदेव्युवाच

شری دیوی اُوواچہ

प्रायश्चित्तेषु सर्वेषु समयोल्लङ्घनेषु च।

महाभयेषु घोरेषु तीव्रोपद्रवभूमिषु।।३।।

(۳) پرایش، چہ تے شُو، سرویے شُو، سم یولنگھنے شُو، چہ
مہا بھیئے شُو، گھوریے شُو، تیھر وپہ، دَرو، بھُومی شُو

छिद्रस्थानेषु सर्वेषु सदुपायं वद प्रभो।

येनायासेन रहितो निर्दोषश्च भवेन्नर:।।४।।

(۴) چھدر ستھانے شُو، سرویے شُو، ست اُوَپایم، ود پربھُو
یے نا، یاسیے نہ، رہتو، نِردوشچہ، بھوِت، نراہ

श्रीभैरव उवाच

شری بھیرو اُو واچہ

श्रृणु देवि परं गुह्यं रहस्यं परमाद्भुतम्।
सर्वपापप्रशमनं सर्वदुखनिवारणम्॥

(۵) شرنُو، دیوی، پرم، گوہیم، رہیم، پرمات بھُوتم
سرو، پاپہ، پرشمہ نم، سرو، دُوکھ، نوِرانم

प्रायश्चित्तेषु सर्वेषु तीव्रेष्वपि विमोचनम्।
सर्वछिद्रापहरणं सर्वार्तिविनिवारकम्॥६॥

(٦) پرائشچہ تیے شُو، سرویے شُو، تہ بریشوپی، وِموچنم
سرو، چھدراپہ ہرنم، سروارتی، وِنی وارکم

समयोल्लङ्घने घोरे जपादेव विमोचनम्।
भोगमोक्षप्रदं देवि सर्वसिद्धिफलप्रदम्॥७॥

(۷) سم یو لنگنے، گھورے، جپات یے و، وِموچہ نم
بھوگہ، موکھ پردم، دیے وی، سروسدھی پھلہ پردم

शतजाप्येन शुद्धयन्ति महापातकिनोऽपि ये।
तदर्धं पातकं हन्ति तत्पादेनोपपातकम्॥८॥

(۸) شتہ جاپے یہ نہ، شُودھیہ نتی، مہاپاتہ کہ نوپی یے
تت اردھم، پاتہ کم، ہن تی، تت پادے، نوپہ پاتہ کم

कायिकं वाचकं चैव मानसं स्पर्शदोषजम्।
प्रमादादिच्छया वापि सकृज्जाप्येन शुद्धयति॥९॥

(۹) کایکم، واچہ کم، چیَو، مانہ سم، سپرش، ووشجم
پرماوات، یچھ یا، واپی، سہ کرت، جاپیے نہ، شُو دھیتی

यागारम्भे च यागान्ते पठितव्यं प्रयत्नतः।
नित्ये नैमित्तिके काम्ये परस्याप्यात्मनोऽपि वा॥१०॥

(۱۰) یاگارمبھے، چہ، یاگانتے، پٹھِتویم، پرتینہ تاہ
نتے، نیمتکے، کامیے، پرسیا، پیاتمنوپی، واہ

निश्छिद्रकरणं प्रोक्तं स्वभावपरिपूरणम्।
द्रव्यहीने मन्त्रहीने यज्ञयोगविवर्जिते॥११॥

(۱۱) تِشچھدر، گرنم، پروکتم، سوبھاوٗ، پر پوٗرنم
دروِیہ، ہی نے، منتر، ہی نے، یکیہ یوٗگ، وِورجتے

भक्तिश्रद्धाविरहिते शुद्धिशून्ये विशेषतः।
मनोविक्षेपदोषे च चिलोपे पशुवी-क्षते॥१२॥

(۱۲) بھکتی، شردھا، ورہتے، شوٗدھی، شوٗنیے، وشے شہ تاہ
منو دِکھیپہ، دوشے چہ، دلوپے، پشوٗ، وکھیہ تی

:विधिहीने प्रमादे च जप्तव्यं सर्वकर्मसु।
नातः परतरो मन्त्रो नातः परतरा स्तुतिः॥१३॥

(۱۳) وِدھی، ہی نے، پرماوے چہ، جپ تہ ویم، سرو، کرمسوٗ
ناتاہ، پرترو، منترو، ناتاہ، پرترا، سُتوتی

नातः परतरा काचित्सम्यक्प्रत्यङ्गिरा प्रिये।
इयं समयविद्यानां राजराजेश्वरीश्वरि॥१४॥

(۱۴) ناتاہ، پرترا، کاچِت، سمیک، پرتنگرا، پریے
یی یم، سمیہ، وِدیانام، راجہ، راجیشوری، شوری

परमाप्यायनं देवि भैरवस्य प्रकीर्तितम्।
प्रीणनं सर्वदेवानां सर्वसौभाग्यवर्धनम्॥१५॥

(۱۵) پرما، پیایہ نم، دیوی، بھیروسے، پرکرِتہ تم
پری نہ نم، سرو، دیوا نام، سرو، سوبھاگیہ، ورردھنم

स्तवराजमिमं पुण्यं शृणवष्वावहिता प्रिये॥१६॥

(۱۶) ستہ وراجیم، یہ مم، پوٗنیم، شرنوشا، وہی تا، پریے

अस्य श्रीबहुरूप भट्टारकस्तोत्रस्य, वार्म देव ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः
श्रीबहुरूपभट्टारको देवता, आत्मनो वाङ्मनः
कायोपार्जितपापनिवारणार्थं चतुर्वर्गसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

اِسے شری، بہوٗ، روٗپہ، بٹارکہ، سُتوترسے، شری وامہ
دیو رشی، انوٗشٹوٗپ چھندہ، شری بہوٗ روپ، بٹارکو، دیوتا
آتمنو، وانگھ مناہ، کایو پارجِتہ، پاپہ، نِوارنارتھم، چوٗتر،
ورگہ، سِدھرتھے پاٹھے، وِنیہ یوگاہ

अघोरमन्त्रण न्यासं कृत्वा प्राणायामः।

اگھور منتر ینہ نیاسم کرتہ دا، پرانا یامم

अथ ध्यानम् اَتھ دھیانم

ओम् अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यश्च
सर्वत: शर्व सर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्य:।।१०८।।

"اوم، اگھورے بھیو، اتھ، گھورے بھیو، گھور گھورترے بھیشچ
سروتاہ، شرو، سروے بھیو، نمس تے، رُودر، روپی بھیاہ"

ओं नम: परमाकाशशायिने परमात्मने।
शिवाय परसंशान्तनिरानन्दपदाय ते।।१।।

(۱) اوم، نماہ، پرماکاشہ، شایہ نے، پرماتمنے
شِوائے، پرسم شانتہ، نرانند، پدائے، تے

अवाच्यायाप्रमेयाय प्रमात्रे विश्वहेतवे।
महासामान्यरूपाय सत्तामत्रैकरूपिणे।।२।।

(۲) اواچایا، پرمے یائے، پرماترے، وِشوہیے تہ وے
مہا، سامانیہ، رُوپائے، ستا، ماتریکہ، رُوپی نے

वामे खेटकपाशशाङ्‌र्ग विलस द्दण्डं च वीणाण्टिके।
बिभ्राणं ध्वजमुद्गरौ स्वनिभदे व्यङ्कं कुठारं करे।।१।।
दक्षेस्यङ्कुशकन्दलेषुडमरू न्वज्रत्रिशूलाभयान्।
रुद्रस्थं शरवक्त्रमिन्दुधवलं स्वछन्दनाथं स्तुम:।।२।।

وامے، کھٹیہ مِکہ، پاشہ، شارنگہ، وِلست دنڈم، چہ، دینا نٹکے
بھرانم، دوجہ، مُدگرو، سونہِ بھدے وینکم، کُوٹھارم، کرے
دکھیئے، سینکُوشہ، کندلے شُو، ڈمہ رُون وجر، ترشولا بھیان
رُودر ستھم، شر، وکترم، یندو، دھولم سوچھند، ناتھم، ستُوماہ

ॐ बहुरूपाय विद्महे कोटराक्षाय धीमहि तन्नोऽघोर: प्रचोदयात्।।३।।

تین بار پڑھیئے: "اوم بہُو روپائی، دِومہیے، کوٹراکھیایہ، دھی مہی،
تنو، اگھوراہ، پرچودِیات۔"

घोषादिदशधाशब्दबीजभूताय शम्भवे।
नमः शान्तोग्रघोरादिमन्त्रसन्दर्भगर्भिणे॥३॥

(۳) گھوشادِ، دَشہ دا، شبد، بیج، بھُوتایہ، شمبھووے
نماہ، شانتوگر، گھورادِ، منتر، سندربھہ، گربھِنی

रेवतीसङ्गविस्रम्भसमाश्लेषविलासिने।
नमः समरसास्वादपरानन्दोपभोगिने॥४॥

(۴) ریے دتی، سنگہ، وِسرمبھ، سماشیلشہ، ولاسی نے
نماہ سمہ، رسا سواد، پرانندوپہ، بھوگہِ نے

भौगपाणे नमस्तुभ्यं योगीशैः पूजितात्मने।
द्वयनिर्दलनोद्योगसमुल्लासितमूर्तये॥५॥

(۵) بھوگہ پانے، نمنس تو بھیم، یوگی شیئے، پُوجتاتمنے
دویہ، نردلنو، ویوگ، سمُولا ستہ، مُور تہ یئے

थरत्प्रसरविक्षोभविसृष्टाखिलजन्तवे।
नमो मायास्वरूपाय स्थाणवे परमेष्ठिने॥६॥

(٦) تھرت، پرسر، وکھیوبھ، وِسرشٹا، کھلہِ، جن تہ ویے
نمو، مایا، سُورُوپائے، ستھانہ ویے، پرمیشٹھنے

घोरसंसारसंभोगदायिने .स्थितिकारिणे।
कलादिक्षितिपर्यन्तपालिने विभवे नमः॥७॥

(۷) گھور، سنسار، سمبھوگ دایئے، ستھتہ کارِ نے
کلا، وِ، کھیتی، پرنیتہ پالِنے، وِبھ وے، نماہ

रेहणाय महामोहध्वान्तविध्वंसहेतवे।
हृदयाम्भोजसंकोचभेदिने शिवभानवे॥८॥

(۸) رہہ نائے، مہا موہہ، دھوانتہ، وِدھونسہ، ہیے تہ وے
ہردیا مبھوجہ، سنکوچہ، بھیدنی، شِو بھانہ وے

भोगमोक्षफलप्राप्तिहेतुयोगविधायिने।
नमः परमनिर्वाणदायिने चन्द्रमौलये॥९॥

(۹) بھوگ، موکھ، پھلہ، پراپتی، ہیے تُو، یوگ، وِدھایہِ نے
نماہ، پرمہ، نروانہ، دایئے، چندر، مولہ لئے

घोषाय सर्वमन्त्रणां सर्ववाङ्मयमूर्तये।
नमः सर्वाय शर्वाय सर्वपाशापहारिणे॥१०॥

(۱۰) گھوشاےِ، سروَمنترانام، سرو، وانگھییٔے، مُورتیے
نماہ، سروائے، شَروائے، سروپاشایہ، ہارِنے

रवणाय रवान्ताय नमस्ते रावराविणे।
नित्याय सुप्रवुद्धाय सर्वान्तरतमाय ते॥११॥

(۱۱) رَونائے، روانتائے، نمستے، راو، راوِنے
نیتائے، سُوپربُودھائے، سروانتر تمائے، تے

घोषाय परमान्दान्तश्चराय खचराय ते।
नमो वाक्पतये तुभ्यं भवाय भवभेदिने॥१२॥

(۱۲) گھَوشائے، پرناندانتہ، چرائے، کھَرائے، تے
نمو، واک پتیے، تُوبھیم، بھَوائے، بھَو، بھیےَ دِنے

रमणाय रतीशाङ्गदाहिने चित्रकर्मणे।
नमः शैलसुताभर्त्रे विश्वकर्त्रे महात्मने॥१३॥

(۱۳) رمہ نائے، رتی شانگہ، واہنے، چترا، کرمہ نے
نماہ، شیلہ، سُوتا، بھرترے، وِشوکرترنے، مہاتمنے

नमः पारप्रतिष्ठाय सर्वान्तपदगाय ते।
नमः समस्ततत्ताध्वव्यापिने चित्स्वरूपिणे॥१४॥

(۱۴) نماہ، پار، پرِتشٹھایہ، سَروانتہ، پدگایہ، تے
نماہ، سمتہ، تتوادھو، ویاپنے، چِت، سورُو، پنے

रेवद्वराय रूद्राय नमस्ते रूपरूपिणे।
परापरपरिस्पन्दमन्दिराय नमो नमः॥१५॥

(۱۵) ریے وت، ورائے، رُدرائے، نمستے، رُوپہ، رُوپنے
پراپر، پرسپند، مندرائے، نمونماہ

भरिताखिलविश्वाय योगिगम्याय योगिने।
नमः सर्वेश्वरेशाय महाहंसाय शम्भवे॥१६॥

(۱۶) بھرتا، کھِلہ، وِشوائے، یوگہِ، گمیائے، یوگِنے
نماہ، سرویشوریے شائے، مہاہنسائے، شمبھویٔے

चर्च्याय चर्चनीयाय चर्चकाय चरायते।
रवीन्दुसन्धिसंस्थाय महाचक्रेश ते नम:॥१७॥

(١٧) چرچائے، چرچہ نی یائے، چرچکائے، چرائے تے
روِندُو، سندھی، سنستھائے، مہاچکرشیہ، تے، نماہ

सर्वानुस्यूतरूपाय सर्वाच्छादकशक्तये।
सर्वभक्षाय शर्वाय नमस्ते सर्ववेदिने॥१८॥

(١٨) سَروانُو، سیُوتہ، رُوپائے، سرواچھادکہ، شکھتیئے
سَروبکھشایہ، شروائے، نمستے، سرّوویے وِنے

रम्याय बल्लभाकान्तदेहार्धाय वियोगिने।
नम: प्रयत्नदुष्प्रापसौभाग्यफलदायिने॥१९॥

(١٩) رمیائے، وِلبھا، کرانتہ، دیے ہار، دھائے، وِیوگِنے
نماہ، پرَپتہ، دُوشپراپہ، سَوبھاگیہ، پھلہ دائینے

तन्महेशाय तत्त्वार्थवेदिने भवभेदिने।
महाभैरवनाथाय भक्तिगम्याय ते नम:॥२०॥

(٢٠) تن، مہیئے شائے، تتوارتھ، ویے دِنے، بھَو، بھیدنے
مہا بھیرو، ناتھائے، بھگتی، گمیائے، تے، نماہ

शक्तिगर्भप्रबोधाय शरण्यायाशरीरिणे।
शान्तिपुष्टयादिसाध्यार्थसाधकाय नमोऽस्तु ते॥२१॥

(٢١) شکھتی، گربھ، پربودھائے، شرنیاپا، شری رِنے
شانتی، پوشٹیادِ، سادھیارتھ، سادھکائے، نموستُو تے

रवत्कुण्डलिनीगर्भप्रबोधप्राप्तशक्तये।
उत्स्फोटनापटुप्रौढ़परमाक्षरमूर्तये॥२२॥

(٢٢) روت، کنڈل نی، گربھ، پربودھ، پراپت، شکھتیئے
اُدت، سفوٹنا، پٹُو، پَروڈھ، پرماکھیر، مُورتیئے

समस्तव्यस्तसंग्रस्तरश्मिजालोदरात्मने।
नमस्तुभ्यं महामीनरूपिणे विश्वगर्भिणे॥२३॥

(٢٣) سمست، ویست، سم گرستہ، رشمی جالو، دَراتمنے
نمس، توبھیم، مہامینہ، رُوپی نے، وِشوگربھنے

रेवारणिसुमुद्भूतवह्निज्वालावभासिने।
घनीभूतविकल्पात्मविश्वबन्धविलापिने॥२४॥

(۲۴) ریوے دا، رنی، سمُوت بھُوت، وہنی، جوالاوِ بھاسنی
گھنی، بھُوت، وِکلپاتمہ، وِشو، بندھ، وِلاپنی

भोगिनीस्यन्दनारूढिप्रौढिमालब्धगर्विणे।
नमस्ते सर्वभक्ष्याय परमामृतलाभिने॥२५॥

(۲۵) بھوگی نی، سیَندنا، رُوڈِھ، پَروڈِھ، مالبدھ، گروِنے
نمستے، سروبکھشیائے، پرمامرتہ، لابھنے

नफकोटिसमावेशभरिता खिलसृष्टये।
नमः शक्तिशरीराय कोटिद्वितयसङ्गिने॥२६॥

(۲٦) نفہ، کوٹی، سماویے شہ، بھرتا کھِلہ، سرشٹیئے
نماہ، شکھتی، شری رائے، کوٹی، دُویتیَ، سنگھنی

महामोहमलाकान्तजीववर्गावबोधिने।
महेश्वराय जगतां नमः कारणबन्धवे॥२७॥

(۲۷) مہا، موہہ، ملاکرانتہ، جیو، ورگاوَ، بودھی نے
مہیئے، شورائے، جگہ تام، نماہ، کارن بندھ دے

स्तेनोन्मूलनदक्षैकस्मृतये विश्वमूर्तये।
नमस्तेऽस्तु महादेवनाम्ने परस्वधात्मने॥२८॥

(۲۸) سیتے نون، مُولنہ، وکھیئے کہ، سُمرتہ ئے، وِشو مُورتیئے
نمس تے ستُو، مہادیونا میئے، پربوداھا تمنے

रुग्द्राविणे महावीर्यरुरुवंशविनाशिने।
रुद्राय द्रावितोशेषबन्धनाय नमोऽस्तुते॥२९॥

(۲۹) روگ، دراوِنے، مہاوریہ، رورُو، ولش، وِناشہِ نے
رُودرائے، دراوِتا، شے شہ، بندھنائے، نموستوتے

द्रवत्पररसास्वादचर्वणोद्युक्तशक्तये।
नमस्त्रिदशपूज्याय सर्वकारणहेतवे॥३०॥

(۳۰) دروت، پر، رسا، سواد، چرونو، دیُوتہ، شکھتیئے
نمس، تردش پُوجیائے، سرد کارن، ہیے تہ دے

रूपातीत नमस्तुभ्यं नमस्ते बहुरूपिणे।
त्र्यम्बकाय त्रिधामान्तश्चारिणे चात्रचक्षुषे।।३१।।

(۳۱) رُوپاتی تہ، نمس تو بھیم، نمستے، بہُو رُوپی نے
ترمبھ کائے، ترِدھامانتہ، چارِنے، چہ ترچکھشُو شے

पेशलोपायलभ्याय भक्तिभाजां महात्मनाम्।
दुर्लभाय मलाकान्तचेतसा तु नमो नमः।।३२।।

(۳۲) پیش، لو پایہ، لبھیائے، بھکتی بھاجام، مہاتمنام
دُورلبھیائے، ملا کرانتہ، چے تہ سام، تو، نمو نماہ

भवप्रदाय दुष्टानां भवाय भवभेदिने।
भव्यानां तनमयानां तु सर्वदाय नमो नमः।।३३।।

(۳۳) بھو پروائے، دوشٹا نام، بھوائے، بھیو بھیے دِنے
بھویانام، تن میانام، تو، سرودائے، نمو نماہ

अणूनां मुक्तये घोरघोरसंसारदायिने।
घोरातिघोरमूढानां तिरस्कर्त्रे नमो नमः।।३४।।

(۳۴) انُو نام، مُوکھیتیئے، گھور، گھور سنساز، دائی نے
گھوراتی گھور، مُوڑھانام، ترِسکرترے، نمو، نماہ

इत्येवं स्तोत्रराजेशं महाभेरवभाषितम्।
यौगिनीनां परं सारं न दद्याद्यस्य कस्यचित्।।१।।

(۱) یتی دم، ستوتر، راجیے شم، مہا بھیرو، بھاشتم
یوگنی، نام، پرم، سارم، دویات، یس، کسی چت

अदीक्षते शठे कूरे निःसत्ये शुचिवर्जिते।
नास्तिके च खले मूर्खे प्रमत्ते विप्लुतेलसे।।२।।

(۲) اِدی کھِتے، شٹھے، کُرورے، نہ ستیئے، شُوچی، وَرجِتے
ناستکے، چہ، کھلے، مُورکھے، پرمہ تے، وِپ لُوتے لہ سے

गुरुशास्त्रसदाचारदूषके कलहप्रिये।
निन्दके चुम्भके क्षूद्रेऽसमयज्ञे च दांभिके।।३।।

(۳) گوروشاستر، سَداچار، دُوشہ کے، کلہہ، پریئے
نِندکے، چمبھُو کے، کھیُودرے، سمیہ یگیہ، چہ، وانبھ کے

दाक्षिण्यरहिते पापे धर्महीने च गर्विते।
भक्तियुक्ते प्रदातव्य न देयं परदीक्षिते।।४।।

(۴) داکھنیہ ،رہیہ تے، پاپے، دھرمنہ، ہی نے، چہ، گروتے
بھکتی، یُوکہ تے، پر داتہٖ دیم، نہ، دی یم، پردِی کھِتے

पशूनां सन्निधौ देवि नोच्चार्य सर्वथा क्वचित्।
अस्य वैस्मृतिमात्रेण विघ्ना नश्यन्त्यनेकशः।।५।।

(۵) پُشو نام، سِنہ دَھو، دیوی، لوچّاریم، سروتھا، کوچت
اسی، ویئے، سمرتی، باترینہ، وِگھنا، نشن تی، نے کشاہ

गुह्यका यातुधानाश्च वेताला राक्षसादयः।
डाकिन्यश्च पिशाचाश्च क्रूरसत्त्वाश्च पूतनाः।।६।।

(٦) گوہُیکا، یاتو واناسچہ، دیے تالا، راکھسا دیاہ
ڈاکہ، نشچہ، پشا چشچہ، کُروا، ستواشچہ، پوتاناہ

नश्यन्ति सर्वे पठितस्तोत्रस्यास्य प्रभावतः।
खेचरी भूचरी चैव डाकिनी शाकिनी तथा।।७।।

(٧) نشن تی، سردیے پٹھتس، تو تر ساسہ، پربھاوتاہ
کھیچری، بوھُو چری، چیو، ڈاکنی، شاکنی، تتھا

ये चान्ये बहुधा भूता दुष्टसत्त्वा भयानका।
व्याधिदौर्भिक्षदौर्भाग्यमारिमोहविषादयः।।८।।

(۸) یے، چانئیے، بہوُدھا، بھُوتا، دُوشٹہ، ستوا، بھیانہ کاہ
ویادِھی، دَور، بکھیہ، دَور بھاگیہ، ماری موہہ وِشا دیاہ

गजव्याघ्राश्च ये घोरा पलायन्ते दिशो दश।
सर्वे दुष्टाः प्रणश्यन्ति चेत्याज्ञा पारमेश्वरी।।९।।

(۹) گجہ دیا گراشچہ، یے گھورا، پلاین تے دِشو، دشہ
سرویے، دُوشٹا، پرنہ، شینتی، چے تیا گیا پرمیشوری

इति श्रीललितस्वच्छन्दे
बहुरूपगर्भस्तोत्रराजः संपूर्णः।

یتی، شر لِللہ تہ، سوچھندے
بہو رُوپ، گربھس توتر، راجا سمپُورناہ

दुर्गा शरणागति स्तुति: دُرگا شرناگتِہ ستوتی

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे, नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे।
नमस्ते जगद्वन्द्य पादारविन्दे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।१।।

نمستے، شرنیے، شِوے سانو کمپے
نمستے جگت ویاپہ کے، وِشو رُوپے
نمستے، جگت وندیہ، پادارِ وِندے
نمستے جگت تارِنے، تراہی دُور گے

नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे, नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे।
नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।२।।

نمستے جگت چنتیہ مانہ، سُو رُوپے
نمستے، مہایوگہِ نی، گیانہ رُوپے
نمستے نمستے سدانند رُوپے
نمستے جگت، تارِنی، تراہی دُور گے

अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य, भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।३।।

اناتھ سے، دی نہ ستی، ترشنا تورُ سے
بھ یار تہ سی، بھی تہ سی، بدھ سی، جن توہ
توم، ایے کا، گتِر دیوی، نِستار کرتری
نمستے، جگت تارِنی، تراہی، دُور گے

अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये ऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।४।।

ارنیے، رنے، دارُونے، شترو، مدھیے
نہ تے، ساگرے، پرانترے، راجہ، گے ہے
توم، ایے کا، گِتر، دیوی، نِستار، نَوکا
نمستے جگت تارِنی، تراہی دُور گے

توم اُیے کا، سدارادِھتا، ستیہ وادی
نیہ نے کا کھِ لا، کر ودھنا، کرودھ، نِشٹھا
پِڈا، پنگلا، توم، سُوشمنا، چہ ناڑی
نمستے جگت تارِنی، تراہی دُور گے

नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे, सदा सर्वसिद्धि प्रदात्रि स्वरूपे।
विभूतिः सतां कालरात्रिः सती त्वम्, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥१॥

نمو دیوی، دُور گے، شِوے، بھی مہ نادے
سدا، سرو، سِدھی، پرداتری، سُورُوپے
وِبھُوتی، سہ تام، کالہ راتری، ستی، توم
نمستے جگت تارِنی، تراہی دُور گے

☆☆☆

अपारे महा दुस्तरेऽत्यन्तघोरे, विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम्।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतुः नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥५॥

اَپارے، مہا، دُوسترے، تیینتہ، گھورے
دِپت، ساگرے، مہ جہ تام ویے ہہ بھاجام
توم ایکا، گتر دیوی، نِستار، ہیے تُو
نمستے جگت تارِنی، تراہی دُور گے

नमश्चण्डिके चण्डदुर्दण्डलीला समुत्खण्डिताखण्डलाशेषशत्रोः।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारबीजम् नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥६॥

نمس، چنڈِ کے، چنڈ، دُور ونڈلی لا
سمُوت، کھنڈِ تا، کھنڈلا، شے شہ، شترُو
توم، ایکا، گتر دیوی، نِستار، بی جم
نمستے جگت تارِنی، تراہی دُور گے

त्वमका सदाराधिता सत्यवादिन्यनेकाखिला क्रोधना क्रोधनिष्ठा।
[illegible] त्वं सुषुम्ना च नाडी नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे॥७॥

हुमा असले महेश्वर बूद शबशाहे कि मन दीदम

Following is the glorification of Lord Shiva written by Ali Mardan Khan who was a Kurdish and served as Governor of Kashmir twice during Mughal Rule. Owing to his experiences during his 1st term in Kashmir, he became a transformed person. It is said during his 2nd term he had become very spiritual and Lord Shiva gave him Darshan. And this glorification in Persian is a description of that Divine Vision.

English & Hindi Translation: Pt. Rajinder Nath Bhat

हुमा असले महेश्वर बूद शबशाहे कि मन दीदम
गज़नफर चर्म दर बरबूद शबशाहे कि मन दीदम
ज़ि भसमश जाम-ए-बर तन ज़ुनारश मार बर गर्दन
रवानश गंग बर सर बूद शबशाहे कि मन दीदम
सेह चशमश बर जबीन दारद ज़ि मेहरो माह रोशन तर
सेह कारण दस्त बस्तह बूद शबशाहे कि मन दीदम
ब दशतश आब-ए-कोसर व बेख नाक़ूसि नीलोफर
हिलालश ताज बरसर बूद शबशाहे कि मन दीदम
उमा अज़ सोइ-तप-बिन्गर ज़ि सद ख़ुर्शीद ताबान तर
सवारश कुलबे-ए-नर बूद शबशाहे कि मन दीदम
अजब सन्यास-ए-दीदम नमो नारायणा गुफतम
ब खाके पाय बोसीदम शबशाहे कि मन दीदम
निगाहे बर मने मिस्कीन नमूद अज़ चशिम ताबान तर
मकानश लामकान तर बूद शबशाहे कि मन दीदम
मनम मर्दान अली खानम गुलामे शाहि शाहानम
अजब इसरार मे बीनम शबशाहे कि मन दीदम

!ہما اسلے مہیشور بہود شب شاہ کمن دیدم ۱
!!غضن فر چرم در بر بہود شب شاہ کمن دیدہم

१. हूमा असले महेश्वर बूध शब शाहे किमन दीदम!

गज़न्फर चर्म दर भर बूध शब शाहे किमन दीदम!!

1. The King who I saw at night was actually Lord Maheshwara! The lower part of His body was covered with a tiger skin, the King who I saw at night!!

!اما از سوہ چپ بنگر زے سد خورشید تاباں تر ۲
!!مکان اسلا مکان تر بہود شب شاہ کمن دیدہم

२. उमा अज़ सोए चपबींगर ज़े सद ख़ुर्शीद ताबांतर!

मकांशला मकाँ तर बूध शब शाहे किमन दीदम!!

2. Mother Parvati was sitting on His left side and it appeared as if millions of moons were shining together! His abode was unlimited, the King who I saw at night!!

!سہ چشمس بر جبیں خستر زے مہرو ماہ روشن تر ۳
!!ہلالش تاج بر سر بہود شب شاہ کمن دیدہم

३. से चशमश भर जबीं खुस्तर ज़े मेहरो माह रोशन तर!

हिलालश ताज भर सर बूध शब शाहे किमन दीदम!!

3. He was looking very handsome with three eyes as if many Suns and Moons were shining! He was wearing a Crescent instead of a Crown, the King who I saw at night!!

!اکوسو نیلوفربہ دستش ابے کونسر نیزو ن ٤
!!سواری کل بہے نربر سر بہود شب شاہ کمن دیدہم

४. ब दस्तश आबे कौंसर नेज़ो नाकौंसो नीलोफर!

सवारे कल्बेइनर बूध शब शाहे किमन दीदम!!

4. He held in His hands a Trident, a Conch-shell & a Lotus flower! He was riding a Bull, the King who I saw at night!!

!زے بسمش جامے بر تن جنارش مار در گردن ٥
!!روانعش گنگ بر سر سر بہود شب شاہ کمن دیدہم

५. ज़े बस्मश जामये बरतन ज़ुनारश मार दर गर्दन!

रवानश गंग भर सर बूध शब् शाहे किमन दीदम!!

5. His body was smeared with ash and was wearing a Snake on His neck instead of a Sacred Thread! Ganga was flowing from His hair-locks, the King who I saw at night!!

!چرس گنجا و بنگ بریا دتورا اخ در امبا ٦
!!چلم با سافے تر سر بہود شب شاہ کمن دیدہم

६. चरस, गांजा व भंग बिर्यां धतूरा आख दर अम्बा!

चिलम बासाफिये तर बूध शब शाहे किमन दीदम!!

6. Cannabis (Charas, Ganja & Bhang) was kept in powdered form; Hemp (Datura) was heaped on the other side! The Earthen Pipe, which He used for smoking, was covered at the bottom with a velvet cloth, the King who I saw at night!!

!اکدرو خداوندی حیاتو موت تقدیرو کذا ٧
!!بہ فرمایش مسخر سر بہود شب شاہ کمن دیدہم

७. हयातो मौत तकदीरो कज़ा कद्रों ख़ुदावंदी!

ब फ़रमाइश मस्सखर बूध शब शाहे किमन दीदम!!

7. Life, Death, Fate, whole Manifestation was under His control and He is the Supreme, the King who I saw at night!!

!با پرسیدم خدا ہستی کنا ہستی چرا مستی ٨
!!سروشم گپت شنکر سر بہود شب شاہ کمن دیدہم

८. ब पुर्सीदम ख़ुदा हस्ती किना हस्ती चिरा मस्ती!

सरोषम गुफ़्त शंकर बूध शब शाहे किमन दीदम!!

8. I asked Him if He was any energy of God, if not then what was this ecstatic personality all about!
A voice, which came from the sky, identified Him as Lord Shankar, the King who I saw at night!!

!اجب سنیاسے دیدم نمو نارائنم گپتم ٩
!!با خاکے پیے بوسیدم سر بہود شب شاہ کمن دیدہم

९. अजब संयासये दीदम नमो नारायणा गुफ्तम!

ब खाके पाए बोसीदम शब शाहे किमन दीदम!!

9. I had the Divine Vision of a strange renounced Person who I offered my prostrated obeisances!
I applied the dust of the place, where He had placed His feet, on my forehead, the King who I saw at night!!

!ی خانم حمیدہنمنم مردے مسلمانم ال ١٠
!!خدایا بندہ پرور سر بہود شب شاہ کمن دیدہم

१०. मनम मर्दे मुसल्मानम अली खानम हमीदानम!

खुदाए बंदा परवर बूध शब शाहे किमन दीदम!!

10. I told Him that I was a Muslim person known by the name Ali Khan!
He was Himself the Lord Who takes care of all the living entities, the King who I saw at night!!
All Glories to Lord Shiva!

राशि व नक्षत्र पर आधारित नाम अक्षर

मेष | एरीज़ अ, ल, इ
नक्षत्र पर आधारित चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ

वृषभ | टॉरस ब, व, उ
नक्षत्र पर आधारित ई, उ, ऐ, ओ, वा, वी, वू, वे, वो

मिथुन | जेमिनाइ क, छ, घ
नक्षत्र पर आधारित कि, की, कू, ध, ड, छ, के, को, हा

कर्क | कैंसर ड, ह
नक्षत्र पर आधारित ही, हू, हे, हो, ड़ा, ड़ी, ड़ू, ड़े, ड़ो

सिंह | लियो म, ट
नक्षत्र पर आधारित मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

कन्या | वर्गो प, ठ, ण
नक्षत्र पर आधारित टो, पा, पी, पू, श, ण, ठ, पे, पो

तुला | लिब्रा र, त
नक्षत्र पर आधारित रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

वृश्चिक | स्कॉर्पिओ न, य
नक्षत्र पर आधारित तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यु, यी

धनु | सैजिटेरीयस भ, ध, फ, ढ
नक्षत्र पर आधारितये, यो, भा, भी, भू, ध, फा, ढ़ा, भे

मकर | कैप्रीकॉर्न ख, ज
नक्षत्र पर आधारित भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

कुम्भ | एक्वेरियस ग, श, ष
नक्षत्र पर आधारित गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

मीन | पाइसीज़ द, च, झ, थ
नक्षत्र पर आधारित दी, दू, ञा, झा, था, दे, दो, चा, ची

Female Child	**Names with Meaning (अर्थ)**
Aahaana (आहना)	'rise' or 'dawn' or 'sunrise'
Aaloka (आलोका)	'lustrous'
Aamani (आमनि)	'spring'
Aanchal (आंचल)	To give 'shelter'
Aaravi (आरवि)	'peace', 'serenity'
Aashi (आशी)	'blessing', 'laughter' and 'happiness'
Aayushi (अयुशि)	'long life' or 'blessing'
Adriti (आद्रिति)	This is a name for Goddess Durga.
Advika (आद्विका)	The meaning is 'one of a kind', 'unique'.
Aisha (आयशा)	'love', 'life', 'prosperity'
Asin (आसिन्)	Someone with beauty or grace
Aysha (आयशा)	'prosperous', living well, 'love'
Bani (बानी)	Name for Goddess Saraswati, 'maiden', 'Earth'
Bhakti (भक्ति)	'prayer' or 'devotion'
Bhaumi (बाहुमी)	Another name for Goddess Sita, made from earth.
Chaitali (चैताली)	Blessed with a good memory
Chanakshi (चानाक्षी)	Clever
Charul (चारूल)	This is another name for 'beautiful', 'stunning', 'gorgeous'.
Cherika (चेरिका)	'The Moon'
Chetal (चेतल)	one who is full of life and abundance, with vitality
Daivi (दैवी)	someone who is 'pious', 'devout'
Darshini (दर्शिनि)	'beautiful', 'blessed' or another name for goddess Durga
Dhara (धारा)	rains, 'one who sustains', Mother Earth, Gold
Dhruvi (ध्रुवि)	'Firm' or 'Assertive' or 'Strict'
Dhwani (ध्वनि)	'voice'
Dijul (दीजुल)	'Innocent'
Edha (ईढा)	'wealth', 'prosperity', 'strength'
Ekta (एकता)	to agree or 'unity'

Elika (एलीका)	Cardamom
Enakshi (एनाक्षी)	Dear eyed, Doe-eyed
Eniya (ईनीया)	'principled', 'honest'
Esha (ईशा)	desirable, attractive, pretty
Eswaria (इसवरीया)	The name is dedicated to Goddess Parvati or wife of Lord Shiva.
Falguni (फाल्गुनी)	One born in the months of February-March
Freya (फ्रेया)	'goddess of love', noble woman, deeply loved
Gamini (गामिनी)	someone who is 'quiet' or 'silent'
Gargi (गार्गी)	'scholarly' or a 'thinker'
Garima (गरिमा)	someone who radiates 'warmth'
Geshna (गेष्ना)	'Singer'
Gitali (गिताली)	appreciates 'music' or someone who loves songs
Griva (ग्रीवा)	Girl who have beautiful singing neck
Harshika (हर्षिका)	'joyful', 'laughter' or 'fun-loving'

Harshini (हर्शिनि)	'happy', 'cheerful'
Hashree (हश्री)	'Joyful'
Hemali (हेमाली)	'Ice', 'Golden Skin'
Henna (हिना)	fragrant' or 'mehendi'
Hir (हीर)	'Powerful'
Hruti (रुति)	'love'
Idaya (ईदया)	an alternative name for Goddess Parvati, 'heart'
Idika (ईदिका)	Goddess Parvati, 'perception'
Ihita (ईहिता)	Alternative name for Goddess Durga, 'fighter'
Ira (ईरा)	'being present' or 'still'
Iyla (इय्ल)	'moonlight', 'rays of the moon'
Janki (जानकी)	The daughter of King Janaka or Goddess Sita
Jasoda (जसोदा)	mother of Lord Krishna
Jemisha (जैमिषा)	'Queen of Night'
Jhanvi (झान्वी)	*The river Ganga in Hinduism*

Juhi (जूही)	'A Flower'
Jyestha (ज्येष्ठा)	'Eldest Daughter'
Kajal (काजल)	'kohl' or 'eyeliner'
Kalini (कालीनी)	'flower', 'flourishing' or the river Yamuna
Karishma (करिश्मा)	'phenomenon'
Kashika (काशिका)	'the one who shines'
Kavya (काव्या)	'Poetry', poetry in motion, 'learning', 'foresight', 'sentiment'
Kshama (क्षमा)	'to forgive'
Laranya (लारण्य)	'with grace'
Lata (लता)	'creeper'
Latika (लतिका)	'small vine' or 'vermillion dot'
Leena (लीना)	someone with magnificence or Goddess Laksmi
Mahi (माही)	'creation'
Mahika (महीका)	'dew drops'
Mayra (मायरा)	'deeply admired'
Mayukhi (मयूखी)	'peahen'
Menaha (मीनहा)	'cosmic beauty'
Mira (मीरा)	'delightful'
Mishka (मिश्का)	'gift of adoration'
Navya (नव्य)	'youthful'
Nimisha (निमिषा)	'minute', 'twinkling of an eye'
Nisha (निशा)	'night'
Nitya (नित्या)	'for eternity'
Niva (निवा)	One of the 1000 names of river Narmada, 'The Sun'
Oja (अ◌ोजा)	'vitality' or full of life
Ojasvi (ओजस्वी)	'heroic', 'valour'
Omaja (ओमजा)	A result of 'Spiritual Unity'
Omkareshwari (ओमकारेश्वरी)	'Goddess Parvati'
Omysha (ओमीशा)	'Smile', 'Goddess of birth & death'
Paakhi (पाखी)	'bird'

Pari (परी)	'angel', 'otherworldly'
Pavati (पावती)	'clear water'
Priya (प्रिया)	'adored' or 'cherished'
Ranhita (रंहिता)	'fast' or 'swift'
Ria (रिया)	'jewel' or Goddess Lakshmi
Rishima (रिशिमा)	'rays of the moon'
Roop (रूप)	'attractive'
Ryka (रयका)	'born from a wish'
Saanvi (सान्वी)	Another name for Goddess Lakshmi
Saanya (सान्या)	'unparalleled'
Sadhika (साधिका)	'go-getter', Goddess Durga
Taani (तानी)	'Encouragement'
Tanuja (तनुजा)	'A Daughter'
Tashu (ताशु)	'Horse'
Tejal (तेज़ल)	'Lustrous', 'Energetic'
Tejasvi (तेजस्वी)	'Lustrous'
Tiya (तीया)	'bird'
Trayi (त्रयी)	'intelligent', 'smart'
Trisha (ट्रिशा)	'honourable', 'valorous'
Tuhi (तूही)	'sweet song of a bird'
Udaya (उदया)	'dawn' or 'rise' or 'sunrise'
Udisha (उदिशा)	'ray of early morning'
Uditi (उदीती)	'growth', 'ascension'
Umangi (उमंगी)	'happiness', 'bliss'
Uma (उमा)	'Uma' name of Devi
Unnathi (उन्नति)	'progress', 'growth' or 'wealth' or 'epitome'
Vaani (वाणी)	This is a great option for your little one as it means 'speech'
Vaishvi (वैष्णवी)	Alternative to Goddess Parvati
Vakula (वाकुला)	flower, cleverness, patience, attentive
Wamika (वामीका)	An alternative to Goddess Durga
Yamini (यामिनी)	*'night time'*

Male Child	Names with Meaning (अर्थ)
Aadarsh (आदर्श)	'principle', 'belief', 'excellence'
Aadavan (आधावन)	The sun
Aadhish (आधीश)	'wise', someone with wisdom, 'intelligence',
Aadi (आदि)	'adores', 'perfect', 'beginning', no one will be equal to him
Aarav (आरव)	'soulful music', 'peaceful'
Advik (एडविक)	'inimitable', 'unparalleled'
Ahaan (अहान)	'early morning', 'dawn'
Akarsh (आकर्ष)	'striking'
Arnav (अर्नव)	'Oceanic'
Ayush (आयुष)	'life', 'life personified'
Bahul (बहुल)	'star', 'bright'
Baladhi (बालधि)	Someone with deep insight
Balan (बालन)	'young', 'youthful'
Banshi (बंशी)	'flute'
Bhavan (भवन)	'brilliant' 'creator', an alternate name for Krishna
Bhavik (भाविक)	'worthy', 'happy'
Bhavin (भाविन)	winner, someone who is 'alive', life
Bhavish (भवीश)	Future
Chahan (चाहन)	Meaning of this is 'super'
Chaital (चैताल)	Meaning of this name is 'consciousness'
Chaitan (चैतान)	'consciousness', 'perception', 'life', 'vitality'
Chakor (चकोर)	A bird enamored of the Moon
Chakshu (चक्षु)	'eye'
Chandan (चंदन)	'Moon'
Charit (चरित)	'story', 'verse', 'history'
Chinmay (चिन्मय)	Full of knowledge, wisdom, intelligence, supreme consciousness
Chirag (चिराग)	'light', 'lamp', 'brilliance'
Daanish (दानीश)	Clever, wise, full of intelligence
Dabeet (दबीत)	Warrior

Dahak (दहक)	'powerful', 'fierce'
Daivat (दैवत)	Someone who is 'lucky', 'divine'
Daksh (दक्ष)	'Capable', 'Son of Brahma'
Danavarsh (दानवर्ष)	Generous, giving, 'rain of wealth'
Darahaas (धराहास)	Someone with a great smile
Deepak (दीपक)	'bright', 'radiance', 'brilliance', 'lamp'
Dev (देव)	'king', 'god', 'light'
Dhairya (धैर्य)	'Patience'
Dhruv (ध्रुव)	'faithful', 'star' 'firm'
Divit (दिवित)	'immortal'
Divyansh (दिव्यांश)	Someone who is divine, full of light
Ekadanta (एकदंत)	Another name for Lord Ganesha
Ekaksh (एकाक्ष)	This one means 'one-eyed' or Lord Shiva
Ekalavya (एकलव्य)	This name means 'a devout student', 'keen observer'
Ekant (एकांत)	'Solitary'
Eshan (ईशान)	Another name for God Shiva
Faiyaz (फैयाज)	'leader', 'judge', 'artistic'
Falgun (फाल्गुन)	'Arjun'
Fanish (फाणिश)	Another name for Lord Shiva
Fravash (फ्रावश)	'protector'
Hansh (हंश)	'omnipotent' like god
Hari (हरी)	'Joy', 'Excitement'
Harikiran (हरीकिरण)	'light of God'
Hemang (हेमांग)	One with shining body
Hemanshu (हेमांशु)	'The Moon'
Herish (हेरिश)	Lord Shiva, Lord Krishna, The person who feels that what he is doing is God's wish
Hetav (हेतव)	Gives Love
Himesh (हिमेश)	King of 'Snow'
Himmat (हिम्मत)	'might', 'strength'
Hrithik (हृतिक)	From the heart

Indrajit (इंद्रजीत)	Someone who has conquered Lord Indra
Jagesh (जागेश)	Someone who has conquered the world
Jai (जय)	'triumphant' or 'winning'
Jayesh (जयेश)	Someone who is a victor, winner
Kalash (कलश)	'blessed pot'
Kalhan (कलहन)	name of first Historian of World
Kalpit (कल्पित)	'creative', 'artistic', 'with imagination'
Kiaan (कीआन)	'big-hearted', 'generous'
Lakshay (लक्ष्य)	Someone with focus, direction, sharpness
Lakshit (लक्षित)	'nonviolent'
Lehan (लेहन)	One who refuses
Likhit (लिखित)	'Written'
Lohith (लोहित)	'Red', 'Made of Copper', 'Mars'
Lokesh (लोकेश)	'King of World'
Maahir (माहिर)	Someone who is skilled
Maanav (मानव)	'to be human', 'compassionate'
Mitul (मितुल)	'moderate', 'well balanced'
Mohit (मोहित)	Ensnarled by beauty, 'Attracted'
Neerav (नीरव)	'discreet' , 'soft'
Nishith (निशीथ)	'sharp', 'witty', 'well prepared' , 'midnight'
Ohas (ओहस)	someone who is 'appreciated'
Ojas (ओजस)	someone with a lot of energy
Omarjeet (ओमरजीत)	Lord of Om
Onish (ओनीश)	Lord of mind
Paarth (पार्थ)	Prince or Son of Arjuna
Palash (पलाश)	'A Flowery Tree'
Palvit (पल्वित)	'Lord Vishnu'
Panav (पनव)	'Prince'
Panshul (पांशुल)	'fragrant', 'sweet smelling'
Paras (पारस)	The mystical stone that is believed to convert base metals to gold

Parav (पर्व)	An alternate name for a 'sage' or 'ancient one'
Piyush (पीयूष)	'Milk'
Pranay (प्रणय)	'amorousness' or 'love'
Priyansh (प्रियांश)	'love', 'affection'
Rachit (रचित)	'discoverer', 'invention'
Reyansh (रेयंश)	Ray of light, or Vishnu or brightness
Rohak (रोधक)	'Rising'
Rohan (रोहन)	'rising'
Rohit (रोहित)	'Red', 'The Sun'
Rudra (रुद्रा)	'Fearsome', 'Name of Lord Shiva'
Saaket (साकेत)	Someone with the same intent, another name for Lord Krishna
Sahil (साहिल)	'guide', 'seashore', 'bank'
Shlok (श्लोक)	'verse', 'hymn', 'chant'
Shray (श्रय)	'Credit'
Taarush (तारुष)	conqueror or someone who is victorious
Taha (ताहा)	'pure' or 'skilful'
Tanay (तनय)	'dear', 'beloved'
Tushar (तुषार)	'mist', water droplets or snow
Uchit (उचित)	It is a masculine name also known as 'proper' or 'appropriate'
Udarsh (ऊर्दश)	'overflowing'
Uday (उदय)	A warrior who rises first, rising, sunrise, appearance
Uthkarsh (उत्कर्ष)	'excellence' or 'perfection'
Vaasu (वासु)	It is 'wealth' in Hinduism
Vaayu (वायु)	Breeze, wind or heavenly
Vachan (वचन)	This name is interpreted as declaration, promise, speech
Vagesh (वागीश)	Someone who is the god of speech
Vaibhav (वैभव)	'majestic', 'ethical' or on the right path
Vihaan (विहान)	An alternative for 'morning' in Hindi
Vivaan (विवान)	*Another name for the god Krishna*

धर्म शास्त्र के विषय में आवश्यक जानकारी

१. पंचक - धनिष्ट नक्षत्र के उत्तरार्ध से रेवती नक्षत्र के अन्त तक के पांच नक्षत्रों (धनिष्ट, शतभिशक, पूभाद्रपद, उभाद्रपद, रेवती) वाली तिथियाँ पंचक कहलाता है। पंचक में दाहसंस्कार, छलुन, दक्षिण दिशा की ओर यात्रा पर जाना, मिट्टी, तेल, मिट्टी के बरतन, लकडी काटनी अथवा घर लानी, मसमुचरून इत्यादि निषेध हैं। शेष सभी कामों के लिये पंचक शुभ माना जाता है। विवाह, यज्ञोपवीत जैसे शुभ कार्य पंचक में किये जा सकते है, एसी धर्मशास्त्र की आज्ञा है।

२. करपंचक - हस्त, चित्र, स्वात, विशाख, अनुराधा यह पांच नक्षत्र वाली तिथियाँ करपंचक कहलाते हैं। यह पांच नक्षत्र प्रायः हर काम के लिए उत्तम माने जाते है।

३. त्र्यहः - जब किसी तिथि का क्षय (रावन) होता है तो उसको त्र्यहः कहते हैं। त्र्यहः अर्थात् तिथि के दिन यदि आपका या घर के किसी सदस्य का जन्म दिन हो तो जन्मदिन पहली तिथि को ही मनाए, मान लो सप्तमी तिथि का क्षय होता है और आपका जन्मदिन सप्तमी को आता है तो इस स्थिति में आपको जन्म दिन षष्ठी को मानाना चाहिए (अर्थात् एक दिन पूर्व) । व्रत तथा श्राद्ध आदि भी पहली तिथि पर करने चाहिये।

४. त्रिस्पृक - जिस दिन अधिक तिथि हो अर्थात् एक ही तिथि दो दिन तक हो तो त्रिस्पृक या अधिक दिन

कहलाता है। अगर इस दिन आपके घर के किसी सदस्य का जन्मदिन हो तो वह दूसरी तिथि को मनाए किन्तु श्राद्ध अथवा पितृकार्य पहली तिथि को सम्पन्न करना चाहिए।

५. अशौच - अशौच दो प्रकार का होता है- सूतक तथा मृतक। जन्म का अशौच सूतक कहलाता है, अपने परिवार में नव शिशु के जन्म होने पर प्रायः तीन दिन का अशौच रहता है। तथा सगोत्र में किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर दस रात्रि का अशौच माना गया है। यदि किसी अविवाहित कन्या की मृत्यु हो तो अशौच तीन दिन का होता है तथा विवाहित लडकी को माता-पिता के मृत्यु का संदेश मिलने के दिन से ही तीन दिन का अशौच होता है।

दो अशौच एक साथ होने का निर्णय - अशौच (मृतक) के दिनों में ही यदि दूसरा मरने का अशौच पडे अथवा जन्म के अशौच में ही दूसरे के जन्म का अशौच पडे तो पहले अशौच के समाप्त होने पर ही शुद्धि होती है। ऐसे ही यदि मरने के अशौच पर जन्म का अशौच पडे तो ऐसी स्थिति में मरने का अशौच समाप्त होने पर दोनों अशौचों की शुद्धि होती है। यदि जन्म के अशौच पर मरने का अशौच पडे, ऐसी स्थिति में मरने का अशौच समाप्त होने पर जन्म का अशौच भी समाप्त हो जाता है। यदि दसवें दिन पर फिर से मरने का अशौच पडे तो ऐसी स्थिति में पहला अशौच समप्त होने के पश्चात भी दो दिन के लिये दूसरा अशौच रहता है। यदि ग्यारवें दिन को सूर्योदय से पहले मरने का अशौच फिर से पडे तो दूसरा अशौच तीन दिन के लिये रहता है। माता यदि पहले अन्तर्ध्यान हुई हो तथा उन्ही अशौच के दिनों में पिता की मृत्यु हो जाये तो पिता के अशौच

की समाप्ति पर ही दोनों अशौचों की शुद्धि होती है। इसी प्रकार यदि पिता की मृत्यु पहले हो जाए और उसके अशौच में ही माता की मृत्यु हो जाये तो ऐसी स्थिति में पिता का अशौच समाप्त होने पर भी माता का अशौच दो दिन अधिक रहता है।

जननाशौच - मरणाशौच

अपने परिवार में नव शिशु के जन्म होने पर प्रायः तीन दिन तथा सहगोत्र में किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर दस रात्रि का अशौच माना गया है। अशौचावस्था में देवकार्य पितृकार्य, वदोध्ययन (वेदों का अध्यन) गुरुजनों का अभिवादन आदि करना निषेध माना गया है। यहां तक कि देव मन्दिर में प्रवेश तथा पूजन आदि करना भी वर्जित है। स्त्रियों के लिये प्रायः मास में एकबार विशेष अवस्था आती है जिसमें वह रजस्वला हो जाती है। इसमें तीन रात्रि तक उनकी आशौचावस्था रहती है।

६. अस्थि संचय - दसवें दिन तक अस्थि संचय आवश्यकरना चाहिए इसके लिये, पंचक, त्र्यहः, त्रिस्पृक, मंगल, गुरु, शनि तथा रविवार निषेध है।

७. अस्थि विसर्जन - मृत्यु के पश्चात दस दिन के अनन्तर ही गंगा में अस्थियां प्रवाहित करें यदि ऐसा सम्भव न हो तो एक वर्ष तक किसी भी शुभ दिन पर प्रवाहित करें। दान्त निकलने से पहले जिस बच्चे की मृत्यु हो उसको पृथ्वी पर गड्ढा खोद कर पृथ्वी में अर्पण करें। यदि किसी बच्चे का दान्त निकलने के बाद देहान्त हो जाए तो उसका दाह संस्कार करें किन्तु उसका दसवाँ, ग्यारहवाँ, तथा बारहवाँ दिन न करें।

८. छलुन - दसवें दिन तक छलुन आवश्यक होता है, लड़कियों को दसवें दिन तक छलुन का कार्य अवश्य

करना चाहिये अन्यथा वे ग्यारहवें तथा बारहवें दिन की 'क्रिया' में सम्मिलित नहीं हो सकती हैं। छलुन के लिये शुभवार का होना आवश्यक है। शुभवार सोमवार, बुधवार, शुक्रवार है। परन्तु गुरुवार छलुन कार्य के लिये निषेध है। इसी प्रकार छलुन का कार्य पंचक, त्र्यहः, त्रिस्पृक में करना निषेध है।

९. श्राद्ध देखने की विधि - जिस दिन तिथि के साथ 'प्र' लिखा हो उस दिन का श्राद्ध अपने दिन ही आता है, यदि तिथि के साथ 'दि' लिखा हो तो उस दिन का श्राद्ध पहले ही दिन आता है उदाहरण के लिए मानलो यदि अष्टमी तिथि से त्रयोदशी तिथि तक सब तिथियों के साथ 'प्र' लिखा हो और चतुर्दशी तिथि के साथ 'दि' लिखा हो तो चतुर्दशी का श्राद्ध अपने ही दिन आयेगा।

१०. कुम्भ तर्पण विधि - बायां यज्ञोपवीत रखकर थाली में एक छोटा सा ताम्बे का लोटा (कुम्भ घडवह) खाली रखें बायें हाथ से पानी का लोटा लेकर दायें हाथ पर पानी की धारा आिहिस्ता- आहिस्ता डालें ताकि पानी की धारा दायें अंगूठे की तरफ से ताम्बे की घडवी में पडे तथा इस मन्त्र का उच्चारण करें,,,,,,**कुम्भों वनिष्ठो जनिता शचभि यर्स्मिन् अग्रे, योन्यां गर्भे अन्तः प्लाशभिर्व्यक्ता शतधारा उत्सोदुहेन कुम्भी स्वधा पितृभ्यः तत्सत् ब्रह्म, अद्यतावत् तिथौ, अमुकमासस्य, अमुक पक्षस्य, अमुक तिथौ, अमुक वासरे** *(महीने, पक्ष, तिथि तथा वार का नाम लेकर)* **परलोकेक्षुत पिपासा निवारनार्थं सोदकुम्भ दान सहिते नित्य कुम्भे एतत त्ते तिलोदकं एतत् त्ते उदक तर्पणं हिमं हिमं रजतं रजतं** (दांया यज्ञोपवीत रखकर पानी की धारा डालते जाये तथा *इस मन्त्र का उच्चारण करते*

जायें) **नमो धर्म निधानाय नमः स्वकृत साक्षिणे नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः।** यदि स्त्री ने तर्पण करना हो तो वह मस लठुर का प्रयोग यज्ञोपवीत के बदले में कर सकती है।

११. तर्पण विधि - तर्पण करते समय पहले महीना, पक्ष, तिथि ओर वार का उच्चारण करें, उसके पश्चात पित्रों का नाम लें। यदि तिथि '**दि**' हो तो दो तिथिया पढीं जाती हैं जैसे पंचम्यां परता षष्ठयां, यदि पंचमी '**प्र**' हो तो केवल पंचम्यां तिथि ही पढें। पित्रों के नाम के साथ अपने गोत्र का नाम लेना आवश्यक है। नाना, नानी आदि को उनके ही गोत्र का नाम लेकर तर्पण करें। **तत्सत् ब्रह्म, अध्य तावत् तिथौ अद्य अमुक मासस्य, अमुक पक्षस्य, अमुक तिथौ, अमुक वासरे (महीना, पक्ष, तिथि, नाम लेकर) जैसे अद्य श्रावण मासस्य कृष्ण पक्षे पंचम्यां परता षष्ठयां सोमवासर नितायां पित्रे कृष्ण दराय कापिष्ठल मानव पिता महाये, राम दराय कापिष्ठल मानव प्रपितामहाये ग्वाशदराय कापिष्ठल मानव, मात्रे गुणवती देवयै, कापिष्ठल मानव्यै, पितामह्यै अमरावती देव्यै कापिष्ठलमानव्यै, प्रपितामह्यै वनमाली देव्यै कापिष्ठल मानव्यै।**

नोट - यदि माता पिता जीवित हैं तो उनका नाम तर्पण में न लें।

१२. भीष्म पितामह के लिये तर्पण विधि - (तिथि माघ शुक्ल पक्ष अष्टमी)

हाथ में काला तिल लेकर बाया यज्ञोपवीत रखकर दक्षिण की ओर मुख करके इस निम्न लिखि मन्त्र से तर्पण करें

वैयाघ्रपद गोत्राय सांकृत्य प्रवराय च, गंगा पुत्राय भीष्माय सर्वदा ब्रह्मचारिणे।

भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः, आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्र पौत्रोचितां क्रियाम।।

अब दाया यज्ञोपवीत रखकर भीष्म पितामह को अर्घ दें।

१३. षडमोस - किसी पितर या मृतक का अर्धवार्षिक श्राद्ध निश्चित करने के लिए निश्चित तिथि का मध्याह्न देखा जाता है। जैसे मानलो त्रयोदशी निश्चित तिथि है अतः द्वादशी को षडमोस (अर्धवार्षिक) तथा त्रयोदशी को मासिक श्राद्ध (मासवार) होगा। जन्त्री में हर एक तिथि का मध्याह्न दिया गया है। परन्तु किन्ही वजहों से यदि षड्मोस की क्रिया नहीं हो पाए तो वार्षिक श्राद्ध से पहले किसी भी निश्चित मासिक तिथि (मासवार) पर षडमोस (अर्धवार्षिक श्राद्ध) की क्रिया सम्पन्न कर सकते हैं।

१४. वार्षिक श्राद्ध - वार्षिक श्राद्ध (वहरव़ॉर) निश्चित तिथि का दिवा 'दि' प्रविठ 'प्र' (श्राद्धवत्) देखकर ही मालूम होगा। मानलो त्रयोदशी निश्चित तिथि है तो द्वादशी को मासवार तथा त्रयोदशी को वार्षिक श्राद्ध होगा। जन्त्री में प्रत्येक तिथि का 'दि' और 'प्र' दिया गया है। परन्तु किन्ही वजहों से यदि वार्षिक श्राद्ध (यानि वहरवॉर) की क्रिया नहीं हो पाए तो, यदि शुक्ल पक्ष में पितर या मृतक का देहान्त हुआ हो तो आने वाली किसी भी शुक्ल पक्ष की द्वादशी को वार्षिक श्राद्ध (वहरवॉर) संपन्न करें, ओर यदि पितर या मृतक का देहान्त कृष्ण पक्ष में हुआ हो तो किसी भी कृष्ण पक्ष की अमावसी को वार्षिक श्राद्ध (यानि वहरवॉर) सम्पन्न करें।

१५. दीपदान के विषय में - दीपदान (तीलद्युन) षडमोस या मासवार पर देने का प्रचल्लन जो कुछ समय

से आरम्भ हुआ है, गलत है। काश्मीर के किसी भी पौराणिक ग्रन्थ में इस का कही भी वर्णन नहीं है जो इस की आज्ञा देता हो कि षड़मोस या मासवार पर दीपदान देना चाहिये, केवल कार्तिक पूर्णिमा व तील अष्टमी दीपदान के स्वयं सिद्ध मुहूर्त हैं। इन दिनों के विना आप कृपया दीपदान देने के लिए दीपदान मुर्हूत का चयन अवश्य करें।

१६ दिवगोण - दिवगोण संपन्न करके यदि अशौच पडे तो अशौच का दोष नहीं होता है। विवाह तथा यज्ञोपवीत का दिवगोण अधिक से अधिक सात दिन पहले भी करने की विधि है। यदि यज्ञोपवीत संस्कार रचाने का संकल्प किया हो और सूतक (होंछ) पडे तो कुष्माण्ड आदि से आहुति देकर दोष का निवारण किया जा सकता है, परन्तु मृतक के लिये यह नियम लागू नहीं होगा। याद रहे देवगोण के लिए कोई मुहूर्त, नक्षत्र, तथा तिथि आदि देखने की कोई आवश्यकता नहीं है, परन्तु दिवगोण के दिन यदि भौमवार या शनिवार हो तो देवगोण का आरम्भ सूर्य उदय से पहले ही करें।

१७. यज्ञोपवीत धारण का अधिकार:- यज्ञोपवीत संस्कार के अनुपालन में शुचिता और पवित्रता का विशेष ध्यान रखना आवश्यक होता है। स्त्री के शरीर का निर्माण इसतरह से हुआ है कि उसे मास में कुछ दिन अपवित्र दशा में रहने के लिये बाध्य होती है। पुरुष के समान स्त्री ब्रह्मचर्य धर्म का पालन (रजस्वला होने पर) करने योग्य नहीं रहती है। इसी प्रकार मन्त्रों के उच्चारण की अशुद्धता भी स्त्री तथा द्विजेतरों में रहती है। फिर भी मनुस्मृति में स्त्रियों का विवाह संस्कार ही उनके यज्ञोपवीत संस्कार के समान है।

वैवाहिको विधि स्त्रीणां, संस्कारो वैदिकः स्मृतः॥ (मनु स्मृति २/३७)

ज़ातक मिलाप विधि

यह तो सर्वविदित है कि ज्योतिष शास्त्र भविष्य का सूचक है, अतः विवाह के पूर्व वर-कन्या की जन्मपत्रियों अर्थात् ज़ातुक मिलाने का आशय केवल परम्परा का निर्वाह ही नहीं अपितु भावी दम्पति के स्वभाव, गुण, प्रेम, और आचार-व्यवहार के सम्बन्ध को ज्ञात करना है।

ज्योतिष में लग्न को 'शरीर' और चन्द्रमा को 'मन' माना गया है। प्रेम मन से होता है, शरीर से नहीं। इस लिए आचार्यों ने जन्मराशि से मिलाप विधि का ज्ञान करना बताया है। इस के अतिरिक्त यह भी बताया गया है कि गुण अर्थात् बल मिलान द्वारा वर और कन्या के स्वास्थ्य, विद्या, आर्थिक स्थिति तथा प्रजनन शक्ति का ज्ञान करना चाहिए। इस गुण-मिलान-पद्धति में निम्न आठ बातें होती हैं -

1. वर्ण	**2.** वश्य	**3.** तारा	**4.** योनी
5. ग्रह मैत्री	**6.** गण मैत्री (जाति दोष)	**7.** भकूट (राशि मित्रता)	**8.** नाडी दोष

काश्मीरी लोकाचार को ध्यान में रखते हुए हम ग्रह मित्रता, जाति दोष, राशि मित्रता, नाडी दोष के अतिरिक्त मंगल दोष को भी प्राथमिकता देते हैं। उपर्युक्त बातों के बल (गुण) इस तरह देखे जाते हैं :

वर्ण का 1 गुण, वश्य के 2, तारा के 3, योनि के 4, ग्रह मित्रता के 5, जाति मित्रता के 6, राशि मित्रता के 7 तथा नाडी दोष के 8 गुण होते है। इस प्रकार कुल 36 गुण होते है। इस तरह से वर और वधू के मिलान में कम से कम 18 गुण मिलने पर ही विवाह सम्बन्ध तय किया जाता है। परन्तु नाडी और राशि मित्रता के गुण अवश्य मिलने चाहिए, जिन के बिना 18 गुणों में विवाह मंगलकारी नहीं माना जाता है।

12 राशियों के नाम : मेष, वृष, मिथुन, कर्कट, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन

9 ग्रहों के नाम : सूर्य, चन्द्रमा, भौम, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु

27 नक्षत्रों के नाम : अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, तिष्या, अश्लेषा, मघा, पूर्वफाल्गुणी, उत्तरफाल्गुणी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठ, शतिभिषक, पूर्वभाद्रपदा, उत्तरभाद्रपदा, रेवती ।

ग्रह मैत्री

ग्रह मित्रता तथा राशि मित्रता (भकुट)-- ये दोनों काश्मीर प्रदेश में षष्टाष्टक, नवपंचक, द्विद्वादशी के नाम से भी जाने जाते हैं। वर और कन्या की राशियों के स्वामियों की मित्रता ग्रह मित्रता कहलाता है। जैसे वर की राशि सिंह तथा वधू की राशि वृष हो, सिंह राशि का स्वामी सूर्य तथा वृष राशि का स्वामी शुक्र है, ग्रहों के शत्रु-मित्रता चक्र में सूर्य और शुक्र शत्रु बताये गये हैं।

राशियों के स्वामी देखने का चक्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
स्वामी	भौम	शुक्र	बुध	चन्द	सूर्य	बुध	शुक्र	भौम	गुरु	शनि	शनि	गुरु

गहों की शत्रु-मित्रता का चक्र

	ग्रह	सूर्य	चन्द	भौम	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु
कन्या के राशि स्वामी	मित्र	चन्द भौम बृहस्पति	सूर्य बुध --	सूर्य चन्द बृहस्पति	सूर्य राहु शुक्र	सूर्य चन्द भौम	बुध शुक्र राहु	बुध शुक्र राहु	बुध शुक्र शनि
	शत्रु	शुक्र शनि राहु	राहु -- --	बुध राहु --	चन्द -- --	बुध शुक्र --	सूर्य चन्द --	सूर्य चन्द भौम	सूर्य चन्द भौम
	सम	बुध -- --	बृहस्पति शुक्र शनि	शुक्र शनि --	भौम बृहस्पति शनि	राहु शनि --	भौम बृहस्पति --	बृहस्पति -- --	बृहस्पति -- --

जाति दोष (गण मैत्री)

जाति दोष जानन्‍ें के लिए लडके अथवा लडकी के नक्षत्रों का पता होना आवश्यक है। देव जाति, मनुष्य जाति तथा राक्षस जाति, इन तीन जातियों में 27 नक्षत्रों को बाट कर उस नक्षत्र की जाति का अध्यन किया सकता है।

जाति दोष देखने की विधिः- अनुराधा नक्षत्र होने पर उस जातक का सम्बन्ध देव जाति से होगा, एसे ही मघा नक्षत्र होने से उस जातक की जाति राक्षस जाति होगी। पाठकों को समृण रहे कि वर और वधू की एक ही जाति का होना शुभ फल का ही सूचक है, परन्तु यदि लड़की की राक्षस जाति और लडका मनुष्य जाति से सम्भन्ध रखता हो तो विशेष हानिकारक है।

जाति देखने का चक्र

देव	अनुराध, मृग, श्रवण, पुनर्वसु, रेवती, स्वात, हस्त, तिष्या, अश्विन
मनुष्य	पूषा, पूफा, पूभा, उभा, उफा, उषा, राहि, भर, आर्द्रा
राक्षस	मघा, अश्ले, धनि, कृति, ज्येष्ट, मूल, शत, चित्रा, विशाखा

देव जाति + राक्षस जाति	मध्यम	मनुष्य जाति + देव जाति	शुभ
राक्षस जाति + देव जाति	मध्यम	देव जाति + मनुष्य जाति	शुभ
राक्षस जाति + मनुष्य जाति	अशुभ	मनुष्य जाति+ राक्षस जाति	अशुभ

राशि मित्रता (भकूट)

कन्या की जन्म राशि से वर की जन्म राशि तक गिन्ना चाहिए तथा इसी प्रकार वर की जन्म राशि से कन्या की जन्म राशि तक भी गिन्ना चाहिए। यदि गिनने पर छठी और आठवीं हो तो **षष्टाष्टक**, नवमी और पाँचवी हो तो **नवपंचक** तथा दूसरी और बारॅहवीं हो तो **द्विद्वादशी** कहलाती है। उदाहरण के लिए मेष राशि की वृश्चिक राशि के साथ षष्टाष्टक, ऐसे ही मिथुन और मकर की षष्टाष्टक होती है। यदि वर और वधू के मिलान पर मित्रषष्टाष्टक, मित्रनवपंचक या मित्रद्विद्वाशी हो तो वह शुभ फलदायक ही होती है।

राशि कूट चक्र

मित्र षष्टाष्टक	मेष + वृश्चिक	मिथुन + मकर	सिंह + मीन	तुला + वृष	धनु + कर्क	कुम्भ + कन्या
शत्रु षष्टाष्टक	वृष + धनु	कर्क + कुम्भ	कन्या + मेष	वृश्चिक + मिथुन	मकर + सिंह	मीन + तुला
मित्रनवपंचक	मेष + सिंह	मिथुन + तुला	सिंह + धनु	तुला + कुम्भ	धुन + मेष	कुम्भ + मिथुन
शत्रुनवपंचक	वृष + कन्या	कर्क + वृश्चिक	कन्या + मकर	वृश्चिक + मीन	मकर + वृष	मीन + कर्क
मित्रद्विद्वादशी	मेष + मीन	मिथुन + वृष	सिंह + कर्क	तुला + कन्या	धनु + वृश्चिक	कुम्भ + मकर
शत्रुद्विद्वाशी	मेष + वृष	कर्क + मिथुन	सिंह + कन्या	तुला + वृश्चिक	धनु + मकर	कुम्भ + मीन

नाडी दोष

नीचे दिये गये नाडी चक्र से आप वर और वधू की नाडी का ज्ञान रख सकते है। यदि दोनों का नक्षत्र आद्य नाडी की पंक्ति में हो तो आद्य नाडी दोष होता है, ऐसे ही यदि दोनों का नक्षत्र मध्यनाडी की पंक्ति में हो तो मध्य नाडी दोष कहलाता है तथा यदि दोनों वर वधू का नक्षत्र अन्त्य नाडी की पंक्ति में हो तो अन्त्य नाडी दोष कहलाता है। इन तीन में से मध्य नाडी दोष विशेष हानिकारक माना जाता है। पाठकगण नोट करें कि यदि नाडी दोष होने पर एक नक्षत्र हो परन्तु वह नक्षत्र भिन्न भिन्न पादों पर हों तो नाडी दोष नहीं होता है। उदाहरण के लिए यदि वर और वधू दोनों का नक्षत्र कृतिका हो तो अन्त्य नाडी दोष होता है परन्तु यदि वर के नक्षत्र का पाद दो तथा वधू के नक्षत्र का पाद तीन हो तो नाडी दोष नहीं माना जाता है।

नाडी देखने का चक्र

अद्य नाडी	आश्विन	आर्द्रा	पुनर्वसु	उफा	हस्त	ज्येष्ठा	मूल	शतभि	पूभा
मध्य नाडी	भरण	मृगशिर	तिष्या	पूफा	चित्रा	अनुराधा	पूषा	धनिष्ट	उभा
अन्त्य नाडी	कृतिका	रोहिणी	अश्ले	मघा	स्वात	विशाख	उषा	श्रवण	रेव

नाडी दोष अपवाद

1. कुल सताईस नक्षत्रों में से **रोहिणी, मृगशिर, तिष्या, कृत्तिका, उत्तराभाद्रपद, श्रवण, आर्द्रा, ज्येष्ट, रेवती** नक्षत्रों पर कई आचार्यो ने अपने ग्रथों में यह सपष्ट रूप से वर्णन किया हैं कि मिलान में उपर्युक्त आठ नक्षत्र नाढी दोष से मुक्त हैं।
2. यदि वर या वधू में से एक की राशि ***कन्या*** और दूसरे की ***मिथुन***; एक की ***धनु*** और दूसरे की ***मीन*** तथा एक की ***तुला*** तथा दूसरे की ***वृष*** हो तो नाडी दोष नहीं होता।
3. वर तथा कन्या की राशि एक हो परन्तु नक्षत्र अलग अलग हो तो नाडी दोष नहीं होता।
4. नाडी दोष होने पर यदि पाद भेद हो तो भी नाडी दोष नहीं होता है।
5. वर और वधू के राशि स्वामीयों अथवा नवांश स्वामियों की यदि आपस में मित्रता हो तो जाति दोष, षष्ठाष्टक अर्थात् ग्रह मित्रता दोष नहीं होता।

भौम दोष का फल एवं अपवाद

विवाह योग्य लडके व लडकी की जन्मकुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, ग्रहमैत्री, नाडी आदि अष्टकूट सम्बन्धी गुण मिलान के पश्चात कुण्डली में मंगल एवं मंगलीक दोष पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। जन्म कुण्डली में 1, 4, 7, 8, 12 वें घर में मंगल का होना मंगल दोष कहलाता है। मंगली दोष वैवाहिक जीवन को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करता है, विवाह में विघ्न, विलम्ब, व्यवधान, विवाहोपरान्त दम्पत्ति में से किसी एक अथवा दोनों को शारीरिक, मानसिक अथवा आर्थिक कष्ट, पारस्परिक मन मुटाव, आरोप-प्रत्यारोप तथा विवाह विच्छेद आदि। फिर भी मंगलदोष से भयभीत या आतंकित नहीं होना चाहिये क्योंकि हमारे आचार्यों तथा ऋषियों के महूर्तग्रन्थों में निम्नलिखित अनेक परिहार वाक्य मिलते हैं जिन से मंगलदोष निरस्त या भंग हो जाता है।

भौम दोष का अपवाद

१. कुज दोषवती देया कुजदोषवते किल।
नास्ति दोष न चानिष्टं दम्पत्योः।। सुखवर्धनम्।

मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगलदोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वरवधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढता है।

२. सप्तमे यदा सौरिर्लग्ने वापि चतुर्थके।
अष्टमे द्वादशे चैव तदा भौमो न दोषकृत ।।

यदि वर की कुण्डली में एक में पूर्वोक्त प्रकार से मंगल हो दूसरी में सप्तम, लग्न, चतुर्थ, अष्टम्, द्वादश, इन भावों में शनि हो तो परस्पर भौम का दोष नहीं रहता।

३ . शनि भौमोथवा कश्चित् पापोवा तादृशोभवेत ।
तेष्वेव भवनेषु भौम दोष विनाश कृत ।। (फलित संग्रह)

यदि लडकी की कुण्डली में 1, 4, 7, 8, 12 वें भाव में मंगल हो और लडके की कुण्डली में उपर्युक्त भावों में शनि, मंगल, सूर्य, राहु आदि पापग्रह स्थित हों तो भौम दोष भंग हो जाता है, इसी प्रकार लडके की कुण्डली में भौम दोष होने पर उपर्युक्त भावों में कोर्द पापग्रह होने से भी भौम दोष नहीं रहता।

४. अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे ।

द्यूने मृगे कार्किचाष्टौ भौमदोषा न विद्यते ।। (मुहूर्त पारिजात)

लडके अथवा लडकी की कुण्डली में लग्न में मेष राशि का मंगल हो, वृश्चिक का मंगल चौथा हो, मकर का सातवें, कर्कट का आठवें एवं धनु राशि का मंगल 12 वें में हो तो मंगल देष नहीं होता है।

५. सप्तमस्थो यदा भौमो गुरुणा च निरीक्षितः

तदातु सर्वसौख्यं स्यात् मंगलीदोष नाशकृत ।।

यदि सातवाँ मंगल हो उसपर बृहस्पति की दृष्टि हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

६. राशि मैत्रम् यदा याति गणैक्य वा यदा भवेत्।

अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते।। (मुहूर्त दीपक)

यदि वर कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशि मैत्री हो, गुणैक्य 27 गुण या इस से अधिक मिलान हो तो मंगलदोष नहीं होता है।

७. उक्त स्थानेषु चन्द्राच्च गण्येत् पापखेचरान।

पापाधिके वरे श्रेष्ठ विवाहं प्रवदेद् बुधः।।

लग्न तथा चन्द्रमा से उक्त स्थनों (1, 4, 7, 8, 12) में पाप ग्रहों की संख्या गिनें, यदि कन्या से वर की पापसंख्या अधिक होतो विवाह सम्बन्ध श्रेष्ठ समझना चाहिए।

भौम दोष की शान्ति के लिये प्रमुख उपाय -

मंगलवार का व्रत रखें। दिन में नमक के बिना तरल भोज्य पदार्थ (चाय, काफी, दूध, लस्सी, फलों के रस) लें। सायंकाल थाली में रोली से त्रिकोण बनाएँ तथा पंचोपचार (लाल चंदन, लाल पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य) से पूजन करें। तत्पश्चात् सूर्यास्त से पूर्व ही गेहूँ की रोटी, घी, गुड ग्रहण करें।

मंगल दोष अधिक प्रबल हो तो मंगल चंडिका स्तोत्र का **108** दिन तक नित्यप्रति **21** बार जप करें। प्रातः काल पूर्वाभिमुख होकर बैठें व पंचमुखी दीप प्रज्वलित करके अपने इष्ट तथा मंगल ग्रह का पंचोपचार से करें, फिर निम्नलिखित जप करें -

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचंडिके। हारिके विपदां राशे हर्षमंगलकारिके।।
हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायिके। शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगलचंडिके।।
मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले। सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये।।

जातक मिलाने की सारिणी

लडकी	लडका	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा	स्वात	विशा	विशा	अनुरा	ज्येष्ठा	मूल	पूषा	उषा	उषा	श्रवण	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेवत
मेष	अश्वि	23	27	22	19	25	15	20	25	23	25	26	21	21	15	16	15	24	26
	भर	15	28	21	19	18	20	20	18	26	28	26	10	10	20	24	23	17	26
	कृति	28	14	19	17	20	26	25	19	12	14	14	25	25	26	18	18	20	13
वृष	कृति	22	09	21	22	25	30	22	15	07	12	11	25	29	30	23	20	22	13
	रोहि	18	15	08	15	30	24	14	20	11	16	18	19	25	24	29	26	27	19
	मृग	11	25	17	24	22	25	15	11	17	22	26	12	18	26	28	25	18	27
मिथुन	मृग	13	27	20	13	13	14	23	19	25	20	24	10	12	21	23	24	17	26
	आर्द्रा	20	27	20	14	19	05	15	28	27	22	23	17	19	12	17	19	26	26
	पुन	20	27	21	15	21	06	14	27	27	22	23	17	19	13	16	18	27	26
कर्क	पुन	19	27	21	19	25	11	08	21	21	26	27	21	12	06	10	16	25	25
	तिष्या	11	25	21	19	17	21	18	13	21	26	23	11	04	13	18	26	18	26
	अश्ले	26	12	17	16	19	26	29	23	08	13	13	26	17	18	11	18	20	12
सिंह	मघा	24	11	16	25	25	32	24	19	09	04	05	18	24	25	18	18	19	12
	पूफा	10	25	18	24	23	25	20	17	24	19	19	06	11	19	24	24	17	25
	उफा	18	27	18	25	31	17	09	25	25	20	20	12	18	11	16	16	27	25
कन्या	उफा	17	26	17	18	26	12	14	30	30	24	24	24	17	10	15	17	28	26
	हस्त	20	27	19	20	26	14	15	27	29	23	24	20	19	11	14	16	26	26
	चित्रा	19	19	33	27	11	25	27	13	21	16	17	16	16	24	17	19	10	19

जातक मिलाने की सारिणी

लडकी	लडका →	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	↓	चित्रा	स्वात	विशा	विशा	अनुरा	ज्येष्ठा	मुल	पुषा	उषा	उषा	श्रवण	धनि	धनि	शत	पुभा	पुभा	उभा	रेवत
तुला	चित्रा	28	27	34	23	07	21	27	13	21	24	25	23	18	26	19	12	03	12
	स्वात	28	28	20	10	20	17	23	27	19	23	23	28	21	22	32	19	19	11
	विशा	34	19	28	18	18	22	28	21	13	16	16	30	26	26	30	14	13	04
वृश्चिक	विशा	27	07	15	28	27	32	28	22	08	11	11	25	24	26	20	29	18	10
	अनुरा	07	21	16	28	28	31	16	14	22	25	26	12	11	20	25	24	18	26
	ज्येष्ठ	20	15	19	32	30	28	14	17	17	20	20	25	26	19	10	10	20	20
धनु	मूल	26	21	26	23	17	16	28	28	26	14	15	21	29	22	15	17	15	26
	पूषा	12	27	20	17	16	18	27	28	34	22	27	06	15	24	29	29	23	31
	उषा	20	19	12	09	24	18	25	35	28	18	15	14	23	24	29	30	31	23
मकर	उषा	23	22	15	12	17	27	15	24	17	28	27	26	16	17	30	30	21	23
	श्रवण	24	22	15	12	27	21	14	23	15	26	28	27	17	18	21	29	30	24
	धनि	26	24	29	26	12	26	21	07	15	26	27	28	17	23	18	25	15	23
कुम्भ	धनि	18	20	25	25	11	25	30	16	25	17	18	18	28	33	28	17	07	14
	शत	26	21	21	27	20	18	25	25	25	17	18	24	23	28	19	08	21	16
	पूभा	19	26	20	21	27	11	15	30	30	23	29	18	27	29	28	16	22	20
मीन	पूभा	11	19	13	19	25	10	14	29	29	29	23	25	16	07	15	28	33	31
	उभा	02	19	12	18	25	27	24	22	30	30	30	15	06	15	21	33	28	33
	रेव	12	10	04	11	26	21	26	29	21	24	22	23	14	16	18	30	33	28

जातक मिलाने की सारिणी

लडकी	लडका	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		आश्वि	भर	कृति	कृति	रोहि	मृग	मृग	आर्द्रा	पुन	पुन	तिष्या	अश्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	हस्त	चित्रा
मेष	अश्वि	28	33	28	18	24	23	26	17	18	23	31	27	20	24	15	11	11	13
	भर	33	28	29	18	27	15	18	26	26	31	24	25	26	24	24	19	19	06
	कृति	27	28	29	18	10	17	20	20	20	25	27	23	16	19	20	15	15	19
वृष	कृति	19	19	19	28	19	27	17	23	24	21	23	19	19	22	22	20	21	23
	रोहि	24	24	11	20	28	36	27	23	22	26	27	13	11	25	27	26	26	19
	मृग	24	15	19	27	35	29	19	24	23	26	19	21	20	16	25	23	19	12
मिथुन	मृग	27	18	23	19	26	20	28	33	31	20	11	15	24	21	29	31	34	20
	आर्द्रा	19	27	22	19	25	26	34	28	25	12	21	13	22	28	21	25	25	27
	पुन	19	26	22	19	22	23	32	24	28	14	21	16	22	26	20	24	25	27
कर्क	पुन	22	29	25	21	24	25	18	10	13	28	34	29	17	21	15	17	18	20
	तिष्या	30	21	27	23	25	18	11	19	24	34	28	29	19	21	24	26	26	12
	अश्ले	25	23	22	19	12	21	13	12	15	29	29	28	15	22	18	21	20	26
सिंह	मघा	19	19	16	17	11	18	21	21	20	17	19	16	28	30	27	15	15	20
	पूफा	25	24	19	20	24	16	19	27	26	23	17	17	30	28	34	24	21	06
	उफा	19	27	22	23	27	22	29	22	22	17	26	20	27	34	28	18	17	15
कन्या	उफा	11	21	16	21	26	24	32	22	24	18	28	21	16	23	17	28	27	25
	हस्त	11	19	16	21	24	31	32	19	24	18	27	22	16	21	15	26	28	28
	चित्रा	13	05	19	23	27	11	19	26	25	20	122	26	22	07	14	25	27	28

जातक मिलाने की सारिणी

लडकी	लडका	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि	भर	कृति	कृति	रोहि	मृग	मृग	आर्द्रा	पुन	पुन	तिष्या	अश्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	हस्त	चित्रा
तुला	चित्रा	22	14	28	23	19	11	12	20	25	19	11	25	25	11	18	18	26	20
	स्वात	28	30	18	13	17	27	27	26	34	28	28	13	14	26	26	26	28	27
	विशा	21	22	20	15	09	17	19	20	20	21	21	17	17	19	18	18	19	26
वृश्चिक	विशा	17	23	15	20	14	22	11	13	13	18	18	15	25	23	22	17	18	26
	अनुरा	24	15	19	24	28	21	10	15	20	25	17	20	25	21	29	24	25	11
	ज्येष्ठ	10	18	23	29	23	30	12	02	04	10	20	25	31	24	16	11	11	24
धनु	मूल	12	19	25	20	13	13	21	14	12	08	18	23	24	24	20	13	13	26
	पूषा	33	19	18	13	19	11	19	27	27	23	15	24	26	17	25	29	27	12
	उषा	33	26	12	06	10	17	25	26	27	23	23	09	09	24	25	29	29	20
मकर	उषा	27	29	15	12	16	23	19	25	22	28	28	14	05	20	21	24	24	16
	श्रवण	28	27	15	12	17	26	23	20	22	28	28	14	06	19	20	23	24	17
	धनि	20	11	26	31	19	11	08	16	15	21	13	27	19	05	11	16	17	15
कुम्भ	धनि	20	11	25	30	26	18	11	18	17	12	04	18	25	11	19	18	25	17
	शत	15	21	31	31	25	27	20	12	12	07	13	19	26	20	12	11	14	25
	पूभा	18	25	20	24	30	30	24	17	17	12	20	12	19	25	17	16	21	18
मीन	पूभा	15	21	25	19	26	26	24	18	18	17	25	18	17	23	15	16	16	18
	उभा	24	16	19	21	26	18	17	25	27	26	19	20	18	15	26	27	26	09
	रेव	25	26	11	13	17	26	25	24	25	25	26	13	12	23	23	24	25	19

Note: The below Muharats, for Marriage विवाह मुहूर्त, Vehicle Purchase वाहन खरीदने का मुहूर्त and House-warming गृह प्रवेश मुहूर्त are published for Kashmiri Pandits living in United States of America on **West Coast and East Coast** for the Year 2022-23. These dates are prepared keeping in view of Kashmiri Pandit Traditional Ethnicities. If you want to check out auspicious dates of Mekhla (यज्ञोपवीत मुहूर्त), Auspicious dates for Engagement (वाग्दान मुहूर्त)or any insights on the auspicious wedding dates in any corner of world like Europe, Australia or Middle east.
You can reach us on whats-app at **+91 96826 13996** or email us at **vijayeshwer@yahoo.com.**

Marriage Dates for the Year 2022-23 for United States **(West Coast)**

विवाह मुहूर्त ईस्वी 2022–23 पश्चिमी अमरीका के क्षेत्रों के लिए

April 14, 2022, Thursday	06:23 AM to 07:27 PM	Trayodashi, Chaturdashi
April 16, 2022, Saturday	06:47 PM to 06:19 AM, Apr 17	Pratipada
April 17, 2022, Sunday	06:19 AM to 05:04 PM	Pratipada, Dwitiya
April 20, 2022, Wednesday	09:52 PM to 06:15 AM, Apr 21	Shashthi
April 22, 2022, Friday	07:44 AM to 06:12 AM, Apr 23	Saptami, Ashtami
April 28, 2022, Thursday	06:07 AM to 11:56 AM	Trayodashi
May 2, 2022, Monday	12:04 PM to 03:46 AM, May 03	Dwitiya, Tritiya
May 9, 2022, Monday	11:01 AM to 05:55 AM, May 10	Navami
May 11, 2022, Wednesday	06:58 AM to 06:47 PM	Ekadashi
May 12, 2022, Thursday	06:21 AM to 05:53 AM, May 13	Dwadashi
May 16, 2022, Monday	02:02 PM to 10:16 PM	Pratipada, Dwitiya
May 18, 2022, Wednesday	11:06 AM to 05:07 PM	Chaturthi

May 19, 2022, Thursday	02:47 PM to 05:48 AM, May 20	Panchami
May 20, 2022, Friday	05:48 AM to 12:48 PM	Shashthi
May 25, 2022, Wednesday	05:45 AM to 05:45 AM, May 26	Ekadashi, Dwadashi
May 30, 2022, Monday	05:37 PM to 05:43 AM, May 31	Pratipada
June 5, 2022, Sunday	06:25 PM to 05:41 AM, Jun 06	Saptami
June 6, 2022, Monday	05:41 AM to 01:56 PM	Saptami
June 8, 2022, Wednesday	05:41 AM to 02:57 PM	Navami
June 11, 2022, Saturday	08:17 AM to 01:35 PM	Dwadashi
June 15, 2022, Wednesday	12:07 AM to 05:41 AM, Jun 16	Tritiya
June 20, 2022, Monday	04:05 PM to 05:42 AM, Jun 21	Ashtami
June 22, 2022, Wednesday	05:42 AM to 11:27 AM	Navami, Dashami
July 3, 2022, Sunday	05:46 AM to 08:14 PM	Panchami
July 4, 2022, Monday	11:46 PM to 05:47 AM, Jul 05	Shashthi
July 7, 2022, Thursday	11:44 PM to 05:49 AM, Jul 08	Navami
November 25, 2022, Friday	09:15 AM to 03:30 PM	Tritiya
November 27, 2022, Sunday	08:04 AM to 08:59 PM	Panchami
December 1, 2022, Thursday	04:14 PM to 06:41 AM, Dec 02	Dashami
December 2, 2022, Friday	06:41 AM to 04:21 PM	Dashami
December 7, 2022, Wednesday	07:16 AM to 06:46 AM, Dec 08	Purnima, Pratipada
December 8, 2022, Thursday	06:46 AM to 01:29 AM, Dec 09	Pratipada, Dwitiya
January 15, 2023, Sunday	06:58 AM to 09:02 PM	Navami
January 25, 2023, Wednesday	06:54 AM to 06:54 AM, Jan 26	Panchami, Shashthi
January 26, 2023, Thursday	06:54 AM to 11:12 PM	Shashthi, Saptami
January 30, 2023, Monday	08:45 AM to 09:29 PM	Dashami

February 6, 2023, Monday	08:14 AM to 02:33 AM, Feb 07	Pratipada, Dwitiya
February 8, 2023, Wednesday	04:53 PM to 06:44 AM, Feb 09	Chaturthi
February 9, 2023, Thursday	06:44 AM to 03:15 AM, Feb 10	Chaturthi, Panchami
February 12, 2023, Sunday	08:20 AM to 12:57 PM	Saptami
February 13, 2023, Monday	01:06 PM to 10:56 PM	Ashtami, Navami
February 15, 2023, Wednesday	04:48 PM to 06:37 AM, Feb 16	Ekadashi
February 22, 2023, Wednesday	06:30 AM to 12:53 AM, Feb 23	Tritiya, Chaturthi
February 27, 2023, Monday	06:24 AM to 06:23 AM, Feb 28	Ashtami, Navami
March 5, 2023, Sunday	02:39 PM to 02:47 AM, Mar 06	Chaturdashi
March 9, 2023, Thursday	07:38 AM to 04:27 PM	Tritiya
March 10, 2023, Friday	05:41 PM to 06:09 AM, Mar 11	Chaturthi
March 12, 2023, Sunday	07:51 PM to 07:06 AM, Mar 13	Shashthi

Vehicle Purchase Muhurt for the Year 2022-23 for United States **(West Coast)**

वाहन खरीदने का मुहूर्त ईस्वी 2022-23 पश्चिमी अमरीका के क्षेत्रों के लिए

April 6, 2022, Wednesday	06:34 AM to 06:32 AM, Apr 07	Shashthi
April 8, 2022, Friday	01:13 PM to 06:30 AM, Apr 09	Ashtami
April 15, 2022, Friday	01:55 PM to 06:21 AM, Apr 16	Purnima
April 18, 2022, Monday	03:09 PM to 04:08 AM, Apr 19	Tritiya
May 2, 2022, Monday	04:48 PM to 06:02 AM, May 03	Tritiya
May 5, 2022, Thursday	08:50 PM to 05:59 AM, May 06	Panchami, Shashthi
May 6, 2022, Friday	05:59 AM to 02:26 AM, May 07	Shashthi

May 13, 2022, Friday	05:53 AM to 02:52 AM, May 14	Trayodashi
May 16, 2022, Monday	05:51 AM to 05:55 PM	Pratipada
May 20, 2022, Friday	12:48 PM to 02:29 AM, May 21	Shashthi
June 2, 2022, Thursday	05:42 AM to 11:47 AM	Tritiya
June 3, 2022, Friday	02:11 PM to 05:42 AM, Jun 04	Panchami
June 9, 2022, Thursday	05:41 AM to 05:41 AM, Jun 10	Dashami, Ekadashi
June 10, 2022, Friday	05:41 AM to 05:15 PM	Ekadashi
July 1, 2022, Friday	05:45 AM to 03:26 PM	Tritiya
July 6, 2022, Wednesday	07:18 AM to 05:48 AM, Jul 07	Ashtami
July 8, 2022, Friday	05:55 AM to 10:55 PM	Dashami
July 25, 2022, Monday	05:59 AM to 12:36 PM	Trayodashi
August 3, 2022, Wednesday	06:06 AM to 05:10 PM	Shashthi
August 4, 2022, Thursday	04:36 PM to 06:07 AM, Aug 05	Ashtami
December 7, 2022, Wednesday	06:45 AM to 06:46 AM, Dec 08	Purnima, Pratipada
December 8, 2022, Thursday	06:46 AM to 10:04 PM	Pratipada
January 30, 2023, Monday	08:45 AM to 06:51 AM, Jan 31	Dashami, Ekadashi
February 9, 2023, Thursday	06:28 PM to 06:43 AM, Feb 10	Panchami
February 10, 2023, Friday	06:43 AM to 06:42 AM, Feb 11	Panchami, Shashthi
February 13, 2023, Monday	01:06 PM to 07:34 PM	Ashtami
February 27, 2023, Monday	06:24 AM to 12:51 PM	Ashtami
March 2, 2023, Thursday	06:21 AM to 07:41 PM	Ekadashi
March 9, 2023, Thursday	07:24 AM to 06:10 AM, Mar 10	Tritiya
March 17, 2023, Friday	02:16 PM to 10:43 PM	Ekadashi
March 30, 2023, Thursday	11:00 AM to 06:42 AM, Mar 31	Dashami

House-Warming Muhurt for the Year 2022-23 for United States **(West Coast)**

गृह प्रवेश मुहूर्त ईस्वी 2022–23 पश्चिम अमरीका के क्षेत्रों के लिए

May 2, 2022, Monday	12:04 PM to 06:02 AM, May 03	Rohini
May 11, 2022, Wednesday	06:58 AM to 05:54 AM, May 12	Uttara Phalguni
May 13, 2022, Friday	06:18 AM to 02:52 AM, May 14	Chitra
May 16, 2022, Monday	05:51 AM to 10:16 PM	Anuradha
May 19, 2022, Thursday	02:47 PM to 04:58 AM, May 20	Uttara Ashadha
May 25, 2022, Wednesday	05:45 AM to 10:24 PM	Uttara Bhadrapada, Revati
June 9, 2022, Thursday	03:56 PM to 05:41 AM, Jun 10	Chitra
June 10, 2022, Friday	05:41 AM to 03:07 PM	Chitra
June 15, 2022, Wednesday	12:07 AM to 05:41 AM, Jun 16	Uttara Ashadha
June 16, 2022, Thursday	05:41 AM to 05:40 PM	Uttara Ashadha
June 22, 2022, Wednesday	08:15 AM to 05:44 PM	Revati
December 1, 2022, Thursday	04:44 PM to 06:41 AM, Dec 02	Uttara Bhadrapada
December 2, 2022, Friday	06:41 AM to 06:42 AM, Dec 03	Uttara Bhadrapada, Revati
December 3, 2022, Saturday	06:42 AM to 04:04 PM	Revati
December 7, 2022, Wednesday	08:07 PM to 06:46 AM, Dec 08	Rohini, Mrigashirsha
December 8, 2022, Thursday	06:46 AM to 01:29 AM, Dec 09	Mrigashirsha
December 17, 2022, Saturday	08:48 PM to 06:53 AM, Dec 18	Chitra
January 25, 2023, Wednesday	06:54 AM to 08:58 PM	Uttara Bhadrapada
January 26, 2023, Thursday	07:40 PM to 05:07 AM, Jan 27	Revati

January 30, 2023, Monday	08:45 AM to 06:51 AM, Jan 31	Rohini
February 8, 2023, Wednesday	06:45 AM to 04:53 PM	Uttara Phalguni
February 10, 2023, Friday	10:48 AM to 07:38 PM	Chitra
February 22, 2023, Wednesday	06:30 AM to 01:54 PM	Uttara Bhadrapada
March 8, 2023, Wednesday	06:13 AM to 02:50 PM	Uttara Phalguni
March 9, 2023, Thursday	04:27 PM to 06:10 AM, Mar 10	Chitra
March 13, 2023, Monday	08:57 AM to 07:43 PM	Anuradha

Marriage Dates for the Year 2022-23 for United States **(East Coast)**

विवाह मुहूर्त ईस्वी 2022-23 पूर्व अमरीका के क्षेत्रों के लिए

April 14, 2022, Thursday	06:19 AM to 10:27 PM	Trayodashi, Chaturdashi
April 16, 2022, Saturday	09:47 PM to 06:14 AM, Apr 17	Pratipada
April 17, 2022, Sunday	06:14 AM to 08:04 PM	Pratipada, Dwitiya
April 20, 2022, Wednesday	12:52 AM to 06:08 AM, Apr 21	Shashthi
April 21, 2022, Thursday	06:08 AM to 12:22 PM	Shashthi
April 22, 2022, Friday	10:44 AM to 06:05 AM, Apr 23	Saptami, Ashtami
April 28, 2022, Thursday	06:59 AM to 02:56 PM	Trayodashi
May 9, 2022, Monday	02:01 PM to 05:44 AM, May 10	Navami
May 11, 2022, Wednesday	09:58 AM to 09:47 PM	Ekadashi

May 12, 2022, Thursday	09:21 AM to 05:41 AM, May 13	Dwadashi
May 14, 2022, Saturday	12:19 AM to 05:39 AM, May 15	Chaturdashi, Purnima
May 16, 2022, Monday	05:02 PM to 01:16 AM, May 17	Pratipada, Dwitiya
May 18, 2022, Wednesday	02:06 PM to 08:07 PM	Chaturthi
May 19, 2022, Thursday	05:47 PM to 05:35 AM, May 20	Panchami
May 20, 2022, Friday	05:35 AM to 03:48 PM	Panchami, Shashthi
May 25, 2022, Wednesday	05:31 AM to 05:30 AM, May 26	Ekadashi, Dwadashi
May 30, 2022, Monday	08:37 PM to 05:27 AM, May 31	Pratipada
June 5, 2022, Sunday	09:25 PM to 05:25 AM, Jun 06	Saptami
June 6, 2022, Monday	05:25 AM to 04:56 PM	Saptami
June 8, 2022, Wednesday	05:25 AM to 05:57 PM	Navami
June 11, 2022, Saturday	11:17 AM to 04:35 PM	Dwadashi
June 12, 2022, Sunday	June 12, 2022, Sunday	Chaturdashi
June 13, 2022, Monday	05:24 AM to 11:32 AM	Chaturdashi
June 16, 2022, Thursday	05:24 AM to 10:25 AM	Tritiya
June 20, 2022, Monday	07:05 PM to 05:25 AM, Jun 21	Ashtami
June 22, 2022, Wednesday	05:25 AM to 02:27 PM	Navami, Dashami
July 3, 2022, Sunday	07:36 AM to 11:14 PM	Panchami
July 8, 2022, Friday	05:33 AM to 01:55 AM, Jul 09	Navami, Dashami
December 1, 2022, Thursday	07:14 PM to 07:02 AM, Dec 02	Dashami
December 2, 2022, Friday	07:02 AM to 07:21 PM	Dashami
December 7, 2022, Wednesday	10:16 AM to 07:07 AM, Dec 08	Rohini, Mrigashirsha
December 8, 2022, Thursday	07:07 AM to 04:29 AM, Dec 09	Pratipada, Dwitiya
December 14, 2022, Wednesday	07:12 AM to 01:12 PM	Shashthi
January 15, 2023, Sunday	08:42 AM to 12:02 AM, Jan 16	Navami

January 25, 2023, Wednesday	09:35 AM to 07:11 AM, Jan 26	Panchami, Shashthi
January 26, 2023, Thursday	07:11 AM to 02:12 AM, Jan 27	Shashthi, Saptami
January 30, 2023, Monday	11:45 AM to 12:29 AM, Jan 31	Dashami
February 6, 2023, Monday	11:14 AM to 05:33 AM, Feb 07	Pratipada, Dwitiya
February 8, 2023, Wednesday	07:53 PM to 06:58 AM, Feb 09	Chaturthi
February 9, 2023, Thursday	06:58 AM to 06:15 AM, Feb 10	Chaturthi, Panchami
February 12, 2023, Sunday	11:20 AM to 03:57 PM	Saptami
February 13, 2023, Monday	04:06 PM to 01:56 AM, Feb 14	Ashtami, Navami
February 15, 2023, Wednesday	07:48 PM to 06:49 AM, Feb 16	Ekadashi
February 16, 2023, Thursday	06:49 AM to 12:23 PM	Ekadashi
February 22, 2023, Wednesday	06:41 AM to 03:53 AM, Feb 23	Tritiya, Chaturthi
February 27, 2023, Monday	06:33 AM to 06:32 AM, Feb 28	Ashtami, Navami
March 5, 2023, Sunday	05:39 PM to 05:47 AM, Mar 06	Chaturdashi
March 9, 2023, Thursday	10:38 AM to 07:27 PM	Tritiya
March 10, 2023, Friday	08:41 PM to 06:15 AM, Mar 11	Chaturthi
March 12, 2023, Sunday	10:51 PM to 07:11 AM, Mar 13	Shashthi
March 13, 2023, Monday	07:11 AM to 11:57 AM	Shashthi

Vehicle Purchase Muhurt for the Year 2022-23 for United States **(East Coast)**

वाहन खरीदने का मुहूर्त ईस्वी 2022–23 पूर्वी अमरीका के क्षेत्रों के लिए

April 6, 2022, Wednesday	06:31 AM to 06:30 AM, Apr 07	Panchami, Shashthi
April 7, 2022, Thursday	06:30 AM to 11:02 AM	Shashthi
April 8, 2022, Friday	04:13 PM to 06:27 AM, Apr 09	Ashtami

April 18, 2022, Monday	06:09 PM to 06:11 AM, Apr 19	Tritiya
May 2, 2022, Monday	07:48 PM to 05:52 AM, May 03	Tritiya
May 6, 2022, Friday	05:49 AM to 05:26 AM, May 07	Shashthi
May 13, 2022, Friday	07:57 AM to 05:40 AM, May 14	Trayodashi
May 16, 2022, Monday	05:38 AM to 08:55 PM	Pratipada
June 2, 2022, Thursday	06:34 AM to 02:47 PM	Tritiya
June 3, 2022, Friday	05:11 PM to 05:26 AM, Jun 04	Panchami
June 9, 2022, Thursday	05:25 AM to 05:24 AM, Jun 10	Dashami, Ekadashi
June 10, 2022, Friday	05:24 AM to 08:15 PM	Ekadashi
June 17, 2022, Friday	05:29 PM to 05:24 AM, Jun 18	Panchami
July 1, 2022, Friday	05:29 AM to 06:26 PM	Tritiya
July 6, 2022, Wednesday	10:18 AM to 05:32 AM, Jul 07	Ashtami
July 7, 2022, Thursday	05:32 AM to 09:58 AM	Ashtami
July 8, 2022, Friday	08:55 AM to 01:55 AM, Jul 09	Dashami
August 3, 2022, Wednesday	05:55 AM to 08:10 PM	Shashthi
August 4, 2022, Thursday	07:36 PM to 05:57 AM, Aug 05	Ashtami
August 11, 2022, Thursday	06:02 AM to 06:03 AM, Aug 12	Purnima, Pratipada
November 28, 2022, Monday	06:58 AM to 12:34 AM, Nov 29	Shashthi
November 30, 2022, Wednesday	07:00 AM to 07:42 PM	Ashtami
December 7, 2022, Wednesday	07:06 AM to 07:07 AM, Dec 08	Purnima, Pratipada
December 8, 2022, Thursday	07:07 AM to 01:04 AM, Dec 09	Pratipada
December 12, 2022, Monday	08:18 AM to 01:06 PM	Panchami
January 30, 2023, Monday	11:45 AM to 07:07 AM, Jan 31	Dashami, Ekadashi
February 2, 2023, Thursday	07:48 PM to 07:04 AM, Feb 03	Trayodashi
February 9, 2023, Thursday	09:28 PM to 06:56 AM, Feb 10	Panchami

February 10, 2023, Friday	06:56 AM to 06:55 AM, Feb 11	Panchami, Shashthi
February 13, 2023, Monday	04:06 PM to 10:34 PM	Ashtami
February 27, 2023, Monday	06:33 AM to 03:51 PM	Ashtami
March 2, 2023, Thursday	06:29 AM to 10:41 PM	Punarvasu
March 9, 2023, Thursday	10:24 AM to 06:16 AM, Mar 10	Tritiya
March 10, 2023, Friday	06:16 AM to 11:12 AM	Tritiya
March 13, 2023, Monday	07:11 AM to 11:57 AM	Shashthi
March 17, 2023, Friday	05:16 PM to 01:43 AM, Mar 18	Ekadashi
March 30, 2023, Thursday	02:00 PM to 06:42 AM, Mar 31	Dashami
March 31, 2023, Friday	06:42 AM to 04:27 PM	Dashami

House-Warming Muhurt for the Year 2022-23 for United States **(East Coast)**

गृह प्रवेश मुहूर्त ईस्वी 2022-23 पूर्वी अमरीका के क्षेत्रों के लिए

May 2, 2022, Monday	03:04 PM to 05:52 AM, May 03	Dwitiya, Tritiya
May 11, 2022, Wednesday	09:58 AM to 05:42 AM, May 12	Ekadashi
May 13, 2022, Friday	09:18 AM to 05:40 AM, May 14	Trayodashi
May 16, 2022, Monday	05:38 AM to 01:16 AM, May 17	Pratipada, Dwitiya
May 19, 2022, Thursday	05:47 PM to 05:35 AM, May 20	Panchami
May 25, 2022, Wednesday	05:31 AM to 01:24 AM, May 26	Ekadashi
June 9, 2022, Thursday	06:56 PM to 05:24 AM, Jun 10	Dashami, Ekadashi
June 10, 2022, Friday	05:24 AM to 06:07 PM	Ekadashi
June 16, 2022, Thursday	05:24 AM to 08:40 PM	Tritiya

June 22, 2022, Wednesday	11:15 AM to 08:44 PM	Dashami
December 1, 2022, Thursday	07:44 PM to 07:02 AM, Dec 02	Dashami
December 2, 2022, Friday	07:02 AM to 07:03 AM, Dec 03	Dashami, Ekadashi
December 3, 2022, Saturday	07:03 AM to 07:04 PM	Ekadashi
December 7, 2022, Wednesday	11:07 PM to 07:07 AM, Dec 08	Pratipada
December 8, 2022, Thursday	07:07 AM to 04:29 AM, Dec 09	Pratipada, Dwitiya
December 17, 2022, Saturday	11:48 PM to 07:15 AM, Dec 18	Dashami
January 25, 2023, Wednesday	09:35 AM to 11:58 PM	Panchami
January 26, 2023, Thursday	10:40 PM to 07:11 AM, Jan 27	Saptami
January 30, 2023, Monday	11:45 AM to 07:07 AM, Jan 31	Dashami, Ekadashi
February 8, 2023, Wednesday	09:45 AM to 07:53 PM	Tritiya
February 10, 2023, Friday	01:48 PM to 10:38 PM	Panchami
February 22, 2023, Wednesday	06:41 AM to 04:54 PM	Tritiya
March 8, 2023, Wednesday	06:19 AM to 05:50 PM	Pratipada, Dwitiya
March 9, 2023, Thursday	07:27 PM to 06:16 AM, Mar 10	Tritiya
March 10, 2023, Friday	06:16 AM to 11:12 AM	Tritiya
March 13, 2023, Monday	11:57 AM to 10:43 PM	Saptami

Note:- Mahurt calculations published in Vijayeshwer Jantrie for East coast of America as per Longitude and Latitude of New York City and West Coast of America as Los Angeles City.
Send your feedback on **vijayeshwer@yahoo.com** or
whatsApp at **+91 96826 13996**.

Vijayeshwer Jantrie available at

1. **Gupta Stationery Mart**, City Chowk
2. **Teen Bhai Stationery Store**, Pacca Danga
3. **Thaploo General Store**, Janipur
4. **Maha Lakshmi General Store**, Anand Nagar, Bhori
5. **Ram & Sham Departmental Store**, Subash Nagar
6. **R. K. General Store**, Saraswati Vihar, Bhori
7. **Bhat general store**, main Chowk Janipura
8. **Durga Printing Press**, Old Janipur
9. **Bindroo Gen. Store**, Opp. Tope Quarters
10. **Sharma Stationery Store**, Rehari
11. **Shiv Shakti General Store**, Janipur
12. **Shiv Shankar Gen Store** Lower Roopnagar
13. **Sharma Stationery Store**, Bhori, Anand Nagar
14. **R.S Traders**, Anand Nagar, Borhi
15. **Koul Provisional Store**, Gole pully
16. **Kamla Medicos**, Basant Palace, Bantlab
17. **Kar Stationery Store**, Ragubir Palace, Bantlab
18. **Ashoka Traders**, Bantalab
19. **Pandita General Store**, Near Sukhi Nehar, Bantalab
20. **Wanchoo Gen. Store**, Koth Nathera, Barnia
21. **Bhat General Store**, Shankar Vihar, Gangyal
22. **Jain Traders**, Subash Nagar
23. **Public Gen. Store**, Muthi, Near Sh. Kumar Ji Ashram
24. **Panun Shop**, Opp. Durga Nagar Lane No. 1
25. **Sawhney Gen. Store**, Sector 1 Durga Nagar
26. **Bushan Lal Koul**, Durga Nagar
27. **Bitoo General Store**, Durga Nagar
28. **M.K Communication**, Bantalab
29. **V.V General Store**, Muthi Village
30. **Pamposh General Store**, Muthi
31. **Kangan General Store**, Udhewalla, Borhi..
32. **Chuni Lal Suresh Kumar**, Kanak Mandi
33. **Mr. Suresh Raina**, Bunglow No.47, Diamond Regency Purple Touch, Lane No 6, Malwadi Vasti, Diamond Water Park Road, Lohegaon Wagholi Road, Pune Mah- 411047 Mob 9422351640
34. **KASHMIR HAAT, I.N.A** New Delhi, Cell No : 9968296302, 9911107617
35. **Chinar Shoppe**, Ganga Shopping Complex Sector 29, Noida. Mob :9810825715
36. **Sharda Traders**, B-102, Jain Colony, Bawala, Delhi-39 Mob:9891107733/99
37. **Raina Store**, Shalimar Garden, GBD, 9990471035
38. **Cashmere, Crafts & Spices**, H755, D4, Palm Ext Sector 7, Dwarika, New Delhi, Mob 9315535428
39. **Bhagawaan Gopinath Ji Ashram**, S.No14/2 Nande Balewadi Road, Pune. Mob 9373312403
40. **Shudh Enterprise**, #38, 1st Floor, Andhree Road, Shanti Nagar, (Near Axis Bank) Bangalore-560027
41. **Koshur Vaan**,B2-507 Wagholi Pune, *Mob 7057912139*

Vijayeshwer Jyotish Karalaya, Borhi is highly thankful to **Dr. Roshan Saraf** a reputed *Physician, Poet and Writer and* **Pt. Chand Ji Razdan & Pt. M.K Sharma (Divsar)** *who rendered their valuable services and time despite their professional and cultural engagements in compiling and translating the important events of our rituals and much in the Almanac 2022-23*

Verinagh - Kashmir
VITASTA BHAGWATI PAINTING
Made by : Mr. Virjivirender Sumbly

संसारे भारतं सारं तत्रापि च हिमालयम्, तत् मध्ये च काश्मीरं तत्रापि च विजयेश्वरम्।।

स्व. ज्यो. आप्ताभ शर्मा
प्रवर्तक विजयेश्वर जन्त्री

स्व. ज्यो. काशीनाथ शर्मा
संस्थापक

स्व. डॉ. मनमोहन ज्योतिषी
पूर्व सम्पादक

।। ओ३म्।।

COMPUTERISED

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय (रजि.)

कार्यालय : बोहड़ी पट्टा, चुंगी (समीप मैटाडोर स्टैण्ड)
जम्मू-180002 दूरभाष 0191-2555064
निवास : विजयेश्वर भवन, अजीत कालोनी, गोल गुजराल,
जम्मू-180002 दूरभाष 0191-2552625
Email : vijayeshwer@yahoo.com WhatsApp : 94191-36991, 94191-46712

Editor :
Vijayeshwer Jantrie
Sh. Puneet Jyotshi
S/o Late Dr. Man Mohan Jyotshi
M : 94191-36991
94191-46712